SREE SARADA EDUCATION SOCIETY
RESEARCH CENTRE

SREE SAI D EDUCATIONAL SOCIETY
RESEARCH CENTRE

9968

GIFTED BY

K.V. Sarma

# A Descriptive Catalogue

# of

# The Sanskrit Manuscripts

7631

SREE S. R. D. EDUCATION SOCIETY
RESEARCH CENTRE

*Acquired for and Deposited in the*
*Sanskrit University Library (Sarasvati Bhavan, Varanasi),*
*during the years 1791—1950*

## *Volume XII*

JAINA-BHAKTI-SAMPRADĀYA-ĀYURVEDA-KĀMASĀSTRA-
ŚILPAKALĀ-SAṄGĪTA-NĪTI-DHANURVEDA-PAÑJĪ-PRASASTI-
CITRA-DEŚĪBHĀṢĀ MSS.

*Complited by the*
*Staff of the Manuscripts Section of the*
*Sanskrit University Library, Varanasi.*

*1965*

Published by the department of Publications,
Sanskrit University Varanasi, India.
Printed at The Tara Printing Works, Varanasi.
*Price Rs. 8.00*

वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्थ-

सरस्वतीभवनपुस्तकालये

खिस्तीय १७९१ तमवर्षात् १९५० तमवर्षपर्यन्तं सङ्गृहीतानां
हस्तलिखितसंस्कृतग्रन्थानां

SREE S. N. D. A EDUCATION SOCIETY
RESEARCH CENTRE

# विवरणपञ्जिका

तस्या अयं

जैन-भक्ति-सम्प्रदाय-आयुर्वेद-कामशास्त्र-शिल्पकला-सङ्गीत-नीति-धनुर्वेद-
पञ्जी-प्रशस्ति-चित्र-देशीभाषासङ्ग्रहात्मको

द्वादशो भागः

वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्थ-
सरस्वतीभवनाख्यपुस्तकालयहस्तलिखितग्रन्थविभागसंबद्धविद्वद्भिः
सम्पादितः
१८८६तमे शकाब्दे ।

SREE SARADA EDUCATION SOCIETY
RESEARCH CENTRE

# NOTE

The Saraswati Bhawan Library had been functioning since 1791 as a wing of the Government Sanskrit College, Varanasi, originally known as Banaras Pathashala. Ever since this library came into existence, efforts have been made all along for acquisition of Sanskrit manuscripts and for cataloguing them. But it so happened that manuscripts acquired at different times were entered in different catalogues in different sequences. The volumes of these catalogues became out-of-print, and in the meantime in the library the number of manuscripts continued to be multiplied; hence necessity was felt for cataloguing of all the manuscripts in a single sequence. Though efforts in this line began to be made in about 1940, the matter took a concrete shape when in 1951 I joined the Government Sanskrit College and my colleagues working in the Manuscripts Section started to work towards preparation of a consolidated catalogue of all manuscripts acquired up to 1950. Readers may be interested to know that catalogues of all such manuscripts are by now complete. The work of printing of its volumes began in 1952 and up till March 1958, 5 volumes, in 8 parts, were made public, when the above-mentioned Government Sanskrit College with its famous Saraswati Bhawan Library merged into Varanaseya Sanskrit Vishvavidyalaya. The said Vishvavidyalaya has continued to publish the volumes of this catalogue and 12 volumes have already come out. Now the present volume exhausts all the manuscripts acquired during the said period classified subjectwise at the preliminary sorting.

Had we waited for a thorough sorting of all these manuscripts subject-wise, this work alone would have taken about the same number of years as we have taken even to publish the present catalogue and in that case scholars would have to wait for a further number of years. The manuscripts that were not noticed in preliminary sorting have found entries in the two supplements that are to follow.

As already explained in the notes to the previous volumes, entries in the body of this volume are in a new accession order arranged in a single sequence. At the end of the volume an Index of all the entries in an alphabetical order has been provided to facilitate reference.

Users of manuscripts know that often manuscripts of several works are put in a single codex. All such manuscripts are not necessarily of the same work or subject. It is not in all cases possible to separate these and arrange them subject-wise. In some cases such a separation may even lead to confusion. Therefore, only the first manuscripts of such codices find entry in the second column. But all the manuscripts of the two categories are likewise mentioned in the said alphabetical index.

The present volume enlists 2650 MSS of 13 different subjects. The number of manuscripts of any one of these subjects was not quite sufficient to enable us to devote a separate volume to each of these different subjects. Some of the readers may be interested to find entries for some valuable manuscripts in modern Indian languages mentioned in this volume.

Varanasi
1887 Śakābda Bhādrapada 28.

(SUBHADRA JHĀ)
*Librarian.*
Sanskrit University.

# विषयानुक्रमणिका


| विषयाः | | | पृष्ठाङ्काः |
|---|---|---|---|
| १—जैनग्रन्थसूची | ... | ... | २-१५ |
| २—भक्तिग्रन्थसूची | ... | ... | १८-२१ |
| ३—सम्प्रदायग्रन्थसूची | ... | ... | २४-७३ |
| ४—आयुर्वेदग्रन्थसूची | ... | ... | ७६-१३७ |
| ५—कामशास्त्रग्रन्थसूची | ... | ... | १४०-१४५ |
| ६—शिल्पकलाग्रन्थसूची | ... | ... | १४८-१५१ |
| ७—सङ्गीतग्रन्थसूची | ... | ... | १५४-१५५ |
| ८—नीतिग्रन्थसूची | ... | ... | १५८-१६४ |
| ९—धनुर्वेदग्रन्थसूची | ... | ... | १६४ |
| १०—पञ्जीग्रन्थसूची | ... | ... | १६४ |
| ११—प्रशस्तिग्रन्थसूची | ... | ... | १६४ |
| १२—चित्रग्रन्थसूची | ... | ... | १६८-१८१ |
| १३—देशीभाषाग्रन्थसूची | ... | ... | १८४-२९३ |
| १४—जैनग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | ... | ... | २-३ |
| १५—भक्तिग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | ... | ... | ४ |
| १६—सम्प्रदायग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | | ... | ५-१३ |
| १७—आयुर्वेदग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | | ... | १४-२० |
| १८—कामशास्त्रग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | | ... | २१ |
| १९—शिल्पकलाग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | | ... | २२ |
| २०—सङ्गीतग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | | ... | २३ |
| २१—नीतिग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | | ... | २४ |
| २२—धनुर्वेदग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | | ... | २५ |
| २३—पञ्जीग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | | ... | २५ |
| २४—प्रशस्तिग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | | ... | २५ |
| २५—चित्रग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | | ... | २६-२८ |
| २६—देशीभाषाग्रन्थनामाक्षरानुक्रमणिका | | ... | २९-४७ |
| २७—शुद्धिपत्रम् | ... | ... | ४८ |

SREE SARADA EDUCATION SOCIETY
RESEARCH CENTRE

# हस्तलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

## द्वादशो भागः

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४२६२ | चतुर्विंशतितीर्थङ्कर-भवनामानि | | १। |
| ४४२६३ | सिन्दूरप्रकरणम् | | १-३, ९। |
| ४४२६४ | वर्द्धमानविद्या | | १। |
| ४४२६५ | श्रीपालनरेश्वरकथा | | १-९९। |
| ४४२६६ | अमरसेनवटारसेनकथा | | १-७। |
| ४४२६७ | उत्तराध्ययनसूत्रम् | | १-९९। |
| ४४२६८ | दशवैकालिकसूत्रं सटीकम् | | १-६, ८-१०, १२-१४, १७-२८, ३३, ३६, १-३, ८-१३, (१)२४, २६-४४, ४७, ६०-६३, ८२-८३। |
| ४४२६९ | प्रमाणनयतत्त्वालोकालङ्कारः | देवाचार्यः | १-८। |
| ४४२७० | तत्त्वार्थाधिगमसूत्रं सटिप्पणम् | प्रभाचन्द्रमणिः | २-९, १२-९४, १०९-१४०, १४९-१५३, १५९-१६०। |
| ४४२७१ | इन्द्रियाणां प्राप्यकारित्वा-प्राप्यकारित्वनिर्णयः | | १-४। |
| ४४२७२ | जैनेन्द्रव्याकरणं सटीकम् | देवानन्दिमुनिः टी० का०—अभयनन्दी | १-१४३, १४३-२४९। |
| ४४२७३ | षोडशी समाचारी | | १-४। |
| ४४२७४ | प्रमाणनयतत्त्वालोकालङ्कारः सटीकः | टी० का०—रत्नप्रभाचार्यः | १-१२८। |
| ४४२७५ | जैनधर्मकथा | | १-१४। |
| ४४२७६ | धर्मरत्नाकरः | | १-७९। |
| ४४२७७ | आवश्यकटीका | | १-(४१३ = ४१४) ४१९-५३८। |
| ४४२७८ | » | हरिभद्रः | १-६९, ७१-१६६, १६६-२१०, १-५६, १-११६। |
| ४४२७९ | स्याद्वादमञ्जरी | मल्लिषेणसूरिः | १-८९, ८०-१२७। |
| ४४२८० | मलयसुन्दरीमहाबलचरित्रसम्बन्धविनोदः | | १-८६। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८×९ | ६८ | २६ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| १०×४·४ | १८ | ४० | ” | ” | १८४९ | अपू० | |
| ४·७×२·९ | ९ | १६ | ” | ” | | पू० | |
| ९·९×४·५ | १८ | ९१ | ” | ” | १८३३ | ” | श्री सिद्धचक्रमाहात्म्यञ्च, अर्द्धमागधीभाषायाम् । |
| ९·३×४·२ | १२ | ३६ | ” | ” | १६९९ | ” | |
| १०·१×४·४ | १२ | ४० | ” | ” | | ” | अर्द्धमागधीभाषायाम् । |
| १०×४·३ | ६ | ४३ | ” | ” | १७९९ | अपू० | परिक्रमणसूत्रादयश्च, अर्द्धमागधीभाषायाम् । |
| १०·८×९·१ | १४ | ४८ | ” | ” | १९९९ | पू० | |
| ९×४ | ७ | ३३ | ” | ” | १४८९ | अपू० | |
| १०·९×९ | १९ | ४१ | ” | ” | | पू० | कस्यचन ग्रन्थस्य भागः । |
| १९×६ | ११ | ६१ | ” | ” | १९०७ | ” | टीका—महावृत्तिः । |
| १०·८×४·६ | ९ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| ९·८×४·२ | १९ | ४३ | ” | ” | १७१७ | ” | टीका—रत्नाकरावतारिका । |
| ११·३×४·९ | १३ | ४७ | ” | ” | | ” | |
| ११·१×४·९ | १२ | ४३ | ” | ” | १६९२ | ” | |
| ११·७×९·९ | ९ | ९० | ” | ” | | अपू० | |
| ११·७ × ९·९ | ९ | ४१ | ” | ” | १९९३ | ” | |
| ११·७×९·१ | ८ | ४३ | ” | ” | र० का०—श. १२१४ | पू०* | स्याद्वादवृत्तिर्वा । |
| १०·४ × ४·७ | १९ | ९१ | ” | ” | १७८९ | ” | प्राचीनगुर्जरभाषायाम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४२८१ | नलदवदन्ती चौपाई | | १-९६ । |
| ४४२८२ | शान्तिनाथचरितम् | मुनिदेवसूरिः | १-८४ । |
| ४४२८३ | जिनस्तुतिः सटीका | शोभनः | १-९ । |
| ४४२८४ | पट्टावली | | १-१२, १९-४३, १-३, ९९, १ । |
| ४४२८५ | ज्ञानसारः सटीकः | | १-२२ । |
| ४४२८६ | महीपालकथा सव्याख्या | | १-८२ । |
| ४४२८७ | अवसर्पिणीकालनिर्णयः | श्यामचन्दसूरीश्वरः | १, १-१४ । |
| ४४२८८ | क्षेत्रसमासप्रकरणम् | | १-१० । |
| ४४२८९ | सन्देशरासवृत्तिः | लक्ष्मीचन्द्रः | १-९ । |
| ४४२९० | कल्पद्रुमकलिका | लक्ष्मीवल्लभः | १-१५, १५-२६३ । |
| ४४२९१ | सिन्दूरप्रकरणं सटीकम् | | १-४२ । |
| ४४२९२ | परमागमसमयसारः | | १-७८ । |
| ४४२९३ | श्रीपालरासः | विनयविजयगणिः | १-४२ । |
| ४४२९४ | दशाश्रुतस्कन्धः | | १-२३, २९-३०, ३०-४१ । |
| ४४२९५ | जिनपञ्जरस्तोत्रम् | कमलप्रभसूरिः | १-४ । |
| ४४२९६ | सिन्दूरप्रकरणं सटिप्पणम् | | १-४० । |
| ४४२९७ | मध्यक्षेत्रसमासः सटिप्पणः | | १-४७ । |
| ४४२९८ | भगवतीसूत्रं सटीकम् | | १-२६९, १७८ = (२६६) २६७-२८२ । |
| ४४२९९ | स्वोपज्ञलिङ्गानुशासन-विवरणम् | हेमचन्द्रः | १-८३ । |
| ४४३०० | आचाराङ्गसूत्रवृत्तिप्रदीपिका | जिनहंससूरिः | १-२४९ । |
| ४४३०१ | विवेकविलासः | जिनदत्तसूरिः | १-५९ । |
| ४४३०२ | स्वोपज्ञलिङ्गानुशासन-विवरणम् | हेमचन्द्रः | १-७८ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | स्थानं | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·५×४·३ | १२ | २८ | दे. ना. | का. | १७८१ | पू० | प्राचीनगुर्जरभाषायाम् । |
| ११·५×४·५ | १३ | ६१ | ” | ” | १९३८ | ” | सप्तमसर्गान्तम् । |
| ११·१×४·४ | १७ | ४७ | ” | ” | | ” | |
| १०·८×५·१ | १२ | ४० | ” | ” | | अपू० | |
| १०·६×४·९ | १४ | ५२ | ” | ” | १८८० | पू० | |
| १०·१×४·४ | १३ | ४४ | ” | ” | | ” | अर्द्धमागधीभाषायाम् । |
| १०·२×४·४ | १५ | ३६ | ” | ” | १७ (?) | ” | |
| ११·१×४·८ | १३ | ३९ | ” | ” | १८३८ | ” | अर्द्धमागधीभाषायाम् । |
| ११·२×४·८ | ११ | ३७ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·२×५·१ | १३ | २८ | ” | ” | | पू० | |
| १०·५×४·५ | १२ | ३६ | ” | ” | १८८५ | ” | |
| १०·३×४·९ | १२ | ३० | ” | ” | १९०० | ” | |
| १०·८×४·९ | १६ | ३७ | ” | ” | १६३० | ” | |
| १०·५×५ | १३ | ४१ | ” | ” | १९३८ | ”* | |
| १०·६×५·२ | ७ | २० | ” | ” | १८९० | ” | |
| १०·५×४·५ | १९ | ६१ | ” | ” | १८३५ | ” | |
| १०·६×५·२ | १९ | ५५ | ” | ” | १९२३ | ” | टिप्पणं प्राचीनगुर्जरभाषायाम् । |
| १०·६×५ | १५ | ४७ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·२×४·४ | १६ | ४५ | ” | ” | | पू० | |
| १०·३×४·७ | १३ | ४५ | ” | ” | | ” | शीलाङ्काचार्यरचिता चाराङ्गसूत्र-वृत्तिव्याख्या । |
| १०·९×४·३ | १० | ४५ | ” | ” | | ” | |
| १०·२×४·३ | १५ | ४७ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४३०३ | वसुधारा महाविद्या | | १-६ । |
| ४४३०४ | कुमारविहारशतकम् | | १-४ । |
| ४४३०५ | योगशास्त्रं सटीकम् | हेमचन्द्राचार्यः | १-१७ । |
| ४४३०६ | उत्तराध्ययनसूत्रम् | | १-२३ । |
| ४४३०७ | रत्नावतारिकापञ्जिका | राजशेखरसूरिः | १७ । (गणनया) |
| ४४३०८ | आभाणशतकम् | | १-४ । |
| ४४३०९ | श्रेणिकराजकथा | | १-७४ । |
| ४४३१० | " | | १-४९ । |
| ४४३११ | श्रावकाचारः | | १-९४ । |
| ४४३१२ | गजस्वप्नविचारः | | १-२ । |
| ४४३१३ | वृषभस्वप्नविचारः | | १-२ । |
| ४४३१४ | सिंहस्वप्नविचारः | | १-३ । |
| ४४३१५ | कल्पसूत्रम् | | १-७ । |
| ४४३१६ | " | | २-८ । |
| ४४३१७ | शृङ्गारवैराग्यमुक्तावली | सोमप्रभाचार्यः | १-४ । |
| ४४३१८ | पदार्थरत्नमञ्जूषा | कृष्णः | १-४ । |
| ४४३१९ | श्रीपालरासः | यशोविजयः | १-८३ । |
| ४४३२० | षट्त्रिंशदध्ययनदीपिका | | १-४, ७-३५, ६९-२६४ । |
| ४४३२१ | उत्तराध्ययनसूत्रम् | | २३-४९ । |
| ४४३२२ | कालिकाचार्यकथा सव्याख्या | | १-१८ । |
| ४४३२३ | षडशीतिः | | १-३७ । |
| ४४३२४ | न्यायदीपिका | | १-७ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आदर्शः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·९×४·४ | १० | ३९ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ११०·४×४·६ | १८ | ६१ | ” | ” | | ” | |
| १०·२×४·९ | २४ | ६७ | ” | ” | १९२४ | ” | चतुर्थप्रकाशान्तः। |
| १०·९×४·४ | १८ | ९१ | ” | ” | | अपू० | अर्द्धमागधीभाषायाम्। |
| १०·३×४·९ | १९ | ९९ | ” | ” | | पू०* | स्याद्वादरत्नाकरटीकाटीका। |
| १०·३×४·९ | १९ | ९८ | ” | ” | | ” | |
| १०·४×४·७ | ९ | ३६ | ” | ” | १९१९ | ” | |
| १०·२×४·९ | १३ | ३७ | ” | ” | | ” | |
| १२·७×६·९ | ११ | ३० | ” | ” | १८९७ | ” | |
| १२·८×४·३ | ७ | ९२ | ” | ” | | ” | |
| १२·८×४·३ | ७ | ९२ | ” | ” | | ” | |
| १२·८×४·३ | ७ | ९२ | ” | ” | | ” | |
| १३·९×४·३ | ८ | ४८ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·३×४·३ | ६ | ४८ | ” | ” | | ” | |
| ९·६×४·४ | ११ | ४० | ” | ” | | पू० | |
| १०·२×४·६ | १८ | ६१ | ” | ” | | ” | |
| ९·४×४·७ | १९ | ३० | ” | ” | १८३६<br>श. १७०१ | ” | गुर्जरभाषायाम्। |
| १०·१×४·६ | १९ | ४२ | ” | ” | १६९३ | अपू० | उत्तराध्ययनसूत्रटीका। |
| १०·१×४·९ | १९ | ४४ | ” | ” | १६७३<br>१६९९ | ” | जीवाजीवविभक्तिनामकः ३६ मः अध्यायः। |
| १०·१×४·४ | ९ | ३४ | ” | ” | १६०० | पू० | व्याख्या—गुर्जरभाषायाम्। |
| १०·९×९ | ९ | २८ | ” | ” | | ” | अर्धमागधीभाषायाम्, कर्मविपाक-ग्रन्थः। |
| ११×९·१ | ८ | २४ | ” | ” | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४३२५ | कल्पसूत्रव्याख्यानम् | समयसुन्दरोपाध्यायः | १-१९४। |
| ४४३२६ | जिनेन्द्रमहिम्नः स्तवः सटीकः | रघुनाथमुनिः टी० का० रामचन्द्रगणिः | १-२०। |
| ४४३२७ | नवतत्त्वम् | | १-२७। |
| ४४३२८ | षडशीतिका | | १-२७। |
| ४४३२९ | नवतत्त्वसूत्रं सटीकम् | | १-२०। |
| ४४३३० | दशदृष्टान्तकथाः | | १-२४। |
| ४४३३१ | नन्दीसूत्रं सटिप्पणम् | | १-२५। |
| ४४३३२ | अन्तर्गडसूत्रं सटीकम् | | १-२३। |
| ४४३३३ | सामयिकविधिः | | १-८। |
| ४४३३४ | संघयणी सटिप्पणा | हेमसूरिः | १-२६। |
| ४४३३५ | कल्पसूत्रव्याख्यानम् | | १-९५, ९५-१९५। |
| ४४३३६ | कथाकोशः | | २-१९२। |
| ४४३३७ | " | | १-९२। |
| ४४३३८ | जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिः | | १-१२०, १२०-१६१। |
| ४४३३९ | नन्द्यध्ययनटीका | मलयगिरिः | १-१९७, १९७-२५१। |
| ४४३४० | रत्नपालरासः | | १-६०। |
| ४४३४१ | निरयावलिका सटीका | महावीरभगवान् टी०का०— सुधर्मस्वामी | १-२०। |
| ४४३४२ | षष्टिशतबालावबोधः | सोमसुन्दरसूरिः | १-२३। |
| ४४३४३ | संघयणसूत्रम् | | १-७, ९-३०, ३२, ३२-४७। |
| ४४३४४ | कल्याणमन्दिरस्तोत्रं सवार्त्तिकम् | सिद्धसेनदिवाकरः वार्त्तिककारः— प्रीतिविजयः | १-१९। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११×९·९ | १३ | ९२ | दे.ना. | का. | १९४० | अपू० | दशाश्रुतस्कन्धे । |
| १२·९×९·१ | ११ | ९२ | ” | ” | | पू० | |
| १०×४·३ | ८ | ३९ | ” | ” | | ” | गुर्जरभाषायाम् । |
| १०·८×९ | ६ | ३१ | ” | ” | | ” | कर्मविपाकग्रन्थः । |
| १०·८×९ | ११ | ४७ | ” | ” | १९२७ | ” | |
| १०·३×४·३ | १४ | ४० | ” | ” | १६९९ | ” | |
| १०·८×९·१ | १२ | ३६ | ” | ” | १९११ | ” | |
| १०·२×४·८ | २१ | ९० | ” | ” | १८३० | ” | अर्धमागधीभाषायाम् । |
| १०·९×९·१ | ११ | २८ | ” | ” | | ” | ” |
| १०·३×४·३ | ६ | ४३ | ” | ” | | ” | ” |
| ९·६ × ४·१ | १४ | ९१ | ” | ” | १८४० | ” | दशाश्रुतस्कन्धौ । |
| १०·९×९·९ | ९ | ३३ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·८×९·१ | १३ | ९७ | ” | ” | | पू० | |
| ९·९×९ | ११ | ३६ | ” | ” | १९१० | ” | |
| १०·७ × ९ | १२ | ३७ | ” | ” | | ” | |
| १०·२ × ९·१ | ९ | २७ | ” | ” | १९०९ | ” | |
| ११ × ९·४ | २४ | ४९ | ” | ” | | ” | श्रुतस्कन्धे । |
| १०·४ × ४·४ | १७ | ९७ | ” | ” | १४९६ | ” | |
| १०·२×४·३ | १६ | २८ | ” | ” | | अपू० | सचित्रम् भाषानुवादसहितञ्च । |
| १०·१×४·४ | १७ | ४० | ” | ” | १७११ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४३४५ | जैनभूगोलग्रन्थविशेषः | | ३-८, ११-१६ । |
| ४४३४६ | प्रमेयकमलमार्त्तण्डः | प्रभाचन्द्रः | १-८१, ८१-१६९ । |
| ४४३४७ | गौतमकुलकवृत्तिः | देवविजयगणिः | १-६९, ६९-२२२ । |
| ४४३४८ | ,, | | १-९ । |
| ४४३४९ | ढालसागरः | | १-९३, ९९-१०३ । |
| ४४३५० | समवायाङ्गवृत्तिका | अभयदेवसूरिः | १-१०६ । |
| ४४३५१ | उपासकदशासूत्रं सटिप्पणम् | | १-१०८ । |
| ४४३५२ | प्रकरणसङ्ग्रहः | | ४-१२३ । |
| ४४३५३ | त्रीसप्रकारीपूजा | | २-१९ । |
| ४४३५४ | देवरचना | | ४-७, ९-२५, २८ । |
| ४४३५५ | उपासकदशासूत्रम् | | २-२६, २८-३६, ३८-५२ । |
| ४४३५६ | उपासकदशासूत्रंसटिप्पणम् | | १-५१, ५३-५४ । |
| ४४३५७ | लघुक्षेत्रसमासविवरणं सटिप्पणम् | | १-४९ । |
| ४४३५८ | सम्यक्त्वकौमुदी | | १-५२ । |
| ४४३५९ | जिनपूजास्तवनादि | | १-३, ५-१३, १६-४२, ४२-१७० । |
| ४४३६० | पाञ्चमिरोतवनम् | | १-८, १०, १-४+१२ । |
| ४४३६१ | शान्तिनाथचरितम् | भावचन्द्रसूरिः | १-१९२ । |
| ४४३६२ | लघुक्षेत्रसमासः सटीकः | रत्नशेखरसूरिः टी० का० श्रीदेवः | १-३८, ३८-१५४ । |
| ४४३६३ | तन्त्रमन्त्रादिसङ्ग्रहः | | १-१०१ । |
| ४४३६४ | स्तवादिसङ्ग्रहः | | ३-४९, ५२-२३५ । |
| ४४३६५ | सम्यक्त्वकौमुदी | | १-८६ । |
| ४४३६६ | आचारदिनकरः | वर्द्धमानसूरिः | १-१३२ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·१×४·२ | १९ | ४९ | दे. ना. | का. | | अपू० | भूगोलादिविषयकः, प्राकृतभाषायाम् । |
| १२·१६×४·५ | ११ | ५५ | ” | ” | | ” | |
| १४·×५·४ | १३ | ६५ | ” | ” | | ” | धर्मरत्नमञ्जूषेति नामान्तरम् । |
| १०·८×५·१ | ८ | ३३ | ” | ” | | ” | कुलकवृत्तिर्वा । |
| ८·४×४·६ | १० | ३५ | ” | ” | | ” | गीतसङ्ग्रहरूपः । |
| १२·१×६ | १५ | ३६ | ” | ” | १८७२ | पू० | समवायटीकेति नामान्तरम् । |
| १२×५·३ | २१ | ३४ | ” | ” | १९०२ | ” | |
| १०·५×६·४ | १२ | ३१ | ” | ” | १८५३ (?) | अपू० | नानाविधस्तुत्यादिसङ्ग्रहः, प्राकृतभाषायां देशीभाषायाञ्च । |
| ११·७×५·५ | १३ | ३७ | ” | ” | | ” | गुर्जरभाषायाम् । |
| ११·५×६·३ | १९ | ५० | ” | ” | | ” | |
| १०·७×४·३ | ९ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| १०×४·५ | १८ | ४० | ” | ” | १७९० | ” | |
| १०·७×५·१ | ६ | २९ | ” | ” | | पू० | |
| ९·४×४·३ | १२ | ५० | ” | ” | १८९३ | ” | |
| ६·८×४·७ | १३ | १४ | ” | ” | | अपू० | |
| ६·३×४ | १२ | २६ | ” | ” | | ” | पञ्चमस्तवनं वा । |
| १०×४·१ | १३ | ३७ | ” | ” | १८४० | ” | |
| १०·७×४·८ | ११ | २६ | ” | ” | १९२३ | पू० | टीका–बालबोधाख्या । |
| ७·४×६·६ | २० | २७ | ” | ” | १८०७ | अपू० | |
| ६×६·१ | १६ | १३ | ” | ” | १८५६ | ” | |
| ९·७×४·२ | ६ | ३८ | ” | ” | १९५६ | पू० | |
| ९·८×४·८ | १३ | ३३ | ” | ” | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४३६७ | त्रैवर्णिकाचारः | सोमसेनभट्टारकः | १-९२ । |
| ४४३६८ | नयचक्रम् | | १-३९ । |
| ४४३६९ | न्यायदीपिका | | १-८ । |
| ४४३७० | स्याद्वादमञ्जरी | | १-१०१ । |
| ४४३७१ | ” | | १-२२, २४-२६, ३१-४० । |
| ४४३७२ | प्रवचनसारः सवृत्तिकः | वृ०का०अमृतचन्द्रसूरिः | १-७९ । |
| ४४३७३ | परमात्मप्रकाशवृत्तिः | योगीन्द्रदेवः | १-१२९ । |
| ४४३७४ | विवेकविलासः | जिनदत्तसूरिः | १-१०, १२-१४, ९-६, ८, १९-१८, २०+१, ९-११, १-९, ३, ३+२ । |
| ४४३७५ | शान्तिनाथचरित्रम् | भावचन्द्रसूरिः | २-११७ । |
| ४४३७६ | आदिनाथदेवनाटकम् | धर्मदासगणिः | १-३, १३-२०, २३-४२ । |
| ४४३७७ | स्याद्वादमञ्जरी | | १-१०३ । |
| ४४३७८ | स्थविरावलीचरितमहाकाव्यम् | हेमचन्द्रः | २९-२७, २९-४४, ४४-४७, ४९-५२ । |
| ४४३७९ | महावीरचरितम् | ” | ७-३९, ३९, ३९-९२ । |
| ४४३८० | आत्मप्रबोधः | जिनलाभसूरिः | १-७, ७-१९६ । |
| ४४३८१ | ” | ” | १-२८, ५०-९८, १९०-२२४ । |
| ४४३८२ | जिनस्तुतिपदसङ्ग्रहः | | १-५ । |
| ४४३८३ | नवतत्त्वसूत्रं सविवरणम् | वि०का०—साधुरत्नसूरिः | १-६ । |
| ४४३८४ | तीनचोइसीनांव | | १-२, ४-६३ । |
| ४४३८५ | महावीरजीकोपारनो | | १-२ । |
| ४४३८६ | आगमनामानि | | १ । |

RESEARCH CENTRE



| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११·२×५·१ | ११ | ३९ | दे.ना. | का. | १९३१ | पू० | |
| १०·४×४·८ | ९ | २५ | ” | ” | १८९७ | ” | गुर्जरभाषायाम् । |
| १०×४·३ | ७ | ३० | ” | ” | | अपू० | |
| १०·७×५·१ | १२ | ३६ | ” | ” | १९११ | पू० | |
| १०·४×४·८ | १५ | ५२ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·३×४·४ | १३ | ४४ | ” | ” | | पू० | वृत्तिः-तत्त्वदीपिका । |
| ११·७×४·७ | १३ | ४१ | ” | ” | १७१० | ” | |
| ८·२×४·६ | ११ | २९ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·२×४·२ | १८ | ४८ | ” | ” | १७३५ | ” | |
| १०×३·६ | ७ | ३९ | ” | ” | | ” | उपदेशमाला वा । |
| १४×४·२ | ८ | ६८ | ” | ” | १९५६ र.का. श. १४१२ | पू० | |
| १३·५×५·३ | १९ | ५७ | ” | ” | | अपू० | परिशिष्टपर्वणि ४-१२ सर्गाः । |
| १३·५×५·३ | २० | ५६ | ” | ” | | ” | |
| ९·५×४·४ | १२ | ४७ | ” | ” | १८९३ र.का. १८३३ | पू० | |
| ९·९×४·८ | १२ | ३९ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·६×५·६ | २२ | १५ | ” | ” | | ” | |
| १०·२×४·३ | २४ | ८६ | ” | ” | | पू० | |
| ५·५×३·९ | ७ | ११ | ” | ” | १९१९ | अपू० | जिनस्तोत्रादिसङ्ग्रहः । |
| ९·८×४·३ | ११ | ४० | ” | ” | | पू० | |
| ९·४×४·६ | १६ | ३६ | ” | ” | १८९५ | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४३८७ | दीक्षापञ्चाशकः सटीकः | हरिभद्रः टी०का०-अभयदेवसूरिः | १ । |
| ४४३८८ | पट्टावली | | १ । |
| ४४३८९ | सूर्यप्रज्ञप्तिटीका | मलयगिरिः | ६-८, ७९-८१, १३३-१३६ । |
| ४४३९० | पार्श्वनाथस्तवनम् | | १-२ । |
| ४४३९१ | त्रैवेद्यगोष्ठिका | | १-१० । |
| ४४३९२ | पट्टावलीप्रबन्धः | रघुनाथऋषिः | १-२६ । |
| ४४३९३ | गुरुनामावली | क्षमाकल्याणमुनिः | १-३२ । |
| ४४३९४ | स्थविरावलीव्याख्या | | १-१४ । |
| ४४३९५ | पट्टावली | | ६-१६ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३·४×८·९ | ३८ | २६ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ९·९×४·३ | १८ | ३९ | ” | ” | | ” | गुर्जरभाषायाम् । |
| ११·८×९·९ | ९ | ४९ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·३×४·६ | १९ | २८ | ” | ” | | पू० | अन्ते चैतन्यवन्दनादिः । |
| १०·३×४·३ | १९ | ६४ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·८×९ | १२ | ३७ | ” | ” | | पू० | ग्रन्थकारहस्तलेखः । |
| १०·२×४·८ | १३ | ३२ | ” | ” | १८३० | ” | |
| १०·१×४·८ | १७ | ३८ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·८×४·४ | १९ | ९० | ” | ” | | ” | |

# हस्तलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

## भक्तिग्रन्थसङ्ग्रहात्मको भागः

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४३९६ | शाण्डिल्यसूत्रं सटीकम् | टी० का०-नारायणतीर्थः | १-२२, २२-२७, ६३-६७, ८३-११३। |
| ४४३९७ | भगवद्भक्तिविवेकः | अनन्तदेवः | १-४२। |
| ४४३९८ | शाण्डिल्यसूत्रभाष्यम् | स्वप्नेश्वरसूरिः | १-२४। |
| ४४३९९ | भक्तिविमर्शः | वेणीदत्तः | १-२। |
| ४४४०० | भक्तिचन्द्रिका | नारायणः | १-६। |
| ४४४०१ | भक्तिरत्नम् | कमलाकरभट्टः | १-१२२। |
| ४४४०२ | भक्तिग्रन्थविशेषटीका | | २-३। |
| ४४४०३ | शाण्डिल्यशतसूत्रीयभाष्यम् | स्वप्नेश्वराचार्यः | १-४२। |
| ४४४०४ | शतसूत्री सभाष्या | भा० का०-स्वप्नेश्वरभट्टाचार्यः | २-३, ५-१५, १७-२४। |
| ४४४०५ | " | शाण्डिल्यः भा० का०-स्वप्नेश्वरभट्टाचार्यः | १-११। |
| ४४४०६ | शाण्डिल्यसूत्रं सवृत्तिकम् | वृ०का०-मथुरानाथशुक्लः | १-४०। |
| ४४४०७ | भक्तिसूत्रम् | शाण्डिल्यः | १-५। |
| ४४४०८ | शाण्डिल्यशतसूत्रीयाभिनवभाष्यम् | भवदेवः | १-४८। |
| ४४४०९ | शाण्डिल्यसूत्रं सव्याख्यम् | व्या० का०-नारायणतीर्थः | १-४६, ६८-७४। |
| ४४४१० | शाण्डिल्यसूत्रप्रवचनम् | | १-२७। |
| ४४४११ | भगवद्भक्तिविमर्शः | | १-७३। |
| ४४४१२ | भक्तिसूत्रं सटीकम् | टी० का०-नारायणतीर्थः | ४७, ४७-६७, ७५-९५। |
| ४४४१३ | भक्तिमीमांसा | | १-७। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·१×४·५ | ९ | ३६ | दे. ना. | का. | | अपू० | टीका–भक्तिचन्द्रिका शाण्डिल्य-सूत्रवृत्तिर्वा। |
| ९·५×५ | १० | ३१ | ” | ” | | पू० | |
| ८·४×३·४ | ७ | ४५ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·८×४·६ | १४ | ४२ | ” | ” | | पू० | |
| १०×४·४ | १३ | ४० | ” | ” | | अपू० | भक्तिसूत्रव्याख्या। |
| ९·५×४·२ | ९ | २९ | ” | ” | | पू० | व्रतादिविधिनिर्णयसंयुतोऽयं ग्रन्थः। |
| ८·५×४·२ | ७ | २९ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·९×४·३ | ९ | ३३ | ” | ” | | पू० | |
| १०·६ × ३·८ | १२ | ५० | ” | ” | | अपू० | |
| १०·६×४·८ | ११ | ४९ | ” | ” | | ” | |
| ९·८×४·३ | ९ | २६ | ” | ” | १८५२ | पू० | |
| ११×४·४ | ८ | २४ | ” | ” | १८५८ | ” | भक्तिमीमांसा वा। अन्ते गङ्गाराम-जडीकृतानि गैरिकसूत्राणि। |
| १३×४·९ | ११ | ५३ | ” | ” | | ” | |
| ११·६×६·१ | ११ | ६४ | ” | ” | | अपू० | व्याख्या भक्तिचन्द्रिकाख्या। |
| १०·९×५ | ७ | ३३ | ” | ” | | पू० | |
| १४·८×६·७ | ९ | ५५ | ” | ” | १८३९ श. १८०४ | ” | |
| ११·६×६ | ११ | ५७ | ” | ” | | अपू० | शाण्डिल्यसूत्रं सटीकं वा। टीका–भक्तिचन्द्रिका शाण्डिल्यसूत्रवृत्तिर्वा। |
| ९·८×४·१ | ११ | ३६ | ” | ” | | ” | भक्तिमीमांसावृत्तिश्च भक्तिकण्ठाभरणाख्या। |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|---|
| | ४४४१४ | भक्तिरहस्यम् | भागवतानन्दः | १-१९ । |
| | ४४४१५ | भक्तिरत्नम् | | १-१० । |
| | ४४४१६ | शाण्डिल्यशतसूत्रीयाभिनवभाष्यम् | भवदेवः | १-४३ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४·८×३ | ८ | ५६ | वङ्ग | ” | | पू० | |
| १०·१×४·४ | ११ | ५१ | दे.ना. | ” | | अपू० | |
| १५·३×६·३ | १२ | ५५ | ” | ” | | पू० | तृतीयाध्यायस्य द्वितीयाह्निकपर्यन्तम्। |

SHRI SARADA EDUCATION SOCIETY
RESEARCH CENTRE

# हस्तलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

## सम्प्रदायग्रन्थसङ्ग्रहात्मको भागः

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|---|
| | ४४४१७ | माधुर्यकादम्बिनी | | १-२०। |
| | ४४४१८ | हरिभक्तिविलासः | गोपालभट्टः | १-३२८, ३२८-३३७। |
| | ४४४१९ | सुसिद्धान्तोत्तमः सटीकः | प्रियादासाचार्यः | १-९२, ९२-१३३। |
| | ४४४२० | भगवन्नामकौमुदीटीका | | ६-१४। |
| | ४४४२१ | शिवमुक्तिप्रबोधिनी | काशीनाथः | १-९। |
| | ४४४२२ | शिवोत्कर्षत्वनिर्णयः | | १-८। |
| | ४४४२३ | भक्तिरत्नावली | परमहंसविष्णुपुरी | १-२०, ३४-७९। |
| | ४४४२४ | भक्तिवर्द्धिनीव्याख्या | वल्लभः | १-१५। |
| | ४४४२५ | भगवद्भक्तिचन्द्रिकोल्लासः | | १-१०, १०-१३, १३-२२, १-३२, १-९३। |
| | ४४४२६ | भक्तिरत्नावली सटीका | | १-६७। |
| | ४४४२७ | पद्धतिप्रदीपः | घनश्यामदासः | १-१३। |
| | ४४४२८ | रामाभरणम् | | १-३। |
| | ४४४२९ | सफलप्रवृत्तिनिर्णयः | रामनारायणः | १-११। |
| | ४४४३० | भक्तिरत्नावली सटीका | परमहंसविष्णुपुरी | १-४२। |
| | ४४४३१ | भगवन्नामकौमुदीटीका | अनन्तदेवः | १-५९। |
| | ४४४३२ | गौरगणोद्देशदीपिका | कविकर्णपूरः | १-८। |
| | ४४४३३ | सेवाकौमुदी | लालूभट्टोपनामा वालकृष्णभट्टः | १-१३। |
| | ४४४३४ | चतुःश्लोकीव्याख्या | विट्ठलदीक्षितः | १-६। |
| | ४४४३५ | दुर्गसङ्गमनी | | १९। |
| | ४४४३६ | भक्तिसागरः | नारायणभट्टः | १-१३९। |
| | ४४४३७ | अष्टश्लोकीटीका | | १-२५। |
| | ४४४३८ | भक्तिवर्द्धिनी सविवृतिका | वल्लभाचार्य्यः | १-१२। |
| | ४४४३९ | हरिनाममालिका | गजपतिपुरुषोत्तमः | १-२०। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·८×६·५ | १४ | ३४ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १२·८×६·४ | १३ | ३६ | ” | ” | १८६८ | पू० | भगवद्भक्तिविलासो वा, धर्मनिर्णायको-ऽयं ग्रन्थः। |
| १२·४×६·३ | १६ | ४४ | ” | ” | | ” | |
| ११·१×३·९ | ८ | ३४ | ” | ” | | अपू० | टीका—प्रकाशाख्या। |
| ९·७×४·३ | ११ | ४४ | ” | ” | | पू० | |
| ९·९×३·७ | १० | ४१ | ” | ” | | अपू० | |
| ७·९×३·१ | ६ | २२ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·२ | ९ | ३२ | ” | ” | १७३६ | पू० | भक्तिवर्द्धिनीविवृतिर्वा। |
| ६·९×७·९ | १२ | २० | ” | ” | १९३९ | अपू० | |
| १२×६ | ११ | ९७ | ” | ” | | पू० | |
| १२·८×६·९ | १३ | ३६ | ” | ” | | ” | |
| ९·३×४·२ | १३ | ४३ | ” | ” | | ” | रामावतारप्राधान्यस्थापकोऽयं ग्रन्थः। |
| १०·४×९·८ | ११ | २८ | ” | ” | १९०९ | ” | सफलश्रमनिर्णयो वा। |
| १४×६·२ | १० | ४० | ” | ” | | अपू० | |
| ९·६×४·३ | ९ | ३४ | ” | ” | १८९२ | पू० | टीका—प्रकाशाख्या। |
| १२·८×६·९ | १४ | ४१ | ” | ” | १८७६ | ” | |
| १२·४×९·१ | १० | ४२ | ” | ” | | ” | |
| १२·८×४·९ | ११ | ४७ | ” | ” | १८६१ | ” | |
| ११·१×४·७ | ११ | ४९ | ” | ” | | अपू० | भक्तिरसामृतटीका (?) |
| ११·८ × ४·९ | ८ | ४१ | ” | ” | १६६० | पू० | |
| ८·८×९ | ११ | ३० | ” | ” | १९०० | ” | |
| १०·९×४·७ | १० | २९ | ” | ” | | ” | |
| १०·७×३·६ | ७ | ४८ | वङ्ग | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४४४० | हरिभक्तलक्षणम् | | १। |
| ४४४४१ | कृतिकल्पलता | देवः | १-१८। |
| ४४४४२ | भक्तिरत्नावली | | १-७७। |
| ४४४४३ | ” | विष्णुपुरी | १-४६। |
| ४४४४४ | ” | ” | १-३७। |
| ४४४४५ | सिद्धान्तरहस्यं सटिप्पणम् | | ६१-६२। |
| ४४४४६ | भक्तिरसामृतसिन्धुः | | २। |
| ४४४४७ | निरोधव्याख्या | | १-९। |
| ४४४४८ | भक्तिरत्नावली | विष्णुपुरी | १-३३। |
| ४४४४९ | भक्तिरसायनम् | मधुसूदनसरस्वती | १-२९। |
| ४४४५० | ” | ” | १-३४। |
| ४४४५१ | ” | ” | १-३७। |
| ४४४५२ | विवेकधैर्याश्रयः सविवृतिकः | वल्लभाचार्यः वि० का०— गोकुलोत्सवः | १-२१। |
| ४४४५३ | ” | गोकुलोत्सवः | १-२१। |
| ४४४५४ | ” | | १-४, ९। |
| ४४४५५ | भक्तिप्रभा सटीका | प्रियादासः | १-७६। |
| ४४४५६ | श्रीशकल्पतरुक्रीडाभक्ति-रसायनम् | | १-२४, १-९, २-११, ११, १-१३ + १। |
| ४४४५७ | निरोधलक्षणम् | वल्लभाचार्यः | १-५। |
| ४४४५८ | मुक्ताफलम् | | १-२८। |
| ४४४५९ | भक्तिरत्नावली सटीका | परमहंसविष्णुपुरी टी० का०—श्रीधरः | १-४९। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३·१×३·३ | ९ | ९२ | वङ्ग. | का. | | पू० | |
| ९·२×४·९ | ८ | ३९ | दे.ना. | ” | | ” | |
| ६·६×४ | ७ | १७ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·३ × ४·८ | ८ | २८ | ” | ” | गौ. सं. ९९० १७२७ | पू० | |
| ७ × ४·४ | १० | २६ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·१ × ४·२ | १३ | ९० | ” | ” | | ” | |
| ९·६ × ४·२ | १३ | ९० | ” | ” | | ” | पूर्वविभागे भक्तिसामान्यलहरी । |
| ११·१×४·८ | १० | ३९ | ” | ” | | पू० | |
| ९·७×४·२ | ९ | ३६ | ” | ” | १८९९ | ” | |
| १०·८×४·६ | ९ | ४९ | ” | ” | | ” | प्रथम उल्लासः । |
| ११·९×४·९ | ९ | ४९ | ” | ” | | ” | ” |
| ९·८×६·२ | १२ | ३२ | ” | ” | १८९१ | ” | |
| ११×४·६ | ८ | ९० | ” | ” | | ” | |
| १०×४·१ | ९ | ३४ | ” | ” | श. १६८२ | | |
| ९·७×४·२ | १२ | ४१ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·९×६·४ | १८ | ४६ | ” | ” | १८६९ | पू० | टीका-सुलोचनाख्या । |
| १३·९×९·९ | ११ | ९१ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·६×४·७ | ७ | ३२ | ” | ” | १९१९ | पू० | सेवाफलम्, अग्निकुमारकृतसर्वोत्तम-स्तोत्रञ्च । |
| १०·९×४ | ९ | ३९ | ” | ” | | अपू० | |
| १२×६·९ | १४ | ३८ | ” | ” | १८२७ १९९९ | पू० | टीका-कान्तिमालाख्या । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४४६० | परमार्थसारः सटीकः | अभिनवगुप्तः टी० का०— योगराजः | १-४८ । |
| ४४४६१ | भक्तिरत्नावली | विष्णुपुरी | १-२९ । |
| ४४४६२ | भक्तिरत्नावली सटीका | " | ९४-७७ । |
| ४४४६३ | हरिभक्तिकल्पलतिका | श्रीकृष्णसरस्वती | ५३ । (गणनया) |
| ४४४६४ | मोक्षलक्ष्मीविलासः | वल्लभेन्द्रसरस्वती | १९-३२, ३२-५२, ५५, ६०,६७, ६९-७१, ७८-८९, ९४-१०४ । |
| ४४४६५ | प्रस्तावरत्नमाला | रामकृष्णभट्टः | १-२५, २८, ३५-७३ । |
| ४४४६६ | नवरत्नं सटिप्पणम् | टी० का०— विट्ठलेश्वरः | १-५ । |
| ४४४६७ | विवेकधैर्याश्रयविवृतिः | | १-१७ । |
| ४४४६८ | मुक्ताफलं सटीकम् | वोपदेवः टी० का०— हेमाद्रिदेवः | १-८३, ८२-१४४ । |
| ४४४६९ | वैष्णवसिद्धान्तः | प्रियादासाचार्यः | १-३ । |
| ४४४७० | वैष्णवसिद्धान्तवैजयन्ती | राघवेन्द्रमुनिः | १-८, ८-२४२ । |
| ४४४७१ | भक्तिरसतरङ्गिणी | नारायणभट्टः | १-१५, १५-२२, २४-२८, ३३-६३ । |
| ४४४७२ | कृष्णसेवाह्निकम् | कविमण्डनः | १-१८ । |
| ४४४७३ | वैष्णवसंहिता | | ४३-४९, ६३ । |
| ४४४७४ | सिद्धान्तरत्नभाष्यपीठकं सव्याख्यम् | | १२७ । |
| ४४४७५ | प्रेमपत्तनं सव्याख्यम् | रसिकोत्तंसः | १-४३, ४३-६७ । |
| ४४४७६ | भक्तिरसामृतसिन्धुः सटीकः | मानसः | १-११, ११-१६, १०-४५, ४७-५९, ५९-६२, ६२-७८, ८०, ८०-९०, ९०-१९६ । |
| ४४४७७ | विष्णुभक्तिचन्द्रोदयः | नृसिंहारण्यमुनिः | २-११६ , |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३·५×९·१ | १० | ९७ | दे.ना. | का. | १८९३ | पू० | टीका–विवृतिः परमार्थसारसङ्ग्रह-विवृतिर्वा । |
| ८·५×४·९ | १२ | ३२ | ” | ” | १८२६ | ” | |
| १०·७×४·७ | १२ | ४७ | ” | ” | १७७४ | अपू० | टीका–कान्तिमाला । |
| १३×१·४ | ४ | ५८ | वङ्ग. | ” | श. १५९३ | ” | जीर्णपत्रात्मिका । |
| ९·३×४ | ८ | ३० | दे.ना. | ” | | ” | |
| ८·१×४·५ | ९ | २० | ” | ” | १७९६ | ” | |
| १२·७×४·९ | १० | ६० | ” | ” | १८५१ | पू० | प्रकाशाख्यम् । |
| १२·६×५·२ | ९ | ४१ | ” | ” | | ” | अन्ते श्रीवल्लभाचार्यकृतः विवेकधैर्याश्रयश्च । अत्र पूर्वं टीका अन्ते च मूलम् । |
| १०·८×४·३ | ११ | ३९ | ” | ” | | ” | टीका–कैवल्यदीपिकाख्या । |
| १३×६·४ | १३ | ४४ | ” | ” | | ” | |
| १२·८×४·७ | ८ | ४० | वङ्ग. | ” | | ” | |
| १३×५·२ | १० | ३९ | दे.ना. | ” | १९०२ | अपू० | |
| ९·२×६·४ | १० | २३ | ” | ” | | पू० | |
| १०·२×४·४ | ७ | ३६ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·२×६ | १६ | ४६ | ” | ” | | ” | |
| १३·८×७·३ | ११ | ९२ | ” | ” | १९९१ | पू० | |
| १३·६×६ | ९ | ४२ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·५×४·९ | ११ | ३८ | ” | ” | | ” | |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|---|
| | ४४४७८ | माधुर्यकादम्बिनी | | १, ३-२१ । |
| | ४४४७९ | कृष्णभक्तिसुधारसः | | १-६ । |
| | ४४४८० | हरिभक्तिसमागमः | जयकृष्णः | १-४ । |
| | ४४४८१ | हरिपदचिह्नवर्णनम् | हरिरायः | १, ३-५ । |
| | ४४४८२ | गोकुलेशलीलासुधासिन्धुः | | १८-६१, ६३-७१, ७३-९२, ९२, ९२-१०४ । |
| | ४४४८३ | गायत्र्यर्थः | विट्ठलेशः | १-२+१ । |
| | ४४४८४ | प्रेमामृतं सटीकम् | | १-४२, १-६+९ । |
| | ४४४८५ | आचार्यचरित्रचिन्तामणिः | देवकीनन्दनः | १-२४ । |
| | ४४४८६ | विष्णुभक्तिसुधोद्धारः सटीकः | | १-८५ । |
| | ४४४८७ | मुक्ताफलसङ्ग्रहः सटीकः | वोपदेवः | १-१२ । |
| | ४४४८८ | लघुभागवतामृतम् | | १-४२ । |
| | ४४४८९ | भगवद्भक्तिरत्नावली | विष्णुपुरी | २७-४५+१ । |
| | ४४४९० | भक्तिरत्नावली सटीका | श्रीधरस्वामी | १-९८ । |
| | ४४४९१ | भक्तिरसामृतसिन्धुः सटीकः | | १-१४२ । |
| | ४४४९२ | भक्तिवर्द्धिनीविवृतिः | पुरुषोत्तमः | १-१५ । |
| | ४४४९३ | ग्रन्थविशेषटीका | | १-३ । |
| | ४४४९४ | परमरहस्यम् | | १-५ । |
| | ४४४९५ | भक्तिहेतु। | विट्ठलः | १-५ । |
| | ४४४९६ | भक्तिरत्नावली सटीका | विष्णुपुरी | १-७४ । |
| | ४४४९७ | नवरत्नप्रकाशटिप्पणम् | वल्लभः | २-८ । |
| | ४४४९८ | हरिभक्तिसुधोदयः | | १-८० । |
| | ४४४९९ | हरिभक्तिरसायनम् | वेदान्तवागीश-भट्टाचार्यः | १-४९ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३×४·९ | ९ | ५६ | दे. ना. | का. | १८७० | अपू० | |
| १०·७×३·२ | ६ | ३८ | ” | ” | | पू० | मन्त्रदीक्षाख्यः प्रथमोल्लासः। |
| ११·३×४·६ | ११ | ४४ | ” | ” | | ” | |
| ६·१×३·७ | ८ | १४ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·७×९·३ | ११ | ३४ | ” | ” | १८७४ | ” | |
| ११×९ | ११ | ४० | ” | ” | | पू० | |
| ९·८×६·९ | २१ | १४ | ” | ” | | अपू० | |
| ११×९·२ | ९ | २९ | ” | ” | | पू० | |
| १३×९·८ | ९ | ३७ | ” | ” | | ” | |
| १०.८×४·९ | २० | ६० | ” | ” | | ” | हेमाद्रिसङ्ग्रहोत्थः, टीका-कैवल्य-दीपिका। |
| १३×९·१ | ११ | ४८ | ” | ” | | ” | |
| ६·९ × ३·७ | ६ | १९ | ” | ” | १८३२ | अपू० | |
| १३·७×९·९ | ७ | ४२ | ” | ” | | पू० | टीका-कान्तिमाला। |
| १३·४×९·९ | १२ | ४७ | ” | ” | श. १४६३ | ” | |
| १३×९ | ७ | ३७ | ” | ” | १८८३ | ” | |
| ९·९×४·९ | १८ | ४४ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·६×४·८ | १० | २७ | ” | ” | | पू० | अ० ३९-४०। |
| ८·३×४·८ | १३ | २९ | ” | ” | | ” | |
| १३·६×६·४ | ११ | ४२ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·३ | ९ | ३७ | ” | ” | | अपू० | |
| १४·९×३·४ | ६ | ९७ | वङ्ग | ” | श. १६३९ | पू० | नारदीये। |
| १०·९×४·२ | ८ | ३६ | दे. ना. | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४९०० | बालबोधविवृतिः | पुरुषोत्तमः | १-१६ । |
| ४४९०१ | उत्सवावली | | १-४, ७-३८, ४३ । |
| ४४९०२ | वैष्णवसारसङ्ग्रहः सटीकः | | ४९-६७ । |
| ४४९०३ | पुष्टिमार्गमर्मनिरूपणम् | हरिदासः | १-२ । |
| ४४९०४ | मुक्ताफलं सटीकम् | | २-१३, १९-३९, ३७-३९, ४१-४९, ४७-५९, ५७-७२, ७४-७६, ७८-१०३, १०५-१९४ । |
| ४४९०५ | ” | वोपदेवः टी० का०—हेमाद्रिदेवः | १-१९० । |
| ४४९०६ | भक्तिरत्नावली | विष्णुपुरी | १-९६ । |
| ४४९०७ | माधुर्यकादम्बिनी | | १-३० । |
| ४४९०८ | पाखण्डदलनम् | वीरभद्रः | ५-९ । |
| ४४९०९ | भगवदेकशरणताप्रकाशिका | सत्यज्ञानानन्दः | १-२ । |
| ४४९१० | भक्तिरहस्यम् | | १-१९ । |
| ४४९११ | प्रेमरसायनम् | शिवरत्नशर्मा | १-४२ । |
| ४४९१२ | कवीन्द्रकल्पद्रुमः | कवीन्द्रः | १-४६ । |
| ४४९१३ | रामसेवासूक्तसारः | | १-४४ । |
| ४४९१४ | भक्तिरत्नावली सटीका | | १-९ । |
| ४४९१५ | विष्णुभक्तिचन्द्रोदयः | नृसिंहारण्यमुनिः | १-१५९ । |
| ४४९१६ | भक्तिरत्नावली | विष्णुपुरी | १-५१ । |
| ४४९१७ | ममोत्तमेतिपद्यव्याख्यानम् | | १-७ । |
| ४४९१८ | ममोत्तमेतिपद्यटिप्पणी | वल्लभाचार्यः | १-४ । |
| ४४९१९ | ममोत्तमेतिपद्यव्याख्यानम् | ” | १-६ । |
| ४४९२० | नामचन्द्रिका | रघुनाथः | १-१३९ । |
| ४४९२१ | भावैरङ्कुरितमिति पद्यव्याख्यानम् | | १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | स्थितिः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·६×४·८ | ९ | ४६ | दे. ना. | का. | १८९६ | पू० | |
| १२·४×६·९ | ११ | ३७ | ” | ” | | अपू० | भाषासहिता । |
| १३·९×९·९ | ८ | ९९ | ” | ” | | ” | |
| १०·१×४·७ | १२ | ३७ | ” | ” | | पू० | |
| १०·८×९·१ | १४ | ४३ | ” | ” | | अपू० | |
| १३·९×९·७ | ११ | ४८ | ” | ” | १६८८ | पू० | टीका—कैवल्यदीपिका । |
| १४·८×२ | ९ | ६४ | वङ्ग | ” | | अपू० | |
| १०·७×९·६ | १० | ३९ | दे.ना. | ” | १९०४ | पू० | |
| ११·७×४·४ | ८ | ४१ | वङ्ग | ” | | अपू० | वैष्णवसिद्धान्तात्मकम् । |
| ८·८×३·८ | ८ | ३० | दे. ना. | ” | | पू० | |
| १३·३×३·८ | ९ | ३९ | ” | ” | | ” | १-८ प्रकाशाः । |
| ९·७×४·३ | ८ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| १२·४×४·९ | ७ | ४९ | ” | ” | | ” | |
| १०·७×९·६ | १० | ३१ | ” | ” | १९०४ | ” | |
| ९·९×९ | १४ | ४० | ” | ” | | अपू० | |
| १२·७×४·८ | ८ | ३७ | ” | ” | १६२८ | पू० | |
| १०·७×४·२ | ६ | ३० | ” | ” | १७३८ | ” | |
| १२·७×९·३ | ९ | ४० | ” | ” | | ” | |
| ९·९×९·१ | १२ | ३८ | ” | ” | | ” | पुष्टिमार्गीयमोक्षनिरूपणं वा । |
| ९·८×९·१ | १२ | ३६ | ” | ” | | अपू० | ” |
| १०·७×४·६ | ७ | २७ | ” | ” | | पू० | |
| ९·७×४·७ | १० | २९ | ” | ” | | ” | गोस्वामिमहाप्रभुरचितस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसङ्ख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४९२२ | भक्तिरत्नावली | | १-२६, ४६-५३, ५५-८३ । |
| ४४९२३ | " | | १-८० । |
| ४४९२४ | बालबोधः | वल्लभाचार्यः | १-३ । |
| ४४९२५ | बालबोधः सटीकः | " टी० का० देवकीनन्दनः | १-१० । |
| ४४९२६ | भक्तिरत्नावली | विष्णुपुरी | १-५७ । |
| ४४९२७ | अधिकारसङ्ग्रहः | वेङ्कटनाथः | १-२९ । |
| ४४९२८ | नामचन्द्रिका | रघुनाथः | १-५१ । |
| ४४९२९ | कृष्णामृतमहार्णवः सटीकः | आनन्दतीर्थार्यमुनिः टी० का०— कृष्णाचार्यः | १-१९ । |
| ४४९३० | सिद्धान्तमुक्तावली | वल्लभाचार्यः | १-२३ । |
| ४४९३१ | नामदीपिका | रामकृष्णः | १-१३ । |
| ४४९३२ | नैवात्मनः प्रभुरितिश्लोकविवरणम् | विट्ठलेश्वरः | १-५ । |
| ४४९३३ | विवेकधैर्याश्रयः सवृत्तिकः सपरीक्षणश्च | वल्लभाचार्यः वृ०का०—रघुनाथः प० का० नृसिंहः | १-१६ । |
| ४४९३४ | वल्लभसम्प्रदायग्रन्थविशेषः | वल्लभदीक्षितः | १, ४-६ । |
| ४४९३५ | भक्तिवैशिष्ट्यनिरूपणम् | | १-४, १० । |
| ४४९३६ | नारायणधर्मसारसङ्ग्रहः | | १-११, १-८ । |
| ४४९३७ | प्रपत्तिरत्नम् | | १-३० । |
| ४४९३८ | भक्तिहंसविवृतिः | पुरुषोत्तमः | १-२१ । |
| ४४९३९ | " | रघुनाथः | १-७ । |
| ४४९४० | भक्तिहंसः | विट्ठलेश्वरः | १-१२ । |
| ४४९४१ | " | " | १-१४ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६·९×३·९ | ७ | १९ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९×३·३ | ६ | १६ | ,, | ,, | १८२९ | पू० | |
| ७·७×४·८ | ९ | २१ | ,, | ,, | | ,, | सर्वसिद्धान्तसङ्ग्रह इत्यपरं नाम। |
| १२·९×४·८ | १३ | ९४ | ,, | ,, | | ,, | ,, टीका-प्रकाशाख्या। |
| ८·२×३·९ | ६ | २३ | ,, | ,, | १७०३ | ,, | |
| ११×६·६ | १३ | ४३ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·२×६ | १३ | ४७ | ,, | ,, | १७९० | ,, | |
| ११·७×९·१ | १४ | ४० | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·८×४·७ | १० | ३१ | ,, | ,, | | पू० | |
| १०·४×३·९ | ७ | ३३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १२·८×४·८ | ८ | ४४ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·२×४ | २१ | ४७ | ,, | ,, | १७८० | ,, | |
| १०·३×४·७ | ९ | ३० | ,, | ,, | १७०१ | अपू० | |
| ८·९×४·२ | ९ | ३० | ,, | ,, | | ,, | पुष्टिमार्गानुसारम्। |
| १०·२×४·४ | १३ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | नारायणोपनिषत्सार इति नामान्तरम्। |
| ९·१×४·२ | ६ | १३ | ,, | ,, | १७१७ | पू० | |
| ११·४×९·४ | १० | ३४ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·६×४·८ | १० | ९० | ,, | ,, | १८७२ | ,, | भक्तितरङ्गिणी वा। |
| ११·१×४·९ | ८ | २८ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·१×९·२ | ८ | २८ | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४९४२ | भक्तिसिद्धान्तविवृतिः | गोकुलनाथः | १-१३ । |
| ४४९४३ | भक्तिभावप्रकाशः | रामकृष्णः | १-२ । |
| ४४९४४ | अन्तःकरणप्रबोधविवरणम् | पुरुषोत्तमः | १-१० । |
| ४४९४५ | ,, | वल्लभाचार्यः | १-१० । |
| ४४९४६ | जलभेदविवृतिः | पुरुषोत्तमः | १-२४ । |
| ४४९४७ | अभयप्रदानसारः | वेङ्कटनाथः | १-२५ । |
| ४४९४८ | श्रुत्यर्थानन्दसन्दोहः | व्रजाभरणदीक्षितः | १-१६ । |
| ४४९४९ | सिद्धान्तमुक्तावली सटीका | वल्लभाचार्यः टी०का०-विट्ठलेश्वरः | १-७ । |
| ४४९५० | न्यासदशकं सव्याख्यम् | नारायणमुनिः | १-७ । |
| ४४९५१ | रामात्मैक्यप्रकाशिका | सत्यज्ञानानन्दतीर्थः | १-४ । |
| ४४९५२ | आत्मनिवेदनविचारः | | १-२ । |
| ४४९५३ | भक्तिमार्गमर्यादा | विट्ठलः | १-२ । |
| ४४९५४ | रामानुजपरम्परावन्दनम् | | १-४ । |
| ४४९५५ | भक्तिवर्द्धिनीविवृतिः | वल्लभाचार्यः | १-९ । |
| ४४९५६ | सिद्धान्तरहस्यं सविवृतिकम | वल्लभाचार्यः वि० का०—गोकुलनाथः | १-५ । |
| ४४९५७ | वल्लभसम्प्रदायग्रन्थसङ्ग्रहः | | ४-६७, ७६-१६३ । |
| ,, a | पुष्टिप्रवाहमर्य्यादा | | ४-५ । |
| ,, b | यमुनाष्टपदी | | ५-६ । |
| ,, c | स्फुरत्कृष्णप्रेमामृतम् | | ६-७ । |
| ,, d | भक्तिवर्द्धिनी | वल्लभाचार्यः | ८ । |
| ,, e | अन्तःकरणबोधः | ,, | ९ । |
| ,, f | मुक्तितारतम्यनिर्णयः | विट्ठलेश्वरः | १०-१३ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·८×४·२ | ८ | ३३ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| १०·७×४·७ | ९ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | प्रथमः प्रकाशः । |
| ९·७×३·६ | ७ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·७ × ४·६ | ८ | ४० | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·७×४·९ | ७ | ३९ | ,, | ,, | १८८२ | ,, | |
| १०·२×४·९ | १४ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·८×४·८ | ९ | ४७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·७×४·८ | १२ | ९९ | ,, | ,, | १८९१ | ,, | |
| ९·९×४·३ | ९ | ३० | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·७×३·८ | ९ | ३४ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·७×४·८ | ९ | ९२ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·९×४·७ | १२ | ४९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १३×६ | ९ | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ११·२×४·८ | ११ | ४४ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·९×४·९ | १६ | ६९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·९×९·२ | १७ | १३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| (४४९९७) | बालबोधः | वल्लभदीक्षितः | १४-१९। |
| " ८ | सिद्धान्तरहस्यम् | | १९-१६। |
| " ९ | सिद्धान्तमुक्तावली | | १६-१८। |
| " १० | संन्यासनिर्णयः | वल्लभाचार्यः | १८-२०। |
| " ११ | निरोधलक्षणम् | " | २०-२२। |
| " १२ | भुजङ्गप्रयाताष्टकम् | विट्ठलेश्वरः | २२-२३। |
| " १३ | प्रबोधः | " | २३-२७। |
| " १४ | भक्तिहंसः | " | २७-४१। |
| " १५ | भक्तिहेतुनिर्णयः | " | ४१-५२। |
| " १६ | जलभेदः | वल्लभाचार्यः | ५२-५४। |
| " १७ | गुप्तरसः | विट्ठलेश्वरः | ५४-५७। |
| " १८ | गीतसङ्ग्रहः | | ५७-५९। |
| " १९ | शृङ्गाररसमण्डनम् | विट्ठलेश्वरः | ६०-८४। |
| " २० | रससर्वस्वम् | " | ८४-११८। |
| " २१ | रतिप्रादुर्भावस्तोत्रम् | | ११८-११९। |
| " २२ | सेवाफलविवृतिः | | ११९-१२०। |
| " २३ | विज्ञप्तिः | | १२०-१२४। |
| " २४ | चतुःश्लोकी | | १२४-१२६। |
| " २५ | विज्ञप्तिः | विट्ठलेश्वरः | १२६-१३४। |
| " २६ | चतुःश्लोकी | | १३४-१३५। |
| " २७ | विज्ञप्तिः | | १३५-१६२। |
| " २८ | विट्ठलनाथपत्रम् | | १६२-१६३। |
| ४४९९८ | सम्प्रदायग्रन्थविशेषःसटीकः | | १८५। |
| ४४९९९ | त्रिविधलीला | वल्लभदीक्षितः | १-१३। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·९×५·२ | १७ | १३ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,,

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४६० | भक्तभूषणसन्दर्भः | | १-१४ । |
| ४४६१ | भगवन्नामकौमुदीप्रकाशः | अनन्तदेवः | १-३ = (३-४)५-५२ । |
| ४४६२ | चैतन्यचरितामृतम् | | १-५, ८-१२, १-१५, १८-२५, १-११ । |
| ४४६३ | भगवन्नामकौमुदी | लक्ष्मीधरः | १-७० । |
| ४४६४ | भगवन्नाममाहात्म्यसङ्ग्रहः | रघुनाथेन्द्रयतिः | १-४० । |
| ४४६५ | नारायणसारसङ्ग्रहः | | १-२४ । |
| ४४६६ | नारायणधर्मसारसङ्ग्रहः | | ४, ८-१२ । |
| ४४६७ | साधनदीपिका | नारायणभट्टः | १-५६ । |
| ४४६८ | पुरुषप्रबोधः | ब्रह्मानन्दभारती मुनिः | १-२७ । |
| ४४६९ | रामकैवल्यकल्पलता | माधवः | २-१४, १६-२६, २८-३७, ४०-४३, ५१-८३ । |
| ४४७० | चरित्रचिन्तामणिः | | १-८ । |
| ४४७१ | शैवमतव्याख्यानम् | | १-२४ । |
| ४४७२ | वार्तामाला | | १-२० । |
| ४४७३ | भगवन्नामकौमुदी | लक्ष्मीधराचार्यः | १-३६ । |
| ४४७४ | अर्चिरादिमार्गवैभवम् | | १-१७ । |
| ४४७५ | प्रणवव्याख्या | | १-८ । |
| ४४७६ | उपोद्घातनिबन्धः | | १-२ । |
| ४४७७ | शिवतत्त्वविवेकः | | २-१८ । |
| ४४७८ | ,, | | ३०-१०२ = (१०३) १०४-११७ । |
| ४४७९ | दिनचर्याव्याख्या | वीरराघवः | १-५१ । |
| ४४८० | अधिकारसङ्ग्रहव्याख्या | करनाथः (?) श्रीनिवासशिष्यः | १-६३ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·६×९·३ | १० | ३७ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९·३ × ४·३ | ९ | ४२ | ” | ” | | पू०* | |
| १२·१×९·७ | ११ | ३३ | वङ्ग. | ” | | अपू० | |
| ९·३×४·३ | ८ | ३० | दे. ना. | ” | १६१६ | पू० | |
| ९·६×४·४ | १० | ३१ | ” | ” | १८६१ | ” | |
| ११·१×९·१ | १३ | ४४ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·५×९·२ | १२ | ९३ | ” | ” | | ” | शङ्खचक्रादिधारणमाहात्म्यम् । |
| १३·६×९·३ | ११ | ९३ | ” | ” | १८९७ | पू० | |
| १२·१×४·७ | १३ | ४९ | ” | ” | | अपू० | |
| १०×४·६ | १२ | ४१ | ” | ” | श. १९०४ | ” | |
| १२×४ | ९ | ४४ | ” | ” | १८७३ | पू० | |
| ९·९×४·२ | ११ | ३६ | ” | ” | | ” | पुरुषसूक्तस्येशानश्रुतेः । |
| १०·३×४·८ | १३ | ४४ | ” | ” | | ” | |
| १०·९×४·८ | १० | ३७ | ” | ” | १७९७ | ” | १–३ परिच्छेदाः । |
| १२·९×९·१ | ७ | ३६ | ” | ” | १९०३ | ” | |
| ११×४·६ | ९ | ४४ | ” | ” | | ” | अष्टश्लोकीव्याख्या वा । |
| १०·२×४·४ | १० | ४० | ” | ” | | अपू० | श्रीमन्निम्बादित्याचार्यप्रमुखवैष्णव-सम्प्रदाचार्यसिद्धान्ताचारनामादि-प्रकाशोऽयम् । |
| ११·२×४·६ | १२ | ९२ | ” | ” | | ” | शिखरिणीमालाव्याख्याने । सदा-शिवस्य विश्वसेव्यत्वव्यवस्थापन-परिच्छेदः । |
| १०·९×४·७ | १३ | ४० | ” | ” | | ” | सदाशिवस्य विश्वाधिकत्वव्यवस्था-पनान्तः । |
| १४·३ × ९·८ | ११ | ४७ | ” | ” | | पू० | |
| १३·९×६·४ | १२ | ४४ | ” | ” | १८०० | ” | व्याख्या–भावप्रदर्शिनी । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४९८१ | अन्तःकरणप्रबोधःसविवृतिकः | वल्लभाचार्यः | १-११। |
| ४४९८२ | विवेकधैर्याश्रयः सविवृतिकः | | १-२४। |
| ४४९८३ | शिवतत्त्वविवेकः | | ८-९९। |
| ४४९८४ | शिवतत्त्वनिरूपणम् | | १-३, ३-४, ४-१९, १, १-२, १, १, १-२, १, १-३, १६-१७, १७-२४+१ २७-३०, १००-१३४=(१३४, १३९) १३६-१४४+१, १४६-१७८। |
| ४४९८५ | भक्तिरत्नावली | विष्णुपुरी | १-३२। |
| ४४९८६ | अणुमध्वविजयः सटीकः | नारायणः | १-११, १३-३२। |
| ४४९८७ | मध्वमन्त्रार्थमञ्जरी | ” | १-६, ६-९५, ९७-९८। |
| ४४९८८ | अर्चिरादिमार्गवैभवम् | | १-१०। |
| ४४९८९ | तत्त्वदीपः | | १-५। |
| ४४९९० | पण्डितजनमनश्चमत्कारः | | १-७। |
| ४४९९१ | अन्तःकरणप्रबोधविवृतिः | | १-३, ७-११। |
| ४४९९२ | अन्तःकरणप्रबोधः सविवृतिकः | वि० का०—वल्लभाचार्यः | १-६। |
| ४४९९३ | विष्णुतत्त्वनिर्णयटीकाविवरणम् | | १-४६, ४६-८९। |
| ४४९९४ | तत्त्वदीपः सटीकः | वल्लभदीक्षितः | १-१७। |
| ४४९९५ | श्रुतिरहस्यम् | गिरिधरः | १-३३। |
| ४४९९६ | सिद्धान्तमुक्तावलीटिप्पणी | गोकुलनाथः | १-३। |
| ४४९९७ | सिद्धान्तमुक्तावली सटीका | वल्लभाचार्यः | १-७। |
| ४४९९८ | विवेकत्रयरत्नम् | रामानुजदासः | १-३२। |
| ४४९९९ | सन्न्यासनिर्णयविवरणम् | वल्लभः | १-१४। |
| ४५००० | सप्तपदीविवृतिः | ” | ६-६४। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·८ × ४·८ | ९ | २७ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ११·१×४·८ | १० | ३९ | ” | ” | | ” | |
| ११·८×४·६ | १२ | ४८ | ” | ” | | अपू० | सदाशिवस्य विश्वाधिकत्वव्यवस्थापनान्तः । |
| ९·१×४·३ | ९ | ३१ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·४ | ११ | २९ | ” | ” | १९९९ (?) | पू० | |
| ९·७×४·४ | ११ | २७ | ” | ” | | अपू० | प्रमेयवनमालिकेतिनामान्तरम् । |
| ९·८×४·२ | १० | ४९ | ” | ” | १६८९ | ” | |
| ११×४·८ | ११ | ४८ | ” | ” | १७७९ | पू० | |
| ६·८×३·७ | ८ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ८·३×३·७ | १९ | ३७ | ” | ” | | ” | मध्वपादार्पितो मध्वपूजारूपः । |
| ९·७×४·९ | ७ | २९ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·७×४·९ | १२ | ९४ | ” | ” | | पू० | |
| १०×४ | ११ | ४० | ” | ” | | ” | |
| १४·२×९·६ | ११ | ९८ | ” | ” | | ” | प्रथमं प्रकरणम् । |
| ८·७×९·९ | १२ | १९ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×४·७ | १३ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×९·१ | १० | ३४ | ” | ” | १७७१ | ” | |
| ९·७×४·२ | १० | ४३ | ” | ” | | ” | |
| १०·३×४·७ | ११ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| १३·९×९·४ | ९ | ४६ | ” | ” | | अपू० | सप्तश्लोकीटीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४६०१ | विष्णुतत्त्वनिर्णयः | आनन्दतीर्थः | १-१० + १, १३-१९ + ३, २०-२१ । |
| ४४६०२ | विष्णुतत्त्वप्रकाशः | वनमाली | १-२४, २४-३०, १-४, ३६-६९, ६० ६९, ६७-७३, ७३-८९ । |
| ४४६०३ | सुदर्शनमीमांसा | सत्यवर्त्यतीन्द्रः | १-७४ । |
| ४४६०४ | निम्बार्कसहस्रनाम | | १-२६ । |
| ४४६०५ | निरोधलक्षणविवरणम् | | १-१२ । |
| ४४६०६ | भक्तिरत्नावली | | १-४४ । |
| ४४६०७ | जलभेदः सटीकः | वल्लभाचार्यः | १-९ । |
| ४४६०८ | पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेदः सविवरणः | ” | १-२३ । |
| ४४६०९ | नवरत्नम् | ” | १-२ । |
| ४४६१० | सिद्धान्तरहस्यविवृतिः | श्रीशाचार्यमतानुवर्त्ती | १-९ । |
| ४४६११ | भगवन्नामकौमुदीप्रकाशः | | १०, ११, १४-१९, ३३-४६ । |
| ४४६१२ | ” | अनन्तदेवः | १-३६ । |
| ४४६१३ | सेवाफलं सटीकम् | | १-८ । |
| ४४६१४ | बालबोधः सटीकः | वल्लभाचार्यः टी० का०— देवकीनन्दनः | १-१८ । |
| ४४६१५ | सप्तश्लोकी सविवृतिः | विट्ठलेश्वरः वि० का० हरिरायः | १-२२ । |
| ४४६१६ | सप्तश्लोकीव्याख्या | | १-९ । |
| ४४६१७ | सेवाफलं सविवृतिकम् | वल्लभाचार्यः वि० का०- हरिरायः | १-१० । |
| ४४६१८ | पुष्टिप्रवाहमर्यादा सविवरणा | वि० का०- वल्लभाचार्यः | १-२९ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·५×३·५ | १२ | ३१ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १२·५×५ | ११ | ४२ | ” | ” | | ” | द्वितीयपरिच्छेदपर्यन्तः । |
| ९·८×५·१ | ११ | ३५ | ” | ” | १८५२ | पू० | |
| ९×४·२ | ९ | ३१ | ” | ” | | ” | निम्बार्कदिव्यकवचम् , निम्बार्क-स्तवराजः, हरिव्यासाचार्याष्टकम् यमुनाचतुःश्लोकी, कृष्णवर्मस्तवश्च । |
| १०·६×४·९ | १० | ४१ | ” | ” | १७९६ | ” | |
| १०·३×४·८ | ७ | २८ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·५×४·७ | १४ | ४० | ” | ” | | पू० | |
| ११×४·८ | ९ | ३४ | ” | ” | १७४७ | ” | |
| ८·५×४·३ | ९ | २६ | ” | ” | | ” | |
| १०·३×५·३ | ११ | ३८ | ” | ” | | ” | |
| ९·५×४ | ११ | ३८ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·५×३·९ | ९ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| ११×४·८ | ११ | ३३ | ” | ” | | पू० | |
| ११·१×४·८ | ९ | ३२ | ” | ” | | ” | टीका—प्रकशाख्या । |
| ८·१×४·३ | ९ | ३० | ” | ” | १८१७ | अपू० | |
| १३·८×५·९ | ९ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×६ | १४ | २८ | ” | ” | | पू० | |
| १०·६×५ | ९ | २७ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४६१९ | षट्पदी सविवृतिका | विट्ठलेश्वरः | १-२२ । |
| ४४६२० | विवेकधैर्याश्रयः सविवृतिकः | | ४-१९ । |
| ४४६२१ | सप्तश्लोकीविवृतिः | हरिरायः | १-२७ । |
| ४४६२२ | ब्रह्मवादः | हरिदासः | १-४ । |
| ४४६२३ | सिद्धान्तमुक्तावली सटीका | वल्लभाचार्यः टी० का०- गोकुलनाथः | १-१० । |
| ४४६२४ | जलभेदटीका | | १-१२ । |
| ४४६२५ | गुप्तरसः सविवृतिकः | वि० का०-वल्लभः | १-२२ । |
| ४४६२६ | गुप्तरसविवृतिः | वल्लभः | १-२३ । |
| ४४६२७ | गुर्वादिपदार्थनिर्वचनम् | | १-४ । |
| ४४६२८ | पत्रावलम्बनविवरणम् | पुरुषोत्तमः | ९-२६ । |
| ४४६२९ | भक्तिरसायनम् | | २-६ । |
| ४४६३० | नवधाभक्तिः सटीका | | १ । |
| ४४६३१ | भक्तिरत्नावली | विष्णुपुरी | १-५८ । |
| ४४६३२ | माधुर्य्यकादम्बिनी | | १-१५ । |
| ४४६३३ | भक्तिरसायनम् | मधुसूदनसरस्वती | १-२५ । |
| ४४६३४ | हरिभक्तिसुधोदयः | नारदः | १-५४ । |
| ४४६३५ | कैवल्यदीपिका | हेमाद्रिदेवः | २-३, ६, ८-१२, १४-१८, २१-२४, ३५, ४१-४६, ४९-५२, ५४-६४, ६७-७३ । |
| ४४६३६ | आनन्दालापः | गोपीनाथः | १-५ । |
| ४४६३७ | वैष्णवामृतसारोद्धारः | | १-४, ८-६१ । |
| ४४६३८ | वैष्णवामृतसारणी | | १-३७, ३९-६२ । |
| ४४६३९ | प्रपन्नरत्नमालिका | | १-११८ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·९×४·१ | ७ | २६ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| १०·३×४·९ | ९ | ३३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·२×४·४ | ९ | २६ | ,, | ,, | | पू० | |
| १०·१×४·७ | १० | ३८ | ,, | ,, | | ,, | भक्तिमार्गे माहात्म्यज्ञानजननहेतुतयानुकूल्येनोक्तः ब्रह्मवादः। |
| ९·८×६·३ | १२ | २४ | ,, | ,, | | ,, | टीका–भक्तिसिद्धान्तविवृतिः। |
| ९·९×४·६ | ११ | ३३ | ,, | ,, | १८१० | ,, | |
| १२·९×५ | ९ | ४८ | ,, | ,, | १८३६ | ,, | |
| ९·८×३·६ | ७ | २९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०×४·४ | ७ | ३५ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १२·७×६·५ | १२ | ३८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·५×३·७ | १८ | ४८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·५×४·४ | ११ | ३८ | ,, | ,, | | पू० | टीः–मराठीभाषायाम्। |
| ८·२×३·९ | १७ | २० | ,, | ,, | र० का० श. १९९५ | ,, | |
| १२·४×६ २ | १३ | ४३ | ,, | ,, | १६७१ | ,, | |
| १२·२×६·२ | १३ | ४० | ,, | ,, | १८६६ | ,, | |
| १२·९×२·४ | ११ | ४४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·८×४·१ | ९ | ३८ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ११·१×५·२ | १० | ३८ | ,, | ,, | | पू० | |
| ११·५×४·२ | १० | ४० | ,, | ,, | | अपू० | |
| १२·१×४·४ | ७ | ४२ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·६×५·२ | १० | २८ | ,, | ,, | १८२१ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४६४० | प्रपन्नरत्नमालिका | | १-१०३ । |
| ४४६४१ | विवेकत्रयम् | रामानुजदासः | १-४, ४-४६ । |
| ४४६४२ | ,, | | १-१४ । |
| ४४६४३ | न्यासविंशतिः | वेदान्ताचार्य्यः | १-३ । |
| ४४६४४ | कृष्णयुगलप्रकाशः | | १-१९ । |
| ४४६४५ | निरोधलक्षणम् | वल्लभाचार्यः | १-३ । |
| ४४६४६ | बालप्रबोधः | ,, | १-३ । |
| ४४६४७ | सिद्धान्तमुक्तावली | ,, | १-३ । |
| ४४६४८ | भावप्रकाशिका | | १-६ । |
| ४४६४९ | रामानुजीयमतखण्डनम् | | १-३ । |
| ४४६५० | सेवाविचारशतकं सटीकम् | व्रजलालगोस्वामी | १-६१ । |
| ४४६५१ | शिक्षापत्रं सटीकम् | हरिदासः टी० का०— गोपेश्वरः | १-२७ । |
| ४४६५२ | पुष्टिसञ्जीवनी | | १९, १७, १९ । |
| ४४६५३ | सेव्यस्वरूपतारतम्यनिर्णयः | हरिरायः | १ । |
| ४४६५४ | प्रबोधसुधाकरः | | १-६ । |
| ४४६५५ | आचार्यवचनामृतविवरणम् | वल्लभाचार्यः | २-१९ । |
| ४४६५६ | भारद्वाजसंहिता सटीका | | १-७९ । |
| ४४६५७ | प्रेमामृततरङ्गिणी | | १-७ । |
| ४४६५८ | चैतन्यचन्द्रामृतं सटीकम् | प्रबोधानन्द-सरस्वती गोस्वामी, टी० का०— श्यामकिशोरदेवः | १-७७ । |
| ४४६५९ | बृहद्ब्रह्मसंहिता | | १-९१, ९३-१२७ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·८×४·६ | ९ | ३७ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| १०·३×४·६ | ९ | २७ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×९ | १९ | ९० | ” | ” | | ” | |
| १०·६×४·८ | ११ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| १९·४×२·९ | ९ | ७० | वङ्ग. | ” | | ” | |
| १०·९×९ | ८ | २३ | दे.ना. | ” | | ” | |
| १०·३×४·६ | ७ | २२ | ” | ” | | ” | |
| १०·३×४·७ | ८ | २४ | ” | ” | | ” | |
| १३·१×९ | १० | ४४ | ” | ” | | अपू० | पुस्तके “भा० प्र०” लिखितमस्ति, अत्र रामकृष्णयोरभेदमीमांसा। |
| १४×९·४ | १९ | ४८ | ” | ” | | ” | |
| ११·९×९·३ | ११ | ३७ | ” | ” | १८९७ र० का० १८९९ | पू० | |
| ६·७×९·१ | ९ | १८ | ” | ” | | ” | टीका–हिन्दीभाषायाम्। |
| ११·९×४·९ | १२ | ३४ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·९×४·६ | १० | ३६ | ” | ” | | पू० | |
| १०·८×९·९ | १२ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| ९·६×६·९ | १० | २७ | ” | ” | | अपू० | |
| १४·१×८·४ | १४ | ४६ | ” | ” | १९१९ | पू० | |
| १०·१×४·९ | १० | ३६ | ” | ” | | अपू० | |
| १३·३×९·७ | १९ | ४९ | ” | ” | श. १६४९ | पू० | टीका—रसिकास्वादिनी। |
| ११×६·७ | १३ | ३८ | ” | ” | १८९७ | ”* | नारदपञ्चरात्रान्तर्गता। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४६६० | भक्तिरसामृतसिन्धुः सटीकः | | २९-४० = ४१-१००, १०२-१४० । |
| ४४६६१ | राधाकृष्णलीलापरिकारादि-वर्णनम् | | १-८ । |
| ४४६६२ | पुरुषार्थरत्नाकरः | | १-१९ । |
| ४४६६३ | रहस्यत्रयसारार्थः | वरदनाथः | १-१५ । |
| ४४६६४ | वल्लभग्रन्थावली | वल्लभाचार्यः | ६-१०, १२-१७, १९, २१-४५, ५१-६०, ६२-१२१, १२३-१३५, १३७-१५१, १५३-१६२, १७०-१७३ । |
| ,, | नवरत्नम् | ,, | ६-७ । |
| ,, | सिद्धान्तरहस्यम् | ,, | ७-८ । |
| ,, | अन्तःकरणप्रबोधः | ,, | ९-१० । |
| ,, | कृष्णाश्रयस्तोत्रम् | ,, | १०, १२ । |
| ,, | विवेकधैर्याश्रयः | ,, | १२-१५ । |
| ,, | सेवाफलम् | ,, | १५-१६ । |
| ,, | चतुःश्लोकी | ,, | १७ । |
| ,, | मधुराष्टकम् | ,, | १७, १९ । |
| ,, | परिवृढाष्टकम् | ,, | १९, २१-२२ । |
| ,, | निरोधलक्षणम् | ,, | २२-२५ । |
| ,, | सिद्धान्तमुक्तावली | ,, | २५-२९ । |
| ,, | बालबोधः | ,, | २९-३२ । |
| ,, | जलभेदः | ,, | ३२-३६ । |
| ,, | सन्यासनिर्णयः | ,, | ३६-३९ । |
| ,, | पुष्टिप्रवाहमर्यादा | ,, | ३९-४४ । |
| ,, | सर्वोत्तमस्तोत्रम् | ,, | ४४-४५ । |
| ,, | वल्लभाष्टकम् | अग्निकुमारः | ५१-५३ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९·२×६·६ | ११ | ४९ | दे.ना. | का. | १७९९ | अपू० | |
| १३·१×७ | १४ | ४३ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·२ × ४·९ | १३ | ३८ | ,, | ,, | | पू० | |
| १२·४×९ | १० | ५२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ४·९×३·८ | ११ | ९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | अपू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | अपू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | अपू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| (४४६६४) | कृष्णप्रेमामृतम् | विट्ठलेश्वरः | ९२-९६ । |
| ” | गोपालस्तवराजः | | ९६-९९ । |
| ” | कृष्णप्रेमामृतम् | विट्ठलेश्वरः | ९९-६०, ६२-६४ । |
| ” | आर्याः | ” | ६४-६८ । |
| ” | गोकुलाष्टकम् | वल्लभाचार्यः | ६८-७० । |
| ” | ” | रघुनाथः | ७०-७२ । |
| ” | गोपालाष्टकम् | विट्ठलेश्वरः | ७२-७४ । |
| ” | गोपीजनवल्लभाष्टकम् | वल्लभाचार्यः | ७४-७६ । |
| ” | अष्टोत्तरशतनामावलिः | | ७६-८२ । |
| ” | त्रिविधनामावलिः | वल्लभाचार्यः | ८२-९७ । |
| ” | सर्वोत्तमनामावलिः | विट्ठलदीक्षितः | ९७-१०४ । |
| ” | आचार्याष्टोत्तरशतनामावली | हरिदासः | १०४-१११ । |
| ” | विट्ठलेशाष्टोत्तरशतनामावली | ” | १११-११८ । |
| ” | सहस्रनाम | वैश्वानरः | ११९-१२१, १२३-१३५, १३७-१५१, १५३-१६१ । |
| ” | सप्तश्लोकी | | १६१-१६२ । |
| ” | रासपञ्चाध्यायी | | १६२, १७०-१७३ । |
| ४४६६५ | प्रपन्नामृतम् | | १-११, ११-२९ । |
| ४४६६६ | पत्रावलम्बनम् | वल्लभः | १-२ । |
| ४४६६७ | नवरत्नप्रकाशः | | १-४ । |
| ४४६६८ | गोस्वामिकुलयशोवर्णनम् | द्वारिकेशः | २-५, ७ । |
| ४४६६९ | भक्तिवर्द्धिनीविवृतिः | वल्लभाचार्यः | १-१२ । |
| ४४६७० | रामानुजीयपरम्पराविमर्शः | | १-३ । |
| ४४६७१ | भक्तिसिद्धान्तरहस्यम् सविवृतिकम् | वल्लभः वि० का० गोकुलनाथः | १-६ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३·१×७ | १४ | ४३ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | अपू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | अपू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | अपू० | |
| ६·८×४·१ | ९ | १६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·१×४·६ | १३ | ९० | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·१×४·२ | १२ | ९० | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·७×९·२ | १९ | १७ | ,, | ,, | १८८० | अपू० | |
| १०×४·९ | ८ | ३८ | ,, | ,, | | पू० | |
| ८·४×६·१ | १४ | ३० | ,, | ,, | | ,, | |
| ९×४·१ | १२ | ९९ | ,, | ,, | | अपू० | गोपालतापिनी च। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४६७२ | अवधूतविद्या | | १-३६, ३६-४६ + १ । |
| ४४६७३ | मध्वमुखभङ्गव्याख्यानम् | अप्पयदीक्षितः | १-७० । |
| ४४६७४ | कापालिकसम्प्रदायग्रन्थ-सङ्ग्रहः | | १-८, १९-२९, ४३-५३, ५३-७६, ९६-१७९, १८३-१९८, २००-२०६, २०६-२०८, २०८-२१९, २१९-२५०, २७२-३१९ । |
| ” | गोरक्षनाथजयस्तोत्रम् | | १-४ । |
| ” | भूचरपुराणम् | | ९ । |
| ” | अष्टाङ्गमुद्राष्टकम् | गोरक्षनाथः | ६ । |
| ” | रोमावली | ” | ७-८ । |
| ” | सिद्धान्तभास्करः | | १९-१६ । |
| ” | सिद्धमुक्ताफलम् | | १७ । |
| ” | योगिपथनामलक्षणावलिः | | १८-२० । |
| ” | कन्थडीबोधः | | २१-२३ । |
| ” | गोरक्षगणेशगोष्ठी | | २४-२६ । |
| ” | षड्यतिस्तोत्रम् | | २७ । |
| ” | षडङ्गदेवतास्तोत्रम् | | २८ । |
| ” | नवनाथस्तोत्रम् | | २९ । |
| ” | भस्मगायत्री | | ४३-४९ । |
| ” | नृपबोधः | गोरक्षनाथः | ५०-५३, ५३-५९ । |
| ” | उभययात्रा | ” | ६०-६५ । |
| ” | आसनादिविचारः | | ६६-६७ । |
| ” | आत्मबोधः | गोरक्षनाथः | ६८-६९ । |
| ” | ब्रह्मबोधनिधानम् | | ७०-७३ । |
| ” | पञ्चयात्रायोगः | गोरक्षनाथः | ७४-७६ । |
| ” | अमृतवाक्यम् | ” | ९६-११३ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | क्षारं | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११·३×६·७ | ९ | ३२ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९·५×४·१ | ११ | ४८ | ,, | ,, | | पू० | |
| ११·३×६·६ | ९ | ३३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|---|
| | (४४६७४) | सिद्धान्तवाक्यम् | जलन्धरनाथः | ११४-११५। |
| | ” | ज्ञानतिलम् | गोरक्षनाथः | ११६-११९। |
| | ” | निर्वाणवाक्यम् | कणेरीनाथः | १२०। |
| | ” | अनन्तवाक्यम् | चर्पटनाथः | १२१-१२६। |
| | ” | अमृतप्रयोगः | | १२७। |
| | ” | महायोगवाक्यम् | | १२८। |
| | ” | महावैराग्यवाक्यम् | विचारनाथः | १२९-१३२। |
| | ” | असङ्गवाक्यम् | बालनाथः | १३३-१३४। |
| | ” | मुक्तिसरलवाक्यम् | वक्रनाथः | १३५-१३६। |
| | ” | महाशान्तवाक्यम् | शृङ्गारीपायः | १३७-१४१। |
| | ” | दीननाथवाक्यम् | दीनः | १४२। |
| | ” | हरतालीवाक्यम् | हरताली | १४३। |
| | ” | धूर्मनाथवाक्यम् | | १४४-१४५। |
| | ” | घोडाचोलीवाक्यम् | | १४६। |
| | ” | चतुरङ्गीवाक्यम् | | १४७। |
| | ” | उद्धारनाथवाक्यम् | | १४८। |
| | ” | चणकरनाथवाक्यम् | | १४९। |
| | ” | आदिनाथवाक्यम् | | १५०-१५१। |
| | ” | अजापालवाक्यम् | | १५२। |
| | ” | देवलवाक्यम् | | १५३। |
| | ” | दत्तनाथवाक्यम् | | १५४-१५५। |
| | ” | उदयनाथवाक्यम् | | १५६। |
| | ” | पृथ्वीनाथवाक्यम् | | १५७-१५८। |
| | ” | द्वादशनाथनाम | | १५९। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११·३×९·६ | ९ | ३३ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|---|
| | (४४६७४) | दयाबोधः | गोरक्षनाथः | १६०-१६१। |
| | ,, | छुरिकामन्त्रः | ,, | १६२। |
| | ,, | नवनाथस्वरूपम् | | १६३। |
| | ,, | नादमन्त्रः | गोरक्षनाथः | १६४। |
| | ,, | लक्ष्मणानन्तशरीरम् | | १६६-१६७। |
| | ,, | गोरक्षकुण्डली | | १६८-१६९। |
| | ,, | सत्ययुगमनसागायत्री | | १७०-१७१। |
| | ,, | गोरक्षनाथलक्ष्मणज्ञानगोष्ठी | | १७२-१७३। |
| | ,, | ब्रह्मज्ञानम् | गोरक्षनाथः | १७४-१७७। |
| | ,, | चतुर्विंशतिसिद्धिलक्षणानि | | १७८। |
| | ,, | मालीपाववाक्यम् | | १७९। |
| | ,, | सर्वज्ञानम् | गोरक्षनाथः | १८३-१८५। |
| | ,, | ब्रह्मज्ञानम् | | १८६-१८८। |
| | ,, | पृथ्वीवालानां ग्रन्थः | | १८९। |
| | ,, | कायाबोधः | | १९०। |
| | ,, | ज्ञानदीपबोधः | | १९१-१९६। |
| | ,, | महादेवमत्स्येन्द्रसंवादः | | १९६। |
| | ,, | वैराटपुराणम् | | १९७-१९८, २००-२०६, २०६-२०८, २१५-२३४। |
| | ,, | भूगोलपुराणम् | | २१५-२३४। |
| | ,, | मूलधुन्धुकारः | | २३५-२४२। |
| | ,, | जलन्धरनाथस्तोत्रम् | | २४३-२४४। |
| | ,, | ,, | | २४५-२४८। |
| | ,, | विवेकवृत्तान्तः | | २४९-२५०, २७२-२८४। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११·३×९·६ | ९ | ३३ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | अपू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| (४४६७४) | अभययात्रातत्त्वसारः | | २८६-२८६ । |
| ” | प्राणशृङ्खला | | २८७-२९९ । |
| ” | ज्ञानमाला | | ३०० । |
| ” | रहोरहस्यम् | | ३०१ । |
| ” | षडक्षरी | | ३०२ । |
| ” | पञ्चाग्निः | | ३०३ । |
| ” | आत्मबोधः | | ३०४ । |
| ” | शुक्लहंसवाक्यम् | | ३०५ । |
| ” | निरञ्जनपुराणम् | | ३०६-३१५ । |
| ४४६७५ | भक्तिवर्द्धिनीविवृतिः | गोपेश्वरः | १-१८ । |
| ४४६७६ | चतुःश्लोकी सटीका | टी० का:– देवकीनन्दनः | १-७ । |
| ४४६७७ | ” | वल्लभाचार्यैः टी० का०– व्रजरायः | १-१२ । |
| ४४६७८ | नवरत्नम् | | १-२, १, १ । |
| ४४६७९ | चतुःश्लोकी सटीका | वल्लभः | १-३ । |
| ४४६८० | भागवतसन्दर्भः | | ४-१०+१ । |
| ४४६८१ | पुष्टिप्रवाहमर्यादा | वल्लभाचार्यः | १-२ । |
| ४४६८२ | पुष्टिप्रवाहमर्यादा सविवरणा | ” | १-१३ । |
| ४४६८३ | वल्लभग्रन्थावली | | २-६ । |
| ” | सिद्धान्तमुक्तावली | | २ । |
| ” | बालबोधः | | २-३ । |
| ” | पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेदः | | ३-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११·३×९·६ | ९ | ३३ | दे.ना | का. | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ११·२×४·६ | ७ | ३३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·६×४·४ | १० | ३६ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·८×४·९ | ९ | ३२ | ,, | ,, | १८७९ | ,, | भावदीपिका। |
| ९·७×९·३ | २३ | ४७ | ,, | ,, | | अपू० | पुरुषोत्तमवाक्यम्, दशाक्षरमन्त्र-माहात्म्यम, गोपालत्रैलोक्यविजय-पञ्जरञ्च। |
| १२·९×४·९ | ११ | ४४ | ,, | ,, | | पू० | टी० का०-प्रकाशाख्या। |
| १२·९×९·७ | १३ | ४९ | वङ्ग. | ,, | | अपू० | |
| १०·७×४·२ | ९ | ४८ | दे.ना. | ,, | | पू० | |
| १२·६×४·८ | ११ | ४३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·४×४·१ | १३ | ४२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| (४४६८३) | सिद्धान्तरहस्यम् | | ४ । |
| ” | नवरत्नम् | | ४ । |
| ” | अन्तःकरणप्रबोधः | | ४-५ । |
| ” | विवेकधैर्याश्रयः | | ५ । |
| ” | कृष्णाश्रयस्तोत्रम् | | ५-६ । |
| ” | चतुःश्लोकी | | ६ । |
| ” | भक्तिवर्द्धिनी | | ६ । |
| ४४६८४ | पुष्टिप्रवाहमर्यादाविवरणम् | वल्लभाचार्यः | १-१९ । |
| ४४६८५ | पुष्टिप्रवाहमर्यादा सविवरणा | ” | १-१३ । |
| ४४६८६ | पुष्टिमार्गलक्षणम् | हरिदासः | १-२ । |
| ४४६८७ | सिद्धान्तरहस्यविवृतिः | हरिरायः | १-८ । |
| ४४६८८ | सिद्धान्तरहस्यम् | वल्लभाचार्यः | १-२ । |
| ४४६८९ | सिद्धान्तरहस्यटीका | बालकृष्णदीक्षितः | १-१३ । |
| ४४६९० | भगवत्प्रतिमापूजनवादः | पुरुषोत्तमः | १-१२ । |
| ४४६९१ | सेवाफलं सटीकम् | वल्लभाचार्यः | १-७ । |
| ४४६९२ | सेवाफलं सविवरणम् | वि० का०-वल्लभदीक्षितः | १ । |
| ४४६९३ | सेवाफलविवृतिः | कल्याणरायः | २-५ । |
| ४४६९४ | सेवाफलविवृतिटिप्पणम् | | १-११ । |
| ४४६९५ | सेवाफलविवृतिप्रकाशः | पुरुषोत्तमः | १-१६ । |
| ४४६९६ | सेवाफलं सटीकम् | वल्लभाचार्यः टी०का०पुरुषोत्तमः | १-८ । |
| ४४६९७ | सेवाफलविवृतिः | कल्याणरायः | १-४ , |
| ४४६९८ | निरोधलक्षणविवरणम् | हरिरायः | १-१६ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·४×४·१ | १३ | ४२ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·८×४·२ | ९ | ४१ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·९×६·६ | ११ | ४२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·२×३·६ | ९ | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·३×४·८ | ९ | ३४ | ,, | ,, | १८६१ | ,, | कारिकारूपा । |
| ४·६×३·१ | ८ | १७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·९×९.१ | ९ | ४६ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·९×४·८ | ९ | ४४ | ,, | ,, | १८६८ | ,, | |
| १२·७×४·७ | १० | ९० | ,, | ,, | १८५३ | ,, | |
| १०·२×४·७ | १० | ३३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·७×४·३ | ८ | ३६ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·९×४·९ | ८ | २७ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·१×४·१ | ८ | २९ | ,, | ,, | १८७९ | ,, | |
| ९·६×४·१ | ९ | ४० | ,, | ,, | | ,, | टीका-विवृतिप्रकाशाख्या, सेवाफलसूक्ष्मटीका च । |
| १०·३×४·७ | ११ | ४० | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·६×४·९ | ८ | ३८ | ,, | ,, | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४६९९ | निरोधलक्षणं सविवृतिकम् | | १-१० । |
| ४४७०० | दुर्जनशङ्कानिराकरणप्रकारः | विट्ठलनाथः | १-९ । |
| ४४७०१ | आवेशांशसाक्षादवतारक्रमः | | १-७ । |
| ४४७०२ | तत्त्वदीपिका | वैश्वानरः | १-६ । |
| ४४७०३ | स्वाचार्यकारिकाशयविवरणम् | हरिरायः | १-३ । |
| ४४७०४ | अविधिकैङ्कर्यविधिः | | २-७ । |
| ४४७०५ | सेवाप्रकरणं सटीकम् | | १-१२ । |
| ४४७०६ | बालप्रबोधः | | १ । |
| ४४७०७ | आचार्यसिद्धान्तवाङ्माला-प्रकाशः | पुरुषोत्तमः | १-१९ । |
| ४४७०८ | निम्बार्कसिद्धान्तः | | १-६ । |
| ४४७०९ | वल्लभग्रन्थावली | | ७-८, १८-३१, ३३-४०, ४२-८०, ८२-८८, ९०-९१ । |
| ,, | सिद्धान्तमुक्तावली | वल्लभाचार्य्यः | ७ । |
| ,, | पुष्टिप्रवाहमर्यादा | | ८ । |
| ,, | भक्तिवर्द्धिनी | | १८ । |
| ,, | जलभेदः | ,, | १८-२० । |
| ,, | सन्न्यासनिर्णयः | ,, | २१-२३ । |
| ,, | निरोधलक्षणम् | ,, | २४-२६ । |
| ,, | सेवाफलम् | ,, | २६ । |
| ,, | सर्वोत्तमस्तोत्रम् | ,, | २७-३० । |
| ,, | पुरुषोत्तमसहस्रनाम | वैश्वानरः | ३०-३१, ३३-४०, ४२-६८ । |
| ,, | भागवतम् | | ६१-८०, ८२-८८, ९०-९१ । |
| ४४७१० | नवरत्नप्रकाशः | विट्ठलदीक्षितः | १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | ग्रन्थाङ्कः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·९×४·४ | ११ | ४१ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| १२·६×५ | ८ | ३६ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ८·९×३·५ | ७ | ३० | ,, | ,, | | पू० | |
| १२·८×४·९ | १० | ५४ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·३×४·८ | ११ | ४५ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०×५·२ | १२ | ३२ | ,, | ,, | | अपू० | यामुनीयचतुःश्लोकी च । |
| १२·१×५ | १० | ३४ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·१×४·१ | १२ | ४५ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·२×५·२ | १२ | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२×४·६ | ९ | ४० | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·२×४·७ | १३ | १२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | अपू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | स्क० १०, अ० २१, २९-३३, ३५ । |
| १०·६×४·८ | १२ | ४५ | ,, | ,, | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४७११ | चतुःश्लोकी | रूपगोस्वामी | १। |
| ४४७१२ | वल्लभसम्प्रदायग्रन्थसङ्ग्रहः | | १०-३९। |
| ” | सिद्धान्तरहस्यम् | वल्लभाचार्यः | १०। |
| ” | चतुःश्लोकी भागवतम् | | ११। |
| ” | भक्तिवर्द्धिनी | वल्लभाचार्यः | १२-१३। |
| ” | अन्तःकरणप्रबोधः | ” | १४-१५। |
| ” | विवेकधैर्याश्रयः | ” | १६-१९। |
| ” | कृष्णप्रेमामृतम् | विठ्ठलेश्वरः | १९-२१। |
| ” | सेवाफलम् | वल्लभाचार्यः | २१-२२। |
| ” | सन्न्यासनिर्णयः | ” | २३-२६। |
| ” | पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेदः | ” | २७-३०। |
| ” | सिद्धान्तमुक्तावली | ” | ३१-३३। |
| ” | कृष्णाश्रयस्तोत्रम् | ” | ३४-३५। |
| ” | वल्लभाष्टकम् | विट्ठलेश्वरः | ३६-३८। |
| ” | केशवनामावली | | ३९। |
| ४४७१३ | जिज्ञासापञ्चकम् | किशोरीशरणः | १-१७, १७-२७, १-२२। |
| ४४७१४ | मुक्ताफलं सटीकम् | बोपदेवः | १-४, ६-१०, १०-३९। |
| ४४७१५ | व्याससूत्रार्थगाम्युपोद्घातः | | १-७। |
| ४४७१६ | गद्यत्रयी सव्याख्या | रामानुजाचार्यः | १-३२, ३२-४९। |
| ४४७१७ | वैष्णवरहस्यम् | | १-१८। |
| ४४७१८ | मुक्तिमञ्जरी सटीका | | १-६१। |
| ४४७१९ | प्रमेयरत्नावली सटीका | | १९। |
| ४४७२० | सारसङ्ग्रहः | | १-३०। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६·६×३·४ | ७ | २२ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ६×४·२ | ७ | १४ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | पू० | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | ,, | ,, | | | | | |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | अपू० | |
| ७·१×६·६ | १३ | २२ | ,, | ,, | | पू० | अमररामायणञ्च । |
| ९·९×४·४ | ११ | ५८ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०×४·७ | १२ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १३·३×५·७ | १० | ५० | ,, | ,, | | पू० | |
| १५·६×२·५ | ८ | ६९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १३·१×६·९ | १४ | ४१ | ,, | ,, | | अपू० | पार्श्वे मु० मं० इति लिखितम् । |
| १२·६×६·२ | १६ | ४३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·६×३·६ | ५ | २३ | ,, | ,, | | पू० | भागवतानाम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४७२१ | बुद्धिविलासः | लक्ष्मणभट्ट-पाटीलः | १-९३ । |
| ४४७२२ | सेवाकौमुदी | बालकृष्णदीक्षितः | १-१२० । |
| ४४७२३ | भक्तिरसायनम् | मधुसूदनसरस्वती | १-३४ । |
| ४४७२४ | वल्लभग्रन्थावली | | ३-७, १-१९, १-३, १-२०,२२-२३, २३-२६, २८-४१ । |
| ,, | सिद्धान्तरहस्यम् | वल्लभाचार्यः | ३ । |
| ,, | चतुःश्लोकी | ,, | ३-४ । |
| ,, | मधुराष्टकम् | ,, | ४-५ । |
| ,, | गोकुलाष्टकम् | विट्ठलेश्वरः | ५ । |
| ,, | वल्लभाष्टकम् | ,, | ६-७ । |
| ,, | सनेहलीला | हरिरायः | १-१३ । |
| ,, | नित्यपद | | १३-१५ । |
| ,, | चतुःश्लोकी | | १ । |
| ,, | सप्तश्लोकीगीता | | १-२ । |
| ,, | भारतसावित्री | | २ । |
| ,, | विष्णुशतनामावली | | २-३ । |
| ,, | नाममालाकोशः | नन्ददासः | १-२०, २२-२३, २३-२४ । |
| ,, | अनेकार्थसङ्ग्रहः | | २४-२६, २८-३६ । |
| ,, | कवित्तसङ्ग्रहः | रसखानः | ३६-४१ । |
| ४४७२५ | सम्प्रदायप्रदीपः | गदद्विवेदी | १-४२ । |
| ४४७२६ | भगवन्नामकौमुदी | लक्ष्मीधरः | १-३९, ४१-५७ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·६×६·७ | १३ | २४ | दे. ना. | का. | | पू० | गणपत्युपासना । |
| ९·४×५·६ | १२ | ३३ | ,, | ,, | १८१७ | ,, | १-२ प्रकरणे । सिद्धान्तमुक्तावली-योजना, अष्टादशाध्याय सुबोधिनी-योजना, प्रमेयरत्नार्णवः, निर्णयार्णवश्च । |
| ९·२×६·६ | ११ | ३२ | ,, | ,, | १८२९ | ,, | प्रथमोल्लासः । |
| ६·७×६·६ | १० | २२ | ,, | ,, | १८६४ | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | १८६४ | अपू० | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | | पू० | ,, |
| ८·४×४ | ९ | ३९ | ,, | ,, | र.का. १६१० १७७८ | ,, | |
| ८·९×४·१ | ९ | ३० | ,, | ,, | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४७२७ | समर्पणगद्यार्थः | वल्लभः | १-१७ । |
| ४४७२८ | पत्रावलम्बनम् | वल्लभदीक्षितः | १-३ । |
| ४४७२९ | ,, | ,, | १-३ । |
| ४४७३० | सिद्धान्तसङ्ग्रहः | ,, | १-७ । |
| ४४७३१ | सन्न्यासनिर्णयः | | १-३ । |
| ४४७३२ | गणेशोत्कर्षचन्द्रिका | काशीनाथः | १-५ । |
| ४४७३३ | पूर्वाचार्यमङ्गलानुशासनम् | | १ । |
| ४४७३४ | शरभपत्रम् | महानन्ददीक्षितः | १-३९ । |
| ४४७३५ | शैवसुधाकरः | सदानन्दः | १-५७ । |
| ४४७३६ | अष्टादशरहस्यम् | रामानुजाचार्य्यः | १-९ । |
| ४४७३७ | दशनामाभिधानम् | शङ्कराचार्य्यः | १-३ । |
| ४४७३८ | गुणरत्नकोशः | भट्टाचार्यः | १-४ । |
| ४४७३९ | गुरुपरम्परा | | १-२ । |
| ४४७४० | श्रीनिवासाचार्यनिम्बादित्याचार्यसंवादः | रामचन्द्रः | १-१२२ । |
| ४४७४१ | सर्वलिङ्गसन्न्यासः | | १-४३ । |
| ४४७४२ | समर्पणगद्यार्थः | वल्लभः | १-११, ११-१४ । |
| ४४७४३ | तत्त्वत्रयम् | नारायणयतिः | १-८ । |
| ४४७४४ | अमृतविन्दुः | | १-१३ । |
| ४४७४५ | प्रपन्नपारिजातः | | १-१५ । |
| ४४७४६ | यतीन्द्रमतदीपिका | श्रीनिवासदासः | १-१०, १०-१९ । |
| ४४७४७ | सम्प्रदायप्रदीपः | गदद्विवेदी | १-२३ । |
| ४४७४८ | काशीमुक्तिप्रकाशनम् | लक्ष्मीपतिगुरुः | १-१६, १६, १८-२२ । |
| ४४७४९ | काशीतत्त्वविचारः | हरिकृष्णशर्मा | १-२६ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·४×४·३ | ९ | २७ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ८·३×३·९ | १४ | ३७ | ” | ” | | ” | |
| ९×९ | ११ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ८·४×९·३ | ९ | २७ | ” | ” | | ” | ब्रह्मसंहितायाम्, पञ्चमोऽध्यायः। |
| ७·७×४·८ | ९ | १९ | ” | ” | | ” | |
| १३·३×४·३ | ९ | ४४ | ” | ” | | ” | |
| १३·३×९·९ | १३ | ६१ | ” | ” | | ” | वरवरमुनिकृतस्तोत्रञ्च। |
| १४×९·४ | ९ | ४९ | ” | ” | र०का० १९२२ | अपू० | रामानुजमतखण्डनम्। |
| १३·६×९·९ | १० | ४७ | ” | ” | १९२३ | पू० | |
| १३×६·९ | १९ | ९६ | ” | ” | | ” | |
| ११·६×४·८ | ९ | ३३ | ” | ” | | ” | आचार्यपरम्परा। |
| १३·३×९·९ | १२ | ९२ | ” | ” | | ” | |
| ११·६×६·४ | १४ | ३६ | ” | ” | | ” | |
| ११·२×९·४ | ११ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| १०·७×४·७ | ११ | ४० | ” | ” | | अपू० | |
| १२·९×४·८ | ९ | ४१ | ” | ” | | पू० | |
| ११×४·९ | ९ | ४१ | ” | ” | | ” | |
| ६·१×३·९ | ९ | १३ | ” | ” | | ” | |
| १२·२×९·९ | १४ | ३६ | ” | ” | | ” | |
| १२×९·७ | १३ | ४९ | ” | ” | | ” | १-१० परिच्छेदाः। |
| १२·४×९·१ | ११ | ४९ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×४ | ७ | ४० | ” | ” | | ”* | |
| १०·७×४·६ | ११ | ४२ | ” | ” | | ” | |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|---|
| | ४४७९० | ज्ञानतिलकम् | | १-९, ७-८ । |
| | ४४७९१ | प्रेमामृतभाष्यम् | विट्ठलनाथः | १-९६ । |
| | ४४७९२ | स्वात्मसंविदुपदेशः | | १-१२ । |
| | ४४७९३ | अर्थपञ्चकम् | | १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६·८×३·८ | ८ | २० | दे.ना. | का. | १६९८ | अपू० | |
| १२·७×४·८ | ७ | ४१ | ” | ” | १८६२ | पू० | |
| ८·४×४·९ | १३ | ३३ | ” | ” | | ” | अवधूतग्रन्थः, दत्तात्रेयगोरक्षसंवादरूपः। सप्तमप्रकरणं यावत्। |
| १३·५×९·४ | १२ | ९३ | ” | ” | | ” | |

# हस्तलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

## आयुर्वेदग्रन्थसङ्ग्रहात्मको भागः

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४७५४ | पथ्यापथ्यादिनिर्णयः | | ३ । (गणनया) |
| ४४७५५ | आयुर्वेदग्रन्थविशेषः | | १ । |
| ४४७५६ | वैद्यानुभवः | | १-११ । |
| ४४७५७ | औषधजारणमारणविधिः सटीकः | | १-६ । |
| ४४७५८ | रसराजशङ्करः | | १५ (गणनया) |
| ४४७५९ | आयुर्वेदसङ्ग्रहः | | १७-१८ । |
| ४४७६० | आयुर्वेदग्रन्थविशेषानुक्रमणिका | | १-२ । |
| ४४७६१ | योगमाला | | १ । |
| ४४७६२ | शालिहोत्रम् | | १-१० । |
| ४४७६३ | गूढवाक्यबोधः सटीकः | चक्रपाणिः | १-२, ४-१७, २२-२८, ३१-४०, ४२-५३, ५५-५९, २५ ४८, ७४-७६, ७९-८०, ८२-८४, ८७-९६, ९८-१०७, १४१-१४२, १४४, १४४ + ५ । |
| ४४७६४ | वाग्भटः | | १-२ । |
| ४४७६५ | लक्ष्मणोत्सवः | लक्ष्मणः | १-१२५ । |
| ४४७६६ | मसूरिकाशीतलाधिकारः | | २-७ । |
| ४४७६७ | सुश्रुतसंहिता | | १-२ । |
| ४४७६८ | काकचण्डीश्वरकल्पः | | १-२४ । |
| ४४७६९ | बालतन्त्रम् | | १-२ । |
| ४४७७० | पथ्यापथ्यद्रव्यगुणवर्णनम् | | १-३४ । |
| ४४७७१ | आयुर्वेदप्रकाशः | | १-१८ । |
| ४४७७२ | धन्वन्तरिनिघण्टुः | काश्यपः | १-१०५ । |
| ४४७७३ | निघण्टुराजः | नरहरः | १-१११, १-६ । |
| ४४७७४ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·९×४·८ | १३ | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०·१×४·८ | १९ | ४१ | ” | ” | | ” | विषतन्त्रम् । |
| १०·८×४·७ | १० | ४० | ” | ” | | ” | |
| १०·८×४·६ | ११ | ३८ | ” | ” | | ” | टीका–हिन्दीभाषायाम् । |
| १०·९×४·७ | ११ | २६ | ” | ” | | ” | |
| १४·१×४·९ | ११ | ६१ | वङ्ग. | ” | | ” | |
| १४·१×४·९ | ११ | ९२ | ” | ” | | ” | |
| ९·८×४·२ | ८ | ४० | दे. ना. | ” | | ” | |
| १२·५×९·९ | १३ | ४७ | ” | ” | | पू० | |
| ८·८×३·१ | १८ | २० | ” | ” | | अपू० | टीका हिन्दीभाषायाम् । |
| ८·३×३·६ | ११ | ३४ | ” | ” | | पू० | २१ अध्यायः । |
| ११×९·८ | ११ | ३९ | ” | ” | १८१९ | ” | सूचीपत्रसहितः १-६४ अध्यायाः । |
| ८·९×४·२ | ११ | २७ | ” | ” | | अपू० | स्कन्दपुराणे, शीतलाष्टकञ्च । |
| ६×३·६ | १६ | २९ | ” | ” | | ” | शारीरस्थानप्रकरणम् । |
| ७ × ९ | ११ | २१ | ” | ” | | पू० | |
| ९·८×९ | १० | २६ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·९×४·७ | ९ | ३८ | ” | ” | | ” | |
| १२·६×४·९ | ९ | ४९ | ” | ” | १८६६ | पू० | वाकावलीनामाध्यायमात्रम् । |
| १२·४×४·९ | ९ | ३७ | ” | ” | | ” | |
| ११·७×४·७ | ११ | ४९ | ” | ” | १७३० | ” | |
| १०·७×४·३ | ८ | ३४ | ” | ” | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४७७५ | आयुर्वेदप्रकरणसूची | | १ । |
| ४४७७६ | आयुर्वेदसङ्ग्रहः | | १-४ । |
| ४४७७७ | औषधसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४४७७८ | शार्ङ्गधरसंहिता | | २-३ । |
| ४४७७९ | मृत्युविचारः | | १-२ । |
| ४४७८० | माधवनिदानं सटीकम् | | १ । |
| ४४७८१ | अतिसारवर्णनम् | | १-२ । |
| ४४७८२ | अतिसारादिरोगविचारः | | १ । |
| ४४७८३ | कालज्ञानम् | | १-३७ । |
| ४४७८४ | योगचिन्तामणिः | | २९-२९, ३१-५९ । |
| ४४७८५ | योगसङ्ग्रहः | भोजदेवः | २-३३ । |
| ४४७८६ | कालज्ञानम् | | १-३ । |
| ४४७८७ | » | | १-१२ । |
| ४४७८८ | ओषधिनामानि | | १ । |
| ४४७८९ | शार्ङ्गधरसंहिता | | २९ । |
| ४४७९० | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | २-२१ । |
| ४४७९१ | योगरत्नमाला सविवृतिः | नागार्जुनः वि०का० गुणाकरः | १-२६ । |
| ४४७९२ | औषधयोगसङ्ग्रहः | | १, ४-५ । |
| ४४७९३ | बालतन्त्रम् | कल्याणः | १-२०, २२ । |
| ४४७९४ | सिद्धयोगसङ्ग्रहः | | १-९ । |
| ४४७९५ | रसचिन्तामणिः | | १-३, ५-१०, १०-२३ । |
| ४४७९६ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | ४-२६, २६-२७, २९-३०, ३०-३१ । |
| ४४७९७ | नाडीपरीक्षा | | १-२१ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·९×४·६ | १९ | ३० | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १०·७×४'६ | १९ | ४७ | ,, | ,, | | ,, | ज्यौतिषप्रकरणसूची च। |
| १०·९×४·६ | १९ | ४१ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·९×९ | २१ | ३४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·६×९·२ | २८ | ३८ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·६×४·९ | १२ | ४४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·७×४·४ | १८ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·९×४·९ | ७ | ४१ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२×४·७ | ९ | २१ | ,, | ,, | | पू० | |
| ८·७×३·९ | १९ | ४२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ११·९×९ १ | ९ | ४१ | ,, | ,, | १७६७ | ,, | |
| ९·६×९ | १२ | २७ | ,, | ,, | | पू० | |
| १२·२×९·९ | ११ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९×४·९ | २३ | २० | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·२×४·४ | ८ | ३८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·८×३·८ | १० | २३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·८×३·८ | ९ | ४३ | ,, | ,, | टी०र०का० १२९६ | पू० | |
| ९·९×४·३ | ११ | ४३ | ,, | ,, | | अपू० | हिन्दीमराठीभाषायाम्। |
| १०×९·३ | ११ | ३४ | ,, | ,, | १८९० | ,, | |
| ९·६×४·२ | ९ | ३७ | ,, | ,, | | ,, | अश्वायुर्वेदस्य। |
| १०·८×४·७ | ६ | ३३ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·६×४·६ | ११ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·८×३·६ | ८ | १८ | ,, | ,, | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसङ्ख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४७९८ | शार्ङ्गधरसंहिता | | ३, ७०-८६ । |
| ४४७९९ | वैद्यजीवनम् | | १-४ । |
| ४४८०० | चिकित्साग्रन्थविशेषः | | १ । |
| ४४८०१ | ” | | २४ । ( गणनया ) |
| ४४८०२ | अश्वचिकित्सा | नकुलः | ३-४१, ४३, ४८, ५०-५८ । |
| ४४८०३ | योगसारसमुच्चयः | शिवदासः | १-६ । |
| ४४८०४ | आयुर्वेदश्लोकसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४४८०५ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | ३-५१, ७०-१०८ । |
| ४४८०६ | चिकित्साग्रन्थविशेषः | | १-१५ । |
| ४४८०७ | ” | | १-२० । |
| ४४८०८ | शार्ङ्गधरसंहिता | | १-८, १०-५०, ५३-९५ । |
| ४४८०९ | बालतन्त्रम् | कल्याणः | १-३१+१ । |
| ४४८१० | पाकावली | | १-२, ४-१५, ११ । |
| ४४८११ | सन्निपातचन्द्रिका | | १-६, ८-१२ । |
| ४४८१२ | नाडीपरीक्षा | | १-३, ३-६ । |
| ४४८१३ | अजीर्णमञ्जरी | | १-३ । |
| ४४८१४ | मदनविनोदनिघण्टुः | मदनपालः | २-८, १०-५६, ५६-७५ + ३ । |
| ४४८१५ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १, ३-१०७ । |
| ४४८१६ | वैद्यमनोत्सवः सटीकः | | १-९८, १०० । |
| ४४८१७ | चिकित्सासारः सटिप्पणः | गोपालदासः | १-३७ । |
| ४४८१८ | रसराजलक्ष्मीः | विष्णुदेवः | ३-३५, १-४ । |
| ४४८१९ | शालिहोत्रम् | नकुलः | १-१७, १९-२२ । |
| ४४८२० | सर्वसङ्ग्रहः | | १-१९, २१-२७, २७-३७, ३९-४०, ४२-५६, ५८-६० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·४×४·८ | १४ | ४४ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९·४×४·९ | ७ | ३६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·६×४·६ | १९ | ४१ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·९×४·७ | २६ | १९ | ,, | ,, | | ,, | संस्कृते हिन्दीभाषायाञ्च । |
| ९·९×४·३ | ८ | २३ | ,, | ,, | | ,, | गुर्जरभाषायाम् । |
| १३·९×४·९ | ६ | ४६ | ,, | ,, | | ,, | योगसार इति नामान्तरम् । |
| १३·४×४·६ | ३७ | १९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ११·६×४·९ | ८ | ४८ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·१×४·९ | १० | ३२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·६×४·३ | ९ | ४२ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·७×४·९ | १२ | ९२ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·१×४·९ | ९ | ४३ | ,, | ,, | | ,, | बालचिकित्सेतिनामान्तरम् । |
| १२·६×९·१ | ११ | ४८ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·९×९·४ | १० | ४६ | ,, | ,, | १८९३ | ,, | |
| ७·८×४·९ | १२ | १९ | ,, | ,, | ,, | पू० | औषधसङ्ग्रहश्च हिन्दीभाषायाम् । |
| १०×४·१ | १० | ४३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ११·९×९·१ | ९ | २६ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·१×३·९ | ८ | ४० | ,, | ,, | १७३३ | ,, | |
| १०·२×४·९ | १० | २९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·८×४·९ | ९ | ३४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·१×४·४ | २१ | १० | ,, | ,, | | ,, | |
| ११×९ | १० | ३७ | ,, | ,, | १९९१ | ,, | |
| ९·९×३·६ | ९ | ४३ | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४८२१ | शतश्लोकी सटीका | वोपदेवः | २-२६, २६-२९, ३१-४२, ४४-५३ । |
| ४४८२२ | भावप्रकाशः | भावमिश्रः | १-१५०, १५२-१६१, १५३-१७८, १-२६१, (=२६२) २६३-२९९,+१ । |
| ४४८२३ | योगचन्द्रिका | लक्ष्मणः | १-२३ । |
| ४४८२४ | अष्टाङ्गहृदयम् | वाग्भटः | ३-७३, १-४५, १, ३-१०६, १-२, ५-६, ८-१४, १-११८ । |
| ४४८२५ | सुश्रुतसंहिता | | ५-४३, ४५-१११, १११-१३२, १३२-१६६, १६९-१८३, २-३७, ३-४३, ५-४३, ४३-९८, १०० । |
| ४४८२६ | ” | | ३६-४२ । |
| ४४८२७ | हृदयप्रबोधः | | १-१४ । |
| ४४८२८ | शार्ङ्गधरसंहिता सटिप्पणा | शार्ङ्गधरः | १-२१, १-८० । |
| ४४९२९ | माधवनिदानं सटिप्पणम् | माधवः | १-१४१, १ । |
| ४४८३० | गन्धकरसायनविधिः | | १ । |
| ४४८३१ | तैलोपवेशनविधिः | | १-४ । |
| ४४८३२ | मदनविनोदनिघण्टुः | मदनपालः | २-१०४ । |
| ४४८३३ | ” | ” | १-१५८ । |
| ४४८३४ | ” | ” | १-१०५ । |
| ४४८३५ | ” | ” | १-८९ । |
| ४४८३६ | हृदयदीपकनिघण्टुः | | १-७ । |
| ४४८३७ | ” | | ६-१५ । |
| ४४८३८ | ” | वोपदेवः | २-१४ । |
| ४४८३९ | ” | ” | १-३४ । |
| ४४८४० | ” | ” | १-१३ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·३×३·९ | १० | ३६ | दे. ना | का. | | अपू० | टीका–चन्द्रकला। |
| १२·९×६·२ | १३ | ४३ | ” | ” | | ” | |
| १०·९ × ४·६ | १० | ३६ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·९ | १० | ३१ | ” | ” | १८० (?) | ” | |
| १२·७×९ | १० | ४१ | ” | ” | | ” | |
| १०·४×४·६ | ८ | ३२ | ” | ” | | ” | शारीरस्थानमात्रम्। |
| ९·४×४·१ | ११ | ३० | ” | ” | १७९६ श.१९३०(?) | पू० | शतश्लोकी सटिप्पणा वा। |
| ९·४×४·१ | ९ | ४१ | ” | ” | १८९९ | ” | |
| ९·६×४·१ | ९ | २९ | ” | ” | | ” | ससूचीपत्रम्। |
| १०·६×४·७ | १० | ३१ | ” | ” | | ” | |
| ७·३×९·८ | ११ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ९·६×४·१ | १० | ३० | ” | ” | १७७८ | अपू० | |
| १०·२×४·९ | १० | ३४ | ” | ” | १९१९ र.का. १४३१ | पू० | |
| १०·१×४·४ | ९ | ३३ | ” | ” | र.का. १४३१ | ” | |
| १२·२×९·६ | १० | ३० | ” | ” | १७३२ र.का. १४४१ (?) | ” | |
| ९·९×३·४ | ११ | ९० | वङ्ग. | ” | | अपू० | |
| ८·३×३·८ | ८ | ३९ | दे. ना. | ” | | ” | |
| १३·३×३·६ | ८ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| १०·४×४·४ | ९ | १८ | वङ्ग | ” | | पू० | स्वास्थ्यरक्षणविधिः पथ्यापथ्यविवेको वा। |
| ११·१×४·६ | १० | ३९ | दे. ना. | ” | श. १७९३ | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४८४१ | चरकसंहिता | | १३३ । (गणनया) |
| ४४८४२ | ” | चरकः | १-३६,३६ = ३७,३७-४१, ४३-४९,४०-४४, ४६-८३, ८३-११६, १-३१, १-५८, १-५६, १-२४, १-१८, १८-६०, ६०-२५२, १-२२, २-४८ । |
| ४४८४३ | माधवनिदानम् | माधवः | १-६८, ७२-८० । |
| ४४८४४ | ” | | १-१०७ । |
| ४४८४५ | ” | | १-५, ११-१३१ । |
| ४४८४६ | अष्टाङ्गहृदयम् | | १-६२ । |
| ४४८४७ | ” | | १०-१३२, १३-२०, २४ । |
| ४४८४८ | अष्टाङ्गहृदयं सटीकम् | | ४-२१ । |
| ४४८४९ | भावप्रकाशः | भावमिश्रः | १-४४,४४-५१,५३-७६,७६-३०७,३०९-४१२, ४१४-४९१, ४९१-५५८, ५६०-५७२, ५७५-५९३, ५९५-६३३ । |
| ४४८५० | ” | ” | १-२६ । |
| ४४८५१ | ” | ” | १-१०, १-११, १३-२२, २६-१४४, १४७-२२८, २२८-२५०, २५२-४१९, ४२१-४५२ । |
| ४४८५२ | चिकित्साकलिका | तीसटः (?) | १-३३ । |
| ४४८५३ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १-२, ९-९४ । |
| ४४८५४ | ” | ” | १-५८ । |
| ४४८५५ | ” | ” | १-१८, २०-९७ । |
| ४४८५६ | ” | ” | २४-१११ । |
| ४४८५७ | ” | ” | १-३, ५-६६, ६६-७३ । |
| ४४८५८ | ” | ” | १-३१, ३१-१२३ । |
| ४४८५९ | ” | ” | २-५, १४+१ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११·७×१·९ | ४ | ५९ | वङ्ग | ता.प. | | अपू० | |
| १२·६×४·९ | ९ | ४२ | ” | का. | १७५६<br>श. १६२१ | ” | सिद्धिस्थानान्ता। |
| १४×३ | ६ | ४४ | ” | ” | | ” | |
| १०×४·४ | ९ | ३७ | दे.ना. | ” | | ” | |
| ८×४·४ | ८ | १२ | ” | ” | १२६०<br>वङ्गाब्दः | ” | |
| ११·३×५·४ | १२ | ४१ | ” | ” | | ” | |
| १०·७×४·६ | १० | २५ | ” | ” | | ” | |
| १३·८×५ | १२ | ५१ | ” | ” | | ” | |
| १२×५·४ | १० | ४२ | ” | ” | १९०२ | ” | |
| १२·४×५·५ | १३ | ४४ | ” | ” | | ” | |
| १२·६×६·५ | १४ | ४४ | ” | ” | १८४९ | ” | |
| १०·७×५·६ | ११ | ३० | ” | ” | | ” | |
| ११·४×४·३ | १० | ५३ | ” | ” | १८३(?) | ” | |
| १२·६×६·४ | १६ | ४४ | ” | ” | १८३८ | पू० | |
| १३·८×५·४ | १० | ४६ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·५×४·६ | ११ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| १३·१ × ३·२ | ९ | ६७ | वङ्ग. | ” | | ” | |
| ९·४×३·९ | ११ | ४० | दे.ना. | ” | | ” | |
| १०·१×३·६ | १२ | ३६ | वङ्ग | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरण |
|---|---|---|---|
| ४४८६० | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | २०-२२, २४ २६, २९, ३१-३८, ४२-५०, ५८-६७, ६९ +२ । |
| ४४८६१ | ” | ” | १-१२, १४-२०, २३-२५, २८-३२, ३४, ३६-४१, ४४-५० । |
| ४४८६२ | चिकित्सातत्त्वसङ्ग्रहः | वङ्गसेनः | ८-४९, ५१-६८, ७०-९७, ९७-१६६, १६८-१९९, २०१-२०५, २०७-२५१, २५१-४१९, ४२१ । |
| ४४८६३ | ” | ” | १-३३, ३३-५४, ५४-११७, ११७, ११७-१८३, १८५-२५६, २५६-२९७, २९७-३२३, ३२३-३३६, ३३६-३६७, ३६७-४३४, ४३६-४८६, ४८८-५०७ + २ । |
| ४४८६४ | द्रव्यगुणशतश्लोकी | त्रिमल्लः | १-९ । |
| ४४८६५ | मदनविनोदनिघण्टुः | मदनपालः | ५-६, ८-३२, ३४-४१, ३-१२, +१, १३-१८, १-१४, १-३५ । |
| ४४८६६ | ” | ” | १-२, २-१९, १९-९६ । |
| ४४८६७ | ” | ” | १२-२०, २३, २५-४१, ४३-४४, ५५-५६, ५८ । |
| ४४८६८ | शार्ङ्गधरसंहिता सटीका | टी: का० आढमल्लः | १-८, १० ३७, ६-५५, ५७-७५, (=७६) ७७-१३८, १-२७, १-८१, १-२८, ३१-६४ ६७-८१, ८३-९१ । |
| ४४८६९ | सुश्रुतटीका | डल्हणः | १, ११२-१६५, १६७-२१३, २१५-२४८, +१, १-१०, १-९, १-९, १-११ । |
| ४४८७० | चरकसंहिता | | ५-१९, १-१५, १५-१८, १-७२, १-३१, १-१५, १-१२, १-१४, १६-४४ । |
| ४४८७१ | भावप्रकाशः | भावमिश्रः | १-२०३, १-१४५, १४७-२९५ । |
| ४४८७२ | चरकसंहिताटीका | चक्रदत्तः | १-५, १-१६ । |
| ४४८७३ | लक्ष्मणोत्सवः | लक्ष्मणसेनः | १-५, ७-६३, ७२-८१, ८३-८६, ८८ । |
| ४४८७४ | वैद्यविनोदः | शङ्करः | १-१७ । |
| ४४८७५ | ” | ” | १-७६ + १ । |
| ४४८७६ | त्रिशती | शार्ङ्गधरः | १-२७, २९-३० । |
| ४४८७७ | ” | ” | १-२९ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·३×३·६ | ९ | ४० | वङ्ग | का. | | अपू० | मध्यमखण्डः। |
| ९·९×३·८ | ८ | ३० | ” | ” | | ” | उत्तरखण्डः। |
| ११·६×४·८ | ९ | ४१ | दे.ना. | ” | १८९० | ” | चिकित्सासारसङ्ग्रहो वा। |
| ११·७×६·१ | १२ | ३९ | ” | ” | १८१० | ” | चिकित्सामहार्णवो वा। |
| ९·८×४·७ | १० | ३४ | ” | ” | | पू० | |
| ९·१×४·४ | २२ | २९ | ” | ” | | अपू० | शार्ङ्गधरसंहिता च। |
| ८·९×४·७ | ८ | २९ | ” | ” | | ” | |
| १०·१×४·२ | १० | ४३ | ” | ” | | ” | |
| १०·७×४·६ | ८ | ४० | ” | ” | १९२९ | ” | |
| १३·९×९·९ | १० | ९६ | ” | ” | १९३३ | ” | |
| १२·८×६·३ | १४ | ३९ | ” | ” | १९०८ | ” | |
| १२·७×४·८ | ८ | ४९ | ” | ” | १८७९ | ” | |
| १३·९×९·४ | ८ | ९२ | ” | ” | | पू० | आयुर्वेददीपिका। इन्द्रियस्थानस्य। |
| १२×४·९ | ११ | ४३ | ” | ” | | अपू० | |
| ११·२×४·२ | ६ | २६ | ” | ” | | ” | |
| १०·१×९·४ | ११ | ३८ | ” | ” | | पू० | |
| १०·४×४ | ८ | ३४ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·६×४·३ | १० | २९ | ” | ” | १८४७ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४८७८ | वैद्यवल्लभः | | ३-६, ११-१३, १५-१७। |
| ४४८७९ | वैद्यवल्लभः सानुक्रमः | हस्तिरुचिः | १-२९+१। |
| ४४८८० | पथ्यापथ्यविनिश्चयः | | १-३०। |
| ४४८८१ | वैद्यभास्करोदयः | धन्वन्तरिः | १-२६। |
| ४४८८२ | आनन्दमाला सटीका | आनन्दसिद्धः | १, ६-२०, २२-२८+७। |
| ४४८८३ | अजीर्णमञ्जरी | काशीनाथः | १-३। |
| ४४८८४ | अमृतमञ्जरी | ” | १-११। |
| ४४८८५ | रामविनोदः | | १-७३। |
| ४४८८६ | हरिवन्दनसङ्ग्रहः | दामोदरमिश्रः | १-१८, १८-२४१। |
| ४४८८७ | वैद्यरत्नम् | | १-१८, २०-२१, २३-३०। |
| ४४८८८ | चिकित्सासारकौमुदी | | १-२४, ३५-१०२, १०४-११०, २-८। |
| ४४८८९ | चिकित्सासारः | क्षेमङ्करमिश्रः | ८-३४, ३६, ३८-४०, ४३-५०, १०१-१०९। |
| ४४८९० | शार्ङ्गधरसंहिता | | २८। |
| ४४८९१ | चिकित्साकलिका | तीसटः | १। |
| ४४८९२ | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | १-१०। |
| ४४८९३ | ” | ” | १-९। |
| ४४८९४ | ” | ” | १-२०। |
| ४४८९५ | ” | | १-२२। |
| ४४८९६ | ” | लोलिम्बराजः | १-१०। |
| ४४८९७ | वैद्यामृतम् | मोरेश्वरः | १, ३-१७। |
| ४४८९८ | ” | ” | १-१२। |
| ४४८९९ | ज्वरतिमिरभास्करः | कायस्थचामुण्डः | १-२८। |
| ४४९०० | वैद्यचन्द्रोदयः | त्रिमल्लः | १-८। |
| ४४९०१ | योगतरङ्गिणी | | ३-१४। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·३×९·३ | १० | ३४ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ८·६×४·७ | ११ | २९ | ” | ” | १८०६ | पू० | |
| ११·२×४·४ | १० | ४० | वङ्ग. | ” | | ” | |
| १३·२×७·१ | १४ | ४६ | दे. ना. | ” | १८८८ | ” | |
| १२·१×१० | ३३ | ३१ | ” | ” | | अपू० | टीका-हिन्दीभाषायाम् । |
| १२·९×४·३ | १३ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| ८·३×४·१ | ९ | २० | ” | ” | १८६७ | पू० | |
| १२·३×९·७ | १२ | ३८ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·९×४·३ | ११ | २१ | ” | ” | | ” | |
| ९·२×७·२ | ११ | १६ | ” | ” | | ” | |
| १४×१·४ | १३ | ९० | वङ्ग. | ” | | ” | |
| १२·१×९ | १२ | ९२ | दे. ना. | ” | | ” | |
| ९·८×४ ३ | ८ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| १०·३×४·४ | ७ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| १०·१×९·२ | १७ | ४० | ” | ” | | पू० | |
| १०·१×३·३ | १३ | ६२ | ” | ” | | ” | |
| ९·४×४·२ | ८ | ३९ | ” | ” | १८८६ | ” | |
| ९·९×४·६ | १० | २७ | ” | ” | १८०४ | ” | |
| ११·२×४·४ | १२ | १९ | ” | ” | १७२९ | ” | |
| ९·९×४·३ | ६ | ३३ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·६×४·२ | ११ | ४१ | ” | ” | १८८७ | पू० | |
| १२·८×६·२ | १७ | ९१ | ” | ” | | ” | |
| १२·६×४·८ | १० | ९४ | ” | ” | | ” | षड्ऋतुवर्णनञ्च । |
| ९·६×४·८ | ८ | २७ | ” | ” | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४९०२ | योगतरङ्गिणी | त्रिमल्लः | १-३९ । |
| ४४९०३ | शिशुरक्षारत्नम् | | १-१८ । |
| ४४९०४ | ,, | पृथ्वीमल्लः | २-३९ । |
| ४४९०५ | वीरसिंहावलोकः | वीरसिंहः | १-७७, १-२ । |
| ४४९०६ | चिकित्सामृतसङ्ग्रहः | गणेशभिषक् | ११६-१२१ । |
| ४४९०७ | आयुर्वेदपरिभाषा | | १-१० । |
| ४४९०८ | ,, | | १-२७ । |
| ४४९०९ | चक्रशेषः | | २-५२, ५४-९६ । |
| ४४९१० | पथ्यापथ्यविनिश्चयः | | १-१६+१, १७-६६ । |
| ४४९११ | ,, | | १-३० । |
| ४४९१२ | योगोक्तिलीलावती | गोविन्ददेवः | १, ३-१६, २, २-३, १३ । |
| ४४९१३ | योगचन्द्रिका | लक्ष्मणः | १-१७ । |
| ४४९१४ | ,, | ,, | १-६८, ८०-१०५ । |
| ४४९१५ | ,, | ,, | १-३७, ४२-५९ । |
| ४४९१६ | वैद्यरहस्यम् | | २-८० । |
| ४४९१७ | वैद्यकुतूहलम् | वंशीधरः | १-२१ । |
| ४४९१८ | क्वाथकल्पना | | १-६ । |
| ४४९१९ | अश्ववैद्यकम् | जयदत्तः | १-१२०, १-८० । |
| ४४९२० | सिद्धयोगसङ्ग्रहः | | १-३, ७, ९-५४, ५७-८९, ९१-१०४, १०६-१२५, १२५-१९५ । |
| ४४९२१ | पालकाप्यम् | | १-९०, २१२ । |
| ४४९२२ | चरकसंहिताटीका | चक्रपाणिः | १-२२ । |
| ४४९२३ | योगशतकम् | | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | भाषाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·२×६·३ | ८ | २४ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ११×७·१ | १८ | ३६ | ” | ” | | ” | |
| १२·४×६·१ | १२ | ६३ | ” | ” | १६७२ | ” | |
| १०·६×६·८ | १७ | ४७ | ” | ” | | पू० | |
| १२·६×५·७ | १४ | ३७ | ” | ” | | अपू० | शूलचिकित्साप्रकरणम् । |
| १२·९×३·२ | ८ | ६० | वङ्ग. | ” | | ” | अव्यक्तानुक्तलेशोक्तसन्दिग्धार्थ-प्रकाशिका । |
| १४·२×२·९ | ६ | ४७ | ” | ” | | पू० | ” |
| १३·९×३·९ | ६ | ४७ | ” | ” | | अपू० | चक्रपाणिकृतचक्रदत्तग्रन्थस्य परि-शिष्टभागः सटीकः । |
| ९·७×३·८ | ६ | २१ | ” | ” | | ” | |
| १७·२×४·२ | ८ | ६३ | ” | ” | | पू० | |
| ९·८×३·७ | ७ | २८ | दे. ना. | ” | १७४०<br>श. १६०६ | अपू० | |
| १०·६×४·६ | ९ | ३० | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·३ | ८ | ३९ | ” | ” | १७७६ | ” | |
| १०·७×४·८ | १४ | ४६ | ” | ” | | ” | |
| १०·९×४·७ | १० | ४४ | ” | ” | | ” | |
| १३·७×७·१ | ८ | ३६ | ” | ” | १९३६ | पू० | |
| १६·२×४·२ | ७ | ६१ | वङ्ग. | ” | | अपू० | शार्ङ्गधरसंहितायाम् । |
| ६·६×८·१ | ९ | १९ | दे. ना. | ” | | पू० | नकुलकृताश्वचिकित्सा च । |
| १३·४ × ९·३ | ७ | ४१ | ” | ” | | अपू० | अश्वचिकित्साग्रन्थः । |
| १२·९×४·८ | ९ | ४६ | ” | ” | १८४७ | ” | हस्त्यायुर्वेदो वा । |
| ९·८×६·४ | १६ | ४९ | ” | ” | | ” | विमानस्थानस्य । |
| १०·२×४·६ | १९ | ४१ | ” | ” | | पू० | सारसङ्ग्रहो वा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४९२४ | बहुमूत्रादिचिकित्सा | | १-४ । |
| ४४९२५ | अव्यक्तसङ्ग्रहणम् | यशोवीरः | १-५ । |
| ४४९२६ | गन्धककल्पः | | १-५ । |
| ४४९२७ | तक्रकल्पः | पराशरमुनिः | १-१४ । |
| ४४९२८ | औषधकल्पः | | १-३४ । |
| ४४९२९ | अर्कप्रकाशः | लङ्कानाथः | १-४ । |
| ४४९३० | ,, | ,, | १-४९ । |
| ४४९३१ | ,, | ,, | १-४८ । |
| ४४९३२ | पाकावली | हरिवंशात्मजः | १-२९ । |
| ४४९३३ | ,, | | १-९ । |
| ४४९३४ | ,, | | १-१३, १५-१७ । |
| ४४९३५ | ,, | | १-१९, १५-२८ । |
| ४४९३६ | वैद्यजीवनम् | | २-५ । |
| ४४९३७ | वैद्यजीवनं सटीकम् | लोलिम्बराजः टी.का. रुद्रभट्टः | १-४५ । |
| ४४९३८ | ,, | ,, | १-४२ = (४३), ४४-४७ । |
| ४४९३९ | बालचिकित्सा | कल्याणः | १-२६, ३१-४१ । |
| ४४९४० | टोडरानन्दः | | ८, १२, १४-१५, १७-२३, २९, ३१, ३३, ३९, ४१, ४३-४६, ५९, ६१-६८, ७२ । |
| ४४९४१ | सिद्धमन्त्रप्रकाशः | वोपदेवः | १-३६, ३८ (= ३९), ३९-५९ । |
| ४४९४२ | शतश्लोकी | | ४-१४ । |
| ४४९४३ | शतश्लोकी सटीका | वोपदेवः, टी०का०-वोपदेवः | १-२०, २२-४८, ४८-५१ । |
| ४४९४४ | ,, | ,, | १-३१, ३१-३८ । |
| ४४९४५ | ,, | ,, | १-३१ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·९×३·९ | ९ | ३० | वङ्ग. | का. | | अपू० | रोगलक्षणं वा। |
| १४×३·६ | ७ | ९२ | ” | ” | | ” | |
| ८·९×४·७ | २३ | १९ | दे. ना | ” | | पू० | |
| ९·४×४·६ | १२ | २२ | ” | ” | | ” | |
| ११×४·९ | १० | ३१ | ” | ” | १९३७ | ” | |
| ९·३×६ | १९ | ३८ | ” | ” | | ” | अर्कचिकित्सा वा। प्रथमशतकमात्रम्। |
| १०·५×९·९ | ९ | ३६ | ” | ” | १८०९ | ” | अर्कचिकित्सा वा। |
| ९·६×४·२ | ९ | ३५ | ” | ” | १८४६ | ” | ” |
| १४×९·९ | ९ | ४४ | ” | ” | १९२२ | ” | |
| १०×९·२ | १९ | ३६ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·२×४·९ | १० | २३ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×४·२ | ९ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| ६·६×३·९ | ४ | १९ | ” | ” | | ” | |
| १०×४·३ | ७ | ३७ | ” | ” | श. १७३७ ११९ (?) | पू० | टीका-दीपिका। |
| १२·६ × ४·७ | ११ | ४७ | ” | ” | | ” | ” |
| ९·८×४·२ | ७ | २८ | ” | ” | | अपू० | बालतन्त्रं वा। |
| १०·२×४·७ | ९ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×४·३ | ९ | २७ | ” | ” | १८४८ | ” | |
| ११·१×४·९ | ७ | २८ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×९·६ | १२ | ३४ | ” | ” | १९१९ | ” | टीका-चन्द्रकला, अन्ते नाडीपरीक्षा। |
| ९·६×३·९ | १० | ३३ | ” | ” | १८४ (?) | पू० | |
| ११·३×९·२ | १२ | ४१ | ” | ” | | अपू० | टीका-चन्द्रकला। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४९४६ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १-२० । |
| ४४९४७ | योगरत्नावली सटीका | | ३० । (गणनया) |
| ४४९४८ | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | ३७-४८ । |
| ४४९४९ | आतङ्कदर्पणः | | ६-३० । |
| ४४९५० | मदनविनोदनिघण्टुः | मदनपालः | १-३३ । |
| ४४९५१ | वाग्भटः | | ३-१६ । |
| ४४९५२ | बालचिकित्सा | | १-७ । |
| ४४९५३ | त्रिफलाकल्पः | | १-२ । |
| ४४९५४ | वैद्यजीवनम् | | १-१० । |
| ४४९५५ | माधवनिदानम् | | २४-४६ । |
| ४४९५६ | रोगपरीक्षणम् | | १-५ । |
| ४४९५७ | रसविनोदः | | २४ । (गणनया) |
| ४४९५८ | कल्पावली | | २-७ । |
| ४४९५९ | वैद्यसर्वस्वम् | | १-८, १२-१३, १७-२४ । |
| ४४९६० | त्रिशती | | १६-२२ । |
| ४४९६१ | माधवनिदानम् | माधवः | ६-२८, ३२-३३, ३५-५६ । |
| ४४९६२ | मूत्रपरीक्षा | | १-२ । |
| ४४९६३ | वैद्यामृतम् | मोरेश्वरभट्टः | १, ३-२४ । |
| ४४९६४ | द्रव्यगुणसङ्ग्रहः | | १-३ । |
| ४४९६५ | माधवनिदानं सटीकम् | माधवकरः टीकाकारौ- विजयरक्षित श्रीकण्ठदत्तौ | १-१० । |
| ४४९६६ | अश्वचिकित्सा | जयदत्तः | १, ३-४ । |
| ४४९६७ | प्रयागसङ्ग्रहः | प्रयागः | ९-२९ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·६×४·६ | ९ | ४६ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०·३×४·९ | ९ | ३२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·९×३·७ | ९ | २४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·७×४·३ | ९ | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ११·१×४·६ | ९ | ३७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १३·९×९·२ | ९ | ४१ | ,, | ,, | | ,, | अष्टाङ्गहृदयं वा। |
| १३·९×९ ३ | ६ | २६ | ,, | ,, | | ,, | वालतन्त्रं वा। |
| ८·३×३ | ९ | २९ | ,, | ,, | | पू० | |
| १०·७×९·४ | ११ | ३४ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·७×४·२ | ११ | ९९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८×४ | १० | ३४ | ,, | ,, | | ,, | |
| १३·९×९·४ | ११ | ४९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·९×३·९ | १३ | ४९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·९×४ | ८ | २८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ११·१×४·७ | ८ | २६ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·९×४·४ | १० | ३२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·४×४·२ | १४ | ३२ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·१×४·९ | ९ | १६ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·७×४·३ | ८ | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·४×४·६ | ८ | ३१ | ,, | ,, | | ,, | |
| १० × ४·३ | ९ | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·६×८ | १४ | २६ | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४९६८ | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | १-८ । |
| ४४९६९ | चक्रदत्तः सटिप्पणः | चक्रपाणिः | १-१९२ । |
| ४४९७० | चक्रदत्तः | | ३-३९, ३९-४६, ४६-१९२, १९४-२१८, २१८-२३४+२ । |
| ४४९७१ | भोजनकुतूहलम् | रघुनाथः | ९-४२ । |
| ४४९७२ | क्षेमकुतूहलम् | क्षेमशर्मा | १-११ । |
| ४४९७३ | नलपाकदर्पणः | नलः | १-२४ । |
| ४४९७४ | औषधप्रतिनिधिकल्पना | | १-६ । |
| ४४९७५ | धन्वन्तरिनिघण्टुः | | १-२, ४-१० । |
| ४४९७६ | राजवल्लभः | नारायणदासः | २-२९ । |
| ४४९७७ | ” | ” | १-१९ । |
| ४४९७८ | ” | ” | १-६ । |
| ४४९७९ | भल्लातकपाकः | | १ । |
| ४४९८० | चरकसंहिता | | १-१९ । |
| ४४९८१ | नाडीपरीक्षा | | १-३ । |
| ४४९८२ | शतश्लोकी | त्रिमल्लकविः | १-३, १७-१९ । |
| ४४९८३ | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | १-४, ६-३३, ३६-४२ । |
| ४४६८४ | नाडीपरीक्षा | | १ । |
| ४४९८५ | माधवनिदानम् | माधवः | १, ९, १३-३८, ४०-४९, ४७, ४९-९० । |
| ४४९८६ | रसरत्नसमुच्चयः | | १, ४-२९, ३२-३९+१ । |
| ४४९८७ | रुग्विनिश्चयः | | ६२-६९ । |
| ४४९८८ | वैद्यदर्पणः सटीकः | | १-६ । |
| ४४९८९ | शार्ङ्गधरसंहिता सटीका | शार्ङ्गधरः टी० का० आढमल्लः | १-२६, २६-४९ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | काण्डाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११·६×९·९ | १० | ३७ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १८×३·४ | ६ | ८४ | ,, | ,, | | ,, | बालरोगान्तचिकित्सासङ्ग्रह-ग्रन्थः। |
| १६·१×३ | ६ | ७९ | ,, | ,, | श. १४६९ | ,, | |
| १३·९×४·९ | ११ | ९७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १३·०×९·३ | ९ | ९४ | ,, | ,, | १९९१ | पू० | |
| १३·८×९·९ | १० | ४९ | ,, | ,, | १९९१<br>१८९४ ई० | ,, | |
| ९·८×३·७ | ७ | २९ | ,, | ,, | १८२९ | ,, | |
| ९·८×९·९ | १९ | ३० | ,, | ,, | | अपू० | षष्ठोऽध्यायः। |
| १७·२×३·४ | ६ | ७२ | वङ्ग. | ,, | | ,, | द्रव्यगुणप्रकरणम्। |
| १७×४ | ७ | ९७ | ,, | ,, | | पू० | ,, |
| १६·९×४·३ | ८ | ९२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १२·६×४·९ | १० | ४७ | दे.ना. | ,, | | पू० | |
| १०·७×६·८ | १४ | ३७ | ,, | ,, | १९१३ | ,, | १-८ अध्यायाः, निदानस्थानमात्रम्। |
| ९·५×९·१ | १९ | ४० | ,, | ,, | | ,, | |
| ११×४·७ | ७ | ३१ | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·४×३·४ | ८ | २२ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·३×४·९ | १० | ३८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·९×९·४ | १२ | ३९ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·९×४·९ | १० | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ११×९ | ११ | ३४ | ,, | ,, | | ,, | माधवनिदानं वा। |
| १०·३×४·९ | ११ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | टीका–हिन्दीभाषामयी। |
| १०·९×४·८ | १२ | ९० | ,, | ,, | | ,, | टीका–दीपिका। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४४९९० | वैद्यकसङ्ग्रहः | | १-३, १-३, ५-७, १-४, ६-९, १-३, १-४७, १-१२, १-१७, १४-१६, १८-२०, १-४, १-२, १३, १३, १, १-६०, ६२-६८। |
| ४४९९१ | वैद्यकौस्तुभः | मेवाराममिश्रः | ९१-८७, १०४-१०७, ११८-१२३। |
| ४४९९२ | रत्नमाला | नरसिंहकविराजः | १-५९, ५९-६५, ६७। |
| ४४९९३ | वैद्यकरसायनम् | | १-१६। |
| ४४९९४ | रसराजः | | १-२६। |
| ४४९९५ | रसप्रदीपः सटीकः | | १-११। |
| ४४९९६ | रसचन्द्रिका | माधवः | १-३४। |
| ४४९९७ | रसरत्नम् | नाथः | १-१४। |
| ४४९९८ | रसकौतुकम् | मल्लारिः | १-२१। |
| ४४९९९ | रसमञ्जरी | शालिनाथः | १-५६, ५९-६४। |
| ४५००० | " | " | १-५, ७-१५, १७-१८, १८-२६। |
| ४५००१ | " | " | १-२६। |
| ४५००२ | " | " | १-३७। |
| ४४००३ | चिकित्सादर्पणसूचीपत्रम् | | १-७। |
| ४५००४ | वैद्यसिद्धान्तकौमुदी | | ९-१०, १२, १२-२४। |
| ४५००५ | शार्ङ्गधरसंहिता सटीका | शार्ङ्गधरः | १-५। |
| ४५००६ | " | " टी० का०- आढमल्लः | ३८-३९। |
| ४५००७ | " | शार्ङ्गधरः टी० का०- वोपदेवः | १-१६। |
| ४५००८ | " | " " | १-७, ९-१३, १५। |
| ४५००९ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १। |
| ४५०१० | " | " | ३३-३७, ३९, ४१, ४४, ४७। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आदर्शः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·३×४·२ | १० | २९ | दे. ना. | का. | | अपू० | पाकःव्रणशोथचिकित्सा, वीरसिंहावलोकः, शार्ङ्गधरसंहिता, योगतरङ्गिणी च। |
| ४·७×९·३ | ९ | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ११·७×४·३ | ९ | ४१ | वङ्ग. | ,, | | ,, | |
| ८·७×४·६ | ८ | १९ | दे. ना. | ,, | | पू० | रसाधिकारः। |
| ९·२×४·१ | ८ | २९ | ,, | ,, | १६९२ | ,, | पारदप्रक्रियान्तः। |
| १४×९·७ | १२ | ४६ | ,, | ,, | | अपू० | टीका-हिन्दीभाषायाम्। |
| १७×३·७ | ६ | ७० | वङ्ग. | ,, | | पू० | १-३ अध्यायाः। |
| १३·९×९·३ | १३ | ४८ | दे. ना. | ,, | १९०६ | ,, | १-६ उपदेशाः। |
| १०·४×४·७ | १० | ३७ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १४·९×३·७ | ४ | ४१ | वङ्ग. | ,, | | ,, | |
| ९×६·१ | १६ | ३९ | दे. ना. | ,, | | ,, | |
| ६×७·८ | २१ | २१ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·१×४·९ | ८ | ३९ | ,, | ,, | | पू० | |
| १४×३·७ | ८ | ९१ | वङ्ग. | ,, | | अपू० | |
| ८·७×१३·९ | २९ | ३० | दे. ना. | ,, | | ,, | |
| १०·९×४·६ | ७ | ३१ | ,, | ,, | | ,, | नाडीपरीक्षाभागः पूर्णः। |
| १०·७×४·९ | ८ | ३७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·९×९·९ | १० | ४६ | ,, | ,, | | ,, | टीका-दीपिकाख्या। |
| १२·९×६·७ | १९ | ९६ | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| १२·३×९·२ | ११ | ९७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०×४·९ | १२ | ३३ | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९०११ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १०६, १०८-१२३ । |
| ४९०१२ | ” | ” | १९-२७, २९ । |
| ४९०१३ | ” | ” | ९-१६, १८-२१, २३-२४ । |
| ४९०१४ | ” | ” | १३-२६ । |
| ४९०१५ | ” | ” | १-७ । |
| ४९०१६ | ” | ” | १, ९१-९२, ९२-१११, ११३-१२८ । |
| ४९०१७ | ” | ” | १, ३-२५, २७-२९ । |
| ४९०१८ | नाडीविज्ञानम् | गोविन्दरामसेनः | १-१० । |
| ४९०१९ | नाडीप्रकाशः | | १-८ । |
| ४९०२० | ” | शङ्करसेनः | १-८ । |
| ४९०२१ | अञ्जननिदानम् | अग्निवेशः | १-२६ । |
| ४९०२२ | ” | ” | १-२० । |
| ४९०२३ | माधवनिदानं सटीकम् | माधवकरः टी० का०– वाचस्पतिः | १-७९ । |
| ४९०२४ | ” | माधवकरः | १-९ + १ । |
| ४९०२५ | ” | माधवकरः टी० का०– वाचस्पतिः | १-३९ । |
| ४९०२६ | ” | ” | १-२०१ + १ । |
| ४९०२७ | माधवनिदानम् | माधवकरः | १-१० । |
| ४९०२८ | माधवनिदानं सटीकम् | माधवकरः टी०का० विजयरक्षित-श्रीकण्ठदत्तौ | १-२३, २३-२६, २५-१४४ । |
| ४९०२९ | योगशतकं सटीकम् | | ३-२८ । |
| ४९०३० | द्रव्यगुणशतश्लोकी | | १ ७ । |

| आकार: | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपि: | आधार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण-विवेक: | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·९×४·९ | ७ | ३७ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९·७×४·३ | ९ | ४० | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·९ | १० | २८ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·२ | १० | ४३ | ” | ” | | ” | |
| १०·१×४·६ | ९ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| ९·९ × ४·९ | ९ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·३ | ८ | ३७ | ” | ” | | ” | |
| १३×३ | ६ | ९० | वङ्ग. | ” | | पू० | |
| ९×२·९ | ९ | ३७ | ” | ” | | ” | १३-१४ अध्यायौ, आयुर्वेदलोचनञ्च, |
| १०·७×४·२ | ११ | ४७ | दे.ना. | ” | | अपू० | |
| ९·७×४·३ | ६ | २० | ” | ” | | ” | |
| ७·१×४·२ | ८ | २२ | ” | ” | | पू० | |
| १०·९×९·१ | १२ | ३९ | ” | ” | | अपू० | टीका–आतङ्कदर्पणाख्या, इतिनामान्तरं । |
| ११×९ | ६ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| १२·७×४·८ | ११ | ६१ | ” | ” | | ” | टीका-आतङ्कदर्पणाख्या । |
| | | | | | | | ” |
| १२·१×६·१ | ११ | ३८ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×३ | ९ | ४१ | ” | ” | | ” | रोगविनिश्चय इतिनामान्तरम् । |
| १६×६·६ | १३ | ९८ | ” | ” | | ” | टीका-मधुकोषाख्या । |
| ८·६×४·१ | ९ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×४·७ | १३ | ३३ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९०३१ | द्रव्यगुणशतश्लोकी | त्रिमल्लभट्टः | १-११ । |
| ४९०३२ | ” | ” | १-२० । |
| ४९०३३ | धन्वन्तरिनिघण्टुः | | १-२८, ३०-४८ । |
| ४९०३४ | ” | | १-५८ । |
| ४९०३५ | निघण्टुः | महेन्द्रवैद्यः | ९-३५ । |
| ४९०३६ | द्रव्यगुणविमर्शः | | १-९, १८-२९ । |
| ४९०३७ | रसमञ्जरी | शालिनाथः | १-४५ । |
| ४९०३८ | ” | ” | १-१७ । |
| ४९०३९ | रसरत्नसमुच्चयः | | १-१०१, ११२-११७ । |
| ४९०४० | ” | | १-१२३ । |
| ४९०४१ | धातुमञ्जरी | | २-८९ । |
| ४९०४२ | सर्वसङ्ग्रहः | | १-१२ । |
| ४९०४३ | लघुसङ्ग्रहः सटिप्पणः | | १-५७ । |
| ४९०४४ | योगशतं सटीकम् | | १-६५, ६८-९४, ९६-१००+१ । |
| ४९०४५ | नाममालाशब्दसङ्केत-कलिका | धन्वन्तरिः | १-६४ । |
| ४९०४६ | नाडीपरीक्षा | | १-२ । |
| ४९०४७ | पाकावलिः | | १-३४ । |
| ४९०४८ | योगशतबन्धः सटीकः | | १-२१ । |
| ४९०४९ | योगचन्द्रिका | लक्ष्मणः | १-११० । |
| ४९०५० | अजीर्णमञ्जरी | काशिराजः | १-४ , |
| ४९०५१ | अञ्जननिदानं सटीकम् | अग्निवेशः | १-१५ । |
| ४९०५२ | अर्कप्रकाशः | रावणः | ३९-६९ । |
| ४९०५३ | भावस्वभाववादः | | १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·१×४·२ | ८ | ४७ | वङ्ग. | का. | १८४९ | पू० | |
| ९·८×४·२ | ७ | २७ | दे.ना. | ,, | | ,, | |
| ९·९×४·७ | ११ | ३० | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·७×६ | १२ | २६ | ,, | ,, | | ,, | |
| १३·६×४·२ | ९ | ४१ | वङ्ग. | ,, | श० १९९२ | ,, | पुष्पिकायाम् निर्घण्टुरिति । |
| १०×३·६ | ८ | ३४ | दे.ना. | ,, | १६८० | ,, | |
| १०·२×४·७ | ११ | ३७ | ,, | ,, | | पू० | |
| १२·७×६·३ | १७ | ६३ | ,, | ,, | १८७० | ,, | |
| १०×४·२ | ९ | ३० | ,, | ,, | | अपू० | |
| १२·२×४·८ | १० | ४६ | ,, | ,, | १८९० | पू० | |
| ९·६×४·२ | ९ | ३७ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·१×४·४ | ७ | २३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·२×६.२ | १४ | ३३ | ,, | ,, | | पू० | टिप्पणम्-महाराष्ट्रभाषायाम् । |
| १०×४·९ | ११ | ३९ | ,, | ,, | | अपू० | सारसङ्ग्रहो वा, टीका हिन्दीभाषायाम्। |
| ९·८×४·३ | ७ | ४३ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·४×४·४ | ९ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·२×४·६ | ८ | ३४ | ,, | ,, | १९१९ | ,, | |
| १०·३×४·९ | ९ | २६ | ,, | ,, | | ,, | टीका-गुर्जरभाषायाम् । |
| १२·६×९·२ | ९ | ३७ | ,, | ,, | श० १६१४ | ,, | |
| १०×४·४ | १० | ४० | ,, | ,, | १८९१ | ,, | |
| १०·३×४·९ | ९ | ४३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·३×४·६ | ८ | ३१ | ,, | ,, | १९१९ | ,, | |
| ९×४·७ | ८ | २९ | ,, | ,, | | ,, | वस्तुगुणदोषविनिश्चयात्मकः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९०६४ | सुश्रुतसंहिता | | १११-१२३, १२३-१२९ । |
| ४९०६५ | योगतरङ्गिणी | त्रिमल्लभट्टः | १-१४ । |
| ४९०६६ | नाडीपरीक्षा | | २-८, १०-१४ । |
| ४९०६७ | रसहृदयम् | | १-२१ । |
| ४९०६८ | औषधपाकाधिकारः | | १-२ । |
| ४९०६९ | बालचिकित्सा | | १-११ । |
| ४९०७० | भावप्रकाशः | | १९२-१९८ ३७०-३७३ । |
| ४९०७१ | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | ५-३६ । |
| ४९०७२ | माधवनिदानम् | माधवः | २-३१, ३३-५१ । |
| ४९०७३ | शार्ङ्गधरसंहिता सटीका | टी. का. आढमल्लः | २-८ + १ । |
| ४९०७४ | अञ्जननिदानम् | अग्निवेशः | १-१९ । |
| ४९०७५ | यन्त्रचूडामणिः | | १ । |
| ४९०७६ | रसमञ्जरी | शालिनाथः | १-२७, २९-३१ । |
| ४९०७७ | रसेन्द्रचूडामणिः | सोमदेवः | १-४ । |
| ४९०७८ | द्रव्यगुणशतश्लोकी | त्रिमल्लकविः | १-११ । |
| ४९०७९ | रसकल्पवल्ली | श्रीकृष्णसेनः | १-६५, ६७-१४६ । |
| ४९०७० | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | १-१३ । |
| ४९०७१ | कालज्ञानम् | | १-१२ । |
| ४९०७२ | चरकसंहिता | | १९२-२४० । |
| ४४०७३ | चिकित्सासारः | गोपालदासः | १-७५ । |
| ४९०७४ | योगोक्ति विवेकचन्द्रः | सुन्दरदेवः | १-१४ । |
| ४९०७५ | वैद्यवल्लभः सटीकः | सिद्धस्तिरुचिः | १-१२ । |
| ४९०७६ | शतश्लोकी | वोपदेवः | १-२५ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०×४·९ | १० | ३४ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९×३·९ | ९ | ३२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·२×३·४ | १० | २३ | ,, | ,, | श. १९६० | ,, | मलमूत्रादिपरीक्षा नाडीशतञ्च । |
| ८·७×३·६ | ९ | ३८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·८×४·६ | १४ | ३१ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·१×७·१ | १० | १६ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·७×६·३ | १३ | ४८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·९×४·४ | ७ | २८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·६×४·६ | ९ | २८ | ,, | ,, | | ,, | रुग्विनिश्चयः इति नामान्तरम् । |
| १०·६×४·९ | ९ | ४२ | ,, | ,, | | ,, | टीका–शार्ङ्गधरदीपिका । |
| १०·७×३·९ | ७ | २८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·७×४·९ | १९ | ३६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·४×४ | ९ | २९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·९×४·३ | ९ | ३६ | ,, | ,, | | पू० | दिव्यौषधिलक्षणाध्यायः । |
| ७×४ | ९ | २४ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १७·८×४ | १० | ९२ | वङ्ग | ,, | वङ्गाब्दः १२४७ | पू०* | |
| ९·९×६·२ | १२ | ३४ | दे.ना. | ,, | | ,, | १-५ विलासाः । |
| ८·९×९·८ | १२ | २८ | ,, | ,, | १८८४ | ,, | १-८ उपदेशाः । |
| ११·७×९·८ | १४ | ३२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·९×३·८ | ९ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·९×५·६ | १० | ३८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·८×४·३ | ९ | २८ | ,, | ,, | | ,, | टीका–महाराष्ट्रभाषायाम् । |
| ९·६×४·३ | ७ | २९ | ,, | ,, | १७१२ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९०७७ | सारसङ्ग्रहः | | १-७, १-१०३ । |
| ४९०७८ | आयुर्वेदसङ्ग्रहः | | १-१९ । |
| ४९०७९ | आयुर्वेदग्रन्थविशेषः | | ६-७ । |
| ४९०८० | योगचन्द्रिका | लक्ष्मणः | १-१९, २१ ६८ । |
| ४९०८१ | वैद्यामृतम् | मोरेश्वरः | १-१९ । |
| ४९०८२ | शतश्लोकी सटिप्पणा | वोपदेवः | १-१७ । |
| ४९०८३ | रामबाणः | | १-३३, ३३-४३, ४३-१०४ । |
| ४९०८४ | रसरत्नाकरः | नित्यनाथसिद्धः | १-३ । |
| ४९०८५ | रसप्रयोगः | | १-३ । |
| ४९०८६ | बालचिकित्सा | | १-१२ । |
| ४९०८७ | चारुचर्चा | भोजदेवः | १-१२ । |
| ४९०८८ | माधवनिदानटीका | | २५-२८, ३०-३५ । |
| ४९०८९ | वैद्यकसारोद्धारः | | ५-६, ८-११, १३-१९ । |
| ४९०९० | माधवनिदानम् | माधवकरः | १-६ । |
| ४९०९१ | अवलेहसङ्ग्रहः | | ६०-६३ । |
| ४९०९२ | भल्लातककल्पादियोग-सङ्ग्रहः | | १-३ । |
| ४९०९३ | शार्ङ्गधरसंहिता सटीका | शार्ङ्गधरः टी.का. आढमल्लः | १-१२, १-४३६ । |
| ४९०९४ | रत्नदीपः | काशीरामः | १-५२ । |
| ४९०९५ | रसमञ्जरी | शालिनाथः | १-११ । |
| ४९०९६ | रसरत्नाकरः | नित्यनाथसिद्धः | २-१३ । |
| ४९०९७ | ,, | ,, | १२-१५, १७-३६, ४१-४२, ४५-४८, ५०-५३ । |
| ४९०९८ | ,, | | १, १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | अलङ्कारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·१×६·१ | १० | ४८ | दे.ना. | का. | | पू० | १-७ अनुक्रमणिकापत्राणि। |
| १४·१×४·६ | ८ | ४६ | वङ्ग. | ” | | अपू० | |
| १४×३·७ | ९ | ४३ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×४·८ | १४ | ४७ | दे.ना. | ” | | ” | |
| ९·९×४·२ | ८ | २८ | ” | ” | र०का० १६०३ | पू० | चतुर्थालङ्कारान्तम्। |
| १०×४·२ | ९ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×३·८ | ९ | ३६ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·४×३·७ | १६ | ६३ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×४·६ | १२ | ६१ | ” | ” | | ” | ताम्रवेधसुवर्णसिद्ध्यादिप्रकारः। |
| ९·८×४ २ | ८ | २६ | ” | ” | १७८६ | पू० | |
| ९·८×६·२ | ११ | ३६ | ” | ” | १८४७ | ” | |
| १२·४×३·३ | ८ | ६१ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·३×४·७ | ८ | २७ | ” | ” | | ” | |
| १०×४·७ | ७ | २३ | ” | ” | | ” | |
| १३·३×६·८ | १३ | ४६ | ” | ” | | ” | |
| १०·४×६·४ | १४ | ४९ | ” | ” | | पू० | |
| ११×६·७ | १० | ६२ | ” | ” | | ” | |
| १०·२×४·६ | ६ | २७ | ” | ” | | अपू० | |
| ११·१×४·६ | १० | ४६ | ” | ” | | पू० | |
| १०·१×४·४ | ११ | ५४ | ” | ” | | अपू० | |
| १०×३·७ | ७ | ३६ | ” | ” | | ” | |
| ९·८×४·४ | १० | ६० | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९०९९ | वीरसिंहावलोकः | | १-८ । |
| ४९१०० | ” | वीरसिंहः | २-९, ८-९०, ९३-९७, ६०-८७, ८९-१३३, १३९-१३८ । |
| ४९१०१ | वैद्यकसारोद्धारः सटीकः | | १-२९ । |
| ४९१०२ | ” | | १-१९ । |
| ४९१०३ | वैद्यरहस्यम् | हरिदेवः | १-२ । |
| ४९१०४ | शिवचरणाम्बुजम् | पद्मनाभः | १-९९ । |
| ४९१०५ | हृदयदीपकनिघण्टुः | वोपदेवः | १-२० । |
| ४९१०६ | अञ्जननिदानम् | | १-७ । |
| ४९१०७ | कालज्ञानम् | | १-४ । |
| ४९१०८ | चिकित्सासारः | गोपालदासः | १-६० । |
| ४९१०९ | ” | ” | १-३ । |
| ४३११० | चिकित्सामालतीमाला | रामहोशिङ्गः | १-१९९। |
| ४९१११ | अभिन्यासकालज्ञानम् | | १-२६ । |
| ४९११२ | कालज्ञानम् | | १-१९ । |
| ४९११३ | चिकित्साञ्जनम् | विद्यापतिः | १-२२ । |
| ४६११४ | मूत्रपरीक्षा | | १-३ । |
| ४९११५ | योगचिन्तामणिः सटीकः | | १-२३ । |
| ४९११६ | रसराजशङ्करः | रामकृष्णः | १-७३ । |
| ४९११७ | रसेन्द्रचिन्तामणि | रामचन्द्रः | १-२८ । |
| ४९११८ | रसेन्द्रसारसङ्ग्रहः | | १-१८ । |
| ४९११९ | चरकसंहिताटीका | चक्रपाणिदत्तः | १-२४ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·४×४·९ | १० | ३६ | दे. ना. | का. | | पू० | स्वेदाधिकारान्तः । |
| ११·८×९ | १० | ४३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·८×९·४ | ११ | ३६ | ,, | ,, | | पू० | चूर्णाधिकारमात्रम् , टीका–हिन्दीभाषायाम् । |
| १०·७×९·३ | १० | ३७ | ,, | ,, | | ,, | तैलाधिकरणमात्रम् ; टीका–हिन्दी-भाषायाम् । |
| ९·७×४ | ८ | ३६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·१×४·२ | ११ | ३७ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·७×४·६ | ६ | ३४ | ,, | ,, | | पू० | |
| १०×४·९ | १६ | ९० | ,, | ,, | | ,, | |
| ११·८×९ | १३ | ४० | ,, | ,, | | ,, | |
| १०×६ | ९ | ३० | ,, | ,, | १९३३ श. १७९८ | ,, | |
| ९·९×४·६ | ९ | २४ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९×९·९ | १० | १७ | ,, | ,, | श. १७०८ | पू० | |
| ९·९×४·१ | ८ | ३२ | ,, | ,, | १८३३ | ,, | |
| १०·९×·६ | ९ | ३६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·९ × ४·१ | ७ | ३० | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·६×४·६ | ९ | ४१ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·७×९·४ | ११ | ३१ | ,, | ,, | | ,, | पाकाधिकारमात्रम् , टीका–हिन्दीभाषायाम् । |
| १०·९×४·६ | ९ | ३८ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·९×४·६ | ७ | ४९ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·८×४·६ | १० | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·७×२·८ | ९ | ६७ | बङ्ग. | ,, | | ,, | दीपिका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६१२० | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १-१२४ । |
| ४६१२१ | वैद्यजीवनं सटीकम् | लोलिम्बराजः टी.का.—कोनेरि-भट्टवैद्यः | १-६४ । |
| ४६१२२ | अजीर्णरसमञ्जरी | | १-४ । |
| ४६१२३ | अञ्जननिदानम् | अग्निवेशः | १-१९ । |
| ४६१२४ | ” | ” | १-२० । |
| ४६१२५ | सन्निपातकलिका | अश्विनीकुमारः | १-१० । |
| ४६१२६ | अश्विनीकुमारसंहिता | ” | १-९ । |
| ४६१२७ | अष्टाङ्गहृदयम् | वाग्भटः | १-११३ । |
| ४६१२८ | ” | ” | १-९, ३९-८२, ८४ । |
| ४६१२९ | ” | ” | १-६ । |
| ४६१३० | ” | ” | १-३१, ३३-४९ । |
| ४६१३१ | शालिहोत्रम् | नकुलः | १-११ । |
| ४६१३२ | शतश्लोकी | त्रिमल्लः | १-१४ । |
| ४६१३३ | योगशतकम् | अमृतप्रभः | १-१९ । |
| ४६१३४ | योगमालालघुवृत्तिः | गुणाकरः | १-२३ । |
| ४६१३५ | योगतरङ्गिणी | | १-१० । |
| ४६१३६ | मदनविनोदनिघण्टुः | मदनपालः | १-५९, = (६०) ६१ = ६२, ६३-७९, ८१-१९३ । |
| ४६१३७ | सुश्रुतसंहिता | | ६०-६२, ६६, ७१, ७९ । |
| ४६१३८ | साररत्नावली | गणेशः | १-३, ९ । |
| ४६१४९ | शार्ङ्गधरसंहितां | शार्ङ्गधरः | १-१० । |
| ४६१४० | ” | ” | १०-१३ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·९×४·७ | ९ | ३६ | दे. ना. | का. | १८४० | पू० | |
| ९·८×६ | ९ | ३१ | ,, | ,, | १८६७ | ,, | |
| ७·८×५ | ८ | २० | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·८×४ | ७ | २३ | ,, | ,, | १९०५ | ,, | |
| ८·८×३·९ | ८ | ३० | ,, | ,, | १८७६ | ,, | |
| ८·१×४ | ८ | २९ | ,, | ,, | १८७४ | ,, | अश्विनीकुमारसंहितायाम् । |
| ८·७×४·३ | १० | ३२ | ,, | ,, | | ,, | त्रयोदशसन्निपातलक्षणम्, चिकित्सा च । |
| ८·९×४·२ | ८ | ३१ | ,, | ,, | १७३६ | ,, | |
| ११·२×६ | १० | २४ | ,, | ,, | १७१४ | अपू० | |
| १०·६×४·४ | ६ | २८ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·७×५·२ | ९ | ३३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ११·९×६·२ | १६ | ४४ | ,, | ,, | | ,, | अथायुर्वेदशास्त्रम् । |
| १०·२×४·६ | ८ | ३२ | ,, | ,, | १९३३ | पू० | |
| ८·७×३·८ | ७ | २८ | ,, | ,, | १४६६ | ,, | |
| ८·९×३·८ | १० | ३९ | ,, | ,, | १७०० | ,, | |
| १४·२×६·५ | १० | ६० | ,, | ,, | | ,, | पाकप्रकारनिरुपकोऽयं ग्रन्थः । |
| १२·२×३·९ | ८ | ४२ | ,, | ,, | १७०२ | अपू० | |
| १०·९×६ | १२ | ४८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·९×६·१ | १४ | ३६ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·६×४·६ | ६ | ३७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·४×५·६ | ११ | ४३ | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९१४१ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १-६९, ६९-७०=(७०-७१), ७२-७६=(७६=७७) ७८-९२, ९२-१००, १००-१२४। |
| ४९१४२ | शतश्लोकी | | २-३। |
| ४९१४३ | ” | | १, ३। |
| ४९१४४ | वैद्यामृतं सटीकम् | मोरेश्वरः | १-१६। |
| ४९१४५ | वैद्यजीवनं सटीकम् | लोलिम्बराजः टी. का.–रुद्रभट्टः | १-१८। |
| ४९१४६ | ” | लोलिम्बराजः | २२-२९=(२९-३०) ३१-४०। |
| ४९१४७ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | ३१-३३। |
| ४९१४८ | योगशतकम् | | १-१०। |
| ४९१४९ | माधवनिदानं सटीकम् | माधवः | १-९। |
| ४९१५० | माधवनिदानम् | ” | १-११। |
| ४९१५१ | भावप्रकाशः | | १। |
| ४९१५२ | वैद्यकनिघण्टुविशेषः | | ९१। |
| ४९१५३ | ज्वरपद्धतिः | | १-८। |
| ४९१५४ | अञ्जननिदानम् | अग्निवेशः | ३-८, १०-२२। |
| ४९१५५ | कालज्ञानम् | | १-१७। |
| ४९१५६ | अष्टाङ्गहृदयम् | वाग्भटः | ३-७, ९-१३, १५-१७, २०-२३, २५, २७-२८, ४२-४३, ४५, ४८, ५१-५६, ५८-६०, ६२-७१, ८२-८३, १-३। |
| ४९१५७ | अजीर्णमञ्जरी | काशीनाथः | ३-५। |
| ४९१५८ | वैद्यकनिघण्टुविशेषः | | ३-९। |
| ४९१५९ | भावप्रकाशः | | १-७७। |
| ४९१६० | ” | भावमिश्रः | १-२८। |
| ४९१६१ | भावप्रकाशनिघण्टुः | | १-९५। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·५×३·७ | ८ | ४२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ७ × ३·४ | ९ | ३१ | ” | ” | | ” | |
| ९·५×४·२ | ८ | ३१ | ” | ” | | ” | |
| ९·२×५ | १३ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| १०·७ × ४·६ | ११ | ४२ | ” | ” | | ” | |
| ६·२ × ३·६ | ७ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| १२·१×४·६ | १० | ३६ | ” | ” | | ” | |
| ८·६ × ४·५ | ७ | २९ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×४·५ | ८ | २५ | ” | ” | | ” | टीका–मधुकोपाख्या । |
| १०×४·१ | १० | ४६ | ” | ” | | ” | |
| ११·१×४·५ | ९ | २७ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×४·३ | ५ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ९·६×४·४ | ७ | ३१ | ” | ” | | ” | |
| १२·४×४·९ | ७ | ३१ | ” | ” | १८७५ | ” | गदाञ्जननिदानमिति पुस्तके लिखितम् । |
| ४·८×३·३ | ८ | १६ | ” | ” | | पू० | मूत्रपरीक्षा च । |
| १०·७×४·१ | ९ | ४० | ” | ” | | अपू० | |
| ९·२×४·२ | १० | ३४ | ” | ” | १७०३ | ” | |
| ९·५×३·८ | १० | ३९ | ” | ” | | ” | |
| १२·४×५·८ | १३ | ४१ | ” | ” | | ” | मध्यमखण्डे ज्वराधिकारार्धांशः । |
| १२·१×५·८ | १० | ३६ | ” | ” | | ” | |
| १२·९×४·९ | ९ | ४२ | ” | ” | | ” | द्रव्यगुणप्रकरणम् । |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|---|
| | ४९१६२ | भावप्रकाशः | भावमिश्रः | १-९१, ९४-९७। |
| | ४९१६३ | सारसमुच्चयः | किल्हणः | १-१४। |
| | ४९१६४ | वैद्यसर्वस्वम् | मनुः | १-१४। |
| | ४९१६५ | वैद्यमन उत्सवः | वंशीधरः | २-३०। |
| | ४९१६६ | वैद्यदर्पणः | प्राणनाथः | १-९८। |
| | ४९१६७ | वैद्यचन्द्रोदयः | त्रिमल्लः | १-३८। |
| | ४९१६८ | वैद्यकल्पद्रुमः | रामचन्द्रवैद्यः | १-९०। |
| | ४९१६९ | वैद्यकल्पतरुः | | १-१३। |
| | ४९१७० | वैद्यजीवनव्याख्या | हरिनाथः | १-२१। |
| | ४९१७१ | रसेन्द्रचिन्तामणिः | रामचन्द्रगुहः | १-८९। |
| | ४९१७२ | रसरत्नसमुच्चयः | | १२८-२०२, २०९-२०६, २०८-२०९। |
| | ४९१७३ | योगशतबन्धः सटीकः | वररुचिः टी०का० पूर्णसेनः | १-११। |
| | ४९१७४ | भीमविनोदः | दामोदरः | १-२९४, २९४-३४३ = ( ३४३, ३४४ ) ३४९-३६०, ३६०-४७७। |
| | ४९१७५ | माधवनिदानम् | | १-२०। |
| | ४९१७६ | ,, | | १-१२। |
| | ४९१७७ | मदनविनोदनिघण्टुः | मदनपालः | २-८२। |
| | ४९१७८ | ,, | ,, | १-१०८। |
| | ४९१७९ | ,, | ,, | १-४६। |
| | ४९१८० | भोजप्रबन्धः सटीकः | राजमार्त्तण्डः | १-३, ९-२६, २९-५२। |
| | ४९१८१ | माधवनिदानं सटीकम् | टी० का०– वैद्यवाचस्पतिः | १-४८, ९०-१०७, १०८ = १०९, ११०-१९०, १९२-१९९। |
| | ४९१८२ | माधवनिदानम् | माधवकरः | १-६०। |
| | ४९१८३ | ,, | ,, | १-७३। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·६×५·९ | १३ | ३८ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९·८×५·४ | ११ | २७ | ” | ” | | ” | अश्वशास्त्रम् । |
| ८·५×६·८ | ९ | ३१ | ” | ” | | पू० | |
| ९·१×५·२ | १० | २५ | ” | ” | | अपू० | |
| १३×६·५ | १० | ४४ | ” | ” | | पू० | |
| ९·८×४·४ | ७ | ३७ | ” | ” | | ” | |
| १२·४×५·८ | १२ | ३६ | ” | ” | १७४३ | ” | |
| ६·७×३·७ | ८ | २१ | ” | ” | १९४१ | ” | |
| ९·३ × ३·७ | ९ | ३३ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·९×४ | ९ | ४३ | ” | ” | श. १७१५ | पू० | |
| ८·७×३·५ | ८ | ३८ | ” | ” | १७५३ | अपू० | |
| ९·८×६·१ | १४ | ३६ | ” | ” | | ” | |
| १०·७×४·६ | १० | ३७ | ” | ” | | ” | ज्वरचिकित्सामारभ्य विषचिंकत्सांशः । |
| १०·७×५·९ | १२ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·२ | ९ | २९ | ” | ” | | ” | |
| १२·६×४·९ | ९ | ३१ | ” | ” | वि० १४४१ | ” | |
| ११·१ × ४·३ | ७ | ३४ | ” | ” | | पू० | |
| ९·६×४·३ | ११ | ३३ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·६×४·४ | ७ | ३५ | ” | ” | १८१८ श. १६८३ | ” | टीका–हिन्दीभाषायाम् । |
| १३·९×५·५ | १२ | ५५ | ” | ” | | ” | टीका–आतङ्कदर्पणाख्या । |
| ९×९·३ | १४ | ३१ | ” | ” | १९०२ | पू० | |
| ११·४×५·६ | १६ | ३९ | ” | ” | १७४१ | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९१८४ | माधवनिदानम् | माधवकरः | १-७१ । |
| ४९१८५ | माधवनिदानं सटीकम् | माधवकरः टी०का० वैद्यवाचस्पतिः | १-५६, ५८-६९, ७१-७५, ७७ । |
| ४९१८६ | माधवनिदानम् | | १-२३ । |
| ४९१८७ | ” | माधवकरः | १-८३ । |
| ४९१८८ | ” | | १-८ । |
| ४९१८९ | ” | | २-१७, १९-२९ । |
| ४९१९० | माधवनिदानं सटीकम् | | १-२४ । |
| ४९१९१ | माधवनिदानटीका | | १-३ । |
| ४९१९२ | माधवनिदानं सटीकम् | माधवः, टी० का० वैद्यवाचस्पतिः | १-२७ । |
| ४९१९३ | अष्टाङ्गहृदयं सटीकम् | वाग्भटः टी० का० अरुणदत्तः | १-७८ = (७९)८०-१०९, १०९-१२८, १२८-२०० । |
| ४९१९४ | आयुर्वेदमहोदधिः | सुषेणः | १-३८ । |
| ४९१९५ | उपदंशचिकित्सा सटीका | | १-३ । |
| ४९१९६ | ” | | १-३ । |
| ४९१९७ | कालज्ञानम् | | १-११ । |
| ४९१९८ | ” | | १-८ । |
| ४९१९९ | ” | | १-१५ । |
| ४९२०० | कूटमुद्गरः सटीकः | माधवः | १-९ । |
| ४९२०१ | ” | ” | १-९ । |
| ४९२०२ | क्षेमकुतूहलम् | क्षेमशर्मा | १-२६ । |
| ४९२०३ | गुणरत्नमाला | | २, ५-२६, २८-११०, ११२-११४ । |
| ४९२०४ | चरकसंहिता | चरकः | १-१८ । |
| ४९२०५ | चिकित्सासुन्दरम् | सुन्दरदेवः | १-८ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·४×४·८ | ९ | ४४ | दे.ना | का. | | पू० | |
| १२·९×६·२ | १२ | ९४ | ” | ” | | अपू० | टीका–आतङ्कदर्पणाख्या । |
| ८·२×४·४ | ८ | २२ | ” | ” | | ” | |
| १०·२×४·९ | १० | ३७ | ” | ” | | पू० | |
| १०·१×४·९ | ११ | ३४ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·४×३·८ | ८ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| १२·१×९·७ | १२ | २६ | ” | ” | | ” | टीका–आतङ्कदर्पणाख्या । |
| १०·३×४·८ | १० | ३३ | ” | ” | | ” | |
| १२·३×९·७ | १३ | ४६ | ” | ” | | ” | आतङ्कदर्पणाख्यायाष्टीकाया उज्वला-वृत्तिरपि नामान्तरम् । |
| ११·९×९·४ | १७ | ९४ | ” | ” | १८१६ | पू०* | |
| ११·९×४·३ | ९ | ४० | ” | ” | | अपू० | |
| १२×९·९ | १३ | ३७ | ” | ” | | पू० | टीका–हिन्दीभाषायाम् । |
| ७·८×६ | ११ | २० | ” | ” | | अपू० | ” |
| ९×४·९ | ७ | २२ | ” | ” | | पू० | |
| १०·३×४·४ | ९ | ३३ | ” | ” | १८८८ | ” | |
| ६·८×४·९ | ७ | २१ | ” | ” | | ” | |
| ९×४·१ | १० | ४१ | ” | ” | १८११ | ” | |
| १०·१×४·९ | ७ | २९ | ” | ” | | ” | |
| १२·३×९·६ | १९ | ९३ | ” | ” | १७०२ | ” | |
| ११·९×४ | ९ | ४० | ” | ” | | अपू० | |
| ६·९×९·७ | २२ | १७ | ” | ” | | ” | |
| ९·६ × ४·२ | १२ | ३८ | ” | ” | १७८६ | पू० | रसादिशोधनमारणोद्योतप्रकरणान्तम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९२०६ | ज्वरविवेचनम् | | १-१८ । |
| ४९२०७ | अजीर्णमञ्जरी सटिप्पणा | काशिराजः | १-७ । |
| ४९२०८ | चिकित्सासारसङ्ग्रहः | वङ्गसेनः | १-१९, १९-२३१ = (२३२-२४१) २४२-७०३ । |
| ४९२०९ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १-९६ । |
| ४९२१० | वैद्यामृतम् | मोरेश्वरः | १-१७ । |
| ४९२११ | वैद्यवल्लभः | | १-७१, ७१ । |
| ४९२१२ | वैद्यभास्करोदयः | | ३०-९४ । |
| ४९२१३ | वैद्यदर्पणं सटीकम् | प्राणनाथः | १-५४, ९४-९९, ९७-९९ । |
| ४९२१४ | रोगारोगवादः | वीरेश्वरः | १-१० । |
| ४९२१५ | ,, | ,, | १-१२ । |
| ४९२१६ | रसेन्द्रसारसङ्ग्रहः | | १-३ । |
| ४९२१७ | रसेन्द्रचिन्तामणिः | रामचन्द्रः | १-२१ । |
| ४९२१८ | रसचिकित्साग्रन्थः | | १-५ । |
| ४९२१९ | रससिन्दूरादिनिर्माणविधिः | | १-५ । |
| ४९२२० | रसमञ्जरी | शालिनाथः | १-६१ । |
| ४९२२१ | ,, | ,, | १-३० । |
| ४९२२२ | ,, | ,, | १-८१, ८३-८५ । |
| ४९२२३ | ,, | ,, | १-२१ । |
| ४९२२४ | रसप्रदीपः सटीकः | ,, | १-३२, ३४-८३, ६४-८० । |
| ४९२२५ | पाकावली | | १-३, १-१८ । |
| ४९२२६ | रसप्रदीपः सटीकः | वैद्यप्राणनाथः | १-१२६ । |
| ४९२२७ | योगशतकम् | वररुचिः | १-३५ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·८×५·६ | ११ | ३७ | दे.ना. | का. | | अपू० | तच्चिकित्सा च । |
| १२·७×४·९ | ६ | ३१ | ” | ” | १८४७ | पू० | वैद्यकसारे। टिप्पणम् हिन्दीभाषायाम्। |
| १३·८×७ | १२ | ३३ | ” | ” | १९०७ | ”* | |
| ११·८×५·१ | ८ | ४६ | ” | ” | १८१४ | ” | |
| १०·२×४·५ | ७ | ४० | ” | ” | र.का. १९०३ | ” | |
| ९·९×५·२ | ११ | ३५ | ” | ” | | ” | |
| ९·८×४·२ | ८ | ३४ | ” | ” | १८७१ | अपू० | |
| १०×४·५ | ७ | ३२ | ” | ” | | पू०* | |
| १०·१×४·४ | ८ | ३० | ” | ” | १९१९ | ” | |
| ८·८×४·२ | ९ | २५ | ” | ” | १७२५ | ” | |
| ८·३×४ | ११ | ३७ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·४×५ | ११ | ४१ | ” | ” | | ” | |
| ८·७×५·३ | ९ | ३३ | ” | ” | | ” | रससङ्ग्रहश्च । |
| ९·१×५·१ | ८ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ९·२×३·८ | ८ | ३६ | ” | ” | १८८६ | पू० | |
| १२·८×६·६ | १२ | ३८ | ” | ” | १८८२ | ” | |
| ८·८×४ | ८ | ३१ | ” | ” | १८९९ | अपू० | |
| १०·५×४·५ | ७ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| १०·७×४·८ | १० | ३७ | ” | ” | | ” | टीका-हिन्दीभाषायाम् । |
| ८·५×६ | ८ | १८ | ” | ” | | ” | हिन्दीसहितारसमोदकपाकादीनां विधिः फलञ्च । |
| १०·७×४ ६ | ९ | ४१ | ” | ” | १८९७ | पू० | टीका–हिन्दीभाषायाम् । |
| ८·४×३·७ | ५ | १७ | ” | ” | १८७० | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसङ्ख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९२२८ | योगशतकम् | | १-२६ । |
| ४९२२९ | ,, | | १-४ । |
| ४९२३० | ,, | | १-२४ । |
| ४९२३१ | योगचिन्तामणिः | हर्षकीर्तिः | ३-२८ । |
| ४९२३२ | ,, | ,, | १-६ । |
| ४९२३३ | ,, | ,, | १-१७९ । |
| ४९२३४ | कूटमुद्गरः | माधवः | १-१३ । |
| ४९२३५ | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | २-२२ । |
| ४९२३६ | शतश्लोकी | त्रिमल्लः | १-२० । |
| ४९२३७ | भावप्रकाशः | भावमिश्रः | १-२३ । |
| ४९२३८ | रसप्रदीपः सटीकः | | १-१२+१ । |
| ४९२३९ | नाडीपरीक्षा | | १-११ । |
| ४९२४० | माधवनिदानम् | माधवकरः | १-३८ = (३९) ४०-१३२ । |
| ४९२४१ | वैद्यजीवनं सटीकम् | लोलिम्बराजः टी० का० हरिनाथः | १-३८ । |
| ४९२४२ | माधवनिदानं सटीकम् | माधवकरः टी०का०वाचस्पतिः | १-१३, १-२०१+१ । |
| ४९२४३ | शतमूलनामानि | | १-२+१ । |
| ४९२४४ | शतश्लोकी | वोपदेवः | १-१९ । |
| ४९२४५ | ,, | त्रिमल्लः | १-१३ । |
| ४९२४६ | ,, | ,, | १-२६ । |
| ४९२४७ | ,, | ,, | १-१९ । |
| ४९२४८ | ,, | ,, | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·३×४·८ | ११ | २० | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ७·९×४·४ | ८ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| १०·४×४·३ | ८ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ९·३×४·३ | १० | ३० | ” | ” | | ” | वैद्यकसारोद्धार इति नामान्तरम् । |
| ९·१×४·९ | १० | ३० | ” | ” | | ” | ” |
| ८·४×९·७ | १२ | २७ | ” | ” | १८९९ | पू० | “वैद्यकसारोद्धारः” “वैद्यकसारस-सङ्ग्रहः” इति नामान्तरे । |
| ८·८×४·१ | ८ | २७ | ” | ” | १८७९ | ” | |
| ८·४×४·२ | ८ | ३३ | ” | ” | १९०८ | अपू० | |
| ८·६×४·४ | ७ | २३ | ” | ” | १८७९ | पू० | द्रव्यगुणविवेचनात्मिका । |
| ८·३×३·४ | २० | ४३ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·१×९·२ | १० | २९ | ” | ” | | ” | टीका–हिन्दीभाषायाम् । |
| ९·६×४·६ | ६ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ९·८×४·९ | ७ | ३८ | ” | ” | १८८७ | पू०* | |
| १३×६·२ | १३ | ४६ | ” | ” | १८०१ श. १७६९ | ” | |
| १३·३×६·९ | ११ | ४९ | ” | ” | १९०१ | ” | टीका–आतङ्कदर्पणाख्या, अनुक्रमणिका च । |
| ९·८×४·२ | ९ | ३९ | ” | ” | | ” | रौप्यविधानञ्च, हिन्दीभाषायाम् । |
| ९·१×४·२ | ९ | २८ | ” | ” | १८२६ | ” | चन्द्रकलाख्या, चूर्णाधिकारादुदका-धिकारान्ता । |
| ९·१×३·९ | १० | ३२ | ” | ” | १७२९ | ” | द्रव्यगुणविवेचनात्मिका । |
| ८·९×४·३ | ६ | २९ | ” | ” | १८९८ | ” | द्रव्यगुणविवेचनात्मिका, यत्रतत्र टिप्पणञ्च । |
| ८·१×४·१ | ८ | २९ | ” | ” | | ” | ” |
| ८×४·१ | १० | ३१ | ” | ” | | ” | द्रव्यगुणविवेचनात्मिका |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९२४९ | शतश्लोकी | वोपदेवः | १-२४ । |
| ४९२५० | शतश्लोकी सटीका | | १-१६, १६-१७, २०-२१, २२, २२-२४ । |
| ४९२५१ | ” | | १-५ । |
| ४९२५२ | ” | | १-११ । |
| ४९२५३ | ” | | १-१५ । |
| ४९२५४ | ” | | १-९ । |
| ४९२५५ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १-११५, ११५-१४७ । |
| ४९२५६ | ” | ” | १-४७, ४७-४८, ४८-१५२ । |
| ४९२५७ | ” | ” | १-१४८ । |
| ४९२५८ | ” | ” | १-९६ । |
| ४९२५९ | सन्निपातकलिका | | २-१४ । |
| ४९२६० | ” | | १-११ । |
| ४९२६१ | सन्निपातपादचन्द्रिका | | १-६ । |
| ४९२६२ | हयशास्त्रम् | नकुलः | १, १०-१५, १९-३२ । |
| ४९२६३ | लक्ष्मणोत्सवः | लक्ष्मणः | १-९४ । |
| ४९२६४ | वैद्यकुतूहलम् | | १-५० । |
| ४९२६५ | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | १-३० । |
| ४९२६६ | ” | ” | १-१५ । |
| ४९२६७ | ” | ” | १-२९ । |
| ४९२६८ | वैद्यजीवनं सटिप्पणम् | | १-९ । |
| ४९२६९ | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | १-१४ । |
| ४९२७० | वैद्यजीवनं सटीकम् | | १-३५ । |
| ४९२७१ | ” | टी०का०—रुद्रभट्टः | १-४८ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | भाषाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·९×४·३ | ७ | २२ | दे.ना. | का. | | अपू० | चूर्णाधिकारादुदकाधिकारांशा। |
| ९·७×४·४ | १० | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ११×९·१ | ११ | ४२ | ” | ” | | ” | |
| १०·२×४·६ | ९ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×४·४ | ९ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ८·८×४·४ | ११ | ३३ | ” | ” | | ” | टीका–मनोरमा। |
| ८·२×३·३ | ७ | ३९ | ” | ” | १८२७ | पू० | |
| ९·३×३·४ | ८ | ३४ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·६×४·९ | ८ | २८ | ” | ” | १७६३ | पू० | |
| १२·९×४·९ | ९ | ९३ | ” | ” | १८८८ | ” | |
| ६×९·४ | १३ | १६ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·४×४·३ | १० | २४ | ” | ” | १७२६ श.१६२१ | पू० | |
| १०·८×४·९ | ८ | ३६ | ” | ” | | ” | |
| ९·२×४·७ | ९ | २८ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·२×३·१ | ८ | २९ | ” | ” | | ” | |
| ८·१×३·९ | ७ | २२ | ” | ” | १८६८ | पू० | |
| १०·३ × ४·९ | ७ | ३१ | ” | ” | | ” | |
| १२×४·७ | १० | ३९ | ” | ” | १८४७ | ” | |
| ७·४×४·३ | ८ | २३ | ” | ” | | ” | |
| १३·८×७·१ | ११ | ९१ | ” | ” | | ” | |
| ११·८×९·९ | ११ | ३९ | ” | ” | १८६१ | ” | |
| १०·९×४·९ | २० | ३७ | ” | ” | | ” | टीका–गुर्जरभाषायाम्। |
| ८·९×४ | १० | ३६ | ” | ” | १७८२ | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९२७२ | वैद्यदर्पणं सटीकम् | प्राणनाथः | १-७१, ७३-११९। |
| ४९२७३ | वैद्यरत्नम् | | १-११। |
| ४९२७४ | वैद्यरत्नावली | रामानुजयतिवरः | १-४, ४-६१। |
| ४९२७५ | वैद्यरत्नम् | | १-४६। |
| ४९२७६ | वैद्यरहस्यम् | विद्यापतिः | १-१५९। |
| ४९२७७ | ,, | ,, | १-१६। |
| ४९२७८ | वैद्यवल्लभः | | ३-१६। |
| ४९२७९ | ,, | हस्तिरुचिः | १-२७। |
| ४९२८० | निम्बकल्पः | | १-२। |
| ४९२८१ | निर्गुण्डीकल्पः | | १-२। |
| ४९२८२ | संग्रहणीरोगचिकित्सा | | १४। |
| ४९२८३ | रसमञ्जरी | शालिनाथः | १-२५। |
| ४९२८४ | अजीर्णौषधिः | | १। |
| ४९२८५ | आयुर्वेदसङ्ग्रहः | | १, ३, ८, ५७-५८+३। |
| ४९२८६ | शतावरीघृतप्रयोगफलम् | | १। |
| ४९२८७ | भैषज्यरत्नावली | | १। |
| ४९२८८ | निघण्टुः | धन्वन्तरिः | १-७०। |
| ४९२८९ | ,, | | ११-१२। |
| ४९२९० | ,, | | ५-२३। |
| ४९२९१ | ,, | | २-१०। |
| ४९२९२ | ,, | | १-५५। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·५×३·९ | ७ | ३० | दे.ना. | का. | १९०६ | पू०* | |
| ८·३×४·२ | ७ | २६ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·६ × ४·१ | १४ | ३८ | ” | ” | | ” | |
| ८·१×४ | ८ | २४ | ” | ” | | ” | |
| १०·१×४·४ | ७ | ३२ | ” | ” | १८९२ | पू० | |
| ९·१×४·१ | ९ | २४ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·८×४·३ | १० | ३२ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×६·२ | ९ | २१ | ” | ” | १९०९ | पू० | |
| ७·१×३·८ | १० | ३० | वङ्ग. | ” | | ” | |
| १४·६×४·१ | ५ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| १३×३·२ | ८ | ४६ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·७×६·९ | १३ | ४८ | दे.ना. | ” | | पू० | |
| ६·९×३·७ | ७ | २० | वङ्ग. | ” | | ” | |
| १३·९×३ | ७ | ६० | ” | ” | | अपू० | |
| १३·३×२·१ | ३ | ४७ | ” | ” | | ” | |
| १४·९×२·४ | ८ | ४९ | ” | ” | | ” | श्वासकासाधिकारः। |
| ९·२×४·४ | ८ | २६ | दे.ना. | ” | १८९० | पू० | नाममाला शब्दसंकेतकलिका वा, शब्दार्था गुर्जरभाषायाम्। |
| १०·८×६·८ | १० | २५ | ” | ” | | अपू० | |
| १०×४·३ | १३ | ३७ | ” | ” | | ” | अकारादिक्रमेणौषधनामानि। |
| ९·९×४·४ | १४ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| ९·१×४·१ | ८ | ३० | ” | ” | १८९९ शा. १७२४ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९२९३ | नामावली | गोवर्द्धनभट्टः | १-४३, ४३, ४४-५०, ५०, ५१-५५, ५५, ५६-५७, ५७, ५७, ५८-६५, ६५, ६६-७०, ७०, ७०, ७१-७५, ७५, ७६-८१, ८१, ८२-९१, ९१-९२, ९२, ९३-१०१, १०१, १०१, १०२-११२, ११२, ११२, ११३-१२०, १२०, १२१, १२१-१२५, १२५, १२६-१२७, १२७, १२७, १२८-१३७। |
| ४९२९४ | नाडीप्रकाशः | शङ्करसेनः | १-१३। |
| ४९२९५ | नाडीपरीक्षा | | १-४। |
| ४९२९६ | धातुरत्नमाला | | १-७२। |
| ४९२९७ | त्रिंशती सटीका | शार्ङ्गधरः<br>टी० का०–<br>वैद्यवल्लभभट्टः | १-८५। |
| ४९२९८ | निघण्टुः | धन्वन्तरिः | १-१८। |
| ४९२९९ | रोगपरीक्षा | | १-३। |
| ४९३०० | ” | | १। |
| ४९३०१ | रसमञ्जरी | शालिनाथः | १-३७, ३७-३८, ४०-४७। |
| ४९३०२ | शतश्लोकी सटीका | वोपदेवः<br>टी०का०-वोपदेवः | १-३१। |
| ४९३०३ | निघण्टुः | धन्वन्तरिः | १-३५। |
| ४९३०४ | नाड्यादिपरीक्षा | रामः | १-७। |
| ४९३०५ | पाकावली | | १-१८। |
| ४९३०६ | पालकाप्यम् | | १-५७ = (५८), ५९-१००। |
| ४९३०७ | बालतन्त्रम् | कल्याणः | १-५५। |
| ४९३०८ | माधवनिदानं सटीकम् | माधवकरः<br>टी०का०–गणेशः | १-३२, ३२-२७१, २७४। |
| ४९३०९ | कफचिकित्सा | | १। |
| ४९३१० | प्रकीर्णपत्राणि | | १-३५। |
| ४९३११ | राजवल्लभः | | २-१८। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·२×४·३ | १० | ४० | दे.ना. | का. | १७८२ | पू० | अकारादिक्रमेणद्रव्यपरिचयः। |
| १२×९·९ | १० | ३९ | ” | ” | | ” | |
| १०·८×४·७ | ९ | २९ | ” | ” | १९११ | ” | |
| ७×४·२ | ९ | १६ | ” | ” | | अपू० | पाकावली च। |
| ९×४·१ | १० | २६ | ” | ” | १७८२ | पू० | टीका—वैद्यवल्लभा। |
| १०·९×४·८ | १० | ९३ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·८×३ | ८ | ४२ | बङ्ग. | ” | | पू० | द्रव्यदर्शनेन। |
| १२·६×४·७ | १९ | ९९ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·९×४·४ | १० | ३७ | दे.ना. | ” | | ” | |
| ११·२×९ | ७ | ४१ | ” | ” | १७६२ श. १६२७ | पू० | टीका—चन्द्रकला। |
| १०·३×४·३ | १७ | ४८ | ” | ” | | ” | |
| १३·४×९·९ | १० | ४१ | ” | ” | १९१९ | ” | |
| १२·३×९·३ | ९ | ३९ | ” | ” | | अपू० | |
| ११·१×९·९ | ११ | ३७ | ” | ” | | पू०* | हस्त्यायुर्वेदः १९ अध्यायान्तम्। |
| १०×४·४ | ९ | ३० | ” | ” | | अपू० | |
| १०·६×९·९ | ११ | ३२ | ” | ” | | ” | टीका—अर्थप्रकाशिका। |
| १३·३×३·३ | ७ | ४६ | बङ्ग. | ” | | ” | कफकासाधिकारः। |
| १३·३×३·३ | ७ | ९१ | ” | ” | | ” | |
| १३·३×३·३ | ८ | ४६ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९३१२ | बृहद्दशमूलतैलम् | | १, १। |
| ४९३१३ | कर्णनासाचक्षुः शिरोरोग-चिकित्सा | | १-२। |
| ४९३१४ | मोदकनिर्माणप्रकारः | | १। |
| ४९३१५ | रसनिर्माणप्रकारः | | ५। |
| ४९३१६ | ज्वरचिकित्सा | | १। |
| ४९३१७ | औषधसङ्ग्रहः | | १। |
| ४९३१८ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १-५। |
| ४९३१९ | मदनपालनिघण्टुः | मदनपालः | १-१६। |
| ४९३२० | चमत्कारचिन्तामणिःसटीकः | लोलिम्बराजः | १-६२। |
| ४९३२१ | माधवनिदानम् | माधवकरः | ३-२७, ८९-११६, ११८। |
| ४९३२२ | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | १-२०। |
| ४९३२३ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १-४९, ५३-७५, १-५, ७-११, २४-३१, ५०-५२। |
| ४९३२४ | ,, | ,, | १-२३। |
| ४९३२५ | शतश्लोकी | त्रिमल्लः | १-१४। |
| ४९३२६ | नाडीजिह्वादिपरीक्षा | | १-६। |
| ४९३२७ | शतश्लोकीटीका | कृष्णदत्तः | १, ३-२९, ३२-५२। |
| ४९३२८ | लघुसङ्ग्रहः सटीकः | | १-३८, ४०-६७। |
| ४९३२९ | वैद्यमन उत्सवः | वंशीधरमिश्रः | १-३६। |
| ४९३३० | नाडीपरीक्षा | | २-७। |
| ४९३३१ | वैद्यनिघण्टुः | | २-५१। |
| ४९३३२ | पथ्यापथ्यविधिः | | १-४५। |
| ४९३३३ | निघण्टुचूडामणिः | | १-२१। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३·३×२·९ | ९ | ४९ | वङ्ग | का. | | पू० | सिद्धार्थकतैलञ्च । |
| १४·७×३·२ | ७ | ४७ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १९×३·९ | ६ | ९४ | ,, | ,, | | ,, | बृहच्छतावर्याः । |
| १४×३ | ६ | ९० | ,, | ,, | | ,, | वातरक्तान्तकरसचतुर्मुखरसयोः । |
| १३·३×३·३ | ६ | ४० | ,, | ,, | | पू० | सन्निपाताधिकारः । |
| १०×४·४ | १४ | ९२ | दे.ना. | ,, | | अपू० | |
| १०×४·४ | १२ | ४९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·६×४·६ | १२ | ४८ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·६×६·१ | १२ | ३७ | ,, | ,, | | पू० | |
| १०·९×६·९ | ९ | २८ | ,, | ,, | १९०१ | अपू० | रुग्विनिश्चय इति नामान्तरम् । |
| ८×३·४ | १० | ४८ | ,, | ,, | श. १७०४ | पू० | |
| १०·१×४·९ | ८ | ३४ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·१×४·९ | ८ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·७×४·३ | ७ | ४० | ,, | ,, | | पू० | द्रव्यगुणसङ्ग्रहात्मिका । |
| ९·९×४·४ | ९ | ३३ | ,, | ,, | १८९३ | ,, | सर्वपरीक्षणमिति नामान्तरम् । |
| ९·६×९·१ | ९ | ३३ | ,, | ,, | | अपू० | द्रव्यगुणदीपिकेतिनामान्तरम् । |
| १०×४·१ | ९ | ४२ | ,, | ,, | | ,, | टीका—मराठीभाषायाम् । |
| ९·२×४·३ | ११ | २० | ,, | ,, | | ,, | प्रथमपुष्पिकायां श्रीधरमिश्र इत्यपि ग्रन्थकारनाम लिखितमस्ति । |
| ९·८×४·३ | १२ | ३६ | ,, | ,, | १८७४ | ,, | |
| १०·६×४·६ | १२ | ३७ | ,, | ,, | | ,, | धन्वन्तरीयः । |
| ९·९×४·३ | ७ | २९ | ,, | ,, | | पू० | पथ्यापथ्यविनिश्चयो वा । |
| ११·१×४·६ | १० | ३९ | ,, | ,, | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९३३४ | निघण्टुसारः | | १-६०, १-१० । |
| ४९३३५ | योगशतप्रबन्धः | | १-२० । |
| ४९३३६ | वैद्यकल्पद्रुमः | शुकदेवः | १-२२ । |
| ४९३३७ | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | १-२५ । |
| ४९३३८ | नवरत्नमाला सटीका | मल्लिनाथः | १-५९, ६१-६३ । |
| ४९३३९ | लघुसङ्ग्रहः | | १-७७ । |
| ४९३४० | वैद्यामृतम् | मोरेश्वरः | १-२९ । |
| ४९३४१ | अञ्जनम् | अग्निवेशः | १-१७ । |
| ४९३४२ | ,, | ,, | १-२३ । |
| ४९३४३ | शतश्लोकी सटीका | वोपदेवः | १-३९ । |
| ४९३४४ | निर्णयनिघण्टुः | वैद्यनाथः | १२-२६ । |
| ४९३४५ | निघण्टुः | | ४१-४४, ४८-५७, ६०, ६३, ६५, ६८-७७ । |
| ४९३४६ | धातुशुद्धिप्रकारः | | १-२ । |
| ४९३४७ | अमृतमञ्जरी | काशीनाथः | १-५ । |
| ४९३४८ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १-१८, १८, १९-४९, ५५-११७ । |
| ४९३४९ | भावप्रकाशः | भावमिश्रः | २-१६०, १६०-१६१, १६१-२५९, २५९-२६०, २६०-५११ । |
| ४९३५० | कल्पसारसङ्ग्रहः | धन्वन्तरिः | १-३५, ३५-५४, ५४, ५४, ५६-६१ । |
| ४९३५१ | अञ्जनम् | अग्निवेशः | १-१४ । |
| ४९३५२ | पाकावली | माधवः | १-१७, १९-२८ । |
| ४९३५३ | वैद्यविनोदः | सागी | ४-९३, ९३-९४, ९४-९७, १०८-१५९, १५९-२१६, २१६-२२६, २२८-२७४ । |
| ४९३५४ | निघण्टुः | | १ । |
| ४९३५५ | आयुर्वेदविषयकग्रन्थविशेषः | | ४-७, ९ r |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | प्रकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११·३×४·६ | ९ | ४३ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०·४×४·४ | ७ | ३० | ” | ” | | पू० | |
| ९·१×४·३ | ८ | ३० | ” | ” | | ” | |
| १०×४·३ | ९ | ३० | ” | ” | १८९० | ” | |
| ९·३×४·९ | ११ | ३८ | ” | ” | | अपू० | टीका—मराठीभाषायाम्। |
| ९·७×४·२ | ९ | २७ | ” | ” | १८८ ?) श. १७४८ | पू० | अन्ते सर्वसङ्ग्रह इति लिखितमस्ति। |
| ८·६×३·९ | ७ | २३ | ” | ” | र.का. १६०३ | ” | |
| ९·३×४·२ | ९ | २९ | ” | ” | १८८४ श. १७४९ | ” | निदानविषयकम्। |
| ९·६×४·९ | ६ | ३४ | ” | ” | श. १७३७ | ” | ” |
| १०·८×४·७ | १२ | ३२ | ” | ” | श. १७३४ | ” | टीका —चन्द्रकला। |
| ८·७×४·३ | १२ | २९ | ” | ” | १८३८ | अपू० | |
| १०·६×४·९ | १४ | ३४ | ” | ” | १८६९ | ” | धन्वन्तरीयः। |
| ८·८×४·२ | १३ | २९ | ” | ” | | पू० | रसमञ्जर्याम्। |
| ९·९×४·३ | ९ | ३१ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×४·६ | ९ | ३७ | ” | ” | १८९४ | अपू० | |
| ११·९×९·९ | १३ | ३७ | ” | ” | | ” | |
| १०·९×९·९ | ११ | ३० | ” | ” | | ” | |
| १०·८×४·६ | ९ | २८ | ” | ” | १९१९ | पू० | |
| ९·८ × ४·९ | ११ | ३१ | ” | ” | | अपू० | आयुर्वेदप्रकाशे। |
| १०·४×४·२ | ७ | २९ | ” | ” | | ” | |
| १०·४×४·४ | ११ | ४० | ” | ” | | ” | |
| ८·२×९·९ | १७ | ३२ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९३५६ | माधवनिदानटीका | गणेशः | ११९-१२२ । |
| ४९३५७ | भावप्रकाशः | | १२३-१२४, १३५-१३६ । |
| ४९३५८ | मूत्रपरीक्षा | | १-२ । |
| ४९३५९ | रसायनप्रक्रियासङ्ग्रहः | | १-२६ । |
| ४९३६० | स्नायुरोगचिकित्सा | | १-३ । |
| ४९३६१ | नाडीपरीक्षा | | १-२ । |
| ४९३६२ | वातादिप्रकोपविचारः | | १-३ । |
| ४९३६३ | वमनविधिः | | ३ । |
| ४९३६४ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | ४-४०, ४२, ४४ । |
| ४९३६५ | चिकित्साग्रन्थविशेषः सटीकः | | १७-२६, ३० । |
| ४९३६६ | धातुभस्मप्रक्रिया | | १ । |
| ४९३६७ | वाजीकरणादियोगसङ्ग्रहः | | १-५ । |
| ४९३६८ | कर्मविपाकः | | ३७ ६०-६१, ७०-७२ । |
| ४९३६९ | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | १-२० । |
| ४९३७० | वैद्यकरसावली सटीका | | १-२१ । |
| ४९३७१ | शार्ङ्गधरसंहिताविषयसूची | | १-५ । |
| ४९३७२ | चिकित्साञ्जनम् | विद्यापतिः | १-९ । |
| ४९३७३ | धन्वन्तरिनिघण्टुः | | १-३० । |
| ४९३७४ | वैद्यामृतम् | मोरेश्वरः | १-११ । |
| ४९३७५ | वैद्यभास्करोदयः | धन्वन्तरिः | १-२३, २५-४० । |
| ४९३७६ | वैद्यावतंसः | लोलिम्बराजः | १-६ । |
| ४९३७७ | सन्निपातमञ्जरी | गोविन्दवापटः | १-२० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·९×६·३ | १३ | ४९ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १२·६×६ | १३ | ९३ | ” | ” | | ” | |
| ८·६×४·१ | १२ | २९ | ” | ” | | पू० | वैद्यवल्लभे । |
| १०·१×४·२ | २४ | १४ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·९×४·४ | ८ | १६ | ” | ” | | ” | |
| १०×४·४ | ६ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ९·२×४·१ | ११ | २८ | ” | ” | | ” | |
| ९·३×४·२ | ३ | २९ | ” | ” | | ” | |
| ८·८×३·७ | ८ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| ९×४·४ | ८ | २० | ” | ” | | ” | टीका--हिन्दीभाषायाम् । |
| ९·१×४ २ | १७ | ५९ | ” | ” | | ” | |
| ९·४×२·४ | ८ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ९·५×४·३ | ११ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ७·७×९ | १० | २७ | ” | ” | १७७१ | पू० | |
| ९·१×६·६ | १७ | २९ | ” | ” | | ” | टीका--मराठीभाषायाम् । |
| ९·८×४·१ | १६ | २६ | ” | ” | | ” | |
| ११×४·९ | १२ | ५१ | ” | ” | १९०३ | ” | |
| ९·६×४·९ | १४ | ३९ | ” | ” | | अपू० | |
| १०×६·५ | १३ | ३६ | ” | ” | र. का. १६०३ | पू० | १-४ अलंकाराः । |
| ९·९×६ | ११ | २४ | ” | ” | १९१३ | अपू० | |
| १२·२ × ६·२ | १२ | ५० | ” | ” | | पू० | अजीर्णमञ्जरी च । |
| १२·२×६·२ | १३ | ४० | ” | ” | १९०३ र. का. १८८३ | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९३७८ | वैद्यकसङ्ग्रहः | | १-२४ । |
| ४९३७९ | वैद्यरहस्यम् | विद्यापतिः | १-२८ । |
| ४९३८० | चिकित्सासारसङ्ग्रहः | गोपालदासः | १-६१ । |
| ४९३८१ | वैद्यवल्लभः | हस्तिरुचिः | १-१२ । |
| ४९३८२ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | १-९, ९ । |
| ४९३८३ | माधवनिदानटिप्पणी | | १९-२९, ३९, ३७-४३, ४९-४९, ९४-७६, ७८-१११+३ । |
| ४९३८४ | अजीर्णामृतमञ्जरी सटीका | काशिराजः टी०का० राजानक भगवन्तः | १-१२ । |
| ४९३८५ | शार्ङ्गधरसंहिता | शार्ङ्गधरः | ९९-१०० । |
| ४९३८६ | औषधसङ्ग्रहः | | १-२ । |
| ४९३८७ | अञ्जननिदानम् | अग्निवेशः | १-१५ । |
| ४९३८८ | माधवनिदानम् | | १-१०९ । |
| ४९३८९ | चरकसंहिताटीका | चक्रदत्तः | १-१८४ । |
| ४९३९० | माधवनिदानं सटीकम् | | १-३९, ४१-१०६ । |
| ४९३९१ | सुधासागरादिरसविचारः | | १-३ । |
| ४९३९२ | औषधसङ्ग्रहः | | १-३ । |
| ४९३९३ | भीमविनोदः | दामोदरः | १-११० । |
| ४९३९४ | अञ्जननिदानं सटीकम् | | १-१३ । |
| ४९३९५ | काश्यपसंहिता | | २९८ । ( गणनया ) |
| ४९३९६ | गदनिर्णयः सटीकः | | १ । |
| ४९३९७ | वैद्यजीवनं सटीकम् | लोलिम्बराजः | १-२४ । |
| ४९३९८ | शार्ङ्गधरटीका | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·२×६·२ | १३ | ४० | दे.ना. | का. | | अपू० | योगरत्नसङ्ग्रहो वा। |
| १२×६·५ | १५ | ५० | ” | ” | | ” | |
| १२·४×६·४ | ११ | ३६ | ” | ” | | पू० | |
| १२·४×६·४ | १२ | ४२ | ” | ” | १९०१ | ” | |
| १०·६×४·५ | ९ | ५१ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·३×३·२ | ९ | ६० | ” | ” | | ” | |
| ११×९·७ | १४ | ४१ | ” | ” | | पू० | टीका—सुबोधिनी। |
| ७×४·५ | ९ | १७ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·५×४·७ | ४२ | १५ | ” | ” | | ” | विविधौषधनिर्माणयोगविधिः संस्कृते हिन्दीभाषायाञ्च। |
| ९·७×४·२ | ९ | २१ | ” | ” | | पू० | |
| ९·७×९ | ९ | २८ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·९×४·४ | १३ | ४९ | ” | ” | | ” | चिकित्सास्थानस्य। |
| ९·४×९·१ | ९ | ३५ | ” | ” | | ” | टीका—आतङ्कदर्पणाख्या। |
| ५·८×४·७ | ८ | १६ | ” | ” | | ” | |
| ११×९·६ | १४ | ५० | ” | ” | | ” | |
| ६·९×१२·९ | २७ | १२ | ” | ” | | ” | |
| ९·५×४·३ | ८ | २१ | ” | ” | | ” | टीका—हिन्दीभाषायाम्। |
| १६·२×१४ | ९ | ६१ | प्रा० दे.ना. | ता.प. | | ” | |
| ९·८×५·३ | १३ | ४२ | दे.ना. | का | | ” | |
| १०×४·३ | ६ | ३८ | ” | ” | १८३८ | पू० | |
| १२·३×६·३ | १५ | ५५ | ” | ” | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९३९९ | आयुर्वेदप्रकाशः | | ९-५०+१ । |
| ४९४०० | पिप्पलीपाकविधिः | | १ । |
| ४९४०१ | रत्नशोधनमारणविधिः | | १ । |
| ४९४०२ | चिकित्सासङ्ग्रहः | | १ । |
| ४९४०३ | क्षेमकुतूहलं सानुवादम् | | १ । |
| ४९४०४ | वैद्यजीवनम् | लोलिम्बराजः | ३ । |
| ४९४०५ | उर्वरितपत्राणि | | १४ । ( गणनया ) |
| ४९४०६ | अञ्जननिदानं सटीकम् | | १-९९ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·८×४·८ | ८ | ४६ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९·८×४·३ | ९ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×४·२ | ११ | ३१ | ” | ” | | ” | |
| २१·३×८·८ | ४८ | २९ | ” | ” | | ” | |
| १३·५×९·१ | १० | ४४ | वङ्ग | ” | | ” | अनुवादः वङ्गभाषायाम् । |
| ८·३×३·६ | १० | २६ | दे.ना. | ” | | ” | |
| विविधः | × | × | ” | | | ” | |
| ९·६×४·७ | ९ | ३४ | ” | ” | | ” | टीका-हिन्दीभाषायाम् । |

# हस्तलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

## कामशास्त्रग्रन्थसङ्ग्रहात्मको भागः

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९४०७ | अनङ्गरङ्गः | | २३-२४ । |
| ४९४०८ | पञ्चसायकः | ज्योतिरीश्वरः | १-१८ । |
| ४९४०९ | होलाष्टकोपनिषत् | वामदेवः | १-६ । |
| ४९४१० | पञ्चसायकः | ज्योतिरीशः | १-३३ । |
| ४९४११ | अनङ्गरङ्गः | कल्याणमल्लः | १-२०, २०-३०, १-३९ । |
| ४९४१२ | कुट्टनीमतम् | दामोदरगुप्तः | पृ० १-१६९ । |
| ४९४१३ | अनङ्गरङ्गः | | १०-११, १३-२०, २२-२६, २८ । |
| ४९४१४ | स्मरदीपिका | | १ । |
| ४९४१५ | अनङ्गरङ्गः | कल्याणमल्लः | १-३६ । |
| ४९४१६ | ” | ” | १-२१ । |
| ४९४१७ | ” | ” | १-१३, १-३ । |
| ४९४१८ | पञ्चसायकः | ज्योतिरीशः | १-३३ । |
| ४९४१९ | स्मरदीपिका | | १-६ । |
| ४९४२० | ” | | ९-११ । |
| ४९४२१ | मन्मथसंहिता | | १-१५ । |
| ४९४२२ | अनङ्गरङ्गः | कल्याणमल्लः | १-२६ । |
| ४९४२३ | ” | ” | १-५ । |
| ४९४२४ | रतिरहस्यम् | कोक्कोकः | २१-४१ । |
| ४९४२५ | काममूत्रम् | वात्स्यायनः | १-६७, (=६७-७६) ७७-१०८ । |
| ४९४२६ | रतिरहस्यम् | कोक्कोकः | १-१९ । |
| ४९४२७ | कुट्टनीमतटिप्पणम् | | १-१३१, १३१-१४१, १४३-१९२ । |
| ४९४२८ | पञ्चसायकः | ज्योतिरीश्वरः | २-१७ । |
| ४९४२९ | अनङ्गरङ्गः | कल्याणमल्लः | १-४३ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·९×४·३ | ९ | ३१ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ८·९×३·३ | १० | ९८ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·३×३·३ | १० | ४१ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·४×४ | ९ | २९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·८×६·५ | ११ | ३१ | ,, | ,, | | ,, | कोक्कोककृतं रतिरहस्यञ्च । |
| ११·३×४·१ | ७ | ४७ | वङ्ग. | ,, | | ,, | पत्राङ्कमत्रपृष्ठाङ्कमित्यवधेयम् । |
| ९×३·८ | ९ | ३५ | दे. ना. | ,, | | अपू० | |
| ६·९×४·५ | ९ | १२ | ,, | ,, | १७९६<br>श. १६६१ | ,, | |
| १०×४·३ | ९ | ३६ | ,, | ,, | श. १७८९ | पू० | |
| ८·३×४·६ | १७ | ३५ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·९×३·८ | १२ | ५६ | ,, | ,, | १६८५ | अपू० | |
| १०·६×४·२ | ८ | ३४ | ,, | ,, | १९२५<br>१९३१ | पू० | |
| ९·६×३·९ | ७ | २६ | ,, | ,, | १८०८ | ,, | |
| ९·८×३·३ | ७ | ३५ | ,, | ,, | १८१९ | अपू० | |
| ९·३×४·४ | ७ | २६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ७×९·६ | १३ | ३२ | ,, | ,, | | ,, | दशमस्थलान्तः । |
| १०·५×४·६ | १० | ५५ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·६×४ | ९ | ४१ | ,, | ,, | १७०५ | ,, | |
| ९·५×४·४ | ९ | २७ | ,, | ,, | १७५९ | पू०* | |
| ९·७×२·८ | ७ | ३२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ६·४×१०·१ | २१ | २२ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·२×४·३ | ११ | ५४ | ,, | ,, | १८३१ | ,, | |
| ८·२×३·९ | ८ | २५ | ,, | ,, | १८३७ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९४३० | स्मरदीपिका | | १-८ । |
| ४९४३१ | पञ्चसायकः | | १-३३ । |
| ४९४३२ | अनङ्गरङ्गः | कल्याणमल्लः | ९-१४, १६-२२, २९-३२ । |
| ४९४३३ | ” | ” | १-९२ । |
| ४९४३४ | रतिमञ्जरी | जयदेवः | १-४ । |
| ४९४३५ | अनङ्गरङ्गः | कल्याणमल्लः | १-३१, ३३-५८, ६१-८० । |
| ४९४३६ | पञ्चसायकः | ज्योतिरीश्वरः | १-२, १-३७+१ । |
| ४९४३७ | रतिमञ्जरी | कामदेवः | १-२ । |
| ४९४३८ | फाल्गुनमाहात्म्यम् | | २-६ । |
| ४९४३९ | पञ्चसायकः | ज्योतिरीश्वरः | १-२९ । |
| ४९४४० | अनङ्गरङ्गः | कल्याणमल्लः | ४, १३-२२ । |
| ४९४४१ | ” | ” | १-४ । |
| ४९४४२ | स्मरदीपिका | | १-११ । |
| ४९४४३ | कोकशास्त्रसारः | | १-३ । |
| ४९४४४ | अनङ्गरङ्गः | कल्याणमल्लः | १-१७ । |
| ४९४४५ | रतिरहस्यं सटीकम् | कोक्कोकः टी० का०-काञ्चीनाथः | पृ० १, १-२४६ । |
| ४९४४६ | कन्दर्पचूडामणिः | वीरभद्रः | १-१७ । |
| ४९४४७ | ” | ” | १७-३८ । |
| ४९४४८ | स्मरदीपिका | | १-४ । |
| ४९४४९ | पञ्चसायकः | ज्योतिरीश्वरः | २९-२८ । |
| ४९४५० | स्मरदीपिका | | १, ३ । |
| ४९४५१ | पञ्चसायकः | | १३-१७ । |
| ४९४५२ | ” | ज्योतिरीशः | २-६, १०-१२, १४, १७ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·२×४·३ | १० | ३९ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ९·९×४·८ | १० | ४० | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·१×४·४ | ९ | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·७×३·८ | ८ | २२ | ,, | ,, | १८२९ | पू० | |
| १३·७×३·६ | ६ | ५९ | वङ्ग. | ,, | श. १७६२ | ,, | |
| ६·७×४·१ | ८ | १६ | दे. ना. | ,, | | अपू० | |
| १०·८×४·४ | ६ | ३४ | ,, | ,, | १८२२ | ,, | |
| ९·७×३·६ | १९ | ६९ | ,, | ,, | | पू० | रजस्वलाप्रकरणञ्च । |
| ११×४·७ | १० | ३१ | ,, | ,, | | अपू० | मन्मथसंहितायाम् । |
| ९·२×४ | १० | ३२ | ,, | ,, | १८३६ | पू० | |
| ९·८×४·४ | १२ | ४२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·८×४·२ | ९ | ३० | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·६×४·७ | १३ | १९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १३·२×४·४ | ८ | ९६ | ,, | ,, | | पू० | |
| १०×४·३ | ११ | ३८ | ,, | ,, | | ,, | अष्टमतरङ्गान्तः । |
| ८·९×६·७ | १८ | १८ | ,, | ,, | १९९४ | ,, | टीका-दीपिका । |
| ८·६×३·४ | ७ | ३९ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १२×४·७ | १३ | ९१ | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·६×४·८ | ८ | २३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·८×३·६ | ११ | ३७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·३×४·९ | १२ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·४×३·७ | १२ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ७×३·७ | ११ | २६ | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्यानिरूपणम् |
|---|---|---|---|
| ४९४९३ | पञ्चसायकः | ज्योतिरीशः | १-५, १-६, ८-२३, २५-२८, ३५-३७, ४०-५०, ६०, ५६-५८, ६१-६३, ८२-९५ । |
| ४९४९४ | ” | ” | १-१८ । |
| ४९४९५ | अनङ्गरङ्गः | कल्याणमल्लः | १-८+५ । |
| ४९४९६ | ” | ” | ४ । ( गणनया ) |
| ४९४९७ | ” | ” | १-५ । |
| ४९४९८ | ” | ” | १-१०, २१-३०, ३५-३६, ४१-४२ । |
| ४९४९९ | रतिरहस्यम् | | १०-१५, २७ । |
| ४९५०० | रतिरहस्यं सटीकम् | | ५२-९० । |
| ४९५०१ | कामसूत्रम् | वात्स्यायनः | १-३१ । |
| ४९५०२ | कामसूत्रं सभाष्यम् | ” | १-१५ । |
| ४९५०३ | बाह्यसंभोगविधानम् | | ६ । ( गणनया ) |
| ४९५०४ | पञ्चसायकः | | ४-५, १२-३३ । |
| ४९५०५ | कामशास्त्रग्रन्थविशेषः | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·८×९·८ | २० | १८ | दे.ना. | का. | १८८८ | अपू० | शङ्करकृतानिरञ्जनस्तुतिः, विविधप्रकीर्णविषयाश्च, पुटवद्ग्रोऽयं ग्रन्थः। |
| ८·८×४·९ | १३ | २७ | ” | ” | १७९२ | पू० | |
| १०×६·९ | १९ | ३० | ” | ” | | अपू० | |
| ९·६×४·१ | १४ | ३९ | वङ्ग. | ” | | ” | |
| १०×४ | १० | ३८ | दे.ना. | ” | | ” | |
| ७·९×४·४ | ८ | २१ | ” | ” | | ” | |
| ६·४×९·६ | १९ | ३० | ” | ” | | ” | |
| ९·३×४·६ | ९ | २९ | ” | ” | | ” | टीका-मराठीभाषायाम्। |
| १०·९×४·९ | ६ | ३१ | ” | ” | | पू० | २ अधिकरणे ४ अध्यायान्तम्। |
| ११·८×४·९ | ७ | ९० | ” | ” | | अपू० | |
| १०·६×४·६ | ४९ | २० | ” | ” | | पू०* | कामसूत्रनिरूपणञ्चेति पद्मिन्यादीनाम्, चन्द्रकलाविचारसहितम्। |
| १०×४·२ | १० | ३४ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·६×४·९ | ९ | ३९ | ” | ” | | ” | |

# हस्तलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

## शिल्पकलाग्रन्थसङ्ग्रहात्मको भागः

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९४६६ | पत्रलेखनप्रकारः | भास्करः | १-१२ । |
| ४९४६७ | प्रशस्तिकाशिका | बालकृष्णः | १-८ । |
| ४९४६८ | ” | ” | १-१३+१ । |
| ४९४६९ | वास्तुमण्डनम् | सूत्रधारमण्डनः | १-१८ । |
| ४९४७० | गंजीफाखेलनप्रकारः | | १-२ । |
| ४९४७१ | गैरिकसूत्रं सवृत्तिकम् | वृ० का०— गङ्गारामजडी | १ । |
| ४९४७२ | गैरिकसूत्रवृत्तिः | गङ्गारामजडी | १-२ । |
| ४९४७३ | मूर्त्तिनिर्माणविधिः | | १ । |
| ४९४७४ | ” | | १ । |
| ४९४७५ | विश्वकर्माप्रकाशः | विश्वकर्मा | १-७ । |
| ४९४७६ | रूपमण्डनवास्तुशास्त्रम् | सूत्रधारमण्डनः | १-१२ । |
| ४९४७७ | कूपार्थभूमिपरीक्षा | | १-४ । |
| ४९४७८ | मानसारः | | १-४९७ । |
| ४९४७९ | रत्नपरीक्षा सटीका | | १-१६ । |
| ४९४८० | रत्नपरीक्षा | | १-३८ । |
| ४९४८१ | रत्नपरीक्षा सव्याख्या | अगस्तिः | १-१२ । |
| ४९४८२ | रत्नपरीक्षा | | १-२३, १९-४० । |
| ४९४८३ | प्रासादमण्डनम् | सूत्रधारमण्डनः | १-२० । |
| ४९४८४ | विलासमणिमञ्जरी सटीका | त्रिवेंगडाचार्यः टी०का०— ” | १-१९, २१-२७, २७-५६ । |
| ४९४८५ | रत्नपरीक्षा | अगस्तिः | १-२८ । |
| ४९४८६ | मणिपरीक्षा | | ३९-५२, ५४ । |
| ४९४८७ | मानसोल्लासः | सोमेश्वरः | १-४४ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·७×४·३ | ८ | २६ | दे.ना. | का. | | पू० | प्रशस्तिमयः पञ्चमतरङ्गान्तः। |
| १३·९×५·३ | १२ | ५९ | ” | ” | | ” | |
| ११×३·५ | ११ | ५३ | ” | ” | १८८१ | ” | |
| १२·८×६·३ | १६ | ४६ | ” | ” | | अपू० | |
| ६·५×३·८ | ९ | २३ | ” | ” | | ” | |
| ९×४·५ | १३ | ३० | ” | ” | | पू० | |
| ६·९×३·५ | ९ | २८ | ” | ” | | ” | |
| ९·१×४ | १९ | १२ | ” | ” | | ” | शालग्राममहेश्वरादीनाम्। |
| १२·९×४·३ | ३३ | १६ | ” | ” | | ” | |
| ९·२×५ | १३ | ४६ | ” | ” | | अपू० | वास्तुप्रकाशशास्त्रं वा। |
| १०·९×४·८ | ९ | ४० | ” | ” | | ” | |
| ९·८×४·३ | ९ | ३५ | ” | ” | | पू० | |
| १३·५×८·५ | २४ | १६ | ” | ” | ई० १८९७ | ” | पुटबद्धोऽयं ग्रन्थः। |
| १०·१×४·४ | ९ | २७ | ” | ” | १८५० | ” | टीका–गुर्जरभाषायाम्। |
| ६·३×३·५ | ६ | १४ | ” | ” | | अपू० | |
| ११·६×४·५ | ११ | ५७ | ” | ” | १७९६ | पू० | |
| ९·२×५·८ | १२ | २४ | ” | ” | | अपू० | मणिशास्त्रं वा। |
| १०·७×५·५ | ११ | ३९ | ” | ” | | पू० | |
| ९·४×५ | ११ | ३३ | ” | ” | | ”* | अत्र शतरञ्जक्रीडनेन सह काव्य-चातुर्यम् प्रदर्शितमस्ति। पूर्वखण्डात्मकोऽयं ग्रन्थः। |
| ९×४·६ | ९ | २७ | ” | ” | १८२७ | ” | |
| ६·३×३·४ | ७ | २० | ” | ” | | अपू० | |
| १०·५×४·५ | ८ | ३६ | ” | ” | १९३६ | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९४८८ | निधिप्रदीपः | श्रीकण्ठः | १-३६, ३८-३९ । |
| ४९४८९ | बुद्धिबलचालनप्रकारः | | १-४ । |
| ४९४९० | प्रासादमण्डनम् | | १-३९ । |
| ४९४९१ | वास्तुशास्त्रम् | | १-२३ । |
| ४९४९२ | रत्नपरीक्षा | | १-९ । |
| ४९४९३ | शतरञ्जविलासः | | २-१० । |
| ४९४९४ | चतुरङ्गतरङ्गिणी | वंशमणिः | १-९ । |
| ४९४९५ | उपवनविनोदः | | १-१६ । |
| ४९४९६ | चतुरङ्गिणी | वंशमणिः | १-१० । |
| ४९४९७ | राजवल्लभमण्डनम् | | १-२३, २६-३६ । |
| ४९४९८ | वास्तुराजवल्लभः सव्याख्यः | सूत्रधारमण्डनः | १-५२ । |
| ४९४९९ | पत्रकौमुदी | | १-३ । |
| ४९५०० | अङ्कस्थापनम् | | १ । |
| ४९५०१ | कृष्णखेलः | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८×३ | ७ | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | भूगर्भस्थनिधिज्ञानतत्प्राप्त्युपाय-समयादिनिर्णयः। |
| ८·६×४·६ | १२ | ३१ | ” | ” | | ” | |
| १०·४×४·१ | ७ | ३० | ” | ” | १८८२ | पू० | |
| १०·३×४·७ | १० | ६० | ” | ” | | अपू० | |
| १३·७×४·४ | ८ | ६३ | ” | ” | | पू० | रत्नदीपिका वा। |
| ११·२×६·१ | १२ | ४६ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·९×४·६ | १२ | ४७ | ” | ” | १८८६ | पू० | १-२ तरङ्गौ। |
| १०×३·३ | ७ | ४६ | मै. | ” | | ” | |
| ११×३·७ | ४३ | ७ | ” | ” | फ.सा. १२८९ | ” | |
| ९×४·३ | ९ | ३८ | दे. ना. | ” | १८४७ | अपू० | |
| १२·६×६·७ | १९ | ४६ | ” | ” | १८८२ | पू० | व्याख्या—गुर्जरभाषायाम्। |
| १६·३×३·४ | ८ | ६४ | बङ्ग. | ” | | ” | पत्र, प्रमाणपत्रलेखनादिप्रकाशः। |
| ९·६×४·२ | × | × | दे. ना. | ” | | ” | शतरञ्जक्रीडायाञ्चतुःषष्टिकोष्ठेषु घोटकगतिनिरूपणात्मकम्। |
| १२·३×४·३ | १७ | ६९ | ” | ” | | ” | |

# हस्तलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

## सङ्गीतग्रन्थसङ्ग्रहात्मको भागः

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९९०२ | रागनाममालामूर्त्तिः | | १-६, १-४७, ४९-५१ । |
| ४९९०३ | सङ्गीतरत्नावली | | ११-२७, ३६, ३८-३९, ४२-४८ । |
| ४९९०४ | गायनशास्त्रम् | | १ । |
| ४९९०५ | रागरागिणीस्वरूपसूची | | १ । |
| ४९९०६ | षड्रागवर्णनम् | नारदः | १-२, +२ । |
| ४९९०७ | सङ्गीतरत्नाकरः | शार्ङ्गदेवः | १७-२९ । |
| ४९९०८ | ,, | | २-९० । |
| ४९९०९ | ,, | | २-२३ । |
| ४९९१० | ,, | शार्ङ्गदेवः | २-८९ । |
| ४९९११ | सङ्गीतरघुनन्दनं सटीकम् | | १-६७ । |
| ४९९१२ | सङ्गीतविषयको ग्रन्थः | | २, ४-१३, ७३-८६ । |
| ४९९१३ | सङ्गीतदर्पणः | दामोदरः | १-६० । |
| ४९९१४ | रागमाला | | १-५ । |
| ४९९१५ | सङ्गीतदर्पणः | दामोदरः | २-११ । |
| ४९९१६ | चौतालाकामोद्दरा | | १-४ । |
| ४९९१७ | सङ्गीतदर्पणः | दामोदरभट्टः | १-३९ । |
| ४९९१८ | ,, | हरिभट्टः | १+२ । |
| ४९९१९ | नर्तननिर्णयः | पुण्डरीकविट्ठलः | १-१४ । |
| ४९९२० | तालविचारः | | २-१९ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७·६×५·६ | १५ | ११ | दे.ना | का. | | पू०* | अत्र हिन्दीभाषायां रागरत्नाकरः, गानकुतूहलम्, रागरत्नमाला, रास-पञ्चाध्यायिपदानि भक्तविरुदावली च। |
| ११·४×४·३ | ९ | ३३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·८×४·६ | १९ | ४५ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·८×४·५ | १६ | २७ | ,, | ,, | | पू० | |
| १२·८×४·१ | ६ | ४२ | बङ्ग. | ,, | | अपू० | पञ्चमसारसंहितायाम्। कोष्ठान्तर्गतं पत्रद्वयं निरङ्कम्। कालीशतनाम स्तोत्रञ्च। |
| १३·५×६·७ | ११ | ५१ | दे.ना. | ,, | | ,, | १-२ अध्यायौ। |
| १२·५×४·५ | ९ | ४२ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·२×४·८ | ९ | ३८ | ,, | ,, | | ,, | लिपिभेदः। |
| १२·५×४ ९ | १० | ४६ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·२×४ | ११ | ३७ | ,, | ,, | १८९३ | ,, | |
| १०·२×४·२ | ९ | ३८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·८×४·२ | १० | ३८ | ,, | ,, | | पू० | |
| ७·८×४·२ | ९ | १९ | ,, | ,, | १८११ | ,, | |
| ९·६×४·१ | ९ | ४३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ५×५ | १३ | १६ | ,, | ,, | | ,, | मृदङ्गवाद्यतालाः। |
| ११·२×४·९ | ९ | ४३ | ,, | ,, | | पू० | वाद्याध्यायान्तः। |
| ११·३×८ | २२ | ९ | ,, | ,, | | अपू० | बङ्गलिपिश्च। |
| १०·५×४·२ | ९ | ३७ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·३×४·७ | १० | ३० | ,, | ,, | | अपू० | |

# हस्तलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

## नीतिशास्त्रग्रन्थसङ्ग्रहात्मको भागः

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९९२१ | नीतिसारटीका | | १-१९२ । |
| ४९९२२ | शुक्रनीतिः | | २-१६८ । |
| ४९९२३ | वृद्धचाणक्यम् | | १-३०, ३२-३९ । |
| ४९९२४ | नीतिमयूखः | नीलकण्ठभट्टः | १-३९ । |
| ४९९२५ | वृद्धचाणक्यम् | | १ । |
| ४९९२६ | बृहच्चाणक्यम् | | १-२० । |
| ४९९२७ | नीतिरत्नम् | वररुचिः | १-२ । |
| ४९९२८ | वृद्धचाणक्यम् | | १-९ । |
| ४९९२९ | चाणक्यसारसङ्ग्रहः सटीकः | | २, ४, ६-१३, १५-१६, १८-२४, २७-३१, ३३-३४, ३६-३८, ४०-४८, ५०, ५२-५३, ५६-५८, ६०, ६२-६४, ६७-७४, ७६ । |
| ४९९३० | शुक्रनीतिः | | १ । |
| ४९९३१ | राजनीतिप्रकरणसूची | | १ । |
| ४९९३२ | राजनीतिप्रकरणम् | | १ । |
| ४९९३३ | नीतिश्लोकाः | | ६-७ । |
| ४९९३४ | लघुचाणक्यं सानुवादम् | चाणक्यः | १-१७ । |
| ४९९३५ | नीतिसारः | कामन्दकः | १-४९ । |
| ४९९३६ | सोमनीतिः | | १-११४ । |
| ४९९३७ | लघुचाणक्यम् | | १४-२४, २६-३० । |
| ४९९३८ | वृद्धचाणक्यम् | वृद्धचाणक्यः | १०-२५ । |
| ४९९३९ | चाणक्यसारसङ्ग्रहः | चाणक्यः | १-९ । |
| ४९९४० | वृद्धचाणक्यम् | | १-१० । |
| ४९९४१ | लघुचाणक्यम् | चाणक्यः | १-२५ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·२×६ | १२ | ३२ | दे.ना. | का. | १९२० | पू० | उपाध्यायनिरपेक्षानामिका । १-२० सर्गाः । |
| ८·२×६·२ | ११ | २३ | ” | ” | | अपू० | पुस्तकं सूत्रसन्नद्धम् । |
| ९·४×५·८ | १० | २३ | ” | ” | | ” | इतरनीतिसङ्ग्रहश्च । |
| ८·४×४ | ९ | ५० | ” | ” | | पू० | |
| ९·७×४·३ | ६ | ३८ | ” | ” | १८९९ | अपू० | |
| १०·३×४·३ | ९ | ३६ | ” | ” | १८८७ | पू० | |
| १०·३×४·५ | ९ | ३३ | ” | ” | | ” | अन्ते नीतिसारश्च । |
| ९·३×४·१ | ७ | २८ | ” | ” | | अपू० | |
| ७·३×३·७ | ७ | ३ | ” | ” | | ” | टीका–नेपालीभाषायाम् । |
| १०·७×४·५ | १४ | ४३ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×४·६ | १८ | ३० | ” | ” | | पू० | |
| १०·५×४·६ | २१ | ५० | ” | ” | | अपू० | |
| १०·७×४·६ | १९ | ४८ | ” | ” | | ” | |
| ७·६×४·८ | १० | २३ | ” | ” | १९५७ | पू० | १-८ अध्यायाः, अनुवादो गुर्जर-भाषायाम् । |
| ८·४×४·१ | १० | २८ | ” | ” | १८२४ श. १६८९ | ” | |
| ८·२×३·१ | ७ | २० | ” | ” | | ” | |
| ९·२×२·५ | ४ | ३२ | ” | ” | | अपू० | वृद्धचाणक्यश्च । |
| ९·४×४·२ | ७ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ८·४×३·८ | ९ | ३८ | ” | ” | श. १७१६ | पू० | |
| ९·२×४·२ | १२ | ३१ | ” | ” | | ” | १-८ अध्यायाः । |
| ९·५×५·३ | ८ | २४ | ” | ” | | ” | यत्र तत्र पुष्पिकायां बृहच्चाणक्ये इत्यपि लिखितम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९९४२ | लघुचाणक्यम् | | १-२, १-२ । |
| ४९९४३ | ” | चाणक्यः | २-६ । |
| ४९९४४ | चाणक्यसारसङ्ग्रहः | | १-८ । |
| ४९९४५ | लघुचाणक्यम् | | १-७, ७-२९, ३२-३३ । |
| ४९९४६ | वृद्धचाणक्यम् | | १-२ । |
| ४९९४७ | बालशिक्षोपदेशः | सिद्धेश्वरः | १-६ । |
| ४९९४८ | चाणक्यनीतिः | चाणक्यः | १-९ । |
| ४९९४९ | लघुचाणक्यं सटीकम् | | १-६१ । |
| ४९९५० | ” | | १-२१ । |
| ४९९५१ | बालशिक्षा | सिद्धेश्वरः | १-४ । |
| ४९९५२ | राजनीतिसमुच्चयः | चाणक्यः | १-१२ । |
| ४९९५३ | कामन्दकीयनीतिसारः | | २-२२, २३ ( = २४-२९), २६-३४, ३४-६४। |
| ४९९५४ | वृद्धचाणक्यम् | चाणक्यः | १-४, ७, ९-१३ । |
| ४९९५५ | चाणक्यसारसङ्ग्रहः | | १-५, ७-९ । |
| ४९९५६ | ” | चाणक्यः | १-१० । |
| ४९९५७ | लघुचाणक्यम् | | १-१६ । |
| ४९९५८ | राजनीतिसमुच्चयः | वृद्धचाणक्यः | १-१३ । |
| ४९९५९ | कामन्दकीयनीतिसारः | | १-१९ । |
| ४९९६० | लघुचाणक्यनीतिः | | १-१२ । |
| ४९९६१ | ” | चाणक्यः | १-१२, १४-१६ । |
| ४९९६२ | शुक्रनीतिसारः | | १-४ । |
| ४९९६३ | चाणक्यनीतिः | | २-९, ११-२६ । |
| ४९९६४ | लघुचाणक्यम् | चाणक्यः | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | कागजः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·७×५ | १२ | ३७ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९·५×४·२ | ११ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| ८·७×३·७ | १० | ३० | मै. | ” | | ” | |
| ६·१×३·५ | ७ | १७ | दे.ना | ” | | ” | वृद्धचाणक्यञ्च । |
| ६:५×९·९ | २१ | १९ | ” | ” | १९२४ | ” | १७ अध्यायः । |
| ९·२×४·३ | ७ | २० | ” | ” | १९३४ | पू० | |
| १०×४·४ | ११ | ३६ | ” | ” | १८८५ | ” | |
| ९×४ ६ | ६ | २९ | ” | ” | श. १६९३ (पृ. १६) | ” | अन्ते वृद्धचाणक्यञ्च । टीका–हिन्दी-भाषायाम् पद्यमयी । |
| ६·४×४·१ | ८ | १८ | ” | ” | १६९८ | ” | |
| ९·३×४·३ | ८ | २४ | ” | ” | १९३४ | ” | पूर्वपीठिका । |
| ८·३×४·२ | ८ | ३२ | ” | ” | १८१५ | ” | |
| १२·५×५·१ | ९ | ४४ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·५×४·५ | १० | ३३ | ” | ” | १८१९ | ” | राजनीतिसमुच्चय इति नामान्तरम् । |
| ९·५×४·३ | ९ | ४३ | ” | ” | | ” | |
| १०×४·५ | ८ | २७ | ” | ” | १८२७ | पू० | |
| ८×४ | ११ | २४ | ” | ” | १९२२ | ” | वृद्धचाणक्यञ्च । |
| १०·५×४·२ | ९ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| ९·४×४·२ | ७ | ३० | ” | ” | | अपू० | |
| ७×३·८ | १० | २३ | ” | ” | १६०० | पू० | |
| ७×५·६ | १० | १५ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·१×४·५ | ९ | ३८ | ” | ” | | पू० | प्रथमं प्रकरणम् । |
| ६·५×३·२ | ८ | २३ | ” | ” | १८७३ | अपू० | नीतिशास्त्रसमुच्चयो वा । |
| ९·२×४·८ | ८ | २१ | ” | ” | | पू० | १-८ अध्यायाः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९९६९ | राजनीतिसमुच्चयः | चाणक्यः | १-१२ । |
| ४९९६६ | नीतिश्लोकसङ्ग्रहः | | ४-८,१०, १२ । |
| ४९९६७ | वृद्धचाणक्यम् | | २-१४, १६-१९, २२ । |
| ४९९६८ | ” | | १-१२ । |
| ४९९६९ | ” | | १-२३ । |
| ४९९७० | राजनीतिशास्त्रम् | | १-११ । |
| ४९९७१ | चाणक्यसारसङ्ग्रहः | | १-१४ । |
| ४९९७२ | लघुचाणक्यम् | | १-१९ । |
| ४९९७३ | चाणक्यनीतिः | | २, २० । |
| ४९९७४ | चाणक्यसारसङ्ग्रहः सानुवादः | | १-२० । |
| ४९९७५ | ” | चाणक्यः | १-१९ । |
| ४९९७६ | ” | ” | १-२ । |
| ४९९७७ | ” | ” | १-१० । |
| ४९९७८ | ” | | २-३, ५-८, १०-११ । |
| ४९९७९ | विदुरनीतिः सटीका | टी० का०—नीलकण्ठः | १-६७ । |
| ४९९८० | चाणक्यनीतिः | चाणक्यः | २-११ । |
| ४९९८१ | नीतिश्लोकसङ्ग्रहः | | ९-१२ । |
| ४९९८२ | लघुचाणक्यम् | | १-८ । |
| ४९९८३ | चाणक्यनीतिः | चाणक्यः | १-३३ । |
| ४९९८४ | नीतिश्लोकाः | | १ । |
| ४९९८५ | चाणक्यसारसङ्ग्रहः | | १-९ । |
| ४९९८६ | वृहच्चाणक्यम् | | ३-४, ६-९ । |

| आकार: | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपि: | आकार: | लिपिकाल: | पूर्णापूर्ण-विवेक: | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·२×३·६ | ९ | २२ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ७·९×९·१ | ११ | २२ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·९×४·३ | १० | ३९ | ” | ” | | ” | |
| ११·९×४·८ | ९ | ४२ | ” | ” | | पू० | १-८ अध्यायाः । |
| ८·६×४·२ | १० | ३० | ” | ” | | ” | |
| १०·३×४·९ | ११ | ३३ | ” | ” | | अपू० | पञ्चोपाख्यानं वा । अत्र मित्रभेदादित उद्धृतश्लोकसङ्ग्रहोऽस्ति । |
| ९·८×४·३ | ८ | ३२ | ” | ” | | पू० | |
| ९·९×४·१ | ६ | २९ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·८×३·७ | ६ | ३० | ” | ” | | ” | |
| १९·७×३·९ | ९ | ४६ | वङ्ग. | ” | | ” | अनुवादो वङ्गभाषायाम् समश्लोकी । |
| ८·४×६२·८ | ४ | २७ | ” | ” | | पू० | |
| ९·४×२·९ | ७ | ४४ | मै. | ” | | अपू० | |
| १२×३·७ | ६ | ३३ | वङ्ग. | ” | १२१६ वङ्गाब्दः | पू० | |
| ६·३×४·६ | १२ | २३ | दे. ना. | ” | १८७९ | अपू० | |
| ९·२×४·२ | ९ | ३२ | ” | ” | | पू० | महाभारते । |
| ९·८×४·२ | ९ | ३९ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·९ × ३·६ | ७ | ३० | ” | ” | | ” | |
| १०·९×४·७ | १३ | ४९ | ” | ” | | पू० | वृद्धचाणक्यञ्च । |
| ८·१×९·९ | १० | २९ | ” | ” | १८८२ | अपू० | |
| ४·८×३·२ | १० | १८ | ” | ” | | ” | |
| १४·८×३·६ | ८ | ९९ | वङ्ग. | ” | | ” | |
| १४·४×४·९ | ९ | ३९ | दे. ना. | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९९८७ | लघुचाणक्यम् | | १-१७ । |
| ४९९८८ | ” | | १-९, ७-८ । |
| ४९९८९ | नीतिसारः | कामन्दकः | ३-२०, २२-३३ । |
| ४९९९० | वृद्धचाणक्यम् | | १-६ । |
| ४९९९१ | लघुचाणक्यम् | | १-८ । |
| ४९९९२ | वृद्धचाणक्यम् | | १-९ । |
| ४९९९३ | चाणक्यनीतिः | चाणक्यः | १-२२ । |
| ४९९९४ | ” | ” | १-९ । |
| ४९९९५ | वृद्धचाणक्यम् | | ९ । |
| ४९९९६ | लघुचाणक्यम् | चाणक्यः | १-९ । |
| ४९९९७ | चाणक्यशास्त्रम् | वन ऋषिः | १-१९ । |
| | **धनुर्वेदः** | | |
| ४९९९८ | वीरचिन्तामणिः | गङ्गाधरः | १-६ । |
| ४९९९९ | ” | | १-१० । |
| ४९६०० | ” | शार्ङ्गधरः | १-१२ । |
| ४९६०१ | ” | ” | १-११ । |
| | **पञ्जी** | | |
| ४९६०२ | पञ्जीप्रबन्धः | | १-२ । |
| | **प्रशस्तिः** | | |
| ४९६०३ | राजादिप्रशस्तिः | | २-४ । |
| ४९६०४ | आशीर्वादप्रशस्तिः | रत्नेश्वरभट्टः | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·९×३·२ | ७ | ३९ | दे.ना. | का. | | पू० | वृद्धचाणक्यञ्च । |
| १० × ३·३ | ७ | ३३ | ” | ” | | अपू० | |
| १०×४·३ | ८ | २७ | ” | ” | | ” | |
| ८·९·×४·२ | १२ | ४० | ” | ” | १८७१ | पू० | |
| ९·९×४·३ | ७ | १९ | ” | ” | | ” | १-६ अध्यायाः । |
| १०·७×४·९ | ११ | ४० | ” | ” | १७८३ | ” | |
| ९·७×९ | १० | २८ | ” | ” | १८९८ | ” | |
| ९·९×४·३ | ९ | १६ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·३×४·४ | ८ | २७ | ” | ” | | ” | तृतीयोऽध्यायः । |
| १०×४·४ | १० | ३२ | ” | ” | | पू० | १-८ अध्यायाः । |
| १०·९×४·९ | १० | २६ | ” | ” | १८९५<br>श. १७६१ | ” | |
| **धनुर्वेदः** | | | | | | | |
| ९·९×४·३ | १९ | ४८ | दे.ना | का. | | पू० | |
| १०·३×६·६ | १९ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ११·१×४·७ | १० | ३६ | ” | ” | | ” | युद्धविध्यन्तः । |
| १०·७×४·६ | ९ | ४७ | ” | ” | | ” | ” |
| **पञ्जी** | | | | | | | |
| १९·१×३·३ | ६ | ९८ | वङ्ग. | का. | | अपू० | |
| **प्रशस्तिः** | | | | | | | |
| ६·९×४·६ | १६ | ४६ | दे.ना | का. | १८३६ | अपू० | |
| १६·२×४·३ | ९ | ९१ | ” | ” | | ” | माधवरावसिन्धियानरेशस्याशीराशंसनम् । |

# हस्तलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

## चित्रग्रन्थसङ्ग्रहात्मको भागः

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसङ्ख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९६०५ | विष्णुचित्रम् | | १। |
| ४९६०६ | गोविन्दचित्रम् | | १। |
| ४९६०७ | वासुदेवचित्रम् | | १। |
| ४९६०८ | दामोदरचित्रम् | | १। |
| ४९६०९ | पुरुषोत्तमचित्रम् | | १। |
| ४९६१० | हृषीकेशचित्रम् | | १। |
| ४९६११ | उपेन्द्रचित्रम् | | १। |
| ४९६१२ | प्रद्युम्नचित्रम् | | १। |
| ४९६१३ | जनार्दनचित्रम् | | १। |
| ४९६१४ | अच्युतचित्रम् | | १। |
| ४९६१५ | कृष्णचित्रम् | | १। |
| ४९६१६ | मधुसूदनचित्रम् | | १। |
| ४९६१७ | माधवचित्रम् | | १। |
| ४९६१८ | त्रिविक्रमचित्रम् | | १। |
| ४९६१९ | नारायणचित्रम् | | १। |
| ४९६२० | वामनचित्रम् | | १। |
| ४९६२१ | अधोक्षजचित्रम् | | १। |
| ४९६२२ | नृसिंहचित्रम् | | १। |
| ४९६२३ | हरिचित्रम् | | १। |
| ४९६२४ | सङ्कर्षणचित्रम् | | १। |
| ४९६२५ | अनिरुद्धचित्रम् | | १। |
| ४९६२६ | श्रीधरचित्रम् | | १। |
| ४९६२७ | पद्मनाभचित्रम् | | १। |
| ४९६२८ | जगन्नाथचित्रम् | | १। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या। | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६·५×४·२ | | | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ,, | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ,, | | | ,, | ,, | | ,,

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४५६२९ | जगन्नाथचित्रम् | | १। |
| ४५६३० | ” | | १। |
| ४५६३१ | ” | | १। |
| ४५६३२ | द्वारकाधीशचित्रम् | | १। |
| ४५६३३ | ” | | १। |
| ४५६३४ | ” | | १। |
| ४५६३५ | ” | | १। |
| ४५६३६ | ” | | १। |
| ४५६३७ | लक्ष्मीचित्रम् (हस्तियुतम्) | | १। |
| ४५६३८ | ” ” | | १। |
| ४५६३९ | ” ” | | १। |
| ४५६४० | पदचित्रम् | | १। |
| ४५६४१ | हस्तचित्रम् | | १। |
| ४५६४२ | स्त्रीचित्रम् | | १। |
| ४५६४३ | लक्ष्मीचित्रम् (हस्तियुतम्) | | १। |
| ४५६४४ | देवीचित्रम् | | १। |
| ४५६४५ | जगन्नाथचित्रम् | | १। |
| ४५६४६ | सर्वतोभद्रचित्रम् | | १। |
| ४५६४७ | अग्निष्टोमविहोरचित्रम् | | १। |
| ४५६४८ | हस्तचित्रम् | | १। |
| ४५६४९ | ” | | १। |
| ४५६५० | व्यङ्कटेशचित्रम् | | १। |
| ४५६५१ | दुर्गाचित्रम् | | १। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | ग्रन्थाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६·५×४·२ | | | दे.ना | का. | | पू० | |
| ४·७×४·७ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ४·१×३·९ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·२×६·८ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ३·४×२·६ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·८×३·२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·७×४·४ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ३·२×२·४ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·२×४·२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ६×४·६ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·२×४·४ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·६×६·१ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| २४×१८·६ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| २६·८×१९·२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·२×३·६ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·१×१०·२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| फी इ.पाँ. × फी इ.पाँ.<br>३ ३ ७ × ३ ४ २ | | | ,, | वस्त्रम् | | ,, | |
| १३·४×६·७ | | | ,, | का. | | ,, | |
| १८·७×७·२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १०×४·६ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·३×४·७ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·८ × ९·८ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·३ × ९·६ | | | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९६९२ | देवीचक्रचित्रम् | | १। |
| ४९६९३ | कृष्णगोष्ठीचित्रम् | | १। |
| ४९६९४ | षट्कोणचित्रम् | | १। |
| ४९६९५ | सर्वतोभद्रादिचित्राणि | | २६। |
| ४९६९६ | सर्वतोभद्रचित्रम् | | १। |
| ४९६९७ | गणेशचित्रम् | | १। |
| ४९६९८ | पदचित्रम् | | १। |
| ४९६९९ | द्वारकाचित्रम् | | १। |
| ४९६६० | हस्तचित्रम् | | १। |
| ४९६६१ | ” | | १। |
| ४९६६२ | हनुमच्चित्रम् | | १। |
| ४९६६३ | कूपवास्तुपदचित्रम् | | १। |
| ४९६६४ | एकलिंगतोभद्रचित्रम् | | १। |
| ४९६६५ | ” | | १। |
| ४९६६६ | सर्वतोभद्रमण्डलचित्रम् | | १। |
| ४९६६७ | जलवास्तुवाप्यादिपदचित्रम् | | १। |
| ४९६६८ | नवग्रहचित्रम् | | ३। |
| ४९६६९ | ब्रह्मादिमण्डलचित्रम् | | १। |
| ४९६७० | जगन्नाथचित्रम् | | १। |
| ४९६७१ | द्वादशारचक्रचित्रम् | | १। |
| ४९६७२ | सर्वतोभद्रचित्रम् | | १। |
| ४९६७३ | षोडशारचक्रचित्रम् | | १। |
| ४९६७४ | वारुणमण्डलचित्रम् | | १। |
| ४९६७५ | वृक्षवास्तुपदचित्रम् | | १। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेचः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३×११·६ | | | दे.ना. | का. | | पू० | |
| १०×८·९ | | | | ,, | | ,, | |
| १४·४×४·१ | | | | ,, | | ,, | |
| विविधः | | | | ,, | | ,, | |
| ७·७×७·९ | | | | ,, | | ,, | |
| ११·२×९·९ | | | | ,, | | ,, | |
| ९·८×४·९ | | | | ,, | | ,, | |
| १०·९×१०·३ | | | | ,, | | ,, | |
| १२·४×९·७ | | | | ,, | | ,, | |
| ७·४×४·२ | | | | ,, | | ,, | |
| १३·९×८·८ | | | | ,, | | ,, | |
| ९×८ | | | | ,, | | ,, | |
| १२·७×१२·७ | | | | ,, | | अपू० | |
| ९·६×६·३ | | | | ,, | | पू० | |
| १२·९×८·९ | | | | ,, | | ,, | |
| ८·९×८ | | | | ,, | | ,, | |
| ८·९×७·७ | | | | ,, | | ,, | |
| ८·६×४·३ | | | | ,, | | ,, | वास्तुचक्रे । |
| १०·३×८·८ | | | | ,, | | ,, | |
| ८·३×४·३ | | | | ,, | | ,, | |
| ३×२·९ | | | | ,, | | ,, | |
| २६×११ | | | | ,, | | ,, | |
| १०·२×७·४ | | | | ,, | | ,, | |
| ८·९×७·८ | | | | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९६७६ | प्रासादवास्तुपदचित्रम् | | १ । |
| ४९६७७ | सर्वतोभद्रादिचित्राणि | | १३ । |
| ४९६७८ | लिङ्गतोभद्रचित्रम् | | १ । |
| ४९६७९ | सर्वतोभद्रादिचित्रम् | | १ । |
| ४९६८० | वास्तुमण्डलचित्रम् | | १ । |
| ४९६८१ | भूगोलचित्रम् | | १ । |
| ४९६८२ | विविधयन्त्राणि | | १ । |
| ४९६८३ | वारुणमण्डलम् | | १ । |
| ४९६८४ | अष्टकोणयन्त्रम् | | १ । |
| ४९६८५ | अष्टदलकमलचित्रम् | | १ । |
| ४९६८६ | रुद्रयन्त्रम् | | १ । |
| ४९६८७ | हनुमच्चित्रम् | | १ । |
| ४९६८८ | अष्टलिंगतोभद्रम् | | १ । |
| ४९६८९ | सर्वतोभद्रचक्रम् | | २ । |
| ४९६९० | हस्तचित्रम् | | १ । |
| ४९६९१ | लिङ्गतोभद्रम् | | २ । |
| ४९६९२ | वास्तुचक्रम् | | ३ । |
| ४९६९३ | गायत्रीचक्रम् | | १ । |
| ४९६९४ | वास्तुमण्डलम् | | १ । |
| ४९६९५ | ,, | | १ । |
| ४९६९६ | ,, | | १ । |
| ४९६९७ | ,, | | १ । |
| ४९६९८ | ,, | | १ । |
| ४९६९९ | चित्रकाव्यचित्रम् | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·९×८·२ | | | दे. ना. | का. | | पू० | |
| विविधः | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १३·८×७·३ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·६×१०·२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·४×७·१ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| २३·९×१८·८ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १८·४×१७·८ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·८×८·८ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·२ × ८·१ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १४·९×१४·३ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १३·७×१३·८ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·७×९·१ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·९×८·९ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ११×११ | | | | | | ,, | |
| २७·४×२२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १९·९×१७ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·९ × ९ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १८×८·९ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·४×९·४ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·३×८·९ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·७×१०·९ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·३ × १०·२ | | | | | | ,, | |
| १०·२×१०·३ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·९×१० | | | ,, | ,, | | ,, | गंगातरङ्गबन्धः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९७०० | नवग्रहचित्रम् | | १। |
| ४९७०१ | सर्वतोभद्रचित्रम् | | १। |
| ४९७०२ | अग्निष्टोमयागविहारचित्रम् | | १। |
| ४९७०३ | हस्तचित्रम् | | १। |
| ४९७०४ | लिङ्गतोभद्रचित्रम् | | १। |
| ४९७०५ | महायन्त्रचित्रम् | | १। |
| ४९७०६ | वास्तुचक्रचित्रम् | | १। |
| ४९७०७ | लिङ्गतोभद्रचित्रम् | | १। |
| ४९७०८ | वास्तुमण्डलचित्रम् | | १। |
| ४९७०९ | ” | | १। |
| ४९७१० | सर्वतोभद्रचित्रम् | | २। |
| ४९७११ | वास्तुचित्रम् | | १। |
| ४९७१२ | लिंगतोभद्रचित्रम् | | १। |
| ४९७१३ | वास्तुमण्डलचित्रम् | | १। |
| ४९७१४ | देवीयन्त्रचित्रम् | | १। |
| ४९७१५ | श्रीचक्रचित्राणि | | ३। |
| ४९७१६ | रणछोरचित्रम् | | १। |
| ४९७१७ | ब्रह्मचित्रम् | | १। |
| ४९७१८ | दुर्गाचित्रम् | | १। |
| ४९७१९ | गणेशचित्रम् | | १। |
| ४९७२० | योगचक्रचित्रम् | | १। |
| ४९७२१ | समयचक्रचित्रम् | | १। |
| ४९७२२ | वृत्तचित्रम् | | १। |
| ४९७२३ | भूगोलचित्रम् | | १। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·४×१०·४ | | | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ६·८×६·८ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| २६·२×१९·७ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·२×४·९ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ८ २×८·६ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·४×८·१ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·७×८·९ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·३×९·८ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १२×१२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·२×१२·४ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९×८·६ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १७·३×९·४ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ११·२×६·६ | | | | | | ,, | |
| | | | ,, | ,, | | | |
| १३·९×१३·४ | | | | | | ,, | |
| | | | ,, | ,, | | | |
| १०·९×९·६ | | | | | | ,, | |
| | | | ,, | ,, | | | |
| विविधः | | | | | | ,, | |
| | | | ,, | ,, | | | |
| ८·१×६·१ | | | | | | ,, | |
| | | | ,, | ,, | | | |
| ९·९ × ६ | | | | | | ,, | |
| | | | ,, | ,, | | | |
| ७·२×६·१ | | | | | | ,, | |
| | | | ,, | ,, | | | |
| ७·३×६·१ | | | | | | ,, | |
| | | | ,, | ,, | | | |
| १७·९×११·३ | | | | | | ,, | |
| | | | ,, | ,, | | | |
| २०·७×२०·३ | | | | | | ,, | |
| | | | ,, | ,, | | | |
| १०·४×९·२ | | | | | | ,, | |
| | | | ,, | ,, | | | |
| १९·६×१४·७ | | | | | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९७२४ | नरचक्रचित्रम् | | १। |
| ४९७२५ | जगन्नाथदेवचित्रम् | | १-२। |
| ४९७२६ | अष्टादशभुजोपेत-दुर्गाचित्रम् | | १। |
| ४९७२७ | अग्निष्टोमयागविहारचित्रम् | | १। |
| ४९७२८ | शिशुमारचक्रचित्रम् | | १। |
| ४९७२९ | समुद्रादिचित्राणि | | १-७। |
| ४९७३० | भूगोलचित्रम् | | १। |
| ४९७३१ | लिङ्गतोभद्रचित्रम् | | १। |
| ४९७३२ | कर्ममूलवृक्षचित्रम् | हरिप्रसादः | १। |
| ४९७३३ | षट्चक्रचित्रम् | | १। |
| ४९७३४ | तान्त्रिकचित्रम् | | १। |
| ४९७३५ | कृष्णबाललीलाचित्रम् | | १। |
| ४९७३६ | क्रीडाचक्रचित्रम् | | १। |
| ४९७३७ | भूगोलचित्रम् | | १। |
| ४९७३८ | ,, | | १। |
| ४९७३९ | विशेषचक्रम् | | १। |
| ४९७४० | हनुमच्चित्रम् | | १। |
| ४९७४१ | ब्रह्मचित्रम् | | १। |
| ४९७४२ | कार्तवीर्यार्जुनयन्त्रम् | | १। |
| ४९७४३ | वास्तुशिल्पचित्रम् | | १। |
| ४९७४४ | जगन्नाथचित्रम् | | १। |
| ४९७४५ | ,, | | १। |
| ४९७४६ | वास्तुमण्डलचित्रम् | | १। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४४·४×३३·९ | | | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ९·६×९·१ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·३×४·४ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| २७·६×१९·८ | | | ,, | ,, | | ,, | आयतं विस्तृतञ्च । |
| १०·२×९·४ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ४·८×४·३ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ३९·९×३८·३ | | | ,, | वस्त्रम् | | ,, | |
| ९·९×८ | | | ,, | का. | | ,, | |
| २६×२६ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| २९·६×१९·७ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १६×१६·३ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| २९×१८·९ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| २९·८×१७·९ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १८·२×१८·४ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| २४·८×१९·७ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १९·२×८ | | | ,, | ,, | | अपू० | |
| ८·४×८·८ | | | ,, | ,, | | पू० | |
| ६·२×९·२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·२×७·३ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·९×४·४ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·१×९·२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ४·१×३·६ | | | ,, | वस्त्रम् | | ,, | |
| ८×६·४ | | | ,, | का. | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९७४७ | शिवपरिवारचित्रम् | | १ । |
| ४९७४८ | गरुडचित्रम् | | १ । |
| ४९७४९ | धनुर्धरचित्रम् | | १ । |
| ४९७५० | भैरवचित्रम् | | १ । |
| ४९७५१ | शैवसम्प्रदायचित्रम् | | १ । |
| ४९७५२ | जगन्नाथचित्रम् | | १ । |
| ४९७५३ | हिंडोलरागिनीचित्रम् | | १ । |
| ४९७५४ | रामयन्त्रम् | | १ । |
| ४९७५५ | श्रीनाथचित्रम् | | १ । |
| ४९७५६ | कृष्णचित्रम् | | १ । |
| ४९७५७ | गुरुस्थानचक्रचित्रम् | | १ । |
| ४९७५८ | कर्मकाण्डोपयोगिचित्राणि | | १-२० । |
| ४९७५९ | भौगोलिकमानचित्रम् | | १ । |
| ४९७६० | अग्निष्टोमयागविहारचित्रम् | | १ । |
| ४९७६१ | कुण्डचित्राणि | | ४ । |
| ४९७६२ | लिङ्गतोभद्रचित्रम् | | १ । |
| ४९७६३ | केशवचित्रम् | | १ । |
| ४९७६४ | सर्वतोभद्रचित्रम् | | १ । |
| ४९७६५ | मांगलिकचित्रम् | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·८×४·९ | | | दे. ना. | का. | | पू० | |
| १२·७×९·३ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·६ × ४·६ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·८×४·८ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ३·९×४·७ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·९×७·२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·४×७·१ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·४×९·२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·८×४·३ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·९×४·८ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १८·४×११·२ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १२×१२ | | | ,, | वस्त्रम् | | ,, | |
| ८·३×९·६ | | | ,, | का. | | ,, | |
| १६·४×११·७ | | | ,, | ,, | | अपू० | |
| विविधः | | | ,, | ,, | | ,, | |
| १४·६×१४·४ | | | ,, | ,, | | पू० | |
| ६·९×४ | | | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·७×९·४ | | | ,, | ,, | | अपू० | |
| २०·२×१३·१ | | | ,, | ,, | | पू० | |

# हस्तलिखितग्रन्थविवरणपञ्जिकायाः

## देशीभाषाग्रन्थसङ्ग्रहात्मको भागः

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९७६६ | महावाक्यप्रकाशः | बलिरामः | १-११ । |
| ४९७६७ | पदावली | | १-४ । |
| ४९७६८ | अनङ्गलीला | गोपालकविः | १-९ । |
| ४९७६९ | वैद्यमनोत्सवः | नयनसुखः | १-९, ३९-६३ । |
| ४९७७० | वैद्यकग्रन्थः | | १-३१ । |
| ४९७७१ | अनेकार्थमञ्जरी | नन्ददासः | १-१९ । |
| ४९७७२ | कोकमञ्जरी | | १९३ । (गणनया) |
| ४९७७३ | गीतसङ्ग्रहः | | ७४ । ” |
| ४९७७४ | विचारमाला | | १-१२ । |
| ४९७७५ | शिवकरनहच्छः | | ३-७ + ९ । |
| ४९७७६ | वैद्यकचिन्तामणिसारः | | १-२९ । |
| ४९७७७ | पदावलीरामायणम् | | २-२० । |
| ४९७७८ | नासीरस्याहीकंकालीग्रन्थः | | १-१४ । |
| ४९७७९ | रामध्यानमञ्जरी | अग्रदासः | १-१९ । |
| ४९७८० | ब्रह्मविलासः | ऐनानन्दफकीरः | १-६४ । |
| ४९७८१ | अंजुलीपुरागम् | फ़रासीसः | १-११९ । |
| ४९७८२ | स्यमन्तकोपाख्यानम् | हरप्रसादः | १-६ । |
| ४९७८३ | भवानीस्तुतिः | | ९ । (गणनया) |
| ४९७८४ | शतप्रश्नोत्तरी | मनोहरदासः | १-२४ । |
| ४९७८५ | बजरंगछबीसी | मनियारसिंहः | १-९ । |
| ४९७८६ | वैदमञ्जरी | विष्णुदत्तः | १-८६ । |
| ४९७८७ | रामकृष्णवर्णनम् | | १-२ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·७×४·२ | ७ | ३२ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ६·४×४·८ | १४ | ११ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·८×४·६ | १२ | ४८ | ,, | ,, | १८८९ | पू० | |
| ९·२×४·३ | ६ | २१ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ६·७×४·२ | ९ | १६ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९×९ | ८ | २० | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·६×४·९ | १२ | ८ | ,, | ,, | | अपू० | प्रारम्भे पद्यसङ्ग्रहश्चान्ते औषध-सङ्ग्रहः, मध्ये हिन्दीभाषा। |
| ६·२×४·६ | १४ | १७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·९×९·१ | ११ | ३२ | ,, | ,, | ७९ ? | पू० | |
| ४·९×४·३ | ८ | १९ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·९×४·४ | ९ | ३८ | ,, | ,, | श. १७२६ | पू० | |
| ९·७×३·४ | ६ | ४० | ,, | ,, | श. १७३१ | अपू० | |
| ९·६×४·९ | १० | ३७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·२×४·३ | ७ | १७ | ,, | ,, | १८७८ | पू० | |
| ७·८×६·४ | ९ | १७ | ,, | ,, | १९३९ | ,, | |
| १२·२×६ | १२ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | औषधविषयकम्। |
| १०·९×७·४ | १३ | ९४ | ,, | ,, | १९३१ | ,, | भागवते दशमस्कन्धे, ५६-५७ अध्यायौ। ज्वरयुद्धोपाख्यानञ्च। |
| ७×९·९ | ९ | १७ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·३×४·९ | १० | ३४ | ,, | ,, | | पू० | वेदान्तदर्शनम्। |
| १०·३×४·७ | ७ | ३० | ,, | ,, | १९१० र.का. १८६१ | ,, | |
| १०·४×६·१ | २२ | २९ | ,, | ,, | १९१४ | ,, | अत्र चैतनिचन्दकृतशालिहोत्र-भाषाप्यस्ति। |
| २९×४·९ | ४२ | १२ | ,, | ,, | | अपू० | |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|---|
| | ४९७८८ | गुरुप्रशंसा | | १ । |
| | ४९७८९ | केहरकवित्तम् | केहरः | १ । |
| | ४९७९० | मासचक्रम् | | १-२ । |
| | ४९७९१ | शिवसभापदम् | | १ । |
| | ४९७९२ | भगवद्भजनम् | | १ । |
| | ४९७९३ | प्रश्नविमर्शः | | १ । |
| | ४९७९४ | कृष्णभक्तिपदम् | | १ । |
| | ४९७९५ | कवित्तरामायणम् | वृन्दावनचतुर्वेदः | १-५, ७-३२ । |
| | ४९७९६ | बालबोधः | | १-३ । |
| | ४९७९७ | नाडीविचारः | | १ । |
| | ४९७९८ | मारणमोहनादियन्त्रम् | | ११ । |
| | ४९७९९ | पदसङ्ग्रहः | | १ । |
| | ४९८०० | ” | | १ । |
| | ४९८०१ | गोरक्षराजस्तोत्रम् | | ६ ( गणनया ) । |
| | ४९८०२ | सतरञ्जखेलनविधिः | | १ । |
| | ४९८०३ | गीतिसङ्ग्रहः | सूरदासः | १ । |
| | ४९८०४ | लीलावतीभाषा | | १-६ । |
| | ४९८०५ | रामचरितमानसम् | | १, ३-६, ६-२९ । |
| | ४९८०६ | मुकुन्दजी की बारहमासी | | १-४४, १-१२, १-१८, १-२२ । |
| | ४९८०७ | रामाज्ञा | | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·७×४ | १९ | १६ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ९·६×६·३ | ८ | १३ | ” | ” | | अपू० | |
| १२×८ | १४ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| १७×९·९ | १७ | १४ | ” | ” | | पू० | |
| १९×४·७ | १२ | २९ | ” | ” | | अपू० | |
| १६·४×४·९ | ३४ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ८·९×६·२ | ७ | ९ | ” | ” | | पू० | |
| १०·८×९·६ | १० | ३२ | ” | ” | १९०९ | अपू० | सुन्दरकाण्डम् । |
| ७·९×३·२ | ९ | २९ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×४·९ | १४ | ९४ | मै. | ” | | ” | |
| ९·९×३·९ | १३ | ४९ | दे.ना. | ” | | ” | |
| ९·४×४·६ | ८ | २२ | ” | ” | | ” | |
| १७·९×९·९ | १९ | ३८ | ” | ” | | पू० | |
| ७×४·९ | १६ | ११ | ” | ” | १७८४ | अपू० | १–हिन्दीभाषायामात्मबोधः,<br>२–गुर्जरभाषायामौषधविवरणञ्च । |
| १०·३×४·४ | १० | ४३ | ” | ” | | ” | |
| ६·८×९·६ | १६ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ८·३×३·९ | ९ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| ११×९·६ | ११ | ३२ | ” | ” | १८९९ | ” | तृतीयसोपानः । |
| ४·६×३·६ | ९ | ११ | ” | ” | १८८६ | पू० | हिन्दी कुण्डलियाँ(विष्णुदास कृता ।)<br>” तुलसीबारहमासी ।<br>” तीरथमालः ।<br>” सत्तगीता देवीदासः ”<br>” ध्यानमञ्जरी अग्रदासः । ”<br>” सुखदेवलीला,मुरलीदासः”। |
| १०·९×४·९ | १६ | ४७ | ” | ” | १८०८ | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९८०८ | पद्यसङ्ग्रहः | | ९-१४, १४-१९, १-७, १२-३० । |
| ४९८०९ | शाबरमन्त्रः | | १-२ । |
| ४९८१० | भजनसङ्ग्रहः | | १-९८ । |
| ४९८११ | आयुर्वेदग्रन्थः सटीकः | | २-५ । |
| ४९८१२ | आयुर्वेदग्रन्थः | | ९ । ( गणनया ) |
| ४९८१३ | शाबरमन्त्रः | | १-२ । |
| ४९८१४ | विनयपत्रिका | तुलसीदासः | १-३६ । |
| ४९८१५ | रामगीताटीका | | १-५२ । |
| ४९८१६ | कार्त्तिकमाहात्म्यम् | | १, २६-३०+१ । |
| ४९८१७ | भगवद्गीताटीका | | १-३७+१, ३८-५० । |
| ४९८१८ | महाभारतम् | लषणसेनः | १-४, १-२३२, १-८ । |
| ४९८१९ | कर्मविपाकः | | १-७ । |
| ४९८२० | मोगलपुरागम् | योगेश्वरः | १-११ । |
| ४९८२१ | एकादशीकथा | सूर्यदासः (सुजदासः) | १-११ । |
| ४९८२२ | कलिप्रभाववर्णनम् | | १ । |
| ४९८२३ | मन्त्रयन्त्रौषधिप्रकारः | | २-८ । |
| ४९८२४ | अम्बाजी की आरती | | १ । |
| ४९८२५ | कृष्णगेंदक्रीडागीतम् | | १ । |
| ४९८२६ | नाममन्त्रव्याख्या | गिरिधरः | १-९ । |
| ४९८२७ | गजेन्द्रमोक्षः | | १, ७, ११ । |
| ४९८२८ | रामरहस्यत्रयम् | अग्रदासः | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | प्राप्तिः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९×४·६ | ९ | १२ | दे. ना. | का. | | अपू० | नयनविलासादिविविधविषयकः । |
| ४·९×२·८ | १२ | २१ | ” | ” | | ” | |
| ९·३×९·३ | ९ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ९·२×४·१ | १० | ३२ | ” | ” | | ” | टीका–हिन्दीभाषायाम् । |
| ८×४·९ | १० | २९ | ” | ” | | ” | |
| ६·२×९ | १८ | १८ | ” | ” | | ” | |
| ११×४·६ | ९ | ३० | ” | ” | | ” | |
| १०·१×९·४ | १४ | ३८ | ” | ” | १९०६ | पू० | |
| १३·८×७·२ | १६ | ३६ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·९×९·९ | १७ | १४ | ” | ” | १९२३ | पू० | |
| ९×६ | २४ | १८ | ” | ” | १८७७ | अपू० | आदितः भीष्मपर्वान्तम्, शिवपचीसी, गणेशस्तोत्रञ्च । |
| ६·३×३·३ | ९ | २६ | ” | ” | १८६७ | पू० | |
| ९·८×३·८ | ७ | ४१ | ” | ” | १७५८ | ” | संस्कृतशैल्या लिखितम् । |
| ९·९×४·२ | ९ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| १३·२×६·९ | १९ | ३३ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·३×४·९ | ८ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| १०·३×४·९ | १२ | ७५ | ” | ” | | पू० | शिवपञ्चरत्नम्, निर्वाणाष्टकञ्च । |
| ३७·२×९ | ८४ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| १०·३×४·२ | ७ | २७ | ” | ” | १९२० | ” | हरिहरायकृतं समर्पणाष्टकं, हरिदासाष्टकं, वल्लभपञ्चाक्षर-स्तोत्रञ्च । |
| ११×४·२ | ८ | ३७ | ” | ” | | अपू० | |
| ६·३×४ | ६ | १२ | ” | ” | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९८२९ | दोहावली | | १। |
| ४९८३० | रामरक्षा | रामानन्दस्वामी | १-३। |
| ४९८३१ | गङ्गास्तुतिः | | १-९, १-२। |
| ४९८३२ | फूलकथा | | २-१६। |
| ४९८३३ | विश्वनाथाष्टकम् | रामचन्द्रः | पृ० १-६। |
| ४९८३४ | हनुमानचालीसा | | २-९। |
| ४९८३९ | गङ्गास्तुतिः | | १-३। |
| ४९८३६ | सङ्कटाष्टकम् | | १, ४। |
| ४९८३७ | ” | | १-२, २। |
| ४९८३८ | रामगुणवर्णनम् | | २-४। |
| ४९८३९ | हनुमानबाहुकम् | तुलसीदासः | १-१३। |
| ४९८४० | रामरक्षा | रामानन्दः | १-९। |
| ४९८४१ | यन्त्रमन्त्रसङ्ग्रहः | | १-४। |
| ४९८४२ | मन्त्रोपदेशविधिः | | ६+१। |
| ४९८४३ | बजरङ्गबाण | | १। |
| ४९८४४ | रामध्यानम् | शिवानन्दः | २-९। |
| ४९८४९ | ज्ञानमञ्जरी | मनोहरदासः | १-१३। |
| ४९८४६ | षट्प्रश्नी | ” | १-२९। |
| ४९८४७ | ज्ञानचूरणवचनिका | मनोहरनिरञ्जनी | १-१२। |
| ४९८४८ | रागसङ्ग्रहः | | १-४२। |
| ४९८४९ | भगवद्गीता | | २-५७। |
| ४९८९० | विवेकसारः | किनारामः | १-९८। |
| ४९८९१ | समर्पणगद्यटीका | | २-१७ |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३·×९·४ | ८ | २८ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०·९×४·९ | १० | २६ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·६×२·४ | ९ | २९ | ,, | ,, | १९४३ | ,, | |
| ४·८×४·४ | ९ | १४ | ,, | ,, | | अपू० | नवग्रहस्त्रोत्रञ्च । |
| ६·४×९·१ | १० | ११ | ,, | ,, | १९३९ | पू० | संस्कृतमिश्रितम् । |
| ७×३·६ | ७ | २६ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ८·१×३·९ | ६ | १६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८×३·४ | ६ | १९ | ,, | ,, | १९४२ | ,, | संस्कृतमिश्रितम् । |
| ८×३·४ | ६ | १९ | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ६·९×३·१ | ६ | २९ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·९×४·६ | ८ | २२ | ,, | ,, | १९४७ | पू० | |
| ८·३×४·४ | ७ | २६ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·६×४·७ | १० | ४५ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·१×४·१ | ९ | ३८ | ,, | ,, | | ,, | द्वादशराशिजानाङ्कृते । |
| ६·९×९ | ९ | २६ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·७×४·७ | ८ | ३२ | ,, | ,, | १९०९ | ,, | |
| ११·९×९·९ | १४ | ४४ | ,, | ,, | १७१६ | पू० | |
| ११·६×९·९ | १६ | ५६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ११·३×९·३ | १९ | ४६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·९×४·३ | १३ | १२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ८·१ × ९·१ | १९ | १८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·६×४·१ | ४ | ११ | ,, | ,, | १९४३ | पू० | |
| ४·४×३·७ | ८ | ११ | ,, | ,, | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९८९२ | हिन्दूमतस्थापनम् | | १-२ । |
| ४९८९३ | हनुमानचालीसा | | १-४ । |
| ४९८९४ | विचारमाला | | १-५ । |
| ४९८९५ | इन्द्रजालम् | | १-१९ । |
| ४९८९६ | शुभाशुभशकुनविचारः | | १-१२ । |
| ४९८९७ | शकुनविचारः | | १ । |
| ४९८९८ | सुन्दरशृङ्गारः | सुन्दरकविः | १२-४८ । |
| ४९८९९ | समयसारः | | २१-२७ । |
| ४९८६० | रमलगुलजारः | | १-१६, १७, १-१३ । |
| ४९८६१ | पाशाकेवली | | १-१६ । |
| ४९८६२ | प्रश्नविद्या | | १-३७+१ । |
| ४९८६३ | मन्त्रमहोदधिटिप्पणी | | १-२ । |
| ४९८६४ | रसरत्नाकरः | हृदयराममिश्रः | ४७-५१ । |
| ४९८६५ | अलङ्कारचन्द्रोदयः | मोहनः | १-१४, १-१२, १-१६ । |
| ४९८६६ | जगन्मोहनम् | | २३७-२३८ । |
| ४९८६७ | दशमुद्राविचारः | | १-७ । |
| ४९८६८ | योगवासिष्ठः | | ३९-९२ । |
| ४९८६९ | बयालीसलीला | ध्रुवदासः | १-१३१, १३१-२१६ । |
| ४९८७० | प्रेमसागरः | श्रीलालः | १३-६३, ६३-१९२, १९२-२०८, २१९-२५० । |
| ४९८७१ | भक्तमालः सटीकः | | १-१८८, १९०-२०३+१ । |
| ४९८७२ | ” | | १-७५, ७७-१२८, १३०-१९२ । |
| ४९८७३ | सङ्गीतसारः | हरिवल्लभः | १-४३ । |
| ४९८७४ | हिततरङ्गिणी | कृपारामः | १-२० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३·३×३·६ | ९७ | १९ | दे.ना. | का. | | अपू० | ईश्वरमायाजगद्विचारसहितम् । |
| ७·२×३·९ | ९ | ४० | ” | ” | | पू० | |
| ९·९×३·४ | ९ | १९ | ” | ” | १८६८ | ” | |
| ८·३×९·३ | १३ | २८ | ” | ” | | अपू० | |
| ४·२×३·२ | ७ | १७ | ” | ” | | पू० | अक्षिस्फुरणादिविचारश्च । |
| ९·८×४·२ | ३२ | १४ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·८×४·८ | ११ | २८ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·४ | ११ | ४६ | ” | ” | | ” | |
| ११×४·६ | ९ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ७·१×३·२ | ७ | १९ | ” | ” | | पू० | |
| ६·२×४·७ | १० | १२ | ” | ” | | अपू० | |
| १३·३×३·९ | १० | ४२ | ” | ” | | ” | |
| १२·३×४·९ | ८ | ४४ | ” | ” | | ” | |
| ९·८×६·६ | १९ | १४ | ” | ” | १८४२ | पू० | भाषाभूषणम्, जयदेवविरचित-श्चन्द्रालोकश्च संस्कृते । |
| ६·१×९·९ | ८ | १६ | ” | ” | | अपू० | चित्रकाव्यम् । |
| १०·२×४·९ | ७ | ३९ | ” | ” | | पू० | |
| ९·९×६·९ | १० | ३९ | ” | ” | | अपू० | वैराग्यप्रकरणम् । |
| १३·६×६·३ | ९ | ३० | ” | ” | | पू० | |
| १३·९×६·९ | १० | ३२ | ” | ” | | अपू० | |
| १३·९×६·३ | १० | ४९ | ” | ” | | ” | |
| १४·९×६·९ | ९ | २० | ” | ” | | ” | |
| १२·९×४·९ | ९ | ४१ | ” | ” | १७४८ | पू० | |
| ९·८×४·३ | १० | ३९ | ” | ” | १८२६ | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९८७५ | वैद्यमनोत्सवः | नयनसुखः | १६ । ( गणनया ) |
| ४९८७६ | मुसलीपाकादियोगसङ्ग्रहः | | १-३, ६-९ + १ । |
| ४९८७७ | राजगोपीचन्दगाथा | | १-७ । |
| ४९८७८ | हकीमी औषधसङ्ग्रहः | | १-२६ । |
| ४९८७९ | रसकल्लोलः | तुलसीदासः | ४-३९, ४१-९२ । |
| ४९८८० | रामायणम् | ” | २-६ । |
| ४९८८१ | हनुमानबाहुकम् | ” | १-१३ । |
| ४९८८२ | घण्टाकर्णादिमन्त्रः | | १-३ । |
| ४९८८३ | ऋषभदेवमन्त्रप्रयोगः | | १-४ + १ । |
| ४९८८४ | नेत्रपञ्चाशिका | कविमण्डनः | १-१७ । |
| ४९८८५ | तुलाप्रकारः | | १ । |
| ४९८८६ | कवित्तरामायणम् | तुलसीदासः | १-५९ । |
| ४९८८७ | अञ्जनविधिः | | १ । |
| ४९८८८ | कृष्णावतारोत्सवपूजा-पद्धतिः । | | १ । |
| ४९८८९ | आकर्षणविधिः | | १ । |
| ४९८९० | रतिमञ्जरी | | १-८ । |
| ४९८९१ | हनुमानचालीसा | | १-२ । |
| ४९८९२ | बारहखड़ी | | १-३ । |
| ४९८९३ | नाममञ्जरी | नन्ददासः | १-२, ४-१२, १४-१७, १९-२४, २४-२६ । |
| ४९८९४ | शृङ्गारवर्णनम् | | २-३, ५, ११-१२, १५-१७, १९, २३ २४, २७, ३१, ३३, ३५-३६, ४३-४७, ४९, ५३-५८, ६७-७२, ७४, ७६-७९ । |
| ४९८९५ | वैद्यविलासः | हुलाशपाठकः | १-५० । |
| ४९८९६ | रामायणम् | तुलसीदासः | १-४५ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·६×४·३ | ९ | २७ | दे. ना. | का. | १७४१ | अपू० | |
| ९·५×४·६ | ९ | ४४ | ” | ” | | ” | वैदाङ्ग इति वामभागे लिखितम्। |
| २३·५×४·४ | ३८ | ९ | ” | ” | | ” | सचित्रा। |
| १०×४·५ | ७ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| १०×४·५ | ८ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×४·२ | ९ | ३६ | ” | ” | | ” | |
| ९·५×४·२ | ९ | ३५ | ” | ” | १८८३ | पू० | |
| १०·७×४·८ | १८ | ४१ | ” | ” | | ” | यन्त्रञ्च। |
| १०·८×४·४ | ९ | ३४ | ” | ” | | अपू० | |
| ५·७×३·२ | १२ | ९ | ” | ” | | ” | |
| ८×४·४ | २६ | १८ | ” | ” | | ” | |
| ११×५·६ | ९ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| ३×६·१ | २४ | १३ | ” | ” | | पू० | |
| ५·५×४·८ | १३ | १५ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·८×४·३ | १४ | ४८ | ” | ” | | पू० | तन्त्रमन्त्रौ पुरश्चरणञ्च। |
| ४·२×५·६ | १५ | १४ | ” | ” | | अपू० | |
| ७·१×४·५ | ८ | १९ | ” | ” | | ” | |
| १०·५×४·७ | १७ | ४६ | ” | ” | | पू० | |
| ९·८×४·६ | ७ | २८ | ” | ” | | अपू० | |
| ६·६×५·३ | ११ | १७ | ” | ” | | ” | |
| ६·८×१०·६ | १७ | १७ | ” | ” | | ” | |
| १२·४×५·६ | १० | ३३ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९८९७ | रासपञ्चाध्यायी | | २-२३ । |
| ४९८९८ | भागवतम् | | १-२१ । |
| ४९८९९ | जन्माष्टमीकीर्त्तनम् | | १-२ । |
| ४९९०० | ब्रह्मद्वापञ्चाशिका | | १-१० । |
| ४९९०१ | पुष्टिमर्यादापालनम् | | १-३८ । |
| ४९९०२ | वसन्तऋतुलीला | सूरदासः | १, ३-८ । |
| ४९९०३ | सुआवहत्तरीकथा | | २-२०, १-७, ९-३९, ४२-५७, ५९-६२, ६४, ६६-७०, ७४-८१, ८७-१००+८ । |
| ४९९०४ | चिकित्साग्रन्थः | | १-८,१०-४७,४९-७९,८१-१३८,१४०-३२१, ३२३-३६४, ३६४-४१३, ४१३-४३२, ४३४-४४९, ४४७-४५२, ४५४-४६०, ४६०-४६९ । |
| ४९९०५ | भाषाभूषणम् | | १-२२ । |
| ४९९०६ | रसरत्नकाव्यम् | पोहकरः | १-३६ । |
| ४९९०७ | विहारीसतसई | विहारी | १-१२, १४-१८, २५, २७ । |
| ४९९०८ | योगवासिष्ठः | | ३-३१, २-९, १-२, ३४-४७, ४७-५१ । |
| ४९९०९ | सरसरसग्रन्थः | श्रीलालः | २-१२० । |
| ४९९१० | वैष्णववार्त्ता | | ४-१०७, १०९-१७१ । |
| ४९९११ | समयप्रबन्धः | | १-३५, ४०-८० । |
| ४९९१२ | विहारीसतसई | विहारीदासः | ६-८, १०-१४, १६-१८, २०-३१, ३४-४५, ४७-५० । |
| ४९९१३ | रसराजः | मतिरामः | १-५९ । |
| ४९९१४ | रसचन्द्रिका | वंशराजः | २-१७, १९-७५ । |
| ४९९१५ | भजनसङ्ग्रहः | | २० । ( गणनया ) |
| ४९९१६ | अध्यात्मप्रकाशः | सुखदेवः | १-३६, १-७ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·६×९ | २२ | १३ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९·६×६·९ | २० | २१ | ,, | ,, | | पू० | सप्तमस्कन्धमात्रम् । |
| ११×८·६ | १९ | २४ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ७·३×९·३ | १९ | २१ | ,, | ,, | | पू० | ब्रह्मस्वरूपानिरूपणरूपा । |
| ६·१×९·७ | २९ | १७ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·९×९·९ | ११ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·९×९·८ | १६ | ३४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·४×४·६ | ९ | २४ | ,, | ,, | १८३८ | ,, | |
| ९·९×८·९ | १३ | १३ | ,, | ,, | १८२६ | ,, | |
| ७×९·९ | १६ | १७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·२×६·१ | २० | २२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·७×९·८ | ११ | २१ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८×४·२ | ८ | ३२ | ,, | ,, | | ,, | अष्टमविलासान्तः । |
| ७·१×९·६ | १७ | २० | ,, | ,, | | ,, | वल्लभाख्यानञ्च । |
| ७·९×४·८ | १९ | ९ | ,, | ,, | | ,, | पद्यावली च । |
| ९·१×९·९ | २० | १६ | ,, | ,, | १८२३ | ,, | संस्कृते सुभाषितानि च । |
| ८·४×६·४ | १६ | १६ | ,, | ,, | १८८६<br>श. १७९१ | पू० | |
| ८·७×६·३ | २१ | १४ | ,, | ,, | | अपू० | अ० १-६ । |
| १०·८×७ | १८ | १३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·१×६·३ | ८ | ११ | ,, | ,, | १९३१ | ,, | अन्तःकरणसामग्री द्वादशमहावाक्य-सिद्धान्तश्च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पद्यसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९९१७ | वैराग्यदर्पणः | ठाकुरः | १-११+१ । |
| ४९९१८ | व्रजसप्तपरिक्रमा | | १-३, ९-३२ । |
| ४९९१९ | ज्ञानदीपकः | तुलसीदासः | १-२० । |
| ४९९२० | अनेकार्थमञ्जरी | नन्ददासः | १-१२ । |
| ४९९२१ | अन्योक्तिमाला | दीनदयालुः | १-४, ७-९, १९-१८ । |
| ४९९२२ | स्वरोदयः | | ४-११ । |
| ४९९२३ | हनुमानबाहुकम् | | १-२, ६, १४-१९, १७ । |
| ४९९२४ | पञ्चाङ्गायनादिनिरूपणम् | | १-७ । |
| ४९९२५ | षट्प्रकरणी | | ३, ६, ८, १०-२२, २६-४९ । |
| ४९९२६ | हनुमानबाहुकम् | | १-६ । |
| ४९९२७ | भक्तिविलासकथा | | १-८, १७-२९ । |
| ४९९२८ | कवित्तसङ्ग्रहः | | १-१९ । |
| ४९९२९ | भगवद्गीतानुवादः | | १३-२४ । |
| ४९९३० | वैद्यकसङ्ग्रहः | | १-२० । |
| ४९९३१ | विहरीसतसई | विहारी | १०-३४, ३६-४८, ५०-८०, १-९+४ । |
| ४९९३२ | सुन्दरशृङ्गारग्रन्थः | | १०-१९, ३४-६९, ७२-१०८ । |
| ४९९३३ | रामचरितमानसम् | तुलसीदासः | १-५२, ५४-५९ । |
| ४९९३४ | ” | ” | १-७० । |
| ४९९३५ | ” | ” | १-३, ९-१२ । |
| ४९९३६ | ” | ” | १-२१ । |
| ४९९३७ | ” | ” | १, १-२३, २५-२९, ३१-५०, ५२-५५, ५८-६८, ७०, ७२-८२, ८६-११६, ११९-२०९, २१३-२४५ । |
| ४९९३८ | पातलछुडावणी | | १-१०+१ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७·८×६·३ | १० | १८ | दे.ना. | का. | | पू० | तत्त्वविभागः, तत्त्वरङ्गवर्णनञ्च । |
| ६·७×६·३ | ९ | १४ | ” | ” | | अपू० | गोचारणविहारश्च । |
| ११·१×६·९ | १७ | २० | ” | ” | १९०७ | ” | अ० १-९ । |
| ८·३×६·४ | १६ | ६४ | ” | ” | १८९६ | पू० | |
| ९·१×४·३ | ८ | ३९ | ” | ” | १९१६ | अपू० | |
| ९·३×४·४ | ८ | २२ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·२ | ८ | २६ | ” | ” | १८७० | ” | |
| ८·९×४·४ | ७ | २१ | ” | ” | | ” | |
| १०·८×९·१ | १० | ३९ | ” | ” | | ” | हिन्दीभाषायाम् । |
| ९·९×४·८ | १३ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| ९·८×९·७ | २४ | १९ | ” | ” | १७४४ | ” | |
| ९·९×९ | १६ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ७·१×९·९ | १६ | २१ | ” | ” | | ” | |
| ६ २×९·२ | १९ | १६ | ” | ” | | ” | |
| ६·१×९·१ | ११ | १४ | ” | ” | १७७९<br>फ० १२२९ | ” | सीतास्वयंवरश्च । |
| ९·१×९ | २० | १७ | ” | ” | | ” | |
| १२·९×९·१ | ८ | ४० | ” | ” | १८८७ | ” | उत्तरकाण्डम् । |
| ११ २×९·९ | ११ | ३९ | ” | ” | १८९१ | पू० | लङ्काकाण्डम् । |
| १३·१×९·६ | ९ | ४३ | ” | ” | १९०० | अपू० | किष्किन्धाकाण्डम् । |
| १३×९·१ | ९ | ४१ | ” | ” | १८९८ | पू० | सुन्दरकाण्डम् । |
| १०·४×४·३ | ७ | ३१ | ” | ” | १८८३ | अपू० | बालकाण्डम् । |
| ६·७×९·२ | ११ | २१ | ” | ” | र.का. १८१९ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९९३९ | दानलीला | | २-९ । |
| ४९९४० | गुरुचेलागोष्ठी | चरणदासः | १-११, ११, १३, १९-२६, २-८४ । |
| ४९९४१ | चक्रव्यूहकथा | | १-३४ । |
| ४९९४२ | वैद्यकग्रन्थः | | ७-१६ । |
| ४९९४३ | चौरासीपदम् | हरिवंशः | २१-११९ । |
| ४९९४४ | गीतिसङ्ग्रहः | | १-५९ । |
| ४९९४५ | रसराजः | मतिरामः | २-२८ । |
| ४९९४६ | सुदामाचरित्रम् | नरोत्तमः | १-९ । |
| ४९९४७ | वार्त्तासङ्ग्रहः | | २-११ । |
| ४९९४८ | स्वरोदयः | चरणदासः | १-३१ । |
| ४९९४९ | विहारीसतसई | विहारी | २-१६, १८-३३ । |
| ४९९५० | दयालुदासी | | ४७ । ( गणनया ) |
| ४९९५१ | रामचन्द्रचन्द्रिका | केशवदासः इन्द्रजीतः | ८४ । |
| ४९९५२ | गीतावली | तुलसीदासः | १-१३, १-३ । |
| ४९९५३ | भागवतम् | | १२८-२०२, १-२०९ । |
| ४९९५४ | तान्त्रिकग्रन्थः | | १ । |
| ४९९५५ | रामचरितमानसम् | | १-४२ । |
| ४९९५६ | ” | | १-११ । |
| ४९९५७ | ” | तुलसीदासः | १-११० । |
| ४९९५८ | भाषाभूषणम् | | १-३ +१, ४-८ । |
| ४९९५९ | इन्द्रजालविद्या | | १-२ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·३×४·९ | ९ | १७ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ८·१×४·५ | ८ | २२ | ” | ” | | ” | मुक्तिवर्णनं, सहजोबाईकृतसहज-प्रगासबहुअंगग्रंथः सोलहतिथिनि-णयः, सातबाराश्च । |
| ९·६×५·८ | १२ | ११ | ” | ” | | पू० | |
| १०·१×४·६ | ११ | ३४ | ” | ” | | अपू० | औषधप्रयोगः, मन्त्रप्रयोगश्च । |
| ६·२×४ | ८ | २० | ” | ” | १८६७ | ” | सेवकवाणी, फलस्तुतिः, पत्री च । |
| ७·२×४·३ | १३ | ३४ | ” | ” | | ” | पाण्डवगीता, रामस्तवः, शिवाष्टकम्, नवग्रहस्तोत्रम्, गर्भगीता, सरस्वती-द्वादशनाम, कबीरसूरकृतपद-सङ्ग्रहश्च । |
| ६·४×९·४ | २२ | २० | ” | ” | | ” | |
| १०×४·५ | ९ | ४२ | ” | ” | १९११ | पू० | |
| ६·७×८·७ | १९ | २० | ” | ” | | अपू० | |
| ६·८×५ | १३ | १७ | ” | ” | १९०० | पू० | |
| ५·१×८·९ | २१ | २० | ” | ” | १७६५ | अपू० | |
| ७·८×६ | १४ | २४ | ” | ” | १८०५ | ” | दयालुदासगोस्वामिसङ्ग्रहः । |
| १०·२×६·८ | १२ | २६ | ” | ” | र० का० १६५८ | ” | |
| १०×६ | १९ | ३० | ” | ” | | पू० | |
| ७·२×५·३ | १५ | १४ | ” | ” | | अपू० | दशमस्कन्धे, अ० ३२-८९ । |
| ६·८×४·१ | ७ | २६ | ” | ” | | ” | प्रश्नावली च । |
| १३·८×५·६ | ९ | ३३ | ” | ” | | ” | आरण्यकाण्डम् । |
| १०×४·३ | ९ | ३६ | ” | ” | | ” | उत्तरकाण्डम् । |
| ७·५×४·७ | १६ | १६ | ” | ” | १८०० | पू० | |
| १३·५×५·४ | १२ | ४५ | ” | ” | १८९८ | पू०* | |
| ९·६×४·२ | ११ | ४५ | ” | ” | १९०७ | ” | प्रेतोच्चाटनविधिश्च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४९९६० | कौतुकरत्नावली | | १-४, ८-१४ । |
| ४९९६१ | लगनदोहावली | | १-२२ । |
| ४९९६२ | हनुमानबाहुकम् | तुलसीदासः | १-१२ । |
| ४९९६३ | मृगोपाख्यानम् | | १-४ । |
| ४९९६४ | दामोदरदासवार्त्ता | दामोदरदासः | १-८८, ८८-१४७ । |
| ४९९६५ | रमलप्रकाशः | नारायणहरिः | १-२४ । |
| ४९९६६ | षोडशयोगसङ्ग्रहः | | १-६, ८-१६, १८ । |
| ४९९६७ | शावरतन्त्रम् | | २-१०+३ । |
| ४९९६८ | ” | | १-३६ । |
| ४९९६९ | बिहारीसतसई | बिहारीलालः | १-२९+३ । |
| ४९९७० | ” | | १-४० । |
| ४९९७१ | करणाभरणम् | हरिगोविन्द-वाजपेयी | १-२२ । |
| ४९९७२ | सतसय्यासटीका | | १-९, ७-१३ । |
| ४९९७३ | उद्धवकृष्णमेलनम् | | २-८, २४, ३९-३९ । |
| ४९९७४ | सीतारामरङ्गमाला | | १-४, १-१३, १३-४१, ४१-६० । |
| ४९९७५ | ब्रह्मानन्दः | | १-२, ६-८, १०-११, १३ । |
| ४९९७६ | पटवारिपुस्तकम् | | ३-१८ । |
| ४९९७७ | नामरत्नमालाकोषः | गोकुलनाथः | ९८-१०३ । |
| ४९९७८ | रसिकप्रिया | इन्द्रजीतः | १०-११, १४-१९, ४०, ४६, ९८-६३, ६६-७१, ७३, ८०-८१, ८३-८६ + १ । |
| ४९९७९ | कुण्डलिया | गिरिधरः | १-४० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११·२×९ | ११ | ३७ | दे. ना. | का. | १९०७ | अपू० | |
| ९·३×८·२ | १९ | १२ | ” | ” | | पू० | |
| ९·२×४·२ | ७ | २३ | ” | ” | १८७८ | ” | |
| १२·३×९ | ९ | ४७ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×६·३ | ११ | १३ | ” | ” | | ” | अत्र वल्लभाचार्यसम्प्रदायसम्बन्धिनी काचिदाख्यायिका वर्तते । |
| ७×१०·७ | २२ | २१ | ” | ” | | अपू० | |
| ६·७×४·७ | ९ | १६ | ” | ” | | ” | योगभेदाः, योगाभ्यासविधिश्च । |
| १०·७×९·९ | १२ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| १०×४·३ | ९ | २९ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×६·९ | १९ | १४ | ” | ” | | ” | |
| ६·३×९·४ | १२ | १९ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×४·६ | ७ | २९ | ” | ” | १९१० | पू० | अलङ्कारग्रन्थः । |
| ११·४×९·३ | ११ | ३६ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·४×९·४ | १६ | ११ | ” | ” | | ” | |
| ६·२×९·९ | २९ | २१ | ” | ” | | पू० | संस्कृते रामोपासना रामचरितमानसञ्च । |
| ७·३×९·९ | १९ | १८ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·९×३·८ | १८ | २२ | ” | ” | | ” | तृतीयो भागः । |
| ६·३×९·१ | १८ | १८ | ” | ” | | ” | ” |
| ९·२×६·९ | १९ | १७ | ” | ” | | ” | ” |
| ९·६×४·८ | १८ | १४ | ” | ” | १८६२ | पू० | रमलग्रन्थः, सारावली, मधुकरपरीक्षाकल्पश्च । |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|---|
| | ४९९८० | रागमाला | | ९-४३ । |
| | ४९९८१ | हनुमानचालीसा | | १-४, १-६, १-१९ । |
| | ४९९८२ | दानलीला | | १-८ । |
| | ४९९८३ | वैद्यकसङ्ग्रहः | | २-४४ । |
| | ४९९८४ | घोडाचोलीविधानम् | | १-९ । |
| | ४९९८५ | गणितसाठा | | १-२१ । |
| | ४९९८६ | काव्यकलाधरः | रघुनाथः | १०-११०, ४११-४२२। |
| | ४९९८७ | सङ्गीतसारः | हरिवल्लभः | १-२६ । |
| | ४९९८८ | ” | ” | १-४२ । |
| | ४९९८९ | वृत्तिदीपिका | निश्चलदासः | १-९४ । |
| | ४९९९० | रामचरितमानसम् | तुलसीदासः | १-२२८, १-८३ + १, ८४-१६३, १-४१, १-३०, १-३४, १-६२ = (६३,) ६४-८३, १-७९, ७९-८९ । |
| | ४९९९१ | वैद्यमनोत्सवः | नयनसुखः | १-१३ । |
| | ४९९९२ | रसिकमोहनः | रघुनाथः | १-२९ । |
| | ४९९९३ | ज्ञानसमुद्रः | | १-२९ । |
| | ४९९९४ | हास्यनाटकम् | | २९-४४ । |
| | ४९९९५ | इन्द्रजालसञ्जीवनी | नित्यनाथसिद्धः | २-२१ । |
| | ४९९९६ | जोगसुधानिधिः | | १, ३, ३-४, ४-५, ५, ७-२१ । |
| | ४९९९७ | ब्रह्मबावनी | | ९-२० । |
| | ४९९९८ | अन्तःकरणप्रबोधविवृतिः | | ५-१९, १-८, १२-२७+२ । |
| | ४९९९९ | जडभरतलीला | मोहनदासः | १-४, २-३, ९ । |
| | ५००० | ज्ञानस्वरोदयः | चरणदासः | १-९ । |
| | ५००१ | रामचरितमानसम् | तुलसीदासः | १-२१, ३६-८४, ८८-१११ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६·९×४·६ | ९ | १३ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ७·८×६·२ | १३ | ९ | ” | ” | | पू० | हनुमानसाठीकं, वन्दीमोचनञ्च। |
| ४·१×६·७ | १९ | १० | ” | ” | | ” | |
| ९·९×९·१ | ११ | २९ | ” | ” | | अपू० | |
| ९×४ | १७ | ९९ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·२ | ८ | ३४ | ” | ” | १८७९ | पू० | गणितसाठको वा। |
| १२·६×८·३ | ७ | ३० | ” | ” | | अपू० | |
| १३·९×९·४ | १० | ४९ | ” | ” | रचनाकालः १७४८ | ” | |
| १२·४×४·८ | ८ | ४३ | ” | ” | ” | ” | |
| १०·७×९·४ | ११ | ४० | ” | ” | १९२२ | पू० | |
| १२·९×४·७ | ८ | २६ | ” | ” | १८६७ १८६९ १९२८ | ” | |
| ११·२×४·९ | १३ | ४९ | ” | ” | १८४१ | ” | सप्तमसमुद्देशान्तः। |
| ११×६ | १२ | २८ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·९×६·४ | १८ | १६ | ” | ” | | पू० | |
| ९·७×६·९ | १८ | १८ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·८×४·९ | ९ | ४० | ” | ” | १९२१ | ” | |
| ७·२×९·४ | १६ | १६ | ” | ” | | ” | योगसुधानिधिरिति शुद्धं नाम। |
| ६·९×६·२ | १४ | २२ | ” | ” | | ” | |
| ६·६×९·९ | ११ | १२ | ” | ” | १९७२ | ” | स्वरूपनिर्णयः, नवरत्नटीका, यमुनाष्टकञ्च। |
| ८·९×९·२ | १२ | २३ | ” | ” | | पू० | कपिललीला च। |
| ८·७×९·१ | ९ | २३ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·८×४·२ | ८ | २४ | ” | ” | | ” | लङ्काकाण्डम्। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसङ्ख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६००२ | बालचिकित्सा | | २-६२ । |
| ४६००३ | ज्ञानस्वरोदयः | चरणदासः | १-३१ । |
| ४६००४ | बर्मीवर्णमाला | | १-२ । |
| ४६००५ | नवरत्नस्तोत्रवृत्तिः | | ९, ११-२५, १-९, ११ । |
| ४६००६ | बारहमासी | | १-१२ । |
| ४६००७ | रामचरितम् | | २-३५ । |
| ४६००८ | पाकावली | | १-५ । |
| ४६००९ | वैद्यककल्पद्रुमसारसङ्ग्रहः | | ३-२९ । |
| ४६०१० | भूगोलवर्णनम् | | १-५ । |
| ४६०११ | फूलचरित्रवर्णनम् | मनोहरदासः | २-४ = १ + १ २-४ । |
| ४६०१२ | कौतुकरत्नावली | | १-१२ । |
| ४६०१३ | वैद्यमनोत्सवः | नयनसुखः | १-२१ । |
| ४६०१४ | लघुकालज्ञानम् | | १-४ । |
| ४६०१५ | रामचरितमानसम् | तुलसीदासः | १-२, ४-७०, ७१-११५, ११८-१३०, १३२-१४२ । |
| ४६०१६ | ,, | ,, | १-४० । |
| ४६०१७ | कोकसारः | | १-२४, १-१६, १८-२३, २५-४२ । |
| ४६०१८ | मन्त्रकोशः | | २-८ १०-११ । |
| ४६०१९ | ज्यौतिषरत्नाकरः | तुलसीदासः | १, ३, ६-९, ११-१५ । |
| ४६०२० | सीतास्वयंवरः | ,, | १-२, ५-६, ९-१२, १४-१५ । |
| ४६०२१ | सिंहासनबत्तीसी | पुरुषोत्तमदासः | १-४०, ४४-५०, ८९-१०९, १११-१३९ । |
| ४६०२२ | रूपदीपपिङ्गलभाषा | | १-६ । |
| ४६०२३ | औषधसङ्ग्रहः | | १-२४ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·४×४·३ | ८ | २७ | दे. ना. | का. | १८३३ | अपू० | |
| ४·२×५·३ | १२ | १० | ” | ” | १८८४ | पू० | |
| १०·७×४·६ | ६ | १९ | ” | ” | | अपू० | हिन्दीप्रतिरूपसहिता । |
| ५·५×६·५ | १२ | १४ | ” | ” | | ” | यमुनाष्टकञ्च सटीकम् । |
| ६·५×५·२ | १३ | १७ | ” | ” | | ” | गीतसङ्ग्रहश्च । |
| ९·५×५·२ | १० | २९ | ” | ” | | ” | लङ्काकाण्डम् । |
| ११×५·९ | १३ | ३१ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×६·३ | १५ | ३२ | ” | ” | १७४२ | ” | |
| ९·५×५ | ११ | २८ | ” | ” | | पू० | वंशावलीवर्णनञ्च । |
| १०·७×४·३ | ९ | ३६ | ” | ” | | अपू० | विरहयोगवेली च, फूलमञ्जरी वा । |
| १२·४×४·७ | ११ | ४७ | ” | ” | १८७७ | पू० | ग्रन्थान्ते कौस्तुभरत्नावली नाम विद्यते। |
| ८·७×३·७ | ८ | ३३ | ” | ” | १७०२ | ” | नाडीपरीक्षामारभ्य धातुरोगप्रतीकारान्तः । |
| ९·७×३·२ | ६ | ३५ | ” | ” | १८७८ | ” | द्वादशराशिफलञ्च । |
| ९·७ × ४·३ | १० | ३५ | ” | ” | | अपू० | बालकाण्डम् । |
| ८·६×६·३ | ८ | २७ | ” | ” | | पू० | आरण्यकाण्डम् । |
| ६·४×४·८ | १० | २४ | ” | ” | १८५५ | अपू० | नायकादिभेद निरूपणं मध्ये सूचीपत्रञ्च । |
| ८·४×४·४ | १२ | २८ | ” | ” | | ” | |
| १०·८×४·७ | ९ | ४१ | ” | ” | १८५८ | ” | वृष्ट्यादिविचारः । |
| १०·८×४·८ | ९ | ३० | ” | ” | १८५६ | ” | |
| ९·८×४·१ | ८ | ३३ | ” | ” | १८५३ | ” | |
| ९·८×५·३ | १० | ३१ | ” | ” | १८८९ र.का. १७७६ | पू० | |
| ९·६×४·४ | ९ | २४ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६०२४ | सारगीता | परमहंसः | १, ३-२०, २२ । |
| ४६०२५ | वनयात्रा | | १-३, ५-६, ९-२४, २८-४१, ४५-५२, ५२-५९, ६२-६३, ६५-६७ । |
| ४६०२६ | रमलरत्नम् | | १-३२ । |
| ४६०२७ | रामचरितमानसम् | तुलसीदासः | १-६, ८-२६, २६-४१, ४१-९०, ९३-९७, ९७-११९, १-१६, १-६४ । |
| ४६०२८ | गीतावली | ” | १-२२, २२-१०९ । |
| ४६०२९ | भागवतम् | चित्रसेनावधूतः | १-५४, ५६-६३, ६३, ६५-११६, १-८७+२ |
| ४६०३० | गीतावली | | १-७, १-१४ । |
| ४६०३१ | मानमञ्जरी | | १-४, ७, ९-१२, १७, १९-२७ । |
| ४६०३२ | रसिकप्रिया | इन्द्रजीतः | १-१८ । |
| ४६०३३ | शावरतन्त्रम् | | १-१९, २१-२४ । |
| ४६०३४ | हरिचरित्रम् | | ८, ११, १३-१४, १८, २०, ४१, ४३-५०, ५०-५८, ६३. ६६, ७२, ९१, ९४, ९६-९७, १०० । |
| ४६०३५ | विनयपत्रिका | तुलसीदासः | १-११२ = (११३) ११४-१८७ । |
| ४६०३६ | विचारमाला | नरोत्तमपुरी | १-१३ । |
| ४६०३७ | ” | | १-१६ । |
| ४६०३८ | सगुनविचारः | | १, ३-७ । |
| ४६०३९ | कृष्णबधाईगीतम् | सूरदासः | १-४ । |
| ४६०४० | समरविजयः | | १-२० । |
| ४६०४१ | वैद्यविनोदः | | ३६-७९, ८१-९७ । |
| ४६०४२ | वैद्यसङ्ग्रहः | | १-१२ । |
| ४६०४३ | ” | | १-५, ७-१७, २१-२९, ३२-४५, ४९-५१, ४२-४९ । |
| ४६०४४ | घोडाचोली | | २-११ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·१×३·९ | ६ | १२ | दे. ना. | का. | १९०० | अपू० | |
| ६·७×४·३ | १० | १४ | ” | ” | | ” | |
| ११·९×६·२ | १६ | ४८ | ” | ” | र० का० श० १८४४ | पू० | |
| ९·४×४·३ | १४ | ३४ | ” | ” | १८२० | ”* | अयोध्याकिष्किन्धोत्तरकाण्डानि । |
| १०·४×६·७ | २१ | १६ | ” | ” | १८८१ | ” | |
| १३·१×१०·१ | २२ | १९ | ” | ” | | अपू० | दशमस्कन्धः अ० १–९१ । |
| ९·९×९ १ | ११ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ७·९×४·७ | १० | २० | ” | ” | | ” | |
| १०·९×४·६ | ९ | ४८ | ” | ” | | ” | |
| ७·२×३·९ | ७ | २२ | ” | ” | | ” | |
| ७·८×३·८ | १२ | २७ | ” | ” | | ” | |
| १०·९×४·६ | ८ | १९ | ” | ” | १९११ | पू०* | |
| १०×९·८ | १० | ३० | ” | ” | र.का. १७२६ | ” | |
| ९·६×४·९ | ९ | २४ | ” | ” | ” | अपू० | |
| १०·३×४·६ | १० | ४४ | ” | ” | १९१९ | ” | |
| ९·२×९ | ९ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| १०·९×९·१ | १४ | ४१ | ” | ” | १८२९ | पू० | समरसार इति नामान्तरम् । |
| १०×४·३ | ११ | ३७ | ” | ” | | अपू० | |
| ९×९·१ | १० | २३ | ” | ” | | ” | |
| ७·९×४·३ | १२ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| ९·२×४·९ | १४ | ४२ | ” | ” | | ” | औषधसङ्ग्रहश्च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६०४५ | वैद्यरत्नम् | जनार्दनभट्टः | २-१५, १७-७४, ८३-१००, १०९-१२२, १३१-१३६ । |
| ४६०४६ | उषाचरित्रम् | रामदासः | १-७०, ७०-७२, ७२-९३, ९५-१०८ । |
| ४६०४७ | जैमिनिमहाभारतम् | प्रेमदासः | ३-४९३ । |
| ४६०४८ | सारसङ्ग्रहः | | १-८ । |
| ४६०४९ | गेयपदसङ्ग्रहः | | ३-१३, १५-१६, २५-६०, ६९-८६, ९१-११० । |
| ४६०५० | भाषाभूषणं सटीकम् | छत्रकविः | २-४७ । |
| ४६०५१ | रसिकप्रिया | केशवदासः | २-३० । |
| ४६०५२ | शिखनखवर्णनम् | वलिभद्रः | १-१८ । |
| ४६०५३ | सुन्दरश्यामविलासः | सुन्दरदासः | १-१४९, १४९, १४९, १४९-१९२ । |
| ४६०५४ | विहारीसतसई सटीका | विहारी | ९०-१२९ । |
| ४६०५५ | पुरुषछायाविचारः | | १-४ । |
| ४६०५६ | किसनबावनी | कृष्णदासः | १-२१ । |
| ४६०५७ | यन्त्रमन्त्रसङ्ग्रहः | | १-८ । |
| ४६०५८ | रासक्रीडावर्णनम् | नन्ददासः | ४-१५, ४०-४३, ६८-७९ । |
| ४६०५९ | वार्त्तासङ्ग्रहः | | २४-३३, ३५-१९३ । |
| ४६०६० | भागवतम् | वनवारीदासः | १-१८७ । |
| ४६०६१ | दोहावली | तुलसीदासः | १-४८ । |
| ४६०६२ | रुक्मिणीस्वयंवरः | | २-३, ५, ७-१९, २१-२२, २४-३३, ३५-३६, ३८-४९, ५१-६०, ६२ । |
| ४६०६३ | रामरहस्यम् | | १-३३ । |
| ४६०६४ | व्रजविलासः | | २४३-३४५, ३९०-४२७ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·२×५·५ | ९ | २० | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९×४·७ | ८ | २९ | ” | ” | १८४० | पू०* | |
| ९·१×३·२ | १७ | १२ | ” | ” | | अपू० | |
| १३·५×५·६ | ७ | ३२ | ” | ” | | ” | राममन्त्रार्थविवेचनरूपः। |
| ९·९×६ | २३ | २२ | ” | ” | | ” | |
| ६·७×४·६ | १४ | २० | ” | ” | १८५२ | ” | |
| १०·८×४·५ | ८ | ३७ | ” | ” | १६४८ | ” | |
| ६·७×४·६ | १२ | १३ | ” | ” | १८५२ | पू० | |
| ८·५×३·३ | १८ | १८ | ” | ” | १८६७ | ” | |
| १०·६×४·७ | ८ | ४३ | ” | ” | | अपू० | टीका—अनवरचन्द्रिका। |
| ९·८×४·३ | ९ | ३० | ” | ” | | पू० | दीपकविचारः, संस्कृते छाया पुरुषलक्षणञ्च। |
| ६·९×५ ६ | १३ | १४ | ” | ” | १९३५ र० का० १७६७ | ” | |
| ६·७×४·९ | ६ | ७ | ” | ” | | ” | |
| ५·७×९·५ | १० | १८ | ” | ” | | अपू० | भागवतदशमस्कन्धस्थम्, सूरदासकृता सरसलीला, नन्ददासकृता गोवर्द्धनलीला, यमुनास्तुतिश्च। |
| ६·७×६·१ | १० | २४ | ” | ” | | ” | |
| ९·३ × ४·६ | ८ | ३० | ” | ” | १७४२ | पू० | ११ स्कन्धः अ० १—३१। |
| १०·६×५·५ | ११ | २६ | ” | ” | १९०९ | ” | |
| १०·१×५·८ | ७ | २३ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·८×४·८ | ९ | २८ | ” | ” | १९१२ | पू० | अरण्यकाण्डम् |
| १२·१×४·६ | १२ | ३६ | ” | ” | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६०६९ | रामकलेवारहस्यम् | रामनाथः | १-२० । |
| ४६०६६ | रासिरत्नमाला | केशवानन्दगिरिः | १-१९ । |
| ४६०६७ | रमलम् | | १-३७, ३९-५२ । |
| ४६०६८ | मार्गसिद्धान्तः | वल्लभाचार्यः | ५१-५६ । |
| ४६०६९ | सुन्दरसिंगारः | महाकविराजः | १५-७८ । |
| ४६०७० | मनिहारिनलीला | प्रेमदासः | १-१४ । |
| ४६०७१ | नरचरितम् | | १-८ । |
| ४६०७२ | स्वरोदयटीका | | १, १-१९, १९-२० । |
| ४६०७३ | विहारीसतसई सटीका | | ११-२६ । |
| ४६०७४ | भक्तमालः सटीकः | नारायणदासः टी० का०- प्रियादासः | १-१४१ । |
| ४६०७५ | सन्तविलासः | नित्यानन्दः | १-२१, २४-१८१ । |
| ४६०७६ | भागवतम् | आनन्दः | १-२३९ । |
| ४६०७७ | भजनछन्दावली | | १-६ । |
| ४६०७८ | विरागसंदीपनी | | १-३ । |
| ४६०७९ | दोहावली | तुलसीदासः | १-५ । |
| ४६०८० | रामचरितमानसटीका | | २६१ । (गणनया) |
| ४६०८१ | रसकौमुदी | कृष्णचैतन्य निजदासः | १-७७ । |
| ४६०८२ | रामचन्द्रचन्द्रिका सटीका | इन्द्रजित् टी० का०- जानकीप्रसादः | १-१०, ५१-२३३ । |
| ४६०८३ | रामायणम् | विश्वनाथसिंहः | २-५४, ५६-८८, २-६४, १-४०, ४२-४४ । |
| ४६०८४ | सुन्दरशृङ्गारः | सुन्दरकविरायः | १-१३२+१ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·५×९·२ | ८ | ३७ | दे.ना. | का. | १९१९ १२६२ फ० | पू० | १—८ अध्यायाः। |
| ८·६×३·९ | ८ | ३२ | ” | ” | | ” | द्वादशप्रबन्धो वा। |
| ६·२×९·७ | १९ | १२ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·८×६·३ | २७ | २१ | ” | ” | | ” | |
| ८·६×४·८ | १४ | १० | ” | ” | १७८७ श. १६९२ | ” | नायकादीनां वर्णनम्। |
| ९·३×४·७ | १९ | ७ | ” | ” | १९१७ | पू० | |
| ७×९·९ | ११ | २६ | ” | ” | १२८१ फ० | ” | काशीचरितं गिरिजामहेशचरितञ्च। |
| ८·६×९·९ | १२ | २३ | ” | ” | | ”* | |
| ११·२×४·१ | ९ | ४७ | ” | ” | | अपू० | टीका—अनवरचन्द्रिका। |
| १०·९×९ | १० | ३४ | ” | ” | १८४० | पू० | भक्तिरसबोधिनी। |
| ११·७×८·२ | १७ | २९ | ” | ” | १९०९ | ”* | रामाद्यवतारणां भक्तानाञ्च कथा। |
| १२·४×८·४ | २० | २१ | ” | ” | १८६३ | ” | ११-१२ स्कन्धौ। |
| ९·२×७·८ | २१ | १८ | ” | ” | १८३९ | ” | |
| १३·९×६·७ | १३ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| १३·४×६ | १२ | ३३ | ” | ” | १९०४ | | |
| १४·२×६·९ | १८ | ९३ | ” | ” | १९०४ | अपू० | |
| १२·२×६·८ | १९ | ३२ | ” | ” | | पू० | अलङ्काररूपाप्रकरणम्। |
| १४·१×७·२ | १४ | ९० | ” | ” | १८९२ | अपू० | टीका—रामभक्तिप्रकाशिका। |
| १२×६·९ | १२ | ४३ | ” | ” | १८९६ | ” | बाललङ्कोत्तरकाण्डानि। |
| ६·८×९ | ९ | २० | ” | ” | र.का. १६८८ | ” | रसराजश्च। |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|---|
| | ४६०८५ | कौतुकरत्नावली | | १-१२, १४-२५, २८ । |
| | ४६०८६ | माधवनिदानसारांशः | | १-१९ । |
| | ४६०८७ | महाभारतकथा | | २, ४-१२, १४-२३, २५-१५५+२ । |
| | ४६०८८ | सुदामाचरितम् | | ४-१७, १९-३७, ३९-८३ । |
| | ४६०८९ | रामाश्वमेधः | मधुसूदनदासः | १-३७४ । |
| | ४६०९० | व्रजयात्रा | | १-४४ । |
| | ४६०९१ | सभाविलासः | लल्लूजीलालः | १-४२ । |
| | ४६०९२ | कृष्णचरित्रम् | | १९७ । (गणनया) |
| | ४६०९३ | ” | गुमेन | १-८७ । |
| | ४६०९४ | रसिकप्रिया सटीका | इन्द्रजित् टी.का. —सरदारकविः | ९-४० । |
| | ४४०९५ | भजनसङ्ग्रहः | | ६-३३, ३५-१४७, १५०-१५७, १५९-१६२ । |
| | ४६०९६ | ” | | १२३ । (गणनया) |
| | ४६०९७ | हिंडोरकीर्त्तनम् | | १-४, ६-५० + १३ । |
| | ४६०९८ | गेयपदसङ्ग्रहः | | १-३४ । |
| | ४६०९९ | उत्सवसङ्ग्रहः | | ११-३३, ४१-४२, ५१, ५५-५८ + ७ । |
| | ४६१०० | सिंहासनद्वात्रिंशत्का | | २५, २७-४९, ५१-६६ + ५, ७२-८६ । |
| | ४६१०१ | रामरणरत्नाकरः | सरदारकविः | ९-५१ । |
| | ४६१०२ | कौतुकरत्नावली | | १-९ । |
| | ४६१०३ | तांवेश्वरः | | १-१४ । |
| | ४६१०४ | उत्सवमालिका | | ३-३५ । |
| | ४६१०५ | कवित्तरामायणम् | तुलसीदासः | १-३७, ५२-५३ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०×४·५ | ९ | ३१ | दे. ना. | का. | १९०४ | अपू० | इन्द्रजालविद्या। |
| ४·७×९·६ | २० | १८ | ” | ” | | ” | |
| ९·१×८·८ | २३ | १७ | ” | ” | १८३० | ” | आदिपर्व। |
| ६·४×९·५ | १८ | १४ | ” | ” | १९०२ | ” | |
| १०·२×५·८ | ७ | ३३ | ” | ” | १८८२ | पू० | पद्मपुराणपातालखण्डस्य। |
| ५·९×६ | १२ | १८ | ” | ” | | अपू० | वृन्दावनपरिक्रमा। |
| ९·५×८·८ | २४ | १० | ” | ” | १९१३ | पू० | ” |
| ६·७×११·५ | २० | १७ | ” | ” | | अपू० | भागवतदशमस्कन्धकथा। |
| ९·२×५·५ | १२ | २४ | ” | ” | र.का. १९८७ | पू० | ” ” |
| ७·१×११ | ३० | २३ | ” | ” | | अपू० | टीका भूषणनामिका। |
| ९·९×५·८ | १८ | २० | ” | ” | | ” | |
| ९·५×६·१ | २३ | १८ | ” | ” | | ” | |
| ९×४·८ | १७ | १२ | ” | ” | | ” | |
| ९·४×५·२ | २५ | १५ | ” | ” | | ” | |
| ९·८×६ २ | २३ | २१ | ” | ” | | ” | वल्लभसम्प्रदायानुसारं दैनिक-महोत्सवनिरूपणम्। |
| ९×६·३ | २० | १६ | ” | ” | | ” | ” |
| १२·५×८·६ | १५ | ५४ | ” | ” | | ” | |
| ८·८×४·८ | २० | ४४ | ” | ” | १८८० श. १७४५ | पू० | १-१४ पटलानि। |
| ९·१×३·९ | १० | ३० | ” | ” | | ” | औषधसङ्ग्रहः, वशीकरणविधिः इन्द्रजालविद्या च। |
| ५·५×४·८ | १४ | १४ | ” | ” | | अपू० | वल्लभसम्प्रदायोत्सवविधिः। |
| १०·२×४·४ | ७ | ४८ | ” | ” | | ” | बीजकशब्दः वसन्तादयश्च। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६१०६ | साखी | कबीरदासः | १२-६१। |
| ४६१०७ | कइफअलमुगैयबातः | | १-८०। |
| ४६१०८ | गोरखबोधः | | १-२। |
| ४६१०९ | व्रजयात्रा | | १-३९। |
| ४६११० | ज्ञानस्वरोदयः | चरणदासः | १-१८। |
| ४६१११ | ज्यौतिषरत्नम् | दुर्गसिंहः | १-३६, ३९-४४। |
| ४६११२ | षट्पञ्चाशिकाटीका | | २-१६। |
| ४६११३ | रामचरितमानसं सटीकम् | | ६४-८८। |
| ४६११४ | कविप्रिया | केशवमिश्रः | ७९-७७, ८०-१०९, ११२-१४१, १४३-१७९। |
| ४६११५ | सुन्दरशृङ्गारः | सुन्दरकविः | १-८८। |
| ४६११६ | भवनसारसङ्ग्रहः | पुसालकविः | १-२७। |
| ४६११७ | शुद्धविवेकः | | १-३३। |
| ४६११८ | द्रव्यगुणदोषपरिहारः | | १-१२। |
| ४६११९ | रामचरितमानसम् | तुलसीदासः | १-४७, ४७-८९, ८७-११९, १-२९, १-१२, १-२१। |
| ४६१२० | हरिचरित्रम् | | १४०-१९९, १६२-१७८, १८०-१९०, १९४-२०३, २०५, २०९, २१९-२१६, २२३, २३२-२४३, २४९-२५९+१। |
| ४६१२१ | वल्लभाचार्य शिष्य कथा | | १-७। |
| ४६१२२ | गीतसङ्ग्रह | | १-७, १३-२०, १-११०, १। |
| ४६१२३ | " | | १-१० (गणनया)। |
| ४६१२४ | औषधसङ्ग्रह | | ३-१०, १-१८। |
| ४६१२५ | कौतुकसङ्ग्रह | | २-५, १८। |
| ४६१२६ | दशावतारवर्णनम् | | १-४। |
| ४६१२७ | रुद्रवन्तीप्रयोगः | | १-५। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·७×४·७ | ९ | ४७ | दे.ना | का. | | अपू० | |
| ६·३ × ९·७ | २८ | १८ | ” | ” | | पू० | रमलग्रन्थः । |
| ११·८×९·७ | १३ | ३९ | ” | ” | | ” | सप्तविंशतिनक्षत्रनामानि च । |
| ९·५×६·७ | १८ | १४ | ” | ” | १८९३ | ” | चतुरशीतिक्रोशवनपरिक्रमा । |
| ९×·९ | ९ | ३२ | ” | ” | १८७३ | ” | |
| १०·३×९·१ | १२ | ३६ | ” | ” | १७९१ | अपू० | |
| ९·९×९·२ | ११ | ३९ | ” | ” | १८८८ | ” | संस्कृते फलितश्लोकाश्च । |
| १३·७×६·९ | १४ | ५५ | ” | ” | | ” | बालकाण्डम् । |
| ९·४×६·४ | १६ | ४३ | ” | ” | | ” | षगुणालङ्कारादीनां वर्णनम् । |
| ९·६ × ३·९ | ८ | १६ | ” | ” | १८३७ | पू० | नायकनायिकादिवर्णनम् । |
| ८·२×४·९ | ८ | २९ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·८×४ | ८ | ३८ | ” | ” | | पू० | |
| १०×९·१ | १० | २८ | ” | ” | | अपू० | यूनानीमतानुसारी । |
| ११·२×९ | ९ | ३४ | ” | ” | | ” | बालारण्यकिष्किन्धासुन्दरकाण्डानि । |
| ९·६ × ९·८ | १८ | ११ | ” | ” | | ” | |
| १०·१×६·९ | २२ | २१ | ” | ” | | ” | बालारण्यकिष्किन्धासुन्दरकाण्डानि । |
| ९·४×९ | १९ | १९ | ” | ” | | ” | ” ” |
| १०×९·८ | २२ | १४ | ” | ” | | ” | ” ” |
| ६·९×४·९ | १९ | १२ | ” | ” | | ” | गीतसङ्ग्रहतन्त्रादिसङ्ग्रहश्च । |
| १०·६×४·९ | १० | ३३ | ” | ” | | ” | ” ” |
| ८×३·६ | ९ | ३२ | ” | ” | | पू० | ” ” |
| ९·९×४·४ | १० | १६ | ” | ” | | अपू० | ” ” |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६१२८ | अहर्गणानयनम् | | १-६ । |
| ४६१२९ | दानलीला | | १-२४ । |
| ४६१३० | केवलीशास्त्रम् | शान्तिदेवः | ३-१९ । |
| ४६१३१ | लग्नानयनादिविधिः | | १-१२ । |
| ४६१३२ | पदसङ्ग्रहः | | १-२७ । |
| ४६१३३ | ” | | ६-११, १४-३१, ३३-६१, २-३०, ३२-४९, २, १ । |
| ४६१३४ | नित्यचरित्रपदम् | | १-६९, ६७ । |
| ४६१३५ | स्नेहलीला | | २-६ । |
| ४६१३६ | भागवतम् | रसजानिः | ६, ८-६९, ६७-१४३ । |
| ४६१३७ | ताम्रादिधातुक्रियावर्णनम् | | १-६, १०-२२ । |
| ४६१३८ | अभ्रकमारणादिविधिः | | १-१२ । |
| ४६१३९ | सप्तसतिका सटीका | विहारीलालः | ८६-११६, १२१-१२६, १२८-१२९ । |
| ४६१४० | विनयपत्रिका | तुलसीदासः | १-११६ । |
| ४६१४१ | तत्त्वमुक्तावली | शितिकण्ठः | १-२४ । |
| ४६१४२ | शतप्रश्नोत्तरी | मनोहरदासः | १-२० । |
| ४६१४३ | रागमाला | | १ । |
| ४६१४४ | बन्धसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६१४५ | हनुमानबाहुकम् | तुलसीदासः | १-१८ । |
| ४६१४६ | रामचरितमानसम् | ” | ३-७६ । |
| ४६१४७ | ” | ” | १-१०४, १०४-१३१, १-१२० । |
| ४६१४८ | नाममाला | नन्ददासः | १-३, ५-९, ११, १४-२३ । |
| ४६१४९ | ” | ” | १-२७ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·२×४·४ | ८ | २६ | दे ना. | का. | | अपू० | |
| ८·१×५·९ | ११ | २९ | ” | ” | १८३९ | पू० | व्यवहारगणितम्, नन्ददासकृता नाममाला च। |
| ९·९×४·२ | १० | १७ | ” | ” | | अपू० | तन्त्रमन्त्रादिसङ्ग्रहः। |
| ७·४×४·२ | १३ | २९ | ” | ” | | ” | |
| १२×८·१ | १९ | २२ | ” | ” | | ” | |
| १०·३×६·९ | १९ | १४ | ” | ” | | ” | वल्लभसम्प्रदायग्रन्थः। |
| १०·४×६·९ | २४ | १४ | ” | ” | | ” | ” |
| ६२×९·७ | १२ | ३८ | ” | ” | १७९१ | ” | |
| १२·२×६ | १० | ३८ | ” | ” | | ” | पद्यमयं, दशमस्कन्धीयम्। |
| १०·२×३·९ | ११ | ३७ | ” | ” | | ” | |
| १०·८×४·९ | १० | २९ | ” | ” | | ” | |
| ११ ४×९·९ | ९ | ३८ | ” | ” | | ” | टीका-पद्यमयी। |
| ९·७×९·९ | १८ | १४ | ” | ” | | पू० | |
| ८ ६×३·९ | ९ | २४ | ” | ” | | अपू० | ज्यौतिषविषयिणी। |
| १२·७ × ६·७ | १२ | ३७ | ” | ” | | पू० | १-९ खण्डाः, वेदान्तदर्शनम्। |
| १०·३×९·४ | १८ | ४९ | ” | ” | | ” | प्रत्येकरागस्य ऋतुदेवताभार्या-पुत्रादीनां विचारः। |
| ६ ६×६·२ | २२ | ३१ | ” | ” | | ” | अपरपृष्ठे संस्कृते श्लोकाः। |
| ६·८×४·९ | ७ | २९ | ” | ” | १९४७ | ” | सर्वाङ्गपीरमोचनं वा। |
| १०×४·९ | ७ | ३० | ” | ” | | अपू० | |
| १३×९·१ | १० | ३९ | ” | ” | १८९० १८९१ | पू० | बालकाण्डायोध्याकाण्डे। |
| ९·६×९·२ | ९ | ३१ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·४×४·७ | ७ | २७ | ” | ” | १८९० | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६१९० | कालपरीक्षा | | १-६ । |
| ४६१९१ | सुन्दरशृङ्गारः | सुन्दरकविराजः | १-९, १३-९९ । |
| ४६१९२ | सारसङ्ग्रहः | | १-८८ । |
| ४६१९३ | वैद्यरत्नम् | गोस्वामिजनार्दनभट्टः | १-१३ । |
| ४६१९४ | नाममालामञ्जरी | नन्ददासः | १-१९ । |
| ४६१९५ | केरलीग्रन्थः | दीनानाथः | १-७० । |
| ४६१९६ | भडलीयोगः | | १-३१ । |
| ४६१९७ | भूगोलपुराणम् | वेदव्यासः | १-५, ७-११ । |
| ४६१९८ | शिलोदकविधिः | | १-७ । |
| ४६१९९ | रमलविचारः | | २३-२९, ३३-६०, ६२-६६, १०७-११८ । |
| ४६२०० | रमलसगुनपद्धतिः | | १-८ । |
| ४६२०१ | अनेकार्थध्वनिमञ्जरी | शाखानन्ददासः | १-७ । |
| ४६२०२ | विचारसागरः | | १०, १२, २१-३७, ३९, ९-४५, १-५५, १-७, १२-२३, ३१-३६, १-२९ । |
| ४६२०३ | वैद्यमनोत्सवः | नयनसुखः | १-२१ । |
| ४६२०४ | पञ्चदशीविद्या | प्रवीणदासः | १-३ । |
| ४६२०५ | कृष्णावली | | १-२० । |
| ४६२०६ | भाषाभूषणम् | जसवन्तसिंहः | १-१८ । |
| ४६२०७ | लीलावती | शंकरमिश्रः | १-२१ । |
| ४६२०८ | रामचरितमानसं सटीकम् | तुलसीदासः | १, ३-३०९+२ । |
| ४६२०९ | गीताश्रीधरीटीकाव्याख्या | | १-२२ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७×३·७ | ८ | १९ | दे. ना. | का. | १९२३ | पू० | ज्यौतिषम् । |
| ६·६×:·२ | ११ | १६ | ” | ” | | अपू० | नायिकावर्णनम् । |
| १०·९×९ ९ | १० | २८ | ” | ” | १९३२ | पू० | आयुर्वेदः, अग्रे सटीको ग्रन्थः । |
| १०·७×९·९ | १३ | ३९ | ” | ” | | अपू० | १-२ प्रकाशौ । |
| ९·३×९·४ | ११ | ३१ | ” | ” | १९०० श. १७६९ | पू० | कोशः । |
| ९·३×४·१ | ९ | २९ | ” | ” | १८९७ फसली सन् १२४७ | ” | फलितज्यौतिषम् । |
| ९·७×३·९ | ९ | २० | ” | ” | | अपू० | प्रश्नोत्तररूपवर्षादिवर्णनम् । |
| ९×४ | ७ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| ९·१×३·६ | ६ | २६ | ” | ” | | पू० | मल्लिकार्जुनकल्पश्च । |
| ७·२×३·६ | ४ | १२ | ” | ” | | अपू० | फलविशेषपुस्तकम् । |
| १०·८×४·७ | १० | ४३ | ” | ” | १९१९ | पू० | |
| ८·४×३·८ | १० | ३७ | ” | ” | १८९६ | ” | कोशग्रन्थः । |
| ११·२×९·९ | ११ | ३८ | ” | ” | | अपू० | दादूसम्प्रदायग्रन्थः प्रारब्धसञ्चित-कर्मनाशादिविचारः । |
| ११·३×९·३ | १० | ३० | ” | ” | | पू० | |
| ९·८×४·४ | १० | ३१ | ” | ” | १९८(?) | ” | शिवागमतन्त्रोक्ता । |
| १०·७×४·६ | ७ | ३७ | ” | ” | १९१० | ” | |
| ९·९×४·३ | ८ | २९ | ” | ” | १८६७ | ” | |
| १०·१×४·९ | १७ | ९४ | ” | ” | १७९७ र० का० १७१६ | ” | अङ्कपाशान्ता । |
| १३·१×६·९ | १२ | ४९ | ” | ” | | अपू० | बालकाण्डम् । |
| १३×९·१ | ११ | ४९ | ” | ” | | ” | मूलश्लोकसहिता । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६१७० | औषधसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६१७१ | " | | १ । |
| ४६१७२ | " | | १३ । (गणनया) |
| ४६१७३ | सङ्कटमोचनाष्टकम् | तुलसीदासः | १-५ । |
| ४६१७४ | शिवाशकुनविचारः | | १-७ । |
| ४६१७५ | ज्यौतिषसारः | कृपारामः | १-३२ । |
| ४६१७६ | रससागरः | सैयदहुसेनी नरवरिया | १-१००, १०२-११३ । |
| ४६१७७ | ज्ञानमञ्जरी | मनोहरदासः | १-२० । |
| ४६१७८ | ज्ञानवचनचूर्णिका | | १-१७ । |
| ४६१७९ | भागवतम् | कृपारामः | १-६४, ६२-९७, ९७-१६२, १-१३४ । |
| ४६१८० | स्वरोदयसारः | | १-१० । |
| ४६१८१ | रामचरितमानसम् | तुलसीदासः | १-१४७, १-१२१, १-२८, १-१६, १-२९, १-६७, १-६९ । |
| ४६१८२ | गीतिसङ्ग्रहः | | ३३-३७, ४५-४८, ५५-५३, ५८-६० । |
| ४६१८३ | द्रव्यशोधनविधिः | | १ । |
| ४६१८४ | रसरत्नाकरः | हृदयराममिश्रः | १-४६ । |
| ४६१८५ | रामचरितमानसम् | | २ । |
| ४६१८६ | वशीकरणमन्त्रप्रयोगः | | ३-४ । |
| ४६१८७ | सपिण्डीसामग्री | | १ । |
| ४६१८८ | कवित्तभाषा | | पृ० २-७ । |
| ४६१८९ | " | | १-२ । |
| ४६१९० | कोकसारः | मुकुन्दकविः | १-३ । |
| ४६१९१ | बिहारीसतसई | | १३, १५-१६, २१, २५-३४, ३४-४२ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | अलङ्कारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·५×४·१ | ९ | ३१ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ४·१×८·८ | २८ | १४ | ” | ” | | ” | |
| ६·३×४·९ | २१ | २० | ” | ” | | ” | |
| ९·३×४·९ | ६ | २४ | ” | ” | १९४८ | पू० | |
| ८·५×४·१ | ८ | २१ | ” | ” | १७२३ | ” | संस्कृते बृहस्पतिकृतः स्वप्नाध्यायश्च। |
| ९·३×३·८ | १२ | ३२ | ” | ” | १८७२ | ” | लघुजातकानुसारी। |
| ९·८×४·३ | ५ | ३५ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·९×६·६ | १२ | ४० | ” | ” | १८८५ | पू० | |
| १२·८ × ६·५ | १२ | ३८ | ” | ” | १८८५ | ” | |
| १२·४×५·७ | ११ | ४६ | ” | ” | १८८८ | ” | दशमस्कन्धः। |
| १०·५×५·१ | १४ | ३२ | ” | ” | १९३६ | ” | सचित्रसरोधासारो वा। |
| १३·९×५·४ | ९ | ३७ | ” | ” | १९१८ १९२१ | अपू० | सचित्रम्। |
| ६·७×३·८ | १६ | १४ | ” | ” | | ” | |
| ६·८×४·५ | १२ | १३ | ” | ” | | ” | |
| १२·२×४·५ | ८ | ४२ | ” | ” | | ” | रसालङ्कारादिविचारः। |
| ९·५×५·१ | ८ | ३१ | ” | ” | | ” | सुन्दरकाण्डम्। |
| ५·८×३·७ | २३ | १८ | ” | ” | | ” | औषधसङ्ग्रहोऽपि। |
| १४·७×६·२ | ३८ | १६ | ” | ” | | पू० | |
| ८·४×६·५ | १८ | २३ | ” | ” | | अपू० | |
| ५·८×४·१ | १७ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ८·८×६·४ | १६ | ३२ | ” | ” | र० का० १७२३ | ” | नायिकादिलक्षणम्। |
| ८·४×४·३ | १२ | २९ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६१९२ | विवाहगीतम् | | १-२ । |
| ४६१९३ | द्रव्यशोधनविधिः | | ३-८ । |
| ४६१९४ | रामललानहछूः सटीकः | तुलसीदासः | १-२ । |
| ४६१९५ | रामचरितमानसम् | | ३१-३२, ३९-४१, ४७-४८, ९१-६१, ९३-९९ । |
| ४६१९६ | ” | | ९३-१०० । |
| ४६१९७ | ” | | २-५, ७-३७, ३९-५७ । |
| ४६१९८ | वरुणावत्तीसी | माधोरामः | ४-१२ । |
| ४६१९९ | लघुसुश्रुतम् | सेखुसेखः | १-४६ । |
| ४६२०० | दोहासङ्ग्रहः | तुलसीदासः | १-११ । |
| ४६२०१ | योगवासिष्ठसारः | | १-१९ । |
| ४६२०२ | अजीर्णमञ्जरी | भूषणः | १-६ । |
| ४६२०३ | सर्वसङ्ग्रहः | | १-१४, १६-११०+१ । |
| ४६२०४ | षट्प्रश्ननिर्णयः | मनोहरदासः | १-९२ । |
| ४६२०५ | रामायणम् | तुलसीदासः | १-१६१, १-१२१, १-२७, १-१५, १-२५, १-९६, १-६२ । |
| ४६२०६ | सगुनमाला | ” | ६-२४+५ । |
| ४६२०७ | शेरसङ्ग्रहः | | १-७२ । |
| ४६२०८ | शाबरमन्त्रप्रयोगविधिः | | १-१९ । |
| ४६२०९ | वैद्यरत्नम् | | १-९४ । |
| ४६२१० | वैद्यमनोत्सवः | नयनसुखः | ९-३२ । |
| ४६२११ | वैद्यप्रकाशः | महेशपुरी | २-१०, १३-५४, ५६-७७ । |
| ४६२१२ | वाल्मीकीयआभासरामायणम् | | १-१०, १३-९२ । |
| ४६२१३ | वाग्भटः | विष्णुगिरिः | १-४० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | स्थलम् | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·८×३·९ | १० | २९ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९·९×४·४ | ७ | ३० | ” | ” | | ” | |
| ७·१×४·१ | ९ | ४० | ” | ” | | ” | टीका–स्नेहप्रकाशिका । |
| १०×४·५ | ११ | ३२ | ” | ” | | ” | बालकाण्डम् । |
| १०·५×५·८ | ९ | ३९ | ” | ” | | ” | ” |
| ८·८×५·६ | ८ | २३ | ” | ” | | ” | आरण्यकाण्डम् । |
| ६·२×४·४ | १० | १९ | ” | ” | १८७७ | ” | |
| १०·५×४·६ | ७ | २७ | ” | ” | १९०७ | पू० | छन्दोमयम् । |
| ६·५×३·९ | १४ | ९ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·७×४·२ | ७ | ३२ | ” | ” | र० का० १७१४ | ” | |
| ९·९×४·४ | ७ | ३३ | ” | ” | १८८१ | पू० | |
| १०·६×५·५ | ११ | २९ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·८×६·५ | १२ | ४४ | ” | ” | १८८५ | पू० | |
| १०·५×५·५ | १० | २७ | ” | ” | १८३० | ” | |
| ५ ६×३·६ | ११ | २९ | ” | ” | १७४७ | ” | |
| ६·८×५·४ | १३ | १४ | ” | ” | | अपू० | देवसम्बन्धी । |
| ८·८×४·३ | ९ | ३२ | ” | ” | | ” | तन्त्रग्रन्थः । |
| १०·१×४·५ | ९ | ३२ | ” | ” | | पू० | १-८ प्रकाशाः । |
| ६·६×४·१ | ७ | २१ | ” | ” | | अपू० | २-५ समुद्देशाः । |
| ९·४×४·१ | ८ | ३६ | ” | ” | १९७४ | ” | |
| ६·३×४·५ | १० | १९ | ” | ” | १८५८ | ” | बालकाण्डादुत्तरकाण्डं यावत् । |
| १०·३×४·५ | ९ | ३१ | ” | ” | १९०० | पू० | छन्दोऽनुवादः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६२१४ | गोस्वामिनामगुणवर्णनम् | | १-२३ । |
| ४६२१५ | बिहारीसतसई सटीका | बिहारीलालः टी०-जगतसिंहः | १-५८ । |
| ४६२१६ | रसिकप्रिया | महाराजेन्द्रजित् | १-७, ९-९३ । |
| ४६२१७ | अष्टाक्षरमन्त्रटीका | | १३-१५, १७-२३ । |
| ४६२१८ | इस्कदरियावः | रसराशिः | ४-५, ७-१५ । |
| ४६२१९ | ” | ” | १-७ । |
| ४६२२० | उत्सवविधिः | हरिरायः | १-७ । |
| ४६२२१ | उद्धवशतकम् | | १-४ । |
| ४६२२२ | उर्वशीनाममाला | त्रिलोककविः | १-२६, २९, ३२-५९ । |
| ४६२२३ | कवितासागरः | मानिकचन्दः | १६-२४, ३५-७९, ९८ + १, ९९-१०६, +१ १०७-१२० । |
| ४६२२४ | कविविनोदः | मुनिमानः | १-३६, ३८-१३९ । |
| ४६२२५ | चिकित्सासारसङ्ग्रहः | विष्णुगिरिः | १-७७ । |
| ४६२२६ | ” | धन्वन्तरिः | १-१२१ । |
| ४६२२७ | साठिसंवत्सरी | | २-२२ । |
| ४६२२८ | शालिहोत्रविनोदः | चेतनचन्दः | १-४३ । |
| ४६२२९ | सीधस्वरोदयः | | १-३५ + १ । |
| ४६२३० | सुगमनिदानम् | विष्णुगिरिः | १-११ । |
| ४६२३१ | हनुमानबाहुकम् | तुलसीदासः | १-१५ । |
| ४६२३२ | होलीगीतम् | | १-४ । |
| ४६२३३ | कुछाहावंशावली | | १-९ । |
| ४६२३४ | कृष्णस्तुतिः | | १-३ । |
| ४६२३५ | कौतुकरत्नावली | | १-१८, २५-२६ |
| ४६२३६ | सूरपदावली | सूरदासः | १-९ + १ १०-११ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६·८×९·९ | ९ | १३ | दे. ना. | का. | | पू० | वल्लभसम्प्रदायग्रन्थः । |
| ८·७×६·२ | १३ | ३१ | ,, | ,, | र० का० श० १७६३ | अपू० | |
| ९·९×९·९ | १६ | १३ | ,, | ,, | श० १७३९ | पू०* | |
| १०·३×९·२ | ११ | ३४ | ,, | ,, | | अपू० | द्वितीयभगवत्पीठिका, समर्पणगद्यार्थश्च। |
| ६·३×३ | ७ | २३ | ,, | ,, | १८६७. | ,, | |
| ८·१×३·९ | ९ | ३२ | ,, | ,, | १८६३ | पू० | |
| १०·२×४·६ | १८ | ४४ | ,, | ,, | १७८२ | ,, | |
| ६·९×९·३ | १२ | २० | ,, | ,, | | अपू० | |
| ६·७×४·६ | ७ | १९ | ,, | ,, | १८३३ | ,, | |
| ८·३×९·७ | २० | २० | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·४×४·६ | ९ | ३० | ,, | ,, | १८९९ | पू०* | आयुर्वेदः । |
| १०·९×४·६ | ९ | २८ | ,, | ,, | १९०७ | पू० | सूचीपत्रसहितः । |
| ८·३×३·३ | ७ | ४१ | ,, | ,, | | ,, | आयुर्वेदः । |
| ९·६×३·३ | ७ | १६ | ,, | ,, | १६२६ | अ०० | ज्यौतिषग्रन्थः । |
| १०·६×४·९ | ७ | २७ | ,, | ,, | १९०७ | पू० | सालहोत्रविनोदो वा । आयुर्वेदः । |
| ८·२×९·८ | १८ | १९ | ,, | ,, | १८७६ | ,, | योगशास्त्रम् । सीवक्त्रस्वरोदयो वा । |
| ९·८×४·३ | ९ | ३७ | ,, | ,, | १८९६ | ,, | आयुर्वेदः । |
| १०×४·४ | ८ | ३९ | ,, | ,, | १८८२ | ,, | |
| १०·८×४·६ | ९ | ३७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·४×४·९ | ८ | १७ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९×२·३ | ४ | १० | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·९×४·२ | ९ | २६ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·९×७·९ | ११ | ११ | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६२३७ | गोविन्ददेवजीकोककी | रामरायमिश्रः | १-९ । |
| ४६२३८ | चिकित्सासारः | धीरजरामः | १-३०, ३०-३१, ३१-८४ । |
| ४६२३९ | जमाल के दोहे | जमालः | २-८ । |
| ४६२४० | ज्ञानसमुद्रः | सुन्दरदासः | १-९१ । |
| ४६२४१ | ” | ” | १-३७ । |
| ४६२४२ | ज्ञानस्वरोदयः | चरणदासः | १-३१+२ । |
| ४६२४३ | ज्यौतिषभेदः | | ४ । (गणनया) |
| ४६२४४ | रत्नयोगः | | १-१७ । |
| ४६२४५ | दत्तात्रेयसिद्धिसोपानः | | २०-३३ । |
| ४६२४६ | देवीविलासः | जेठनकविः | १-३३ । |
| ४६२४७ | रामचरितमानसम् | | २-१९, २२-३६, ५३-७०, ७५ । |
| ४६२४८ | राजावलीयुगचारिकी | | १-११ । |
| ४६२४९ | रागमाला | | १, १, १-९१, + १ । |
| ४६२५० | रसिकप्रिया | इन्द्रजित् | १-३० । |
| ४६२५१ | रसराजः | मतिरामः | १-९ +१ । |
| ४६२५२ | मालाउधारकरपा | | १-४ । |
| ४६२५३ | हितोपदेशः सटीकः | | १-९० । |
| ४६२५४ | रसराजः | मतिरामः | १-९२ । |
| ४६२५५ | गद्यार्थभाषाव्याख्या | गिरिधरः | १-५ । |
| ४६२५६ | कविप्रिया | केशवदासमिश्रः | १-७७ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | क्वचित् | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·१×३·४ | ६ | ११ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १०·४×४·६ | ९ | ३४ | ” | ” | १९०१ | पू० | |
| ८·४×४ | ६ | २२ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·४×६·१ | १७ | १८ | ” | ” | १८७७ र० का० १७१३ | पू० | भयानकचिन्तामणिः तरकचिन्तामणिः, पुनहचिन्तामणिः, हरिबोलचिन्तामणिः हस्तामलकशङ्कराचार्यसंवादश्च । |
| ९·८×४·३ | ९ | ३९ | ” | ” | १८६९ | ” | पञ्चमोल्लासान्तः । |
| ८·२×४·८ | १६ | १२ | ” | ” | | ” | तर्पणविधिः यन्त्राणि च । |
| ८·४×९·७ | १३ | २६ | ” | ” | १८७४ | अपू० | कोकभेदेन्द्रजालसङ्क्षेपायुर्वेदयोगाश्च । |
| ९·३×३·९ | ८ | २४ | ” | ” | १७८६ | पू० | |
| ८·६×४·३ | ९ | ३८ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·६×१०·४ | २२ | १६ | ” | ” | | पू० | दुर्गासप्तशत्यनुवादः । |
| १०·९×६·९ | २१ | २१ | ” | ” | | अपू० | अयोध्याकाण्डम् । |
| ६·९×४·९ | ८ | १४ | ” | ” | | ” | राज्ञां वंशावली राज्यकालश्च । |
| ७·८×९·६ | १९ | १२ | ” | ” | | पू० | ३७-३९ पत्राङ्कलेखने भ्रमः । आदावन्ते भजनान्तरपत्राणि । |
| ९·९×५·२ | १४ | ४९ | ” | ” | | ” | १-१६ प्रभावाः । महाराजकुमारेन्द्रजिदाज्ञया केशवदासेन निर्मिता । |
| १०·४×४·३ | ८ | २७ | ” | ” | | अपू० | नायिकादिवर्णनम् । |
| ९·८×६·३ | १० | २७ | ” | ” | | पू० | अन्ते माला उधार गीतानि च । |
| ९·६×८ | २४ | १६ | ” | ” | | ” | टीका—हिन्दीभाषायाम् । |
| ९·३×६·५ | १३ | ९ | ” | ” | १८४६ | ” | |
| १०·३×४·१ | ९ | ३६ | ” | ” | | ” | |
| ६·९×९·५ | १९ | १४ | ” | ” | १८२७ | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६२६७ | साठिसंवत्सराः | | ९-११ । |
| ४६२६८ | भूगोलपुराणम् | वेदव्यासः | १-१४ । |
| ४६२६९ | माधवानलकामकन्दलाकथा | | १-१३८ । |
| ४६२६० | सारसङ्ग्रहः | | २८२-२९० । |
| ४६२६१ | विहारीसतसई सटीका | विहारी | १-३ । |
| ४६२६२ | वेदान्तमहावाक्यविचारः | मनोहरदासः | १-१६ । |
| ४६२६३ | कवितासङ्ग्रहः | | १-१२ । |
| ४६२६४ | रसिकप्रिया | केशवदासः | १-११६ । |
| ४६२६५ | सङ्कटास्तोत्रम् | | १-३ । |
| ४६२६६ | दानलीला | | १-८ । |
| ४६२६७ | आत्मविचारः | माणकः | १-९ । |
| ४६२६८ | प्रभातगानम् | | १ । |
| ४६२६९ | रामचन्द्रस्तुतिः | तुलसीदासः | १ । |
| ४६२७० | रामविनोदः | रामचन्द्रमिश्रः | १-२९८ । |
| ४६२७१ | कृष्णप्रेमामृतविवृतिः | हरिरायः | १-३०, १-८ । |
| ४६२७२ | वैद्यकसङ्ग्रहः | | २-६ + १, ८-१० + १ । |
| ४६२७३ | » | | १-६ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·८×४·८ | ११ | ३३ | दे.ना. | का. | १७६९ | अपू० | ज्यौतिषम् । |
| ९·४×३·६ | ९ | ३९ | ” | ” | १७८० | ” | |
| ६·२×८·९ | १७ | २२ | ” | ” | १८२४ | ” | नन्ददासकृतानेकार्थभाषानाममञ्जरी, रसमञ्जरी, विरहमञ्जरी, रूपमञ्जरी, सुदामाचरित्रम्, नामचिन्तामणिमाला, नृसिंहचरित्रम्, जगन्नाथस्तुतिः, बाल-लीला, बारहमासा, रुक्मिणीमंगलम्, सीतालघुविवाहः, रागमाला, लघु-पञ्चाध्यायी, सीताविवाहः, भागवत-१० स्कन्धरासपञ्चाध्यायी, पञ्चशब्द, कवित्तविवेकाष्टकम् ; प्रथमो ग्रन्थः प्राकृतभाषानिबद्धः । |
| ९·९×४·४ | ९ | ३३ | ” | ” | | अपू० | आयुर्वेदविषयको ग्रन्थः । |
| १२·३×९·२ | १० | ४६ | ” | ” | | ” | |
| १२·९×६·६ | १२ | ४२ | ” | ” | १८८९ | पू० | |
| ९×११ | २४ | १८ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·१×९·७ | १८ | ११ | ” | ” | १८२१ | पू० | |
| ९×३·१ | ६ | १२ | ” | ” | | ” | |
| ६·३×३·१ | ६ | २१ | ” | ” | १८९४ | ” | |
| ८·८×४·७ | १२ | ४२ | ” | ” | | ” | |
| ६·७×९·७ | १६ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ७·९×४·८ | ११ | २८ | ” | ” | | ” | |
| ९·८×७·४ | १३ | १२ | ” | ” | १८७१ | ” | |
| १०·२×४·९ | ८ | ३४ | ” | ” | १८१४ | ” | प्रभुकृत्यश्लोकाश्च । |
| १०·१×४·४ | ७ | २९ | ” | ” | | अपू० | औषधसङ्ग्रहः द्रव्यशोधनविधिश्च । |
| १०·१×४·४ | ६ | २४ | ” | ” | १८२८ | पू० | ” |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६२७४ | भावना | गोस्वामीद्वारकेशः | ४८-१०३। |
| ४६२७५ | बिहारीसतसई सटीका | | १-६४। |
| ४६२७६ | ,, | | १-१३। |
| ४६२७७ | पदसङ्ग्रहः | | १-१६। |
| ४६२७८ | मन्त्रसङ्ग्रहः | | २-४। |
| ४६२७९ | भ्रमरगीतम् | | ६-१२। |
| ४६२८० | भरतबारहमासी | | १-३। |
| ४६२८१ | पदसङ्ग्रहः | | १-१०। |
| ४६२८२ | भजनावली | | १-७। |
| ४६२८३ | औषधसङ्ग्रहः | | ६-२८। |
| ४६२८४ | फूलचरित्रम् | | १-९। |
| ४६२८५ | प्रहेलीपुराणम् | | २, ८, १३, १९। |
| ४६२८६ | विज्ञानगीता | केशवरायमिश्रः | १-७३। |
| ४६२८७ | श्रीरङ्गभजनम् | | १। |
| ४६२८८ | हनुमद्भजनम् | | १। |
| ४६२८९ | रामविलापः | | १। |
| ४६२९० | विष्णुभजनम् | | १। |
| ४६२९१ | शिवभजनम् | | १। |
| ४६२९२ | पाण्डुरङ्गभजनम् | | १। |
| ४६२९३ | पदसङ्ग्रहः | | १-३। |
| ४६२९४ | अभङ्गः | तुकारामः | १। |
| ४६२९५ | आर्या | | १। |
| ४६२९६ | भजनसङ्ग्रहः | | ?। |
| ४६२९७ | ,, | | १-२, १, १-३। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·१×४·८ | ११ | ४४ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १२·७×४·८ | १० | ४९ | ,, | ,, | | ,, | टीका-संस्कृतभाषायाम्। |
| १२·४×४·८ | ९ | ४६ | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ६·३×९·४ | १६ | १९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·३×४·९ | ९ | २८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·९×४·८ | १९ | १० | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·६×३·८ | ९ | १८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·४×२·२ | १० | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·१×३ | ९ | १३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·७×४·७ | १४ | १७ | ,, | ,, | | ,, | अन्ते यन्त्रसङ्ग्रहश्च। |
| ६·६×३·४ | ४ | १४ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·५×३·९ | ८ | २० | ,, | ,, | १८०९ | अपू० | अन्ते अवकहडाचक्रम्। |
| ६·१×१०·८ | १६ | १२ | ,, | ,, | १८६९ | पू० | |
| २०×६·३ | १७ | २० | ,, | ,, | | ,, | |
| १६·८×६·२ | १४ | १६ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १८·४×९·७ | १२ | १९ | ,, | ,, | | पू० | |
| १९×६ | १७ | ३२ | ,, | ,, | | ,, | |
| १८×६·४ | १७ | २२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १७×६·२ | १३ | २२ | ,, | ,, | | पू० | |
| १८·९×९·६ | ३९ | १७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १७·४×६·४ | १६ | १८ | ,, | ,, | | ,, | |
| १७·९×९·८ | १६ | ३२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·४×४·२ | १३ | २० | ,, | ,, | | अपू० | |
| १७·४×६ | १७ | ३३ | ,, | ,, | | ,, | |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|---|
| | ४६२९८ | भजनसङ्ग्रहः | | १ । |
| | ४६२९९ | ” | | १ । |
| | ४६३०० | ” | | १ । |
| | ४६३०१ | मनांचेश्लोकः | | १-१९ । |
| | ४६३०२ | सुदामाचरित्रम् | | १-२ । |
| | ४६३०३ | भजनम् | | १ । |
| | ४६३०४ | हरिकीर्त्तनम् | | १-३ । |
| | ४६३०५ | मार्कण्डेयमुनीश्वरार्या | | १ । |
| | ४६३०६ | अभङ्गपदसङ्ग्रहः | | १ । |
| | ४६३०७ | ब्रह्मभजनम् | | १ । |
| | ४६३०८ | अभङ्गपदम् | | १ । |
| | ४६३०९ | भजनम् | | १ । |
| | ४६३१० | पदसङ्ग्रहः | | १ । |
| | ४६३११ | भक्तिपदम् | | १ । |
| | ४६३१२ | राधाकृष्णभजनम् | | १ । |
| | ४६३१३ | अभङ्गसङ्ग्रहः | | १ । |
| | ४६३१४ | भजनम् | | १ । |
| | ४६३१५ | ” | | १ । |
| | ४६३१६ | ” | | १ । |
| | ४६३१७ | भावफलम् | | २-३ । |
| | ४६३१८ | पिण्डानयनम् | | १ । |
| | ४६३१९ | अहं सोहं शोधितमार्गः | ज्ञानदेवः | १-२ । |
| | ४६३२० | सीतावोधः | | १-२२ । |
| | ४६३२१ | एकादश्याख्यानम् | | १-२९ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५×१९ | ३८ | ७६ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| २२४×५·८ | ४११ | १७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १४९×५·६ | २३३ | १४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·२×५·४ | १३ | १६ | ,, | ,, | | ,, | |
| १९·८×५·९ | ४३ | २० | ,, | ,, | | ,, | |
| ४×१३·५ | २२ | १५ | ,, | ,, | | ,, | |
| ४·२×६·८ | ३० | १३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ४·५×१२·७ | १९ | ९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ५·४×२०·७ | २९ | १४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ५×१४ | १९ | १६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ५·२×१०·१ | १३ | १२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·६×६·२ | ११ | १५ | ,, | ,, | | पू० | |
| १४·६×४ | २२ | १२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ५·७×५·५ | ८ | १२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·४×४·७ | १२ | १२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·६×४·७ | ९ | १२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·२×३·३ | ७ | १४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·३×४·८ | ८ | १७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ५·३×६·२ | ९ | ११ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·८×३·८ | १२ | ४१ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ५·४×४·५ | × | × | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·२×५·१ | ९ | २५ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १६×६·२ | १६ | २९ | ,, | ,, | | पू० | |
| ५×४·१ | १३ | ५ | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६३२२ | व्यङ्कटेशस्तोत्रम् | | १, ७-८, ११-१२, १६-१७, १९, २१, ३०-३२। |
| ४६३२३ | रामस्तुतिः | | १। |
| ४६३२४ | भजनसङ्ग्रहः | | ३। (गणनया) |
| ४६३२५ | गुरुगीता | | १-१९। |
| ४६३२६ | भगवद्गीताटीका | ज्ञानदेवः | १-४८। |
| ४६३२७ | रघुवंशटीका | | १-३२। |
| ४६३२८ | ज्ञानबतीसी | ज्ञानदेवः | १-४। |
| ४६३२९ | व्यङ्कटेशस्तोत्रम् | | १-९। |
| ४६३३० | मनांचेश्लोकः | | पृ. सं. १, ९-१४८, १६९-१८८, १९१-२०६। |
| ४६३३१ | प्रस्थानत्रयसारः | अद्वैतानन्दः | १-१०। |
| ४६३३२ | पञ्चीकरणम् | शिवरामः | १-८। |
| ४६३३३ | अनुभवामृतं सटीकम् | | १-१९, १९-२०, २०-६८। |
| ४६३३४ | प्रबोधसुधाकरः | अद्वैतानन्दयतिः | १-१६, १-११, १-१३। |
| ४६३३५ | शिवतारकबोधामृतम् | " | २९-४४। |
| ४६३३६ | महावाक्यार्थप्राकृतटीका | ज्ञानदेवः | ७-१०। |
| ४६३३७ | पञ्चीकरणम् | | १-१८। |
| ४६३३८ | व्यङ्कटेशस्तोत्रम् | | १-२६। |
| ४६३३९ | गोपीगीतम् | | १-१८। |
| ४६३४० | व्यङ्कटेशस्तोत्रम् | | १-३९। |
| ४६३४१ | रामतारकमन्त्रार्या सटीका | टी० का०-अद्वैतानन्दयतिः | १-३१। |
| ४६३४२ | स्वात्मनिरूपणं सटीकम् | टी० का०-निरञ्जनमाधवः | १-४६। |
| ४६३४३ | चतुःश्लोकीभागवतटीका | वामनः | १। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | क्षारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६·६×४·२ | ९ | १३ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ११·८×३·९ | ३८ | १८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·१×६·७ | १२ | ११ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·९×४ | ७ | २० | ,, | ,, | १९४० | पू० | |
| ६·२×४·२ | ७ | १९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·८×४·४ | १४ | ३८ | ,, | ,, | | ,, | ३ सर्गस्य । |
| ९·४×९ | ७ | ३१ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·९×४·९ | ९ | ३० | ,, | ,, | श. १७९६ | ,, | |
| ९·६×३·९ | ९ | ९ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·३×४·८ | १२ | २७ | ,, | ,, | | पू० | |
| ८·१×४·६ | १३ | २९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·२×४·९ | ९ | २४ | ,, | ,, | श. १७३६ | ,, | प्रथमप्रकरणम् । |
| ८·९×४·९ | ११ | ३१ | ,, | ,, | | अपू० | ९, १०, १६, अध्यायाः । |
| ८·४×९ | १४ | ३० | ,, | ,, | १७३८ | ,, | |
| ९·८×९·३ | १० | ३० | ,, | ,, | | ,, | ९-८ अध्यायाः । |
| ८·१×४·८ | ९ | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| ४·२×३·१ | ६ | १९ | ,, | ,, | | पू० | |
| ६·९×३·५ | ९ | १२ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·२×३·३ | ९ | १४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·९ × ४·६ | ९ | २९ | ,, | ,, | | ,, | टीका–दीपिका । |
| ८·३×४·७ | ११ | ३० | ,, | ,, | | अपू० | |
| १३×६ | १० | ३९ | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६३४४ | चित्सुधा | वामनः | १-३ । |
| ४६३४५ | तत्त्वमाला | ” | १-२ । |
| ४६३४६ | चरममञ्जरी | ” | १-१२ । |
| ४६३४७ | राजयोगः | | १-२ । |
| ४६३४८ | गीतार्णवसुधा | वामनः | १-६ । |
| ४६३४९ | तत्त्वमसिमहावाक्यपञ्चीकरणनिरूपणम् | ज्ञानदेवः | १-९, ११-१४ । |
| ४६३५० | गीतासारः | | १-४ । |
| ४६३५१ | गोपीगीतम् | | १-३, २-९ । |
| ४६३५२ | तुकारामप्रशंसार्या | मयूरेश्वरः | १-५ । |
| ४६३५३ | सामराजपदम् | | १-५ । |
| ४६३५४ | कोकिलाव्रतोद्यापनं सटीकम् | | १-१५ । |
| ४६३५५ | शिवलीलामृतम् | श्रीधरः | १-१६, १-१८, १-२०, १-१४, १-१५, १-२३, १-२३, १-१६, १-१६, १-१५, १-१९, १-२४, १-२० । |
| ४६३५६ | मानसपूजा | | १ । |
| ४६३५७ | महावाक्यविवेकव्याख्या | | १-५ । |
| ४६३५८ | परमामृतम् | मुकुन्दराजः | १-३० । |
| ४६३५९ | ” | ” | ९-३६ । |
| ४६३६० | रुक्मिणीस्वयंवरः | | १-१६, १-८, १-८, १-१३, १-१३, १-१४, १-१०, १-९, १-७, १-११, १-८, १-१७, १-१०, १-१६, १-१८, १-१९, १-५ । |
| ४६३६१ | भागवतटीका | | ९७३ । ( गणनया ) |
| ४६३६२ | लयोत्पत्तिचिन्तनप्रकारः | | १ । |
| ४६३६३ | ब्रह्मस्तुतिटीका | वामनः | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | भाषाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३×६·१ | ११ | ३८ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| १३×४·१ | १० | ३४ | ” | ” | | ” | |
| १३×४·१ | ११ | ३८ | ” | ” | | ” | |
| १३·१×६·२ | १० | ३४ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·७×६·१ | ११ | ४० | ” | ” | | पू० | |
| ११·४×६ | १० | २६ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·२×४ | १० | २९ | ” | ” | | पू० | |
| १०·४×४·४ | ८ | ३१ | ” | ” | | अपू० | भागवते १० स्कन्धे, ३१ अ०। |
| ७·७×४·४ | ७ | २० | ” | ” | | पू० | |
| ८·२×४·१ | ११ | २६ | ” | ” | | ” | |
| ११·४×४·६ | ९ | ३६ | ” | ” | १९९२ | ” | |
| ८·८×६·२ | ८ | १८ | ” | ” | | ” | |
| १२×७·८ | २६ | २८ | ” | ” | | ” | |
| ८·६×५ | १२ | २७ | ” | ” | | ” | |
| ८×४·५ | ९ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ७·७×४·४ | ९ | २३ | ” | ” | | अपूः | |
| ६·२×३·८ | ७ | १८ | ” | ” | | ” | |
| १२·३×८·८ | १३ | २४ | ” | ” | श. १७२९ | ” | ११ स्कन्धः, टीका एकाकार-नामिका। |
| ९·५×५·१ | ११ | ३१ | ” | ” | | ” | संन्यासिनामन्ते ऋषिन्यासश्च। |
| ६·८×३·५ | ६ | १४ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६३६४ | षट्समाधिनिरूपणम् | | १-२ । |
| ४६३६५ | अखण्डसहजावस्थावर्णनम् | | १-६ । |
| ४६३६६ | स्वस्वरूपबोधः | एकनाथः | १-१० । |
| ४६३६७ | अनुभवामृतम् | ज्ञानदेवः | १-३८ । |
| ४६३६८ | अपरोक्षानुभूतिदीपिका | शिवरामः | १-१० । |
| ४६३६९ | पञ्चीकरणम् | मनोहरदासः | १-१९ । |
| ४६३७० | अखण्डाश्रमः | रेणुका | १-६ । |
| ४६३७१ | मनोबोधशतकम् | रामदासः | १-१६ । |
| ४६३७२ | षोडशसोमवारकथा | | १-९ । |
| ४६३७३ | व्यङ्कटेशगिरिमाहात्म्यम् | | १-७, १-६, १-६, १-७, १-७, १-४, १-९, १-६, १-७, १-७ । |
| ४६३७४ | अभङ्गसङ्ग्रहः | तुकारामः | १-६ । |
| ४६३७५ | काकडारती | | १-६ । |
| ४६३७६ | बोधवैभवं सटीकम् | जगन्नाथस्वामी | १-९६ । |
| ४६३७७ | श्लोकदशकम् | | १ । |
| ४६३७८ | भगवद्गीताटीका | मयूरकविः | १-६२ । |
| ४६३७९ | रुक्मिणीस्वयंवरः | | १-१५, १-८, १-८ । |
| ४६३८० | हस्तामलकं सटीकम् | एकनाथः | १-५८ । |
| ४६३८१ | ,, | ,, | १-९३ । |
| ४६३८२ | परमामृतम् | मुकुन्दराजः | १-२५ । |
| ४६३८३ | भागवतं सटीकम् | | १७-१८ । |
| ४६३८४ | पञ्चीकरणम् | | १-७ । |
| ४६३८५ | ,, | | २-१४ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | भाषा | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६·६×४·२ | ७ | २३ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ६·५×४·२ | १० | २५ | ” | ” | | ” | सप्तश्लोकी भागवतञ्च । |
| ५·१×४·४ | ८ | १७ | ” | ” | | ” | |
| ९·२×५·३ | ९ | २४ | ” | ” | १८०६ | ” | |
| ९×६ | १३ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| ११·८×४·६ | ७ | २९ | ” | ” | | ” | |
| ८·६×४·१ | १० | २५ | ” | ” | | ” | अन्ते यज्ञेश्वरानन्दनाथाष्टकञ्च । |
| ९·१×५·७ | ११ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ३·५×६·८ | २१ | १४ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×५·४ | ९ | २९ | ” | ” | | ” | १-१० अध्यायाः । |
| ५·५×३·७ | ७ | २१ | ” | ” | | ” | |
| ५·५×३·७ | ५ | १५ | ” | ” | | ” | |
| ८·७×५·५ | १० | २५ | ” | ” | | ” | टीका–पद्यमयी । |
| ८·३×५·२ | १३ | २९ | ” | ” | | ” | मराठीभाषामयम् । |
| ८·९×६·१ | ११ | २२ | ” | ” | १९२२ | ” | १-१८ । अध्यायाः, मोरोपन्तः” इति कवेर्नामान्तरम् । |
| ७·९×४·८ | ७ | १६ | ” | ” | | ” | भागवतानुवादः, एकाकारटीका, १-३ अध्यायाः । |
| ९·१×६·१ | १० | २८ | ” | ” | | ” | टीका–मराठीभाषायाम् । |
| ८·२×३·८ | ७ | २२ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×४·२ | ९ | २६ | ” | ” | | ” | पद्यमयो ग्रन्थः, १-१४ प्रकरणानि । |
| १०·१×५·८ | १५ | २७ | ” | ” | | अपू० | ११ स्कन्धः, २६ अध्यायः । |
| ६×३·५ | ७ | १९ | ” | ” | | पू० | |
| ७·१×३·९ | ९ | २४ | ” | ” | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६३८६ | मनांचेश्लोकाः | रामदाससमर्थः | १-४० । |
| ४६३८७ | वेदान्तप्रकरणम् | | १-४, ६ । |
| ४६३८८ | पाण्डुरङ्गमाहात्म्यम् | | ९७ । ( गणनया ) |
| ४६३८९ | भजनसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६३९० | पञ्चसमासी | रामदाससमर्थः | १-२३ । |
| ४६३९१ | रुक्मिणीस्वयंवरटीका | | ३-११ । |
| ४६३९२ | छन्दोग्रन्थः | | १-६ । |
| ४६३९३ | द्वैतविवेकपद्योजना | | १ । |
| ४६३९४ | सिद्धान्तप्रकरणम् | | १-२ । |
| ४६३९५ | विवेकसिन्धुः | | १-७, १-६, १-७, १-५, १-६ । |
| ४६३९६ | रुक्मिणीस्वयंवरटीका | | २९-३६ । |
| ४६३९७ | रुक्मिणीस्वयंवरः | | १-५, ७-८, ४-८ । |
| ४६३९८ | बोधामृतम् | शिवरामः | १-४ । |
| ४६३९९ | आयुर्वेदग्रन्थः | | ६१-७० । |
| ४६४०० | रुक्मिणीस्वयंवरः सटीकः | | १-३, ६-७, ११-१२, १५, १९-२२, १-१६, १-२, ८-१०, १२-२०, २२-२७, ३०-३९, १-४, ७, १६-१९, २१-२३, २५-३३, ७-११, २-१५, १७-१९ । |
| ४६४०१ | काशीखण्डः | | १-२, ५-८, ९-१३, १-७, १-१४, १-५ । |
| ४६४०२ | पद्यसङ्ग्रहः | रामदाससमर्थः | १-२१ । |
| ४६४०३ | दासबोधः | | १-९ । |
| ४६४०४ | हरिविजयः | | १-१९ । |
| ४६४०५ | आत्मानात्मविचारः | | १-४ । |
| ४६४०६ | भजनसङ्ग्रहः | | १-४३ । |
| ४६४०७ | चतुःश्लोकीभागवतटीका | | १-२ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७·६×४·२ | १२ | ११ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ६·२×३·२ | ६ | २० | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·३×४·२ | ६ | २५ | ,, | ,, | | ,, | |
| १५·७×६·१ | २२ | २३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ५·७×४·१ | ८ | १६ | ,, | ,, | | पू० | |
| ७·९×४·८ | ८ | १७ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ८·४×३·९ | ८ | २४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९×६·१ | ११ | ३० | ,, | ,, | | ,, | पञ्चदश्याष्टीका । |
| ८·६×४·८ | ११ | २८ | ,, | ,, | | पू० | |
| १०·२×५·४ | १० | २५ | ,, | ,, | | अपू० | पद्यमयो ग्रन्थः, १-५ प्रकरणानि । |
| ६·६×३·९ | १० | १९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ७×४·७ | ९ | २० | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·७×४·५ | १० | २८ | ,, | ,, | | ,, | पद्यमयम् । |
| ८·६×६·२ | २० | १९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·६×४ | ६ | १८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९×५·८ | ११ | २२ | ,, | ,, | | ,, | शनिध्रुवलोकवर्णनम्भैरवाख्यानञ्च, २०-२१, ३३, ३५, अध्यायाः । |
| ३·८×३ | ६ | १२ | ,, | ,, | | ,, | धावा अभङ्गादि मराठीभाषावृत्तेषु । |
| ८·५×५ | ११ | १८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·५×५·६ | १२ | २५ | ,, | ,, | | पू० | ३ अध्यायः । |
| १२·५×६·१ | १२ | ३८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·५×६·१ | १८ | २० | ,, | ,, | | अपू० | |
| ८·४×४·७ | ७ | २३ | ,, | ,, | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसङ्ख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६४०८ | पद्यसङ्ग्रहः | | १-७, १-८४ । |
| ४६४०९ | विष्णुस्वरूपध्यानम् | वामनः | १-४ । |
| ४६४१० | उच्छिष्टगणपतिप्रयोगः | | २ । |
| ४६४११ | आरात्रिकगीतानि | | १ । |
| ४६४१२ | श्रीशैलशिखरवर्णनम् | | ४-३० । |
| ४६४१३ | सङ्कष्टनाशनस्तोत्रम् | रामदासः | ३-४ । |
| ४६४१४ | व्यङ्कटेशस्तोत्रम् | | ९-२४ । |
| ४६४१५ | ,, | | ५-११ । |
| ४६४१६ | रुक्मिणीस्वयंवरः | | १-३ । |
| ४६४१७ | कथाकल्पतरुः | | १०५६ । (गणनया) |
| ४६४१८ | गायत्रीविवरणम् | | १-३ । |
| ४६४१९ | दिव्यनमनस्तोत्रम् | ज्ञानदेवः | १-६ । |
| ४६४२० | चिरञ्जीवपदम् | | १-७ । |
| ४६४२१ | तत्त्वदीपप्रकरणम् | | १-११ । |
| ४६४२२ | करुणामृतम् | देवदासः | १-२६ । |
| ४६४२३ | व्यङ्कटेशस्तोत्रम् | | ५-३६ । |
| ४६४२४ | पाण्डवगीता | | ७-५७ । |
| ४६४२५ | स्पष्टदेहपञ्चीकरणप्रकारः | | १ । |
| ४६४२६ | विट्ठलस्तुतिः | | १-१० । |
| ४६४२७ | पञ्चीकरणं सविवरणम् | मुकुन्दराजः | १ । |
| ४६४२८ | कर्मगीता | | १-७ । |
| ४६४२९ | चतुःश्लोकीभागवतं सटीकम् | | १-४० । |
| ४६४३० | ब्रह्मविचारः | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | कागदः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७·२×४·६ | १४ | १७ | दे.ना. | का. | | अपू० | हिन्दीसंस्कृतामराठीभाषामयः। |
| ६·६×३·३ | ९ | २१ | ” | ” | | पू० | |
| ९·४×४·१ | ९ | २९ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·१×६·२ | १९ | २२ | ” | ” | १९४२ | पू० | दुर्गागणेशमल्हारीणाम्। |
| ९·९×९·४ | १८ | १९ | ” | ” | | अपू० | रुद्रजपादिविधिः, पादोदकस्तोत्रञ्च। |
| ६·२×४·१ | ७ | २२ | ” | ” | | ” | समर्थस्वामिरामदासकृतं करुणामृत-भीमाष्टकञ्च। |
| ६·६×४·७ | ९ | १३ | ” | ” | | ” | |
| ६·८×९·२ | ११ | २० | ” | ” | | ” | |
| ९·२×४·४ | १० | ३७ | ” | ” | | ” | |
| ९·१×९·४ | ९ | ३० | ” | ” | | ” | |
| ७·७×४·६ | ९ | २८ | ” | ” | | पू० | |
| ९·३×९·४ | १२ | २८ | ” | ” | | ” | |
| ६·२×४·२ | ७ | १८ | ” | ” | | ” | |
| ९×३·८ | ९ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ६·२×४·२ | ७ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ९·८×३·४ | ९ | १३ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·८×४ | ९ | १९ | ” | ” | १८४८ | ” | |
| २२·९×९·९ | ४६ | २२ | ” | ” | | पू० | |
| ४·३ × ३·३ | ९ | ११ | ” | ” | | ” | लघुगीता च। |
| २२३·७×६·५ | ३२४ | १७ | ” | ” | | ” | |
| ६·३×४·१ | ७ | १६ | ” | ” | श. १७३६ | ” | |
| ९·८×४·३ | ९ | २९ | ” | ” | १६७७ | ” | |
| १०·८×४·८ | १८ | ९२ | ” | ” | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६४३१ | गङ्गास्तुतिटीका | | १ । |
| ४६४३२ | भगवद्गीता | | १-९ । |
| ४६४३३ | ,, | ज्ञानदेवः | १-३१, ३४-७४, ७९-१०९ । |
| ४६४३४ | षष्टिसंवत्सरफलम् | | १-२७ । |
| ४६४३५ | स्वरूपबोधः | | १-७ । |
| ४६४३६ | भगवद्गीता सटीका | टी.का-ज्ञानदेवः | १-३९ । |
| ४६४३७ | ,, | | १-२९, २७ । |
| ४६४३८ | ,, | | १-२६ । |
| ४६४३९ | आर्या | | १-६ । |
| ४६४४० | शौरिसुरतरङ्गिणी | गणेशः | १-८, १२, १४-१९, २६-२९, ३९ । |
| ४६४४१ | तन्त्रग्रन्थविशेषः | | ११ । (गणनया) |
| ४६४४२ | आयुर्वेदग्रन्थविशेषः | | १-२ । |
| ४६४४३ | रोगनिदानम् | | १-८, ८-४२ । |
| ४६४४४ | विल्हणपञ्चाशी | | १-१३ । |
| ४६४४५ | वैद्यसङ्ग्रहसारः | | २-३, १-९ । |
| ४६४४६ | वस्त्राहरणम् | | २-२९ । |
| ४६४४७ | अभङ्गसङ्ग्रहः | तुकारामः | १-३, ७-८ । |
| ४६४४८ | परमामृतम् | मुकुन्दराजः | १-२२ । |
| ४६४४९ | रुक्मिणीस्वयंवरः | | १-३, ६, १३-१४, १७ । |
| ४६४५० | कथाकल्पतरुः | | १-१२३ । |
| ४६४५१ | ,, | | १-१०७ । |
| ४६४५२ | विवेकसारः | | १-२८ । |
| ४६४५३ | विवेकसिन्धुः | | १-१०५, १-३, १०८-११८, १-५६ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | कागजः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·३×४·९ | १७ | ३६ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९·८×३·८ | १० | २३ | ,, | ,, | | पू० | १-३ अध्यायाः। |
| ६·८×४·२ | ९ | ११ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·७×३·९ | ८ | १३ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·९×९·४ | ९ | ३१ | ,, | ,, | | ,, | वेदान्तविषयको ग्रन्थः। |
| ९·२×९·९ | ११ | ३१ | ,, | ,, | | पू० | पञ्चदशोऽध्यायः, टीका-मराठी-भाषायाम्। |
| ९·६×९·८ | ११ | २२ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १०·६×६·१ | ८ | २० | ,, | ,, | | ,, | टीका-मराठीभाषायां षष्ठाध्यायस्य। |
| ९·९×९·७ | २६ | १७ | ,, | ,, | | पू० | कृष्णस्तुतिश्च मराठीभाषायाम्, मुद्गलाचार्यविरचितार्या संस्कृते। |
| १०·९×४·९ | ११ | ३४ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ७·९×४·९ | १२ | २९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·९×४·८ | ८ | २० | ,, | ,, | | ,, | |
| ११·४×४·९ | ११ | ३४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·३×९·४ | ११ | २६ | ,, | ,, | | पू० | |
| ६·३×४·२ | १० | १३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ८·२×४·१ | ९ | २९ | ,, | ,, | १७८९ | ,, | |
| १०·२×४·९ | ८ | २९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·२×६·४ | १० | २० | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·४×४·७ | ७ | २३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ११×९·८ | १६ | २९ | ,, | ,, | | पू० | |
| ८·७×९·९ | ११ | २१ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·८×४·७ | ९ | ३१ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·८×६·१ | ११ | २२० | ,, | ,, | | पू०* | हस्तामलकञ्च। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्यादिवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६४९४ | चिकित्सासारसङ्ग्रहः | सरस्वतीगङ्गाधरः | ६९-८८ । |
| ४६४९५ | गुरुचरितम् | देवीदासः | १-८, १-१६, १-५, १-५, १-५, १-११, १-१२, १-७, १-४, १-३, १-७, १-८, १-१०, १-४, १-७, १-१०, १-४, १-५, १-७, १-८, १-६, १-५, १-४, १-४, १-५, १-१५, १-४, १-१३, १-१७, १-१०, १-९, १-१३, १-९, १-८, १-२२, १-३७, १-१८, १-७, १-११, १-८, १-१३, १-११, १-९, १-६, १-७, १-३, १-३, १-४, १-६, १-१४, १-४ । |
| ४६४९६ | गौरीविलासः | दिनकरः | ९-१४, १७-१८, २१, २३-४५, ४७, ४५-४८, ५०, ५२, ५४, ५६-५७, ५९, ६१-६८, ७०-७६, ७९-८७, ८९-९३ । |
| ४६४९७ | हरिविजयः | श्रीधरः | ४८२ । (गणनया) |
| ४६४९८ | कामविलासः | रघुनाथः | १-५, ७-८, १० । |
| ४६४९९ | कृष्णलीलामृतम् | | १-१७ । |
| ४६५०० | चिकित्सासङ्ग्रहः | | १-३४, ३७-९६+८ । |
| ४६५०१ | स्वात्मसुखम् | भानुदासः | १-३१ । |
| ४६५०२ | एकलोलीभावः | | १-२१३ । |
| ४६५०३ | उपसाहित्यग्रन्थः | | १-३७ । |
| ४६५०४ | शौरिसुरतरङ्गिणी | गणेशः | ३१, ३३-३६, ३८-४७, ५३ । |
| ४६५०५ | देवीमाहात्म्यम् | रामनन्दनमयूरः | १-१२ । |
| ४६५०६ | राजयोगाः | वामनः | १-६ । |
| ४६५०७ | मङ्गलाष्टकम् | | १-५ । |
| ४६५०८ | मन्त्ररामायणम् | रामानन्दमयूरेश्वरः | १-५, १-५, १-४, १-६, १-६, १-१८ । |
| ४६५०९ | परन्तुरामायणम् | ” | १-८ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९×४ | ९ | २३ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९·९×६·२ | १२ | २६ | ” | ” | | पू० | १-९१ अध्यायाः, कथाकल्पतरुलता वा। |
| ७·६×९·९ | १० | १३ | ” | ” | | अपू० | स्कन्दपुराणस्थभिल्ल्युपाख्यानान्तर्गतः। |
| ८×९·१ | ११ | २१ | ” | ” | | ” | |
| १०·२×४·४ | ९ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| ९·६×४·२ | ७ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ९·३×७ | १६ | २३ | ” | ” | | ” | |
| १३·२×६·६ | ९ | ३२ | ” | ” | | पू० | |
| १०·९×४·८ | ९ | ३२ | ” | ” | १८८६ | ” | भक्तिग्रन्थः। |
| १०·६×४·६ | ९ | २९ | ” | ” | १७६४ | ” | भाषाशब्दकारिकाप्रयोगसमास-कारकधातुमूलवसार्थमित्यन्तिम-पुष्पिकायां लिखितम्। |
| ६·६×३·६ | १० | २६ | ” | ” | | अपू० | ३-४ तरङ्गौ। |
| ९·६×४·३ | १९ | ४६ | ” | ” | | पू० | १-६ अध्यायाः। |
| ७·९×३·६ | ९ | २७ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×४ ६ | ८ | २६ | ” | ” | | ” | विवाहाद्यवसरे पठनीयश्लोकाः, अन्ते गुर्जरभाषा श्लोकाश्च। |
| ११×९·४ | १३ | ४० | ” | ” | १८६३ | अपू० | अत्र श्रीरामजयरामजयजयराम, इतिमन्त्राक्षराणाम् प्रतिपद्यं सन्निवेशः। |
| १२·९×४·३ | ९ | ४८ | ” | ” | श. १७७९ | पू० | बालायोध्यारण्यकिष्किन्धासुन्दर-युद्धकाण्डानि। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६४७० | तिथिनिर्णयरत्नमाला | शङ्करदैवज्ञः | १-१७ । |
| ४६४७१ | भगवद्गीताटीका | | १-१८ । |
| ४६४७२ | गङ्गालहरीटीका | लक्ष्मणभाऊ अष्टपुत्रे पुणेकरः | १-७ । |
| ४६४७३ | ” | वामनः | १-६ । |
| ४६४७४ | वन्ध्याप्रकरणम् | | १-४ । |
| ४६४७५ | वश्यादियक्षिणीप्रयोगः | | १-२ । |
| ४६४७६ | घोडियाचीपरीक्षा | | १-७२ । |
| ४६४७७ | कुण्डार्णवसिद्धजालम | श्रीधराग्निहोत्री | १-२७ । |
| ४६४७८ | गीतानुवादः | रामानन्दन-मयूरेश्वरः | २-५, १-८, १-५, १-४, १-५, १-४, १-४, १-४, १-५, १-५, ४-६, ३-४, १-३, १-३, १-४, १-८, । |
| ४६४७९ | गीतामाहात्म्यं (समूलम् ) | | १-१६२ । |
| ४६४८० | प्रश्नावलीचक्रम् | मयूरः | १ । |
| ४६४८१ | महाभारतम् | मुक्तेश्वरः | २९७ । ( गणनया ) |
| ४६४८२ | गीतरामायणम् | रामानन्दमयूरः | १-६ । |
| ४६४८३ | मनांचेश्लोकाः | | १-३० । |
| ४६४८४ | स्थूलदेहादिविवरणम् | | १-६ । |
| ४६४८५ | अभङ्गः | तुकारामः | ३ । ( गणनया ) |
| ४६४८६ | भावार्थरामायणं सटीकम् | | १-८२ । |
| ४६४८७ | विवेकसिन्धुः | मुकुन्दराजः | १-७, १-६, १-५, १-४, १-६, १-७, १-८, १-४, १-४, १-३, १-४, १-५, १-४, १-६, १-४, १-७, १-२, १-९, । |
| ४६४८८ | हरिविजयः | | १-२४ । |
| ४६४८९ | व्यङ्कटेशस्तोत्रम् | | ८, ११ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·७×४·१ | ९ | २४ | दे. ना. | का. | १८९३ श. १७९८ | पू० | |
| ८·१×४·३ | ७ | २४ | ,, | ,, | | ,, | गीतार्णवसुधा । |
| ७·८×२·८ | ८ | ३६ | ,, | ,, | | ,, | भावार्थदीपिका । जगन्नाथकृतगङ्गा-लहरीसमश्लोक्यनुवादः । |
| ७·७×२·८ | ९ | ३५ | ,, | ,, | | ,, | समश्लोकी । |
| ९·७×४·२ | १० | ३२ | ,, | ,, | | ,, | वन्ध्यात्वनिवारकौषधसङ्ग्रहः । |
| ८·१×४·१ | १३ | ४० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ९·५×३·८ | ७ | २३ | ,, | ,, | | अपू० | अश्वायुर्वेदः । |
| ६·७×४·१ | ८ | २० | ,, | ,, | | पू० | |
| ६×४·४ | ९ | २८ | ,, | ,, | १८९८ | अपू० | आर्याच्छन्दोमयः । |
| १०×४·५ | ८ | ४२ | ,, | ,, | १७३० | पू० | |
| १९·८×१३ | २५ | ३० | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·८×५·४ | ११ | ३३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ११·१×५·५ | १२ | ३६ | ,, | ,, | श. १७७० | पू० | |
| ४·६ × ५·७ | १२ | ११ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ४·९×६·३ | २६ | १६ | ,, | ,, | | पू० | अन्ते सप्तगुह्यानि च । |
| ४ ८×१४·१ | ३४ | २० | ,, | ,, | | अपू० | |
| ११·५×५·६ | १३ | ४३ | ,, | ,, | | पू० | अयोध्याकाण्डम् । टीका–एकाकारनाम्नी । |
| ११·१×५·६ | ११ | ३२ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·४×४·६ | ७ | ३० | ,, | ,, | | ,, | २० अध्यायमात्रम्, हरिवंशकथा च । |
| ६·२×४ | ७ | १८ | ,, | ,, | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्ररेखाविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६४९० | सामुद्रिकम् | | पृ. सं. १-३० । |
| ४६४९१ | शकुनावली | | १-२ । |
| ४६४९२ | कुशलवाख्यानम् | | १-१७ । |
| ४६४९३ | परमामृतम् | मुकुन्दराजः | १-१२ । |
| ४६४९४ | पाण्डुरङ्गमाहात्म्यम् | | १-११, १-१६, १-११, १-१३, १-१०, १-७, १-७, १-११, १-८, १-१२ । |
| ४६४९५ | रुक्मिणीस्वयंवरः | | ३-९, १-८, १-११, ३-८, १-१७, १-१०, १-१६, १-२०, १-१६ । |
| ४६४९६ | विनायकशान्तिसामग्रीसूची | | १ । |
| ४६४९७ | शिवलीलामृतम् | श्रीधरः | १-१७, १-२०, १-२३, १-१४, १-१९, १-२१, १-२३, १-१९, १-१७, १-१६, १-२०, १-१९, १-२४, १-१७ । |
| ४६४९८ | देव्यष्टकम् | | १, १-१०, १२-२१ । |
| ४६४९९ | वेदान्तविचारः | | २-३, ९-१३, १९ । |
| ४६५०० | राजयोगः | वामनः | १-६ । |
| ४६५०१ | भोयतरवडाचाकल्पः | | १-४, + २ । |
| ४६५०२ | ध्यानमाला (समूला) | | १-१० । |
| ४६५०३ | पाण्डुरङ्गमाहात्म्यम् | श्रीधरः | १-९८ । |
| ४६५०४ | परमार्थनिर्णयः | | १-८३+१ । |
| ४६५०५ | अनुभवसारः | | १-४४ । |
| ४६५०६ | रुक्मिणीस्वयंवरः | | १-१९९ । |
| ४६५०७ | ,, | | १-१०, १-४, १-४, १-६, १-८, १-८, १-६, १-६, १-९, १-८, १-९, १-११, १-६, १-१०, १-९(=६) ७-१४, १-१३, १-४, १-८ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३·९×५·९ | १२ | १२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ६·७×३·३ | ११ | ३७ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·९×४·३ | ८ | ४३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·९×९·९ | २३ | १८ | ,, | ,, | | ,, | वेदान्तदर्शनम्, १-१४ प्रकरणानि। |
| ९·४×९·४ | ७ | १९ | ,, | ,, | | ,, | १-१० अध्यायाः। |
| ७·४×४·९ | ९ | १९ | ,, | ,, | | अपू० | भागवतदशमस्कन्धे, हरिवंश-संहितायाम् ८-१६ अध्यायाः। |
| १४·२×४·२ | ४९ | १४ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·७ × ४·३ | ७ | २४ | ,, | ,, | | ,, | स्कन्दपुराणस्थब्रह्मोत्तरखण्डानुवादरूपम्, १-१४ अध्यायाः। |
| ८·८×३·१ | २१ | १२ | ,, | ,, | | अपू० | षोडशसोमवारकथा, द्वादशलक्षणी च। |
| ८·८×४·४ | ८ | ३१ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·९×४·९ | ९ | २२ | ,, | ,, | | पू० | |
| ४·८×६·९ | ११ | १४ | ,, | ,, | | ,, | औषधसङ्ग्रहो वा। स्फुटकविता च। |
| ८·२×४·३ | ७ | २२ | ,, | ,, | | ,, | भागवते ३ स्कन्धे, कपिल-देवहूति-संवादरूपा। |
| ७·९×९·६ | ८ | १८ | ,, | ,, | | ,, | पद्मपुराणे। |
| ८·६×४·१ | ८ | २८ | ,, | ,, | | ,, | भागवते ११ स्कन्धे २८ अध्यायः। भगवदुद्धवसंवादरूपो ग्रन्थः। |
| ९·९×४·९ | ७ | ३६ | ,, | ,, | | ,, | चित्सुधा, जगन्नाथस्वामिविरचिता अखण्डसहजावस्था, वामनकृत-राजयोगश्च। |
| १०·९×४·९ | ७ | २६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९×४·२ | ८ | २२ | ,, | ,, | | ,, | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६९०८ | अद्वैतबोधः | | २-६ । |
| ४६९०९ | चरममञ्जरी | वामनः | १-१८ । |
| ४६९१० | चित्सुधा | | १-६ । |
| ४६९११ | राजयोगः | वामनः | १-५ । |
| ४६९१२ | पञ्चीकरणम् | रामदासः | १-५, १-२, १-२ । |
| ४६९१३ | अभङ्गः | तुकारामः | १-१८ । |
| ४६९१४ | माधवस्तवराजः | | २, ४-६ । |
| ४६९१५ | मनांचेश्लोकाः | | १-८ । |
| ४६९१६ | अभङ्गः | नामदेवः | १-२१ । |
| ४६९१७ | भजनसङ्ग्रहः | ” | १, १-२५ । |
| ४६९१८ | ” | | १-१९ । |
| ४६९१९ | रामनारायण्यष्टोत्तरशती | शिवरामः | १-१४ । |
| ४६९२० | समाधिविलासः | मुक्ताबाई, निवृत्तिनाथः, ज्ञानेश्वरः, सोपानदेवः | ३-४२ । |
| ४६९२१ | अभङ्गः | नामदेवः तुकारामश्च | १-२ । |
| ४६९२२ | चातुर्मास्यवर्णनम् | काशीनाथ-दीक्षितः | १-२ । |
| ४६९२३ | महादेवार्त्तिक्यम् | | १-२ । |
| ४६९२४ | मार्त्तण्डार्त्तिक्यम् | | १ । |
| ४६९२५ | गीताप्रकरणम् | | १-४ । |
| ४६९२६ | रामविजयः | ब्रह्मानन्दः | ३९५ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या। | अक्षर-संख्या | लिपिः | आदर्शः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·८×४·९ | ७ | २६ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९·२×९·४ | १० | २४ | ” | ” | | पू० | |
| ८·९×९·४ | १० | २३ | ” | ” | | ” | |
| ८·८×९·९ | १० | २६ | ” | ” | १९१४ | ” | |
| ९·२×९·८ | ३३ | २२ | ” | ” | | ” | जगन्नाथस्वामिकृता अखण्डसहजावस्था, बोधानन्दश्च। |
| ४·९×६·९ | ९ | १२ | ” | ” | १७६९ | ” | |
| ६·८×४·१ | ८ | २१ | ” | ” | | ”* | |
| ४·३×३·९ | ६ | १३ | ” | ” | | अपू० | |
| ४·७×७ | ११ | १३ | ” | ” | | पू० | |
| ६×४·९ | ९ | १६ | ” | ” | | अपू० | हरिपाठः, मनांचे सङ्कल्पः, भक्तियोगः, अभङ्गपदावली च। |
| ६·६×९·२ | ९ | १६ | ” | ” | | ” | |
| ६·९×९·१ | ७ | १४ | ” | ” | १९०३ | पू० | रामतुलसी वा। |
| ७·५×९·६ | ११ | २२ | ” | ” | | अपू० | |
| ६·४×१८·२ | ३३ | २२ | ” | ” | | ” | |
| १३·२×९·४ | ११ | ५१ | ” | ” | | ” | मासवर्णनञ्च। |
| ६·९×३·७ | ८ | १८ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×३·६ | ८ | १८ | ” | ” | | ” | |
| ६·९×३·६ | ६ | १९ | ” | ” | | पू० | |
| १२·९×७·४ | १३ | ३६ | ” | ” | १८९० श. १७१९ र.का. १६२४ | ”* | १-४० अध्यायाः। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६९२७ | गुरुचरित्रम् | गङ्गाधरात्मजः | १-८, १-४ । |
| ४६९२८ | दासबोधः | | १-१०३ । |
| ४६९२९ | मन्त्ररामायणम् | | १-९, १-९, १-३१ । |
| ४६९३० | परन्तुरामायणम् | रामानन्दमयूरः | १-१९ । |
| ४६९३१ | योगशतकटीका (समूला) | | १-५, ३३ । |
| ४६९३२ | मङ्गलाष्टकम् | | १-९ । |
| ४६९३३ | उपनिषन्महावाक्यार्थः | | १, १-१३, १६-२६, २८-३२ । |
| ४६९३४ | पल्लीपतनकारिका | | १-३ । |
| ४६९३५ | पूर्वारम्भनिरूपणम् | | १-६ । |
| ४६९३६ | जुनाटपुरुषकथा | | १-५ । |
| ४६९३७ | स्वात्मानुभवः | ज्ञानदेवः | १-१६, १६-१९ । |
| ४६९३८ | रामायणकथानकम् | | १-३० । |
| ४६९३९ | कृष्णजन्म | वामनः (?) | १-६१ । |
| ४६९४० | ब्रह्मस्तुतिः | श्रीपतिः | १-१८ । |
| ४६९४१ | ब्रह्मोत्तरखण्डः | | १-४५ । |
| ४६९४२ | काशीखण्डः | | १-१७ । |
| ४६९४३ | गोपीचन्दाख्यानम् | | १-६ । |
| ४६९४४ | सन्मणिमाला-आर्या | रामानन्दनमयूरः | १-८ । |
| ४६९४५ | मयूरकेकावली | | १-१६ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·७×७·४ | ११ | २९ | दे.ना. | का. | | पू० | ८-९ अध्यायौ । |
| ९·६×६·७ | १० | २४ | ” | ” | | ” | गुरुशिष्यसंवादरूपः । |
| ११·१×४·४ | ७ | ३४ | ” | ” | | अपू० | प्रतिपद्यम् श्रीरामजयरामजय-जयरामेतिमन्त्रस्य क्रमशः एकै-काक्षरग्रन्थनम् । |
| ११·१×४·४ | ७ | ३६ | ” | ” | | पू० | |
| ७·३×३·६ | ८ | २४ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·५×५ | १३ | २७ | ” | ” | | पू० | वरवधूनिमित्ताशीर्वादात्मकपद्यानि । |
| ९·६×४·५ | ८ | ३७ | ” | ” | १९०९ | अपू० | |
| ७·१×३·८ | ८ | २३ | ” | ” | | ” | |
| ८·२×४ | ९ | २४ | ” | ” | | पू० | |
| ८·३×४ | ८ | २०. | ” | ” | | ” | |
| ८·६×५ | ९ | २३ | ” | ” | १८८७ | ” | |
| १२·५×४ | ७ | ४१ | ” | ” | | अपू० | प्रतिपद्यम् “श्रीरामजयरामजय-जयराम” इतिमन्त्रस्य क्रमशः एकै-काक्षरग्रन्थनम् । |
| ११·७×४·३ | ९ | ३८ | ” | ” | | पू० | १–मृत्तिकाभक्षणम् २–बालक्रीडा ३–उलूखलबन्धनम् ४–कात्यायनीव्र-तम् ५-यज्ञपत्न्याख्यानम् ६–राधा-भुजङ्गः ७–रासक्रीडा ८–रासोत्सवः ९–वेणुसुधा १०–वनसुधा च । |
| १२×४·४ | ७ | ३५ | ” | ” | | ” | भागवतदशमस्कन्धस्थब्रह्मस्तुति-व्याख्या । |
| १२·४×४·७ | ११ | ४८ | ” | ” | | ” | १-१२ अध्यायाः । शिवमाहात्म्य-वर्णनम् । |
| ९·३×४·३ | ८ | २४ | ” | ” | | अपू० | स्कन्दपुराणे, १ अध्यायः । |
| ७·७×५ | १८ | १९ | ” | ” | श. १७०० | ” | मछन्दरगोरखनाथाख्यानञ्च । |
| ६·५×४·४ | १८ | १७ | ” | ” | | पू० | अन्ते नारायणस्तुतिः । |
| १०·६×४·२ | ७ | ३३ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६९४६ | एकनाथचरित्रम् | मुक्तेश्वरः | १-२९ । |
| ४६९४७ | हरिविजयः | श्रीधरः | १-९ । |
| ४६९४८ | गुरुचरित्रम् | | १-६ । |
| ४६९४९ | करुणाशतकम् | तुकारामः | १-६, १-६० । |
| ४६९५० | दत्तात्रेयस्तुतिः | | १-२७ । |
| ४६९५१ | विवेकसिन्धुः | मुकुन्दः | १-५२, १-५५ । |
| ४६९५२ | रुक्मिणीस्वयंवरः | | २-१०, १-४, १, ३-४, १-६, ३-५, १-२, ४, २-१०, १-६, १-९, १-८ । |
| ४६९५३ | विक्रमचरित्रम् | | १-९, १-११, १-११, १-९, १-१२, १-११, १-९, १-१०, १-८, १०, १-९, १-९, १-८, १-७, १-८, १-१०, १-८, १-५, १-११ । |
| ४६९५४ | हरिवावापदानि | | १-२ । |
| ४६९५५ | रुक्मिणीस्वयंवरः | | १-९, १-९, १-७, १-७, १-६, १-९, १-७, १-१५, १-९, १-१४, १-१६, १-१७, १-५, १-१० । |
| ४६९५६ | अद्वयशतश्लोकी | | १-२१ । |
| ४६९५७ | ईश्वरभजनम् | | १-८ । |
| ४६९५८ | मरणचिह्नविचारः | | १ । |
| ४६९५९ | हस्तामलकम् | | १-५४ । |
| ४६९६० | महाभारतम् | | १-१०, १-८, १-१२, १-४, १-१०, १-१३, १-८, १-१० । |
| ४६९६१ | ” | | १-११, १-८, १-१२, १-४, १-१०, १-१३, १-८, १-९ । |
| ४६९६२ | इन्दुविनोदावहवाक्यावली | रघुपतिः | १-२२ । |
| ४६९६३ | भजनसङ्ग्रहः | | १-९ । |
| ४६९६४ | चिरञ्जीवपदम् | | १-६ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६·६×३·८ | ९ | १९ | दे.ना | का. | | पू० | |
| ७·३ × ३·१ | ९ | १६ | ” | ” | | ” | हरिवंशानुसारी । |
| ७·७×५ | ७ | २२ | ” | ” | | ” | |
| १०·१×६·४ | १३ | ३३ | ” | ” | १९२७ श. १७९२ | ” | आदावन्ते च कृष्णस्तुतिः । |
| ४·९×४·४ | ९ | १० | ” | ” | | ” | अभङ्गपद्यमयी, सिद्धदर्शनं वा । |
| ९·८×४·८ | ९ | ३३ | ” | ” | | ” | वेदान्तदर्शनम् । १-७,१-११, = १-१८ प्रकरणानि । |
| ८·९×९·७ | ९ | २० | ” | ” | श. १७४७ | अपू० | |
| १०·२×९·८ | ११ | ३१ | ” | ” | श. १७२६ | पू०* | |
| १६·२×६·४ | ३९ | २२ | ” | ” | | ” | |
| ९·१×९·६ | ९ | २६ | ” | ” | श. १७२३ | ” | रुक्मिणीसैंवरो वा, ९-१८ अध्यायाः । |
| ९·८×४·९ | ७ | २९ | ” | ” | १८७२ | ” | |
| ८·९×४·२ | १० | २० | ” | ” | | ” | |
| ६·१ × ९ | २१ | २१ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×९·२ | १० | २६ | ” | ” | श. १६७२ | ” | |
| ९·२×६ | ११ | २८ | ” | ” | | ” | विराटपर्व, १-८ अध्यायाः । |
| ७·९×९·३ | ११ | २१ | ” | ” | श. १६८८ | ” | विराटपर्व, १-८ अध्यायाः । |
| ८·९×९·३ | १० | २३ | ” | ” | १९४२ | ” | |
| १८·३×८·३ | ३८ | २२ | ” | ” | | अपू० | मध्ये जयदेवकविरचितं गीत-गोविन्दञ्च । |
| ७·३×२·८ | ९ | २२ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६५६५ | हरिपाटः | | १-८ । |
| ४६५६६ | पञ्चीकरणमहावाक्यविवरणम् | | १-१३ । |
| ४६५६७ | प्रार्थनाशतकम् | | १-१२ । |
| ४६५६८ | पाण्डुरङ्गस्तोत्रम् | | ३-१४ । |
| ४६५६९ | व्यङ्कटेशस्तोत्रम् | | ५-२० । |
| ४६५७० | भीमरूपहनुमत्स्तोत्रम् | | १-२ । |
| ४६५७१ | मननमाला | | १-३ । |
| ४६५७२ | व्यङ्कटेशस्तोत्रम् | विष्णुदासः | १-३१ । |
| ४६५७३ | काशीस्तोत्रम् | | १-२ । |
| ४६५७४ | दासबोधः | | १-२०, १-२८, १-३९, १-२०, १-३६, १-२५, १-३५, १-३९, १-२७, १-२३। |
| ४६५७५ | मन्त्ररामायणम् | मयूरेश्वरः | १-४, १-५, १-६, १-७, १-५, १-३४, १-१९ । |
| ४६५७६ | रुक्मिणीस्वयंवरः (रुक्मिणीसैंवर) | | १-८ । |
| ४६५७७ | केकावली | मयूरः | १-११ । |
| ४६५७८ | निगमसारः | वामनः | १-१४, १-१२, १-१०, १-८, १-१०, १-८ १-२९, १-१६ । |
| ४६५७९ | वेदान्तसारसङ्ग्रहः | | १-२५० । |
| ४६५८० | शशिसेना | जगन्नाथपण्डितः | २-१९, २७-५६ । |
| ४६५८१ | शिवलीलामृतम् | | १-१०, १-१२, १-१२, १-७, १-७, १-११, १-१२, १-८, १-८, १-८, १-१४, १-१०, १-११, १-११ । |
| ४६५८२ | ज्ञानशिखा | | १-७ । |
| ४६५८३ | मनांचेश्लोकाः | रामदासः | १-२० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·९×२·८ | ७ | १९ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ६·२×३·८ | ७ | १६ | ” | ” | | पू० | |
| ६·७×४ | ७ | १८ | ” | ” | | ” | |
| ६·७×९·२ | ९ | १७ | ” | ” | | अपू० | |
| ७·२×४·९ | ६ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ६·४×३·७ | ८ | १९ | ” | ” | | पू० | |
| ६·७×२·९ | ६ | ३० | ” | ” | | ” | |
| ३·८×२·६ | ६ | १६ | ” | ” | | ” | |
| ६·७×३·३ | ८ | २० | ” | ” | | ” | |
| ९·९×६ | ११ | २९ | ” | ” | | ” | गुरुशिष्यसंवादरूपः। |
| १४×६·९ | ११ | ४१ | ” | ” | | ” | श्रीरामजयरामजयजयरामेति मन्त्रस्यप्रत्येकाक्षरेण प्रतिपद्यं ग्रथितम्। |
| ८·१×९·८ | १० | १७ | ” | ” | | ” | भागवते दशमस्कन्धे, अध्यायः ८। |
| १०·२×९·८ | ११ | २९ | ” | ” | | ” | भक्तिग्रन्थः। |
| ८·३×३·८ | ७ | २३ | ” | ” | र० का० श. १९९९ | ” | उपनिषत्तात्पर्यानुसारी। अध्यायाः १-९। |
| १०·२×९·८ | ११ | २९ | ” | ” | श. १७३८ | ” | वेदान्तदर्शनम्। |
| ९·७×४·२ | १० | ३३ | ” | ” | १८९२ | अपू० | |
| १०·२×९·८ | ११ | २८ | ” | ” | र० का० श. १६२४ | पू० | अध्यायाः १-१४। स्कन्दपुराणे ब्रह्मोत्तरखण्डे। |
| ९·७×३·२ | ७ | १४ | ” | ” | | ” | |
| ७·३×४·९ | १८ | १९ | ” | ” | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६९८४ | रुक्मिणीस्वयंवरः ( रुक्मिणीसैंवर ) | | १-९, १-९, १-४, ६, १-८, १-८, १-९, १-७, १, ८-१४, १-६, १-८, १-६, १-१३, १-८, १-१२, १-१४, १-१२, १-४, १-७। |
| ४६९८५ | ” | | १-१०, १-६, १-६, १-९, १-१०, १-१०, १-८, १-८, १-७, १-१०, १-८, १-१५, १-१०, १-१४, १-१६, १-१७, १-५, १-९। |
| ४६९८६ | शिवलीलामृतम् | | १-१०, १-१२, १-१२, १-८, १-८, १-१६, १-२१, १-१५, १-१६, १-१५, १-२१, १-२४, १-२६+१। |
| ४६९८७ | तत्त्वामृतम् | | १-२६। |
| ४६९८८ | अज्ञानबोधिनी | | १-३५। |
| ४६९८९ | पञ्चीकरणप्रकरणम् | रामानन्दाश्रमः | १-१८+१। |
| ४६९९० | अज्ञानबोधिनी | | १-२२। |
| ४६९९१ | सिद्धान्तसारव्याख्यानम् | | १-३, १-७। |
| ४६९९२ | राजयोगविवरणम् | वामनः | १-३। |
| ४६९९३ | अक्षरमालिकाविचारः | पद्मनाभेन्द्रः | १-३। |
| ४६९९४ | स्वात्मानुभवः | | १-१०। |
| ४६९९५ | विवेकसिन्धुः | | १-९, १-८, १-७, १-६, १-७, १-८, १-१०, १-५, १-५, १-४, १-६, १-६। |
| ४६९९६ | वाल्मीकिरामायणव्याख्या | कृष्णदास-मुद्गलः | २-१३, १६, १-७, ३-७, १-७, १-५, ८, ३-४, २-५, १-६, १-५, १, ३-८, ५, ६, १, १-७, १-२, ४-५, १-७, १-९, १-११, १, ३-५, १-७, १-६, १-६, १-५, १, १-८, २-५, १-६, १-२, १०, १-२, ४-८, १-२ १-८। |
| ४६९९७ | निदानग्रन्थविशेषः | | १-८२। |
| ४६९९८ | दासबोधः | | १-१५, १-२०, ६-१२, १५-३०, ३२, ३४-३६+(२) १-२०, १-३८, १-२६, १-३५, १-४, १-४, १९-२०। |
| ४६९९९ | वेदान्तसङ्ग्रहः | | १-५, १-३०। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·३×५·३ | ९ | २९ | दे. ना. | का. | | अपू० | भागवते दशमस्कन्धे, एकाकार-टीका। अध्यायाः १-१८। |
| ९·५×५·३ | ९ | २३ | ” | ” | र० का० श० १४९३ | ” | भागवते दशमस्कन्धे, एकाकार-टीका। अध्यायाः १-१८। |
| १०·४×४·६ | १० | ३२ | ” | ” | १८६९ र० का० १६४० | ” | अध्यायाः १-१०, १२-१४। स्कन्दपुराणे ब्रह्मोत्तरखण्डे। |
| ९·५×५·३ | १२ | ३६ | ” | ” | | पू० | |
| ८·५×६ | १२ | २२ | ” | ” | | ” | यत्रतत्र मूलञ्च संस्कृते। |
| ९·१×६·२ | ११ | २४ | ” | ” | | ” | वेदान्तदर्शनम्। |
| ८·४×६ | १४ | २९ | ” | ” | | ” | अत्र ५-८ प्रकरणानि। |
| ९·८×६·२ | १५ | २९ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·४×६·२ | १४ | २२ | ” | ” | | पू० | अन्ते प्रियसुधा च। |
| १०×६·३ | १४ | ३१ | ” | ” | | ” | |
| १०·८×६·६ | १२ | ३६ | ” | ” | श० १६८० | ” | |
| १८×४·४ | ९ | २८ | ” | ” | | ” | |
| ११·१×५·२ | १३ | ३४ | ” | ” | श० १५७६ | अपू० | |
| १२×४·७ | ११ | ४९ | ” | ” | १७५९ | पू० | |
| १२·२×५·७ | ११ | ३८ | ” | ” | | अपू० | |
| ४·८×१३ | २९ | १२ | ” | ” | श. १७३५ | पू० | पंचक्रोशादियात्राविधिः, वेदान्त-सिद्धान्तः, जगन्नाथकृतः महावाक्य-विचारः, ब्रह्मानन्दकृता वाक्यसुधा, |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| | ( पूर्वतोऽनुवृत्तम ) | | |
| ४६६०० | वेदान्तसङ्ग्रहः | | १-१७३+१९ । |
| ४६६०१ | त्रिवेण्यष्टकम् | | १-३ । |
| ४६६०२ | गङ्गास्तुतिः | | १-९ । |
| ४६६०३ | वेदान्तशास्त्रप्रक्रिया | | १-१७ । |
| ४६६०४ | त्र्यम्बकीयवैद्यकसङ्ग्रहः | त्र्यम्बकराजः | ३-१४ । |
| ४६६०५ | मुद्रालक्षणम् | | १-२ । |
| ४६६०६ | अवतरणिका | | १-१९ । |
| ४६६०७ | गुरुचरित्रम् | | १-९, १-९ । |
| ४६६०८ | ” | | १-९ + १, १-८ । |
| ४६६०९ | गंगास्तुतिः | | १-२ । |
| ४६६१० | अनुभवसारः | | १-१४, १-१८ । |
| ४६६११ | षट्समाधयः | जगन्नाथस्वामी | १-२२ । |
| ४६६१२ | अनुभवसारः | सच्चिदानन्दः | १-९, १-४, १-८, १-९, १-३ । |
| ४६६१३ | ” | ” | १-६, १-६, १-१०, १-७, १-४ । |
| ४६६१४ | मनश्चरित्रम् | श्रीपतिदासः | १-९, ९-१९, १-९, १-१०, १-६, १-१२ । |
| ४६६१५ | परमामृतम् | मुकुन्दराजः | १-९, १-३ । |
| ४६६१६ | मनश्चरित्रम् | श्रीपतिदासः | १-१२, १-९, १-१६ । |
| ४६६१७ | पञ्चीकरणम् | शिवरामः | १-१७ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | अध्यात्मरामायणम्-आरण्यकाण्डम्, ४ सर्गः, शङ्करकृतम् अनुभवपञ्चक-स्तोत्रम्-हस्तामलकम्, त्रिपुटी, शंक-रकृता बालबोधिनी, पदत्रयव्याख्या, लघुवाक्यवृत्तिः, कलिसन्तरणोपनि-षत्, सर्ववेदान्तसिद्धान्तः, वैराग्य-तरंगः, शुद्धब्रह्मनिरूपणम्। |
| ९·७×३·८ | ९ | १९ | दे. ना. | का. | | पू० | पञ्चदशी, संस्कृतश्लोकसङ्ग्रहः, चू-डालाख्यानम्, भेदपरिभाषा, विविध-सङ्ग्रहश्च। |
| ६·२×४·९ | ६ | ११ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·३×४·९ | ७ | १३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·३×४·९ | ८ | १६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·१×३·३ | ९ | ३३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ८·३×४ | ९ | २८ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·९×४·१ | ८ | २१ | ,, | ,, | | ,, | वेदान्तसिद्धान्तनिरूपणं वा। |
| ८·४×४·९ | ११ | २४ | ,, | ,, | | पू० | गुरुचरित्रपरमकथाकल्पतरुरिति ना-मान्तरम्। अध्यायौ ५२-५३। |
| ८·३×४·४ | १० | ३० | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ८·८×४·७ | ९ | २६ | ,, | ,, | | ,, | रामस्तुतिश्च। |
| ९·९×४·२ | ७ | १४ | ,, | ,, | | ,, | वेदान्तदर्शनप्रकरणे ६-७। |
| ९·९×४ | ७ | १६ | ,, | ,, | | ,, | अखण्डाश्रमः अखण्डसहजावस्था च। |
| ६·१×४·३ | ९ | १८ | ,, | ,, | | ,, | वेदान्तदर्शनप्रकरणानि १-९। |
| ७·१×४·४ | ९ | १७ | ,, | ,, | | ,, | ,, |
| ७·९×९ | ७ | २९ | ,, | ,, | | ,, | १-६ प्रकरणानि। |
| ७·३×४·३ | ७ | १९ | ,, | ,, | | ,, | १-२ प्रकरणे। |
| ६·४×९ | १३ | २२ | ,, | ,, | | ,, | १, ४-९ अध्यायाः। |
| ६·७×४·७ | १० | १७ | ,, | ,, | | ,, | वेदान्तदर्शनम्। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६६१८ | वैद्यकग्रन्थविशेषः | | १, ३, ९-१६ । |
| ४६६१९ | गुरुचरित्रामृतम् | गङ्गाधरसरस्वती | १-८ । |
| ४६६२० | अपरोक्षानुभूतिटीका | वामनः | १-१४ । |
| ४६६२१ | स्वात्मसुखम् | | १-४४ । |
| ४६६२२ | उपदेशरत्नाकरः | | १-१९, १९-२७ । |
| ४६६२३ | दासबोधः | | १-२ । |
| ४६६२४ | अमरावतीवर्णनम् | | १-९ । |
| ४६६२५ | विक्रमचरित्रम् | | १-१२ । |
| ४६६२६ | कृष्णजन्माख्यानम् | | ९ । ( गणनया ) |
| ४६६२७ | प्रबोधसुधाकरः | अद्वैतानन्दयतिः | १-११ । |
| ४६६२८ | शतश्लोकी | त्र्यम्बकः | १-७ । |
| ४६६२९ | सवाइचे श्लोकाः | | १-४ । |
| ४६६३० | ऐलगीतोपाख्यानं(समूलम्) | | १-३६ । |
| ४६६३१ | हरिविजयः | | १-१८ । |
| ४६६३२ | ,, | | १-१४ । |
| ४६६३३ | विक्रमचरित्रम् | | ९-६, ९-९, १-८, १-१२ । |
| ४६६३४ | हरिविजयः | श्रीधरः | ७-८, १०-१८, २०-२६, १-२४ । |
| ४६६३५ | भागवतटीका | | १-२ । |
| ४६६३६ | अभङ्गः | तुकारामः | ८ । (गणनया) |
| ४६६३७ | अजपापूजनविधिः | मुकुन्दराजः | १-३, ३-१८ । |
| ४६६३८ | मननप्रकारः | | १ । |
| ४६६३९ | आत्मतत्त्वनिरूपणम् | | ६-१६, १८-१९, २२ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·६×४ | ६ | २६ | दे.ना. | का. | | अपू० | प्रारम्भे ताजिकनीलकण्ठीमङ्गलम् । |
| ८·३×४·३ | ११ | २८ | ” | ” | | पू० | अध्यायः ५१ । |
| ८·६×४·७ | ८ | १८ | ” | ” | श. १७९८ | ” | समश्लोकी । |
| ७·३×४·३ | ९ | २२ | ” | ” | | ” | |
| ९·१×६·१ | ९ | २१ | ” | ” | | ” | वेदान्तदर्शनम् । |
| ६·१×९ | १३ | १२ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·१×६·२ | १४ | २२ | ” | ” | | पू० | स्कन्दपुराणे काशीखण्डे, ८ अध्यायः । |
| १०×५·८ | ९ | २३ | ” | ” | | ” | |
| १०·४×१२·७ | २६ | ३९ | ” | ” | १९९७ | ”* | |
| ८·७×४·७ | १५ | ४७ | ” | ” | | ” | चतुर्थाध्यायः । |
| ९·७×४·६ | ७ | ३३ | ” | ” | | अपू० | आयुर्वेदः । |
| ९·२×५·३ | ७ | २१ | ” | ” | | पू० | |
| ९·६×५·५ | १२ | २७ | ” | ” | | अपू० | भागवतैकादशस्कन्धे, षडविंशतितमोऽध्यायः । |
| १०×५·९ | ९ | २९ | ” | ” | | ” | २१ अध्यायः । |
| ९·५×६·५ | ११ | ३१ | ” | ” | | पू० | द्वितीयाध्यायमात्रम् । हरिवंश-भागवतसम्मतं हरिलीलामृतम् । |
| १०×५·९ | १३ | २३ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·५×६ | ९ | २१ | ” | ” | | ” | हरिवंशभागवतसम्मतः । |
| ६·३×४·७ | ८ | १२ | ” | ” | | ” | |
| ६·९×४·५ | ७ | १६ | ” | ” | | ” | |
| ५·२×३ | ७ | १६ | ” | ” | | ” | |
| ५·९×३·९ | १० | ३२ | ” | ” | | ” | |
| ६·९×३·५ | ८ | २१ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६६४० | अद्वैतबोधः | वामनः | १-६ । |
| ४६६४१ | पञ्चपदी | | १-३० । |
| ४६६४२ | गुरुचरित्रम् | | २-१४, १४-८१, ९१-१९०, १९३-२३९, २४९-२९३ । |
| ४६६४३ | दासबोधः | | ३-१९+१ । |
| ४६६४४ | परमामृतम् | मुकुन्दराजः | १-३२, ३९-५४, ५७-६० । |
| ४६६४५ | नारायणप्रार्थना | नारायणेन्द्रः | १-२ । |
| ४६६४६ | वेदान्तग्रन्थः | अद्वैतानन्दः | १-११ । |
| ४६६४७ | शिवलीलामृतम् | | १-३१, १-३०, १-२१, १-२२, १-३१, १-३२, १-२२, १-१८, १-१७, १-२०, १-११, १-१२, १-२२, १-२४ । |
| ४६६४८ | श्रवणमननप्रकरणम् | | १-८ । |
| ४६६४९ | ज्ञानाब्धितरङ्गः | | १-११ । |
| ४६६५० | वेदान्तसिद्धान्तावतरणिका | | १-२० । |
| ४६६५१ | हरिपाठः | | ८ । (गणनया) |
| ४६६५२ | वाक्यसुधासमश्लोकी | महेश्वरः | १-४ । |
| ४६६५३ | सन्तमालिकामानसपूजा | | २-२७ । |
| ४६६५४ | विवेकसिन्धुः | मुकुन्दराजः | १-८६, ९७-९८, १०१-२३८ । |
| ४६६५५ | शिवलीलामृतम् | श्रीधरः | १-१०, १-१२, १-१२, १-८, १-७, १-१३, १-१३, १-९, १-९, १-९, १-१२, १-१३, १-१३, १-१४ । |
| ४६६५६ | आक्कुबाईपदम् | | १-६ । |
| ४६६५७ | भक्तिविजयः | | २-९ । |
| ४६६५८ | योगवासिष्ठः | रामदासः | १-२, ५-६, ८-९, १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·६×४ | ९ | ३९ | दे. ना. | का. | | पू० | गुरुबोधश्च । |
| ४·६×७·७ | १८ | १४ | ” | ” | | ” | भजनपदसङ्ग्रहः । प्रारम्भे हिन्दीगीतमेकम् । |
| ७·८×६·७ | १६ | २८ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·२×६·२ | १४ | १३ | ” | ” | | ” | |
| ६·३×४·६ | ७ | १४ | ” | ” | | ” | |
| ७·३×९ | १२ | २२ | ” | ” | | पू० | |
| ८·६×४·७ | १० | २३ | ” | ” | | ” | |
| ७×८ | ७ | १९ | ” | ” | श. १७४० | ” | २-१४ अध्यायाः । |
| ६×४ | ८ | १८ | ” | ” | श. १७९० | ” | अत्र निदिध्यासनसाक्षात्कारवर्णनम्, षट्समाधिनिरूपणम्, अन्ते सटीकं चतुःश्लोकीभागवतमपि । टीका-मराठीभाषायाम् । |
| ९·८×४·४ | ११ | ३३ | ” | ” | | ” | वेदगर्भसुगमसारीयः । |
| १०·८×४·६ | ९ | ३१ | ” | ” | | ” | |
| ६·४×३·६ | १३ | १३ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·९×४·७ | ११ | २६ | ” | ” | | पू० | |
| ६·४×३·९ | ६ | ११ | ” | ” | | अपू० | तृतीयाध्यायमात्रम् । |
| ६·४×३·८ | ८ | १७ | ” | ” | ई. स. १७७९ | ” | |
| १३·१×६ | १० | ३२ | ” | ” | १८४६ | पू० | १-१४ अध्यायाः । स्कन्दपुराणे ब्रह्मोत्तरखण्डे । |
| ६·७×८·४ | १२ | १९ | ” | ” | | ” | |
| १२×४·६ | ८ | ४६ | ” | ” | | अपू० | |
| ६·४×४ | १२ | २२ | ” | ” | | ” | स्थितिप्रकरणमभङ्गपदमयमस्ति । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसङ्ख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६६९९ | विवेकसिन्धुः | | १ + १, ६० । |
| ४६६६० | हस्तामलकटीका | | २४ । |
| ४६६६१ | स्वरोदयः | | १-१४ । |
| ४६६६२ | नारायणीशकुनवन्ती | | १-७ । |
| ४६६६३ | महाभारतम् | | १२-१६, १८-३२, ३६-७१, ७४-८०, ८३-१३०, १३२-१४६ । |
| ४६६६४ | परमामृतम् | मुकुन्दराजः | २-६, ८-१९ । |
| ४६६६५ | भजनसङ्ग्रहः | | ३-८ । |
| ४६६६६ | पद्यसङ्ग्रहः | | १-२४, २६-२८ । |
| ४६६६७ | भजनसङ्ग्रहः | | २-१२, १४-१५, २१-२५, ३१-४१, ६१-७३, ८०-९९, ४२-४७, ४९-५३, १-५७ । |
| ४६६६८ | विक्रमचरित्रम् | | १-४,९-१२ + १ । |
| ४६६६९ | प्रियसुधारसः | | ३२, ५३-७२ । |
| ४६६७० | मनश्चरित्रम् | | १-३, ६-१४, १६-२० । |
| ४६६७१ | वेदान्तसाररहस्यावतरणिका | | १-१० । |
| ४६६७२ | भजनसङ्ग्रहः | | १-९ । |
| ४६६७३ | मेघमाला | | १-१७ । |
| ४६६७४ | रुक्मिणीस्वयंवरः | | १-१४ । |
| ४६६७५ | ,, | | ३७-४२, ४७-५२, ५५-५६, ५८-८७, १२५-१३४ । |
| ४६६७६ | गजेन्द्रमोक्षः | | १-१५ । |
| ४६६७७ | अनुभवसिद्धान्तः | | १-१३ । |
| ४६६७८ | कृष्णजन्मलीला | | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८·२×४·५ | ९ | २५ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ८·३×४·३ | ९ | २६ | ” | ” | | ” | |
| ९×६·१ | ११ | २५ | ” | ” | | पू० | |
| ९×६·१ | ११ | २१ | ” | ” | | ” | प्रश्नग्रन्थः । |
| ७·८×३·५ | ९ | ३० | ” | ” | | अपू० | विराटपर्व । |
| ७·४×४·७ | ७ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ७·२×४·२ | ९ | २० | ” | ” | | ” | |
| ८·६×४ | ८ | २३ | ” | ” | | ” | |
| ९·५×६·७ | २४ | २१ | ” | ” | | ” | रामचन्द्राष्टकम्, शुकाष्टकटीका, उद्धृतश्लोकाः, पाण्डवगीता, गर्भगीता, अच्युताष्टकम्, शुकाष्टकम्, वेदान्तश्लोकाः, कृष्णकर्णामृतम्, गङ्गाष्टकम्, ध्रुवोपाख्यानम्, भागवतम् गोपीबोधश्च । |
| ९·८×५·७ | ९ | २३ | ” | ” | | ” | |
| ६·३×५·१ | १० | २२ | ” | ” | | ” | भजनसङ्ग्रह इति नामान्तरम् । |
| ७·३×४·७ | ७ | १६ | ” | ” | १९२२ | ” | |
| ६·९×५·३ | १२ | २९ | ” | ” | | ” | |
| ४·३×६·८ | २७ | २२ | ” | ” | | ” | |
| ९·५×४·२ | ११ | ३९ | ” | ” | | ” | दिग्वायुविवरणञ्च । |
| ६×४·१ | ७ | १६ | ” | ” | | ” | |
| ६·६×४ | ९ | १७ | ” | ” | | ” | |
| १३·९ × ५·४ | २८ | १९ | ” | ” | | पू० | हरे राममन्त्रमाहात्म्यञ्च । |
| १३·५×५·३ | १६ | १५ | ” | ” | | ” | |
| ६·५×४·१ | ९ | २७ | ” | ” | | ” | राधाकृष्णविलासश्च । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६६७९ | जैमिनिभारतम् | श्रीधरः | ८२९ । (गणनया) |
| ४६६८० | विविधौषधप्रयोगः | | १ । |
| ४६६८१ | आर्यावृत्तविवरणम् | | १ । लम्बमानम् । |
| ४६६८२ | प्रातःप्रार्थनापद्यसङ्ग्रहः | | १ । ” |
| ४६६८३ | भजनसङ्ग्रहः | | १-२ । |
| ४६६८४ | भक्तिपद्यसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६६८५ | पञ्चप्राणार्त्तिक्यम् | मुक्ताबाई | १ । |
| ४६६८६ | भगवत्प्रार्थना | | १-४ । |
| ४६६८७ | हरिपाठः | ज्ञानेश्वरः | १२ । (गणनया) |
| ४६६८८ | भजनसङ्ग्रहः | तुकारामः | १ । |
| ४६६८९ | अभङ्गः | ” | १, । |
| ४६६९० | भजनसङ्ग्रहः | ” | १ । |
| ४६६९१ | अभङ्गः | ” | १ । |
| ४६६९२ | रामकृष्णचरित्रम् | | १ । |
| ४६६९३ | शुभाशुभफलनिर्देशचक्रम् | | १ । |
| ४६६९४ | वेतालिलिङ्गनामावली | | १-२ । |
| ४६६९५ | करुणाष्टकम् | | १ । |
| ४६६९६ | योगवासिष्टटीका | अतीतः | ३३ । ( गणनया ) |
| ४६६९७ | पदसङ्ग्रहः | | १ । आयतम् |
| ४६६९८ | योगवासिष्टटीका | अतीतः | १-९, १-९, १-७, १-१६, ७४ । |
| ४६६९९ | द्रोणपर्वकथा | | १ । |
| ४६७०० | कृष्णबाललीलावर्णनम् | | १ । |
| ४६७०१ | दशावतारवर्णनम् | | १ । |
| ४६७०२ | गणेशस्तुतिः | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | क्वचित् | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९×६·२ | ११ | २७ | दे.ना. | का. | | अपू० | १-९४ अध्यायाः। |
| १९×९·३ | २६ | १२ | ” | ” | | ” | |
| १९·२×९·२ | २८ | १३ | ” | ” | | पू० | |
| १७·६×४·१ | ३६ | १३ | ” | ” | | ” | |
| २९·३×४·८ | ४४ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ६·९×९·७ | १४ | २३ | ” | ” | | ” | |
| ११·९×९·४ | २२ | १७ | ” | ” | | ” | |
| ७×४·८ | ७ | १९ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·९×९·९ | ९ | १४ | ” | ” | | ” | |
| १८·९×६·७ | ३६ | २० | ” | ” | | ” | |
| १७·६×९·८ | ३३ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ६·२×१२ | २९ | १८ | ” | ” | | ” | |
| ९·३×२१·३ | २९ | १४ | ” | ” | | पू० | |
| ७×१०·६ | २८ | २० | ” | ” | | अपू० | |
| २२·९×९·७ | २२ | ३८ | ” | ” | | ” | तान्त्रिकचक्रञ्च। |
| ९×९·७ | २८ | २४ | ” | ” | | पू० | |
| ७×९·३ | १९ | २९ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·१×४·८ | ८ | ३० | ” | ” | | ” | |
| २४·८×९·८ | ४० | २९ | ” | ” | | पू० | |
| १०×४·५ | ९ | २८ | ” | ” | श. १६८८ | अपू० | माधवदास कृतटीका च। बोधवैभवश्च। |
| १८·२×६·१ | ४४ | २२ | ” | ” | | ” | |
| १७·१×९·९ | २४ | १७ | ” | ” | | पू० | |
| १७×६·९ | २४ | २२ | ” | ” | | ” | |
| १९·९×६·२ | ४० | २० | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६७०३ | अभङ्ग | तुकारामः | ४ । ( गणनया ) |
| ४६७०४ | ” | | १-३ । |
| ४६७०५ | हनुमत्कवचम् | | १-२ । |
| ४६७०६ | पदसङ्ग्रहः | केशवस्वामी | १-२ । |
| ४६७०७ | पालीकारिका | | १ । |
| ४६७०८ | रामदूतकृष्णदूतसंवादः | | १ । |
| ४६७०९ | पदसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७१० | निगमसारः | वामनः | १-२३ । |
| ४६७११ | गुरुस्तुतिः | | १ । |
| ४६७१२ | अभङ्गसङ्ग्रहः | रामदासः | १ । |
| ४६७१३ | पदसङ्ग्रहः | तुकारामः | १ । |
| ४६७१४ | अभङ्ग | ” | १-२० । |
| ४६७१५ | अध्यात्मविचारः | | १-३ । |
| ४६७१६ | अभङ्ग | तुकारामः | १-२ । |
| ४६७१७ | भजनसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७१८ | अभङ्ग | तुकारामः | १ । |
| ४६७१९ | ” | | १ । |
| ४६७२० | सद्गुरुप्रार्थना | | १-२ । |
| ४६७२१ | कृष्णचरितवर्णनम् | | ३ । ( गणनया ) |
| ४६७२२ | अभङ्ग | | १-४ । |
| ४६७२३ | ” | तुकारामः | १-९ । |
| ४६७२४ | ” | ” | १-२२ । |
| ४६७२५ | कैवल्यज्ञानदेहादिनिरूपणम् | | १-६७ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·९×५·५ | १६ | १५ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ८·५×६·२ | ११ | १३ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·३×४·८ | ९ | १८ | ,, | ,, | | पू० | |
| ६·७×४·६ | ८ | १३ | ,, | ,, | | ,, | तुकारामरचिताभङ्गश्च । |
| ९·६×६·१ | १५ | १८ | ,, | ,, | | अपू० | पल्लीपतनफलम्। |
| १९·२×७·१ | ५१ | २७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १५·६×६·७ | ३१ | १७ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·१×४·४ | ९ | ३१ | ,, | ,, | | पू० | जगन्नाथकृतैकश्रुत्युपदेशः, ७–८ अ० । |
| १८·२×६·५ | २३ | १५ | ,, | ,, | | ,, | |
| २६·४×१९ | १९ | २७ | ,, | ,, | | अपू० | |
| २४·८×९·७ | ४३ | २७ | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·६×५·५ | ९ | १४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ९·३×५·२ | १० | २९ | ,, | ,, | | ,, | |
| २०×६·३ | ३८ | १५ | ,, | ,, | | ,, | |
| १९×६·४ | ३३ | १४ | ,, | ,, | | ,, | |
| १८×६·४ | २५ | १६ | ,, | ,, | | ,, | |
| ७·९×५·७ | १० | १४ | ,, | ,, | | अपू० | |
| १८·२×६·५ | ३२ | २१ | ,, | ,, | | पू० | |
| १०×६·४ | १७ | १७ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ६×४·२ | १५ | १४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·७×४·९ | ९ | १४ | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·७×४·९ | १२ | १० | ,, | ,, | | ,, | |
| ६·५×४ | १० | ११ | ,, | ,, | | पू० | भजनसङ्ग्रहश्च॥ |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्या, वर्णम् |
|---|---|---|---|
| ४६७२६ | भजनसङ्ग्रहः | | १-१६ + ६ । |
| ४६७२७ | रामगङ्गात्तिक्यम् | | १ । |
| ४६७२८ | गीतिसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७२९ | औषधयोगसङ्ग्रहः | | १-६ । |
| ४६७३० | उमाविलासः | | १ । |
| ४६७३१ | श्लोकसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७३२ | मनांचे श्लोकाः | | १-६ । |
| ४६७३३ | भजनसङ्ग्रहः | | १-२ । |
| ४६७३४ | " | | १-२, २-३८ । |
| ४६७३५ | अभङ्ग | तुकारामः | १-४ । |
| ४६७३६ | गीतिसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७३७ | आत्तिक्यपदसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७३८ | कपिलबोधः | | ३ । (गणनया) |
| ४६७३९ | सुदामाचरित्रम् | | १-६ । |
| ४६७४० | आर्यामुक्तामणिः | मयूरपन्तः | २-१२ । |
| ४६७४१ | उमाविलासः | | १ । |
| ४६७४२ | पदसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७४३ | मारुत्यष्टकम् | | १ । |
| ४६७४४ | हरिविजयविषयानुक्रमणिका | | १-२ । |
| ४६७४५ | भजनसङ्ग्रहः | | १-३२ । |
| ४६७४६ | पदसङ्ग्रहः | तुकारामः | २ । (गणनया) |
| ४६७४७ | भजनसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७४८ | हरिकीर्तनम् | | १ । |
| ४६७४९ | रामकीर्तनम् | | १-२ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७×६·३ | १३ | २५ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १२·२×४·१ | २४ | १४ | ” | ” | | पू० | |
| ९१×९·९ | १७२ | १७ | ” | ” | | अपू० | |
| १३·३×९·३ | २२ | २७ | ” | ” | | ” | |
| १९·४×६·२ | ४४ | १८ | ” | ” | श० १७२१ | ” | |
| २६·१×८·५ | ३५ | २१ | ” | ” | | ” | |
| ९·८×६·४ | १९ | १८ | ” | ” | | ” | |
| ६·३×४·४ | ९ | १२ | ” | ” | | ” | |
| १९×९·८ | ८ | १३ | ” | ” | | ” | |
| २०×६·५ | ३४ | १९ | ” | ” | | पू० | |
| ६१×६ | ६४ | १५ | ” | ” | | अपू० | |
| ६·९×११·१ | २० | १६ | ” | ” | | पू० | गणेशशङ्करनारायणादीनाम्। |
| ५×९ | २१ | १५ | ” | ” | | अपू० | भागवते तृतीयस्कन्धे। |
| १२·८×४·८ | ३२ | १६ | ” | ” | | ” | |
| १२·२×५·२ | ११ | ३९ | ” | ” | | ” | |
| २२·६×७·३ | ५२ | १८ | ” | ” | | ” | |
| २०·२×६·४ | ३१ | २० | ” | ” | | पू० | |
| २०×६·५ | ३२ | १९ | ” | ” | | ” | |
| १८·४×६·५ | २९ | १८ | ” | ” | | अपू० | |
| ६·३×५·२ | १२ | १८ | ” | ” | | ” | |
| ६×९·५ | १८ | १६ | ” | ” | | ” | |
| १२·४ × ४·५ | २१ | १० | ” | ” | | ” | |
| ५·८×९·३ | १८ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ६·३×९·२ | १६ | १८ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६७९० | भगवद्भजनम् | | १-२ । |
| ४६७९१ | पद्यसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७९२ | दशावतारस्तुतिः | | १-२ । |
| ४६७९३ | भजनसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७९४ | ,, | | १ । |
| ४६७९५ | ,, | | १ । |
| ४६७९६ | गुरुस्तुतिः | | १ । |
| ४६७९७ | मनांचे श्लोकाः | | १ । |
| ४६७९८ | पद्यसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७९९ | भजनसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७६० | वाल्मीकिरामायणम् | | ३८ । ( गणनया ) |
| ४६७६१ | भजनसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७६२ | ,, | | १-३ । |
| ४६७६३ | पदसङ्ग्रहः | | १-४ । |
| ४६७६४ | अभङ्ग | तुकारामः | १ । |
| ४६७६५ | सुभाषितम् | | १-२४ । |
| ४६७६६ | भजनसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७६७ | गवलनसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७६८ | वाराणसीपण्ढरपुरतुलना | | १ । |
| ४६७६९ | कवचकुण्डलहरणार्या | | १-२ । |
| ४६७७० | ग्रहगोचरचक्रम् | | १ । |
| ४६७७१ | करुणाष्टकम् | | १ । |
| ४६७७२ | भगवद्भजनोपदेशः | | १ । |
| ४६७७३ | कृष्णचरितम् | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·१×९·२ | १७ | १७ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९·८×९ | २१ | २२ | ” | ” | | ” | |
| ९·१×८·९ | १४ | २० | ” | ” | | ” | |
| ९·९×९·३ | १६ | १४ | ” | ” | | ” | |
| १९·३×९·७ | २० | १९ | ” | ” | | ” | |
| १७·६×९·८ | २९ | १७ | ” | ” | | ” | |
| ८·८×९·१ | १९ | १४ | ” | ” | | पू० | |
| १८·७×९·२ | ३४ | १२ | ” | ” | | अपू० | |
| १६·८×९ | २२ | १९ | ” | ” | | ” | |
| १४·९ × ३·९ | २७ | १६ | ” | ” | | ” | |
| १४·९×४·९ | ३२ | १३ | ” | ” | | ” | भजनसङ्ग्रहश्च । |
| १३·२ × ६·९ | १९ | १४ | ” | ” | | पू० | |
| २३·४×९ | ४३ | १४ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×९·९ | १९ | १२ | ” | ” | | ” | |
| २९·१×९·९ | ४४ | १२ | ” | ” | | ” | |
| १२·७×६ | २३ | १६ | ” | ” | | ” | यन्त्रादिसङ्ग्रहश्च । |
| ९·९×६ | ८ | १३ | ” | ” | | अपू० | |
| २०·२×६·९ | ३२ | १७ | ” | ” | | पू० | दानलीलावर्णनम् । |
| ६×१६·६ | २३ | १९ | ” | ” | | अपू० | |
| ६·१×९·२ | २० | २१ | ” | ” | | ” | |
| १६×१८·१ | १४ | २८ | ” | ” | | ” | |
| ६·३×४·७ | २९ | २३ | ” | ” | | पू० | |
| १३·२×४·२ | ३८ | १३ | ” | ” | | ” | |
| १२·७×६·६ | २० | २० | ” | ” | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६७७४ | पदसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७७५ | भजनसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७७६ | पण्ढरपुरप्रशंसा | | १ । |
| ४६७७७ | कृष्णभक्तिपदम् | | १ । |
| ४६७७८ | अभङ्गः | | १ । |
| ४६७७९ | भजनम् | | १ । |
| ४६७८० | पदसङ्ग्रहः | | १-२ । |
| ४६७८१ | भजनसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६७८२ | भजनम् | | १ । |
| ४६७८३ | वल्लभाख्यानं सटीकम् | गोपालदासः | ११-१८ । |
| ४६७८४ | भाडलीपुराणम् | | १ । |
| ४६७८५ | अष्टमङ्गलीव्याख्यानम् | | १-५ । |
| ४६७८६ | नक्षत्रशकुनावली | | १-४ । |
| ४६७८७ | वल्लभाख्यानम् | गोपालदासः | १-४ । |
| ४६७८८ | रुक्मिणीहरणम् | | १-२० । |
| ४६७८९ | हनुमन्मन्त्रप्रयोगविधिः | | १-२ । |
| ४६७९० | सर्पादिविषदोषप्रतीकारविधिः | | १३-१४ । |
| ४६७९१ | शिवनाटकम् | | १-७ । |
| ४६७९२ | अर्बुदाचलकल्पः | | १-२ । |
| ४६७९३ | औषधतन्त्रमन्त्रसङ्ग्रहः | | ३१-४४, ४६-४९, ५१-५६ + १ । |
| ४६७९४ | औदीच्यवर्णनम् | | १-१४ । |
| ४६७९५ | सौभाग्यतरङ्गिणी | | १-११ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७·९×४·७ | १२ | १९ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ९·७×३·२ | १९ | १६ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·७×६·५ | ११ | १६ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×६·४ | १३ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×६ | १४ | १२ | ” | ” | | ” | |
| १७×६ | १४ | २९ | ” | ” | | ” | |
| १८×६ | २० | १९ | ” | ” | | पू० | |
| १८·६×९·९ | १९ | ४३ | ” | ” | | ” | |
| १६·२×९·९ | १९ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×६·३ | २२ | १९ | ” | ” | | अपू० | |
| १०·२×४·९ | २३ | ७१ | ” | ” | | पू० | जन्मराशिविचारः प्रतिमासिकवृष्टि-विचारश्चः । |
| ८·९×३·४ | १४ | ४९ | ” | ” | १७८९ | ” | |
| ८·९×४·९ | १० | ३१ | ” | ” | १८९९ | ” | |
| १०×६·६ | १८ | १९ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·४×६·१ | १८ | २९ | ” | ” | १७८९ र.का. १६६० | पू० | गुर्जरभाषायाम् । |
| ६·७×४·८ | १० | २३ | ” | ” | | ” | ” |
| १०·७×४·६ | ११ | ४६ | ” | ” | | अपू० | ” |
| ९×३·१ | ६ | १४ | ” | ” | | पू० | ” |
| ९·९×९·९ | १४ | ३४ | ” | ” | | ” | स्वर्णनिर्माणप्रकारो वर्णितोऽस्ति स्थानविशेषे । |
| १०×४·६ | १६ | ४६ | ” | ” | | अपू० | |
| ९·७×४·३ | १० | ३९ | ” | ” | | पू० | |
| १०·९×४·९ | ९ | ४० | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६७९६ | रुक्मिणीहरणम् | देवीदासः | २-६, ६-१६, १६-१३२। |
| ४६७९७ | अध्यात्मरामायणम् | | ८-१३, १७-२७, ९०-६०, ७६-८३, १-९, ४, २४-५७, २१-२३, २६-३३, ३५। |
| ४६७९८ | श्रीवरवाक्यामृतरसरत्नकोशः | | १, ७-८, ८५-१११। |
| ४६७९९ | शिक्षा सटीका | सिद्धोपाध्यायः | १-३१, ३१, ३३-३४, ३४। |
| ४६८०० | वाल्होजी | | १-२०, २४-३१। |
| ४६८०१ | अम्बाजीनोगरबो | | १-४। |
| ४६८०२ | अम्बिकास्तोत्रम् | | १-२। |
| ४६८०३ | ओखाहरणम् | | २-५२। |
| ४६८०४ | सिद्धाम्नायः | | १-३। |
| ४६८०५ | यन्त्रमन्त्रसङ्ग्रहः | | १-९। |
| ४६८०६ | मालोद्धारलीला | यमुनादासः गोपालदासः | १-१६। |
| ४६८०७ | ,, | | ८८, ९८-९४, + १, १-३। |
| ४६८०८ | मालोद्धारचरितम् | गोपालदासः | १-२१०। |
| ४६८०९ | मन्त्रयन्त्रसङ्ग्रहः | | १-११। |
| ४६८१० | औषधसङ्ग्रहः | | १-३४। |
| ४६८११ | प्रवराध्यायः | | १-१९। |
| ४६८१२ | महावाक्यविवेकः | रामचन्द्रसरस्वती | १-१९। |
| ४६८१३ | महारुद्रस्तोत्रम् | | १-४। |
| ४६८१४ | बहुचरदेव्या स्तवम् | | १। |
| ४६८१५ | अध्यात्मरामायणम् | | १०-९८, ९८-२०२, २०४-३६२, ३६६-५१४, ५१६-६४६, ६४८-७०७। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६·७×९·२ | १९ | १४ | दे.ना. | का. | | अपू० | अन्ते अन्यानिकृष्णगीतानि । |
| १०×९·१ | १२ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| ८·७×४·८ | ९ | २९ | ” | ” | | ” | वल्लभसम्प्रदायस्य । |
| ७×९·४ | १२ | २२ | ” | ” | र० का० ४९६४ कलिगताब्दः | पू०* | उपदेशग्रन्थः । |
| ९·७×४·४ | ८ | २२ | ” | ” | | अपू० | कांकणम्, हरतालिकाव्रतकथा, उद्धव-गोपीवचनं, वातड़ी, रक्षःपत्नी च । |
| ९·१×९·९ | २० | १६ | ” | ” | | पू० | अन्ते हिन्दी संस्कृतपद्यानि । |
| ८·९×४ | ८ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ६·३×९·८ | २९ | १८ | ” | ” | | अपू० | ऊपाहरणम् । |
| १०·६×४·६ | १९ | ४९ | ” | ” | | पू० | |
| ७·४×९·३ | १८ | १४ | ” | ” | | ” | |
| ९·७×६·४ | १२ | ३२ | ” | ” | १८९८ | ” | |
| १०×९·९ | ११ | ३२ | ” | ” | | अपू० | सन्त्यस्मिन् बहूनि शोधपत्राणि । |
| ९·७×९·९ | १० | ३१ | ” | ” | | ” | |
| ६×४·१ | ७ | २२ | ” | ” | | ” | |
| ८·४×४·२ | ९ | ३१ | ” | ” | | ” | |
| ८·८×४·८ | १३ | ३९ | ” | ” | १८८३ | पू० | भवान्यष्टोत्तरशतनाम प्रातःस्नान-सङ्कल्पश्च । |
| ९·२×३·९ | ६ | १९ | ” | ” | १७७० | ” | |
| ९·७×३·९ | ८ | १९ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×३·९ | ९ | २२ | ” | ” | | ” | |
| १०×८ | १३ | १६ | ” | ” | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६८१६ | वल्लभाख्यानं सटीकम् | गोपालदासः टी० का० व्रजाभरणदीक्षितः | १-३० । |
| ४६८१७ | भगवद्गीता | | १-१२० । |
| ४६८१८ | मन्त्रतन्त्रविधिः | | १-६ । |
| ४६८१९ | गीतसङ्ग्रहः | | ९-२२, २५-२८, ३६, २९-३२, ३५-३८, ३८, ४१-५०, ५२-५८ । |
| ४६८२० | औषधसङ्ग्रहः | | ३-१९, १९-३८, ३८-९३, ९३-१४२, १४२-१८४ । |
| ४६८२१ | कर्मविपाकः | | १-९ । |
| ४६८२२ | ओषधियोगचमत्कारः | | १-२ । |
| ४६८२३ | भगवद्गीता | | ७-५४ । |
| ४६८२४ | ओषधियोगसङ्ग्रहः | | १-१६ । |
| ४६८२५ | गजेन्द्रमोक्षः | | १-६, १-२, १-१९, १-६, १-६ । |
| ४६८२६ | विविधमन्त्रसङ्ग्रहः | | १-२६ । |
| ४६८२७ | योगविवेकः | अनुभवानन्दः | १-२, ३२-३३ । |
| ४६८२८ | कृष्णगीतम् | | १-५, २-२९, १-६, १-४० । |
| ४६८२९ | शकुनावली | | १-६ । |
| ४६८३० | अर्घकाण्डम् | दुर्गदेवः | ३, ५-३८ । |
| ४६८३१ | नक्षत्रशकुनावली | विश्वनाथः | १-३ । |
| ४६८३२ | वेदान्तग्रन्थः | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२·४×४·९ | ११ | ४२ | दे.ना. | का. | १८४४ | पू० | १–९ कडुवा। टीका–हिन्दीभाषायाम्। |
| ६·४×४·८ | ९ | १९ | ” | ” | १८७४ | ” | पद्यमयी। अन्ते वेणुगीतगोकुलपदौषधसङ्ग्रहसूर्यनामबृहस्पतिमतानि। |
| १०·९×४·९ | ११ | ३७ | ” | ” | १९१८ | ” | |
| ६·२×९·६ | १२ | १२ | ” | ” | १७६१ | अपू० | |
| ७·९×९·१ | १६ | १९ | ” | ” | | ” | प्रश्नविचारः, तन्त्रमन्त्रविचारश्च। |
| ९·२×४·४ | ९ | ३० | ” | ” | १८९९ | पू० | |
| ८·७×४·४ | १२ | ३३ | ” | ” | | ” | |
| ८·८×९·२ | १८ | १० | ” | ” | | अपू० | |
| १०·३×४·२ | १६ | ५१ | ” | ” | | ” | |
| ४·९×४·९ | ११ | १४ | ” | ” | १९२८ | पू० | आयुर्वेदादिकञ्च। |
| ९·२×३·२ | १० | १७ | ” | ” | | ” | |
| ९·९×४·९ | ७ | २७ | ” | ” | १७९२ | अपू० | |
| ९×९·९ | ११ | १४ | ” | ” | १७१३ | ” | यमुनाष्टकम्, कृष्णाश्रयस्त्रोत्रम्, अन्तःकरणप्रबोधः, वल्लभाष्टकम्, प्रेमामृतम्, नवरत्नम्, मुक्ताफलस्तोत्रम्, विवेकधैर्याश्रयस्तोत्रम्, पुरुषोत्तमसिद्धान्तः, मधुराष्टकम्, गोकुलाष्टकम्, गोकुलाष्टकम्, गोविन्दनन्दनाष्टकम्, अष्टोत्तरशतनाम सर्वोत्तमस्तोत्रम्, गीतसङ्ग्रहः। |
| ९·२×४·३ | १९ | ३६ | ” | ” | १८३६ | ” | |
| ९·८×४ | १३ | १३ | ” | ” | १७९१ | ” | षष्टिसंवत्सरफलम्। |
| ८·९×९·४ | ९ | ३१ | ” | ” | | पू० | |
| ९·९×४·६ | १२ | ३८ | ” | ” | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६८३३ | गीतसङ्ग्रहः | | १ । |
| ४६८३४ | तैलङ्गगुर्जरकोषः | | १-२ । |
| ४६८३५ | सूतिकाविचारः | | १-२ । |
| ४६८३६ | पाण्डवचरित्रम् | | १-१३८ । |
| ४६८३७ | सिंहासनबत्तीसी | | १-१२२ । |
| ४६८३८ | तापतेजरोपायः | | १ । |
| ४६८३९ | प्रह्लादोपाख्यानम् | | १-७ । |
| ४६८४० | विष्णुपदम् | | १-३ + १ । |
| ४६८४१ | गुरुमहिमा | | १-११, ९-५४ । |
| ४६८४२ | नाचिकेतोपाख्यानम् | | १-३८ । |
| ४६८४३ | पदसङ्ग्रहः | | १-१०१ + २ । |
| ४६८४४ | वामनचरित्रम् | प्रेमानन्दः | १-२३ । |
| ४६८४५ | गीतसङ्ग्रहः | | १०५ । ( गणनया ) |
| ४६८४६ | सत्यनारायणकथा | | ९-१०, १६, १८-१९ । |
| ४६८४७ | शनैश्चरकथा | | १-८ + १ । |
| ४६८४८ | सत्यनारायणकथा | रामभद्रः | १-१३ । |
| ४६८४९ | ,, | शिवरामः | १-६ । |
| ४६८५० | लक्ष्मीचरित्रम् | | १-४ । |
| ४६८५१ | सत्यनारायणकथा | | १-९ । |
| ४६८५२ | प्रेमतरङ्गिणी | यदुनन्दनः | १-२९ । |
| ४६८५३ | भगीरथेर गङ्गानयनम् | | १-४, ६-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९·८×४·४ | २१ | ४४ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०·७ × ४·६ | ६ | ३७ | ” | ” | | ” | |
| १०·६×४·७ | १९ | ४६ | ” | ” | | पू० | औषधसङ्ग्रहश्च । |
| ११·६×६ | १२ | ४२ | ” | ” | १८७३ | ” | |
| १०×४·३ | ११ | २९ | ” | ” | १८८६ | ” | |
| १०·२×४·४ | ७ | ४७ | ” | ” | | अपू० | यन्त्रमन्त्रविधिश्च । |
| ९·४×४·६ | २२ | १३ | ” | ” | | ” | |
| ७·६×४·८ | १२ | २६ | ” | ” | | ” | साधुगीतञ्च । |
| ६×९ | २३ | १६ | ” | ” | १८७२ | ” | नरसीमेहतानूं मामेरुः, सुदामा-चरित्रम्, राज्ञः कर्णस्य दानम्, रासलीलावर्णनम्, भजनसङ्ग्रहः रामजन्मगाथा च । |
| ९·८×९·२ | १८ | २४ | ” | ” | १८२४ | ” | रामजन्मगाथा च । |
| ८·२×९·८ | ११ | २४ | ” | ” | | ” | |
| ८·७×७ | ११ | २१ | ” | ” | १८२९ | पू० | शिवस्तोत्रञ्च । |
| ९·९×४·८ | १७ | ३१ | ” | ” | | अपू० | गीतगोविन्दञ्च । |
| ८×३·९ | ६ | २२ | वङ्ग. | ” | | ” | |
| १२·८×३·७ | ६ | ३९ | ” | ” | | पू० | |
| १०·८×३·९ | ६ | ३२ | ” | ” | | ” | |
| १९·९×३·९ | १२ | ९९ | ” | ” | | अपू० | |
| ३·६×९ | १·९ | १६ | ” | ” | वङ्गाब्दः १२४० | पू० | |
| १०·१×३·८ | ७ | २७ | ” | ” | वङ्गाब्दः १२९४ | ” | |
| १२×४·२ | ११ | ९६ | ” | ” | | अपू० | १-२० तरङ्गाः । |
| १०·२×३·९ | ९ | ४३ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६८९४ | महाभारतकथा | | १, ८-९, २९-२६+१, ६६-७३ । |
| ४६८९५ | मङ्गलचण्डिकाकथा | | १-२ । |
| ४६८९६ | सत्यनारायणकथा | द्विजरामः | १-१९ । |
| ४६८९७ | श्रीमन्तोपाख्यानम् | मुकुन्दराम कविकङ्कणः | १०-१२ । |
| ४६८९८ | काशीवर्णना | | १-३ । |
| ४६८९९ | स्यमन्तकोपाख्यानम् | | ८-९, ११, १६ । |
| ४६८६० | चण्डीर पाँचाली | कविकङ्कणः | १०३-१०९ । |
| ४६८६१ | वनवर्णनम् | | १ । |
| ४६८६२ | वैद्यकसङ्ग्रहः | | २३-४०+१ । |
| ४६८६३ | काशीखण्डकथा | जयनारायणः | १-५, ७-२३, २५-२८, ३०-४०, ४३-४५, ४७-६३, १४६-१७४, १७६-२०४, २०७-२४६, २४९, २५१-२५४, २५६-२६४, २६६-२६७, २७०-२८१+२ । |
| ४६८६४ | दण्डलीला | | १-२, ४ । |
| ४६८६५ | महाभारतम् | | १-६, ८-१७ । |
| ४६८६६ | सत्यनारायणकथा | | १-१७, २१ । |
| ४६८६७ | चैतन्यचरितामृतम् | कृष्णदासः | १-८, १०-११ । |
| ४६८६८ | ,, | ,, | १-६५, ६७-७६, ७८-११९, १२१-१२८ । |
| ४६८६९ | ,, | ,, | १-१८० । |
| ४६८७० | वैष्णवपदावली | ज्ञानदासः | ५-८, ८, ८-१९, ११ । |
| ४६८७१ | प्रेमभक्तिचन्द्रिका | नरोत्तमदासः | १-१० । |
| ४६८७२ | चैतन्यचरितामृतम् | कृष्णदासः | १-७१ । |
| ४६८७३ | चैतन्यचरितामृतम् | ,, | १-१३६ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४·५×५ | ९ | २६ | वङ्ग | का. | | अपू० | वनपर्व। |
| १२·१×८·१ | २७ | २७ | ” | ” | | पू० | संस्कृते आगमोक्तनवग्रहमन्त्राश्च। |
| १४·५×६·६ | ७ | ५१ | ” | ” | वङ्गाब्दः १२४६ सालः | ” | |
| १३·५×४·९ | १३ | ४८ | ” | ” | | अपू० | चण्डीमङ्गलस्थम्। |
| १२·५×४ | ७ | ३६ | ” | ” | | पू० | |
| १०·८×३·६ | ७ | ३६ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·६×४·९ | १२ | ४३ | ” | ” | | ” | |
| १३·८×३·४ | ७ | ४८ | ” | ” | | पू० | |
| १४·२×४·६ | ८ | ५१ | ” | ” | | अपू० | |
| १४·६×६·३ | ११ | ६४ | ” | ” | | ” | |
| ८·६×४·१ | १२ | २८ | ” | ” | | ” | रूपगोस्वामिकृत-चाटुपुष्पाञ्जलिस्तोत्रं नामयुगाष्टकञ्च। |
| १३·८×४·७ | ११ | ४६ | ” | ” | | ” | |
| ९·१×४·३ | ७ | ३० | दे.ना. | ” | | ” | |
| ११·१×४·४ | १० | ४३ | वङ्ग | ” | | ” | मध्यखण्डः, १ परिच्छेदः। |
| ११×·४४ | १० | ३९ | ” | ” | | ” | अन्त्यखण्डः, १-२० परिच्छेदाः। |
| १×४·४ | ११ | ४५ | ” | ” | | पू० | मध्यखण्डः, १-२५ परिच्छेदाः। |
| ११·२×४·५ | १२ | ३९ | ” | ” | | अपू० | नरोत्तमदासचण्डीदासयोर्गीतानि च। |
| ११·१×४·४ | ७ | २८ | ” | ” | | पू० | |
| ११·१×४·२ | ९ | ४० | ” | ” | | ” | आदिखण्डः, १-१७ परिच्छेदाः। |
| १२·६×४·७ | १२ | ३७ | दे.ना. | ” | १८३० | ” | १-२० परिच्छेदाः। |

| | क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|---|
| | ४६८७४ | प्राणकृष्णौपधावली | प्राणकृष्णः | १-३९, ३९-११४, ११६-१४८। |
| | ४६८७५ | गोविन्दपदावली | गोविन्ददासः | १। |
| | ४६८७६ | सत्यनारायणकथा | | २-३, ९-१७। |
| | ४६८७७ | चैतन्यचरितामृतम् | कृष्णदासः | १-२९। |
| | ४६८७८ | " | " | १-११, १३-१२३। |
| | ४६८७९ | भागवतामृतम् | कविचन्द्रः | २-७। |
| | ४६८८० | मन्त्रसङ्ग्रहः | | १-४। |
| | ४६८८१ | लीलातत्त्वसङ्ग्रहः | | १-८। |
| | ४६८८२ | ज्यौतिषग्रन्थः | | १। |
| | ४६८८३ | सत्यनारायणकथा | | १-६। |
| | ४६८८४ | भगवद्गीताटीका | | २-४, ८, १०-२९+२। |
| | ४६८८५ | शाक्तवन्दना | कार्त्तिकचक्रवर्त्ती | १२। |
| | ४६८८६ | कालीवन्दना | | १-१०। |
| | ४६८८७ | सत्यनारायणपञ्चालिका | | १-३। |
| | ४६८८८ | " | | १-१९। |
| | ४६८८९ | भूतापसारणादिमन्त्राः | | १-१६। |
| | ४६८९० | ओङ्कारस्वरूपविचारः | | १-१५। |
| | ४६८९१ | हनुमच्चरित्रम् | | १२-१४, १६-१७, २०-२१। |
| | ४६८९२ | मनसामङ्गलम् | कृष्णकुमार-चक्रवर्त्ती | १-३७७, ३७९। |
| | ४६८९३ | महाभारतम् | | १-२२। |
| | ४६८९४ | " | | १-२४, २४-४६, १-१०, १-१३, १-१०। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०·६×४·९ | १० | ३९ | वङ्ग. | का. | र० का० श. १७४७ | पू०* | १-७ काण्डानि। |
| ११·२×४·२ | ८ | २९ | ,, | ,, | | ,, | |
| ८·६×४·४ | ९ | ३१ | दे.ना. | ,, | १९०९ फ.स.१२२९ | अपू० | |
| १३·३×९·१ | १० | ४८ | ,, | ,, | | ,, | |
| १२·९×९ | ९ | ४८ | ,, | ,, | र० का० श. १९३७ | ,, | |
| १०·२×३·४ | ६ | ३६ | वङ्ग. | ,, | | ,, | |
| १२·६×३·२ | १० | ५६ | ,, | ,, | | पू० | गर्भरक्षादिसम्बद्धः। |
| १०·५×४·६ | ८ | ४४ | ,, | ,, | | ,, | चैतन्यलीला च। |
| १२·३×२·४ | ७ | ८० | ,, | ,, | | अपू० | |
| १४·५×५·५ | ७ | ३४ | ,, | ,, | | ,, | शावरमन्त्राश्च। |
| ७·५×३·६ | ८ | २६ | ,, | ,, | | ,, | |
| १४·५×५ | १४ | ६० | ,, | ,, | | पू० | |
| ९·९ × ३·८ | ७ | ३९ | ,, | ,, | | ,, | चैतन्यादिवन्दनासहिता। |
| १०·८×३·७ | ८ | ४३ | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९ ३×२·१ | ४ | २४ | ,, | ,, | | पू० | |
| १४ ७×३·३ | ७ | ४८ | ,, | ,, | | ,, | |
| १०·९×४·२ | १३ | ९० | ,, | ,, | | अपू० | |
| ९·३×४·२ | ८ | २१ | दे.ना. | ,, | | ,, | प्रश्नविद्या। |
| १३·५×९·१ | १० | ४४ | वङ्ग. | ,, | वङ्गाब्दः १३१३ | पू०* | |
| १३·६×४·८ | ९ | ९० | ,, | ,, | | ,, | स्वर्गारोहणपर्व। |
| १३·६×९·१ | ९ | ३७ | ,, | ,, | वङ्गाब्दः १२१२ | ,, | नारी-गदा-सैन्य-सौतिकेतिपर्व-चतुष्टयम्। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|---|---|---|---|
| ४६८९६ | महाभारतम् | काशीरामदासः | १-१९ । |
| ४६८९६ | सत्यनारायणकथा | रामभद्रः | १-७ । |
| ४६८९७ | मनसामङ्गलम् | | १-२, ४-१८, २०-३४, ३६-५५, ५५-७०, ८-१६, ३०-२३, ३९-४५, ४८-४९, ५२-५४। |
| ४६८९८ | मङ्गलचण्डीकथा | | १-१४ । |
| ४६८९९ | शकुनावली | | १-११ । |
| ४६९०० | बृहस्पतिमतम् | | १-४ । |
| ४६९०१ | अमृतसागरः | प्रतापसिंहः | १-४०३, ४०३-४९० । |
| ४६९०२ | संवत्सरसाठी | | १-२८ । |
| ४६९०३ | द्वादशराशिस्थगुरुफलम् | | १-६ । |
| ४६९०४ | अमृतसागरः | प्रतापसिंहः सवाई | १-३७, १-४८२ । |
| ४६९०५ | ” | ” | १-३७, १-१०५, १०५-२१९, २१९-२३९, २४१-४९८ । |
| ४६९०६ | अमृतरसयोगः | | १-२२ । |
| ४६९०७ | अमृतसागरः | प्रतापसिंहः सवाई | १-२३ । |
| ४६९०८ | भैरवस्तुतिः | | १-४ । |
| ४६९०९ | सङ्क्रान्तिफलविचारः | | १-२ । |
| ४६९१० | कहानी | | १-७१ । |
| ४६९११ | काणपदम् | गोविन्ददासः | १-१२ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | भाषाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३·८×५·१ | १० | ५० | वङ्ग | का. | वङ्गाब्दः १२२३ | पू० | कर्णपर्व । |
| १३·६×३·८ | ७ | ४८ | ” | ” | वङ्गाब्दः १२६१ | ” | |
| १३·९×५·४ | १३ | ४५ | ” | ” | | अपू० | |
| १४×३·३ | ६ | ४३ | ” | ” | | पू० | |
| ९·१×५ | ९ | १८ | दे. ना. | ” | | ” | |
| ९·८×४·८ | ९ | ३८ | ” | ” | | अपू० | |
| १२·२×५·५ | ११ | ३६ | ” | ” | १९१२ | पू० | |
| ८·७×६·२ | ११ | १९ | ” | ” | १८७३ | ” | सं० १८०१-१९०० वर्षाणां फलानि । |
| ९·७×६·३ | १२ | २० | ” | ” | १८७५ | ” | |
| ११·७×५·१ | १० | ३६ | ” | ” | | ” | |
| १०·८×५·२ | १० | ३२ | ” | ” | | ”* | सूचीपत्रसहितः । |
| ८·९×४·३ | ८ | २८ | ” | ” | | ” | |
| ११·१×४·८ | ९ | ३१ | ” | ” | | अपू० | |
| ८·३×४·७ | ७ | १६ | ” | ” | | पू० | |
| ९·९×६·३ | १४ | ३६ | ” | ” | | ” | |
| ९·५×६ | ९ | २४ | ” | ” | | अपू० | नबाब आसफउद्दौलाराजसभायां प्रस्तुतमेकमाख्यानम् । |
| ८·४×४·५ | १० | २८ | ” | ” | १८२२ | पू० | |

# द्वादशभागोल्लिखितानां जैनग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका


अन्तर्गडसूत्रम् ( सटीकम् ) ४४३३२ ।
अमरसेनवटारसेनकथा ४४२६६ ।
अवसर्पिणीकालनिर्णयः ४४२८७ ।
आगमनामानि ४४३८६ ।
आचारदिनकरः ४४३६६ ।
आचाराङ्गसूत्रवृत्तिप्रदीपिका ४४३०० ।
आचाराङ्गसूत्रवृत्तिव्याख्या ४४३०० ।
आत्मबोधः ४४३८०, ४४३८१ ।
आदिनाथदेवनाटकम् ४४३७६ ।
आभाणशतकम् ४४३०८ ।
आवश्यकसूत्रटीका ४४२७७, ४४२७८ ।
इन्द्रियाणां प्राप्यकारित्वाप्राप्यकारित्वनिर्णयः ४४२७१ ।
उत्तराध्ययनसूत्रम् ४४२६७, ४४३०६, ४४३२१ ।
उत्तराध्ययनसूत्रटीका ४४३२८ ।
उपासकदशासूत्रम् ४४३९९ ।
उपासकदशासूत्रम् ( सटिप्पणम् ) ४४३९१, ४४३९६ ।
कथाकोशः ४४३३६, ४४३३७ ।
कर्मविपाकग्रन्थः ४४३२३, ४४३२८ ।
कल्पद्रुमकलिका ४४२९० ।
कल्पसूत्रम् ४४३१५, ४४३१६ ।
कल्पसूत्रव्याख्यानम् ४४३२५, ४४३३५ ।
कल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ( सवार्त्तिकम् ) ४४३४४ ।
कालिकाचार्यकथा ( सव्याख्या ) ४४३२२ ।
कुमारविहारशतकम् ४४३०४ ।
कुलकवृत्तिः ४४३४८ ।
क्षेत्रसमासप्रकरणम् ४४२८८ ।
गजस्वप्नविचारः ४४३१२ ।
गुरुनामावली ४४३९३ ।
गौतमकुलकवृत्तिः ४४३४७, ४४३४८ ।
चतुर्विंशतितीर्थङ्करभवनामानि ४४२६२ ।
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिः ४४३३८ ।
जिनपञ्जरस्तोत्रम् ४४२९६ ।
जिनपूजास्तवनादि ४४३६९ ।
जिनस्तुतिः ( सटीका ) ४४२८३ ।
जिनस्तुतिपदसंग्रहः ४४३८२ ।
जिनेन्द्रमहिम्नःस्तवः ( सटीकः ) ४४३२६ ।
जैनधर्मकथा ४४२७९ ।
जैनभूगोलग्रन्थविशेषः ४४३४९ ।
जैनेन्द्रव्याकरणम् ( सटीकम् ) ४४२७२ ।
ज्ञानसारः ( सटीकः ) ४४२८९ ।
ढालसागरः ४४३४९ ।
तत्त्वदीपिका ४४३७२ ।
तत्त्वार्थाधिगमसूत्रम् ( सटिप्पणम् ) ४४२७० ।
तन्त्रमन्त्रादिसङ्ग्रहः ४४३६३ ।
तीनचोइसीनांव ४४३८४ ।
त्रीसप्रकारीपूजा ४४३९३ ।
त्रैवर्णिकाचारः ४४३६७ ।
त्रैवेद्यगोष्ठिका ४४३९१ ।

दशदृष्टान्तकथाः ४४३३० ।
दशविकालिकसूत्रम् ( सटीकम् ) ४४२६८ ।
दशाश्रुतस्कन्धः ४४२९४ ।
दीक्षापञ्चाशकः ( सटीकः ) ४४३८७ ।
देवरचना ४४३९४ ।
धर्ममञ्जूषा ४४३४७ ।
धर्मरत्नाकरः ४४२७६ ।
नन्दीसूत्रम् ( सटिप्पणम् ) ४४३३१ ।
नन्द्यध्ययनटीका ४४३३९ ।
नयचक्रम् ४४३६८ ।
नलदवदन्ती चौपाई ४४२८१ ।
नवतत्त्वम् ४४३२७ ।
नवतत्त्वसूत्रम् ( सटीकम् ) ४४३२९ ।
नवतत्त्वसूत्रम् ( सविवरणम् ) ४४३८३ ।
निरयावलिका ( सटीका ) ४४३४१ ।
न्यायदीपिका ४४३२४, ४४३६९ ।
पञ्चमस्तवनम् ४४३६० ।
पट्टावली ४४२८४, ४४३८८, ४४३९२ ।
पट्टावलीप्रबन्धः ४४३९२ ।
पदार्थरत्नमञ्जूषा ४४३१८ ।
परमागमसमयसारः ४४२९२ ।
परमात्मप्रकाशवृत्तिः ४४३७३ ।
परिक्रमणसूत्रादयः ४४२६८ ।
पाञ्चमिरोतवनम् ४४३६० ।
पार्श्वनाथस्तवनम् ४४३९० ।
प्रकरणसङ्ग्रहः ४४३९२ ।
प्रमाणनयतत्त्वालङ्कारः ( सटीकः ) ४४२७४ ।
प्रमाणनयतत्त्वालोकालङ्कारः ४४२६९ ।
प्रमेयकमलमार्त्तण्डः ४४३४६ ।
प्रवचनसारः ( सवृत्तिकः ) ४४३७२ ।
भगवतीसूत्रम् ( सटीकम् ) ४४२९८ ।
मध्यक्षेत्रसमासः ( सटिप्पणः ) ४४२९७ ।
मलयसुन्दरीमहाबलचरित्रसम्बन्धविनोदः ४४२८० ।
महावीरचरितम् ४४३७९ ।
महावीरजी को पारनो ४४३८५ ।
महावृत्तिः ४४२७२ ।
महीपालकथा ( सव्याख्या ) ४४२८६ ।
योगशास्त्रम् ( सटीकम् ) ४४३०० ।
रत्नपालरासः ४४३४० ।
रत्नाकरावतारिका ४४२७४ ।
रत्नावतारिकापञ्जिका ४४३०७ ।
लघुक्षेत्रसमासविवरणम् ( सटिप्पणम् ) ४४३९७ ।
लघुक्षेत्रसमासः ( सटीकः ) ४४३६२ ।
वर्द्धमानविद्या ४४२६४ ।
वसुधारा महाविद्या ४४३०३ ।
विवेकविलासः ४४३०१, ४४३७४ ।
वृषभस्वप्नविचारः ४४३१३ ।
शान्तिनाथचरितम् ४४२८२, ४४३६१, ४४३७५ ।
शृङ्गारवैराग्यमुक्तावली ४४३१७ ।
श्रावकाचारः ४४३११ ।
श्रीपालरासः ४४२९३, ४४३१९ ।
श्रीपालनरेश्वरकथा ४४२६९ ।

श्रीसिद्धचक्रमाहात्म्यम् ४४२६९ ।

श्रेणिकराजकथा ४४३०९, ४४३१० ।

षट्त्रिंशदध्ययनदीपिका ४४३२० ।

षडशीतिः ४४३२३ ।

षडशीतिका ४४३२८ ।

षष्टिशतबालावबोधः ४४३४२ ।

षोडशीसमाचारी ४४२७३ ।

संघयणसूत्रम् ४४३४३ ।

संघयणी ( सटिप्पणा ) ४४३३४ ।

सन्देशराशवृत्तिः ४४२८९ ।

समवायटीका ४४३९१ ।

समवायाङ्गवृत्तिका ४४३९० ।

सम्यक्त्वकौमुदी ४४३९८, ४४३६९

सामयिकविधिः ४४३३३ ।

सिंहस्वप्नविचारः ४४३१४ ।

सिन्दूरप्रकरणम् ४४२६३ ।

सिन्दूरप्रकरणम् ४४२९६ ।

सिन्दूरप्रकरणम् ( सटीकम् ) ४४२९१ ।

सूर्य्यप्रज्ञप्तिटीका ४४३८९ ।

स्तवादिसङ्ग्रहः ४४३६४ ।

स्थविरावलीचरितमहाकाव्यम् ४४३७८ ।

स्थविरावलीव्याख्या ४४३९४ ।

स्याद्वादमञ्जरी ४४२७९, ४४३७०। ४४३७१, ४४३७७ ।

स्याद्वादरत्नाकरटीकाटीका ४४३०७ ।

स्याद्वादवृत्तिः ४४२७९ ।

स्वोपज्ञलिङ्गानुशासनविवरणम् ४४२९९, ४४३०२ ।

# द्वादशभागोल्लिखितानां भक्तिग्रन्थसङ्ग्रहात्मकग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका


भगवद्भक्तिविमर्शः ४४४११ ।

भगवद्भक्तिविवेकः ४४३९७ ।

भक्तिग्रन्थविशेषटीका ४४४०२ ।

भक्तिचन्द्रिका ४४३९६, ४४४००, ४४४०९, ४४४१२ ।

भक्तिमीमांसा ४४४०७, ४४४११ ।

भक्तिमीमांसावृत्तिः ४४४१३ ।

भक्तिरत्नम् ४४४०१, ४४४१५ ।

भक्तिरहस्यम् ४४४१४ ।

भक्तिसूत्रम् ४४४०७ ।

भक्तिसूत्रम् ( सटीकम् ) ४४४१२ ।

भक्तिसूत्रव्याख्या ४४४०० ।

भक्तिविमर्शः ४४३९९ ।

शतसूत्री ( सभाष्या ) ४४४०४, ४४४०६ ।

शाण्डिल्यशतसूत्रीयभाष्यम् ४४४०३ ।

शाण्डिल्यशतसूत्रीयाभिनवभाष्यम् ४४४०८, ४४४१६ ।

शाण्डिल्यसूत्रम् ( सटीकम् ) ४४३९६, ४४४१२ ।

शाण्डिल्यसूत्रम् ( सवृत्तिकम् ) ४४४०६ ।

शाण्डिल्यसूत्रम् ( सव्याख्यम् ) ४४४०९ ।

शाण्डिल्यसूत्रप्रवचनम् ४४४१० ।

शाण्डिल्यसूत्रभाष्यम् ४४३९८ ।

शाण्डिल्यसूत्रवृत्तिः ४४३९६, ४४४१२ ।

# द्वादशभागोल्लिखितानां सम्प्रदायग्रन्थसंग्रहात्मकग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका


अजापालवाक्यम् ४४६७४ ।

अणुमध्वविजयः ( सटीकः ) ४४५८६ ।

अधिकारसङ्ग्रहः ४४५२७ ।

अधिकारसङ्ग्रहव्याख्या ४४५८० ।

अनन्तवाक्यम् ४४६७४ ।

अनेकार्थसङ्ग्रहः ४४७२४ ।

अन्तःकरणप्रबोधः ४४६६४, ४४६८३, ४४७१२ ।

अन्तःकरणप्रबोधः (सविवृतिकः) ४४५८१, ४४५९२ ।

अन्तःकरणप्रबोधविवरणम् ४४५४४, ४४५४५ ।

अन्तःकरणप्रबोधविवृतिः ४४५९१ ।

अन्तःकरणबोधः ४४५५७ ।

अभयप्रदानसारः ४४५४७ ।

अभययात्रातत्त्वसारः ४४६७४ ।

अमररामायणम् ४४७१३ ।

अमृतप्रयोगः ४४६७४ ।

अमृतबिन्दुः ४४७४४ ।

अमृतवाक्यम् ४४६७४ ।

अर्चिरादिमार्गवैभवम् ४४५७४, ४४५८८ ।

अर्थपञ्चकम् ४४७५३ ।

अवधूतविद्या ४४६७२ ।

अविधिकैङ्कर्यविधिः ४४७०४ ।

अष्टश्लोकीटीका ४४४३७ ।

अष्टादशरहस्यम् ४४७३६ ।

अष्टादशाध्यायसुबोधिनीयोजना ४४७२२ ।

अष्टाङ्गमुद्राष्टकम् ४४६७४ ।

अष्टोत्तरशतनामावलिः ४४६६४ ।

असङ्गवाक्यम् ४४६७४ ।

आचार्यचरित्रचिन्तामणिः ४४४८९ ।

आचार्यवचनामृतविवरणम् ४४५५९ ।

आचार्यसिद्धान्तवाङ्मालाप्रकाशः ४४७०७ ।

आचार्याष्टोत्तरशतनामावलिः ४४६६४ ।

आत्मनिवेदनविचारः ४४५९२ ।

आत्मबोधः ४४६७४ (क) ४४६७४ (ख) ।

आदिनाथवाक्यम् ४४६७४ ।

आनन्दालापः ४४६३६ ।

आर्याः ४४६६४ ।

आवेशांशसाक्षादवतारक्रमः ४४७०१ ।

आसनादिविचारः ४४६७४ ।

उत्सवावली ४४५०१ ।

उदयनाथवाक्यम् ४४६७४ ।

उद्धारनाथवाक्यम् ४४६७४ ।

उपोद्घातनिबन्धः ४४५७६ ।

उभययात्रा ४४६७४ ।

कन्थडीबोधः ४४६७४ ।

कवित्तसङ्ग्रहः ४४७२४ ।

कवीन्द्रकल्पद्रुमः ४४५१२ ।

कान्तिमाला ४४४९९, ४४४६२, ४४४९०।
कापालिकसम्प्रदायग्रन्थसङ्ग्रहः ४४६७४।
कायाबोधः ४४६७४।
काशीतत्त्वविचारः ४४७४९।
काशीमुक्तिप्रकाशनम् ४४७४८।
केशवनामावली ४४७१२।
कैवल्यदीपिका ४४४६८, ४४४८७, ४४९०९, ४४६३९।
कृतिकल्पलता ४४४४१।
कृष्णप्रेमामृतम् ४४६६४क, ४४६६४ख, ४४७१२।
कृष्णभक्तिसुधारसः ४४४७९।
कृष्णयुगलप्रकाशः ४४६४४।
कृष्णवर्णस्तवः ४४६०४।
कृष्णसेवाह्निकम् ४४४७२।
कृष्णामृतमहार्णवः (सटीकः) ४४९२९।
कृष्णाश्रयस्तोत्रम् ४४६६४, ४४६८३, ४४७१२।
गणेशोत्कर्षचन्द्रिका ४४७३२।
गद्यत्रयी (सव्याख्या) ४४७१६।
गायत्र्यर्थः ४४४८३।
गीतसङ्ग्रहः ४४९९७।
गुणरत्नकोशः ४४८३८।
गुप्तरसः ४४९९७।
गुप्तरसः (सविवृतिकः) ४४६२९।
गुप्तरसविवृतिः ४४६२६।
गुरुपरम्परा ४४७३१।
गुर्वादिपदार्थनिर्वचनम् ४४६२७।
गोकुलाष्टकम् ४४६६४क, ४४६६४ख, ४४७२४।
गोकुलेशलीलासुधासिन्धुः ४४४८२।
गोपालतापिनी ४४६७१।
गोपालत्रैलोक्यविजयपञ्जरम् ४४६७८।
गोपालस्तवराजः ४४६६४।
गोपालाष्टकम् ४४६६४।
गोपीजनवल्लभाष्टकम् ४४६६४।
गोरक्षकुण्डली ४४६७४।
गोरक्षगणेशगोष्ठी ४४६७४।
गोरक्षनाथजयस्तोत्रम् ४४६७४।
गोरक्षनाथलक्ष्मणज्ञानगोष्ठी ४४६७४।
गोस्वामिकुलयशोवर्णनम् ४४६६८।
गौरगणोद्देशदीपिका ४४४३२।
ग्रन्थविशेषटीका ४४४९३।
घोडाचोलीवाक्यम् ४४६७४।
चणकरनाथवाक्यम् ४४६७४।
चतुःश्लोकी ४४९९७क, ४४९९७ख, ४४६६४, ४४६८३, ४४७११, ४४७२४।
चतुःश्लोकी (सटीका) ४४६४७, ४४६७६, ४४६७९।
चतुःश्लोकीभागवतम् ४४७१२, ४४७२४।
चतुःश्लोकीव्याख्या ४४४३४।
चतुरङ्गीवाक्यम् ४४६७४।
चतुर्विंशतिसिद्धिलक्षणानि ४४६७४।
चरित्रचिन्तामणिः ४४९७०।
चैतन्यचन्द्रामृतम् (सटीकम्) ४४६९८।
चैतन्यचरितामृतम् ४४९६२।
छुरिकामन्त्रः ४४६७४।

जलन्धरनाथस्तोत्रम् ४४६७४क, ४४६७४ख ।
जलभेदः ४४५५७, ४४६६४, ४४७०९ ।
जलभेदः ( सटीकः ) ४४७०९ ।
जलभेदटीका ४४६२४ ।
जलभेदविवृतिः ४४५४६ ।
जिज्ञासापञ्चकम् ४४७१३ ।
ज्ञानतिलकम् ४४६७४, ४४७५० ।
ज्ञानदीपबोधः ४४६७४ ।
ज्ञानमाला ४४६७४ ।
तत्त्वदीपः ४४५८९ ।
तत्त्वदीपः ( सटीकः ) ४४५९४ ।
तत्त्वदीपिका ४४७०२ ।
तत्त्वत्रयम् ४४७४३ ।
त्रिविधनामावलिः ४४६६४ ।
त्रिविधलीला ४४५५९ ।
दत्तनाथवाक्यम् ४४६७४ ।
दयाबोधः ४४६७४ ।
दशनामाभिधानम् ४४७३४ ।
दशाक्षरमन्त्रमाहात्म्यम् ४४६७८ ।
दिनचर्याव्याख्या ४४५७९ ।
दीननाथवाक्यम् ४४६७४ ।
दुर्गसङ्गमनी ४४४३९ ।
दुर्जनशङ्कानिराकरणप्रकारः ४४७०० ।
देवलवाक्यम् ४४६७४ ।
द्वादशनाथनाम ४४६७४ ।
धूर्मनाथवाक्यम् ४४६७४ ।
नवनाथस्तोत्रम् ४४६७४ ।
नवनाथस्वरूपम् ४४६७४ ।
नवधाभक्तिः ( सटीका ) ४४६३० ।
नवरत्नम् ४४६०९, ४४६६४, ४४६७८, ४४६८३ ।
नवरत्नम् ( सटिप्पणम् ) ४४४६६ ।
नवरत्नप्रकाशः ४४६६७, ४४७१० ।
नवरत्नप्रकाशटिप्पणम् ४४४९७ ।
नादमन्त्रः ४४६७४ ।
नामचन्द्रिका ४४५२०, ४४५२८ ।
नामदीपिका ४४५३१ ।
नाममालाकोशः ४४७२४ ।
नारायणधर्मसारसङ्ग्रहः ४४५३६, ४४५६६ ।
नारायणसारसङ्ग्रहः ४४५६५ ।
नारायणोपनिषत्सारः ४४५३६ ।
नित्यपदम् ४४७२४ ।
निम्बार्कदिव्यकवचम् ४४६०४ ।
निम्बार्कसहस्रनाम ४४६०४ ।
निम्बार्कसिद्धान्तः ४४७०८ ।
निम्बार्कस्तवराजः ४४६०४ ।
निरञ्जनपुराणम् ४४६७४ ।
निरोधलक्षणम् ४४४५७, ४४५५७, ४४६४९, ४४६६४, ४४७०९ ।
निरोधलक्षणम् ( सविवृतिकम् ) ४४६९९ ।
निरोधलक्षणविवरणम् ४४६०५, ४४६९८ ।
निरोधव्याख्या ४४४४७ ।
निर्णयार्णवः ४४७२२ ।

निर्वाणवाक्यम् ४४६७४ ।
नृपबोधः ४४६७४ ।
नैवात्मनः प्रभुरितिश्लोकविवरणम् ४४६३२ ।
न्यासदशकम् ( सव्याख्यम् ) ४४६९० ।
न्यासविंशतिः ४४६४३ ।
पञ्चयात्रायोगः ४४६७४ ।
पञ्चाग्निः ४४६७४ ।
पण्डितजनमनश्चमत्कारः ४४५९० ।
पत्रावलम्बनम् ४४६६६, ४४७२८, ४४७२९ ।
पत्रावलम्बनविवरणम् ४४६२८ ।
पद्धतिप्रदीपः ४४४२७ ।
परमरहस्यम् ४४४९४ ।
परिवृढाष्टकम् ४४६६४ ।
परमार्थसारः ( सटीकः ) ४४४६० ।
परमार्थसारसङ्ग्रहविवृतिः ४४४६० ।
पाखण्डदलनम् ४४५०८ ।
पुरुषप्रबोधः ४४५६८ ।
पुरुषार्थरत्नाकरः ४४६६२ ।
पुरुषोत्तमवाक्यम् ४४६७८ ।
पुरुषोत्तमसहस्रनाम ४४७०९ ।
पुष्टिप्रवाहमर्यादा ४४५९७, ४४६६४, ४४६८१, ४४७०९ ।
पुष्टिप्रवाहमर्यादा ( सविवरणा ) ४४६१८, ४४६८२, ४४६८५ ।
पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेदः ४४७१७ ।
पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेदः ( सविवरणः ) ४४६०८ ।
पुष्टिप्रवाहमर्यादाविवरणम् ४४६८४ ।
पुष्टिमर्यादाभेदः ४४६८३ ।
पुष्टिमार्गमर्मनिरूपणम् ४४५०३ ।
पुष्टिमार्गलक्षणम् ४४६८६ ।
पुष्टिमार्गीयमोक्षनिरूपणम् ४४५१८, ४४५१९ ।
पुष्टिसञ्जीवनी ४४६९२ ।
पूर्वाचार्यमङ्गलानुशासनम् ४४७३३ ।
पृथ्वीनाथवाक्यम् ४४६७४ ।
पृथ्वीबालानां ग्रन्थः ४४६७४ ।
प्रकाशः ४४४२०, ४४४३१, ४४४६६, ४४६१४, ४४६७९ ।
प्रणवव्याख्या ४४५७५ ।
प्रपत्तिरत्नम् ४४५३७ ।
प्रपन्नपारिजातः ४४७४५ ।
प्रपन्नरत्नमालिका ४४६३१, ४४६४० ।
प्रपन्नामृतम् ४४६६९ ।
प्रबोधः ४४५५७ ।
प्रबोधसुधाकरः ४४६५४ ।
प्रमेयरत्नार्णवः ४४७२२ ।
प्रमेयरत्नावली ( सटीका ) ४४७१९ ।
प्रमेयवनमालिका ४४५८६ ।
प्रस्तावरत्नमाला ४४४६५ ।
प्राणशृङ्खला ४४६७४ ।
प्रेमपत्तनम् ( सटीकम् ) ४४४७५ ।
प्रेमरसायनम ४४५११ ।
प्रेमामृतम् ( सटीकम् ) ४४४८४ ।
प्रेमामृततरङ्गिणी ४४६५७ ।

प्रेमामृतभाष्यम् ४४७९१ ।

बालप्रबोधः ४४६४६, ४४७०६ ।

बालबोधः ४४९२४, ४४९९७, ४४६६४, ४४६८३ ।

बालबोधः ( सटीकः ) ४४९२९, ४४६१४ ।

बालबोधप्रकाशः ४४९२९ ।

बालबोधविवृतिः ४४९०० ।

बुद्धिविलासः ४४७२१ ।

बृहद्ब्रह्मसंहिता ४४६९९ ।

ब्रह्मज्ञानम् ४४६७४क ४४६७४ख ।

ब्रह्मबोधनिधानम् ४४६७४ ।

ब्रह्मवादः ४४६२२ ।

भगवन्नामकौमुदी ४४९६३, ४४९७३ ।

भगवन्नामकौमुदीटीका ४४४२०, ४४४३१ ।

भगवन्नामकौमुदीप्रकाशः ४४९६१, ४४६११, ४४६१२ ।

भगवन्नाममाहात्म्यसङ्ग्रहः ४४९६४ ।

भगवत्प्रतिमापूजनवादः ४४६९० ।

भगवद्भक्तिचन्द्रिकोल्लासः ४४४२९ ।

भगवद्भक्तिरत्नावली ४४४८९ ।

भगवद्भक्तिविलासः ४४४१८ ।

भगवदेकशरणताप्रकाशिका ४४९०९ ।

भक्तभूषणसन्दर्भः ४४९६० ।

भक्तितरङ्गिणी ४४९३९ ।

भक्तिप्रभा ( सटीका ) ४४४९९ ।

भक्तिभावप्रकाशः ४४९६३ ।

भक्तिमार्गमर्यादा ४४९९३ ।

भक्तिरत्नावली ४४४२३, ४४४४२–४४४४४, ४४४४८, ४४४६१, ४४९०६, ४४९१६, ४४६२२, ४४९२३, ४४९२६, ४४९८९, ४४६०६, ४४६३१ ।

भक्तिरत्नावली (सटीका) ४४४२६, ४४४३०, ४४४९१, ४४४६२, ४४४९०, ४४४९६, ४४९१४ ।

भक्तिरसतरङ्गिणी ४४४७१ ।

भक्तिरसामृतसिन्धुः ४४४४६ ।

भक्तिरसामृतसिन्धुः ( सटीकः ) ४४४७६, ४४४९१, ४४६६० ।

भक्तिरसामृतटीका ४४४३९ ।

भक्तिरसायनम् ४४४४९ — ४४४९१, ४४६२९, ४४६३३, ४४७२३ ।

भक्तिरहस्यम् ४४९१० ।

भक्तिवर्द्धिनी ४४९९७, ४४६८३, ४४७०९, ४४७१२ ।

भक्तिवर्द्धिनी ( सविवृतिका ) ४४४३८ ।

भक्तिवर्द्धिनीविवृतिः ४४४२४, ४४४९२, ४४९९६, ४४६६९, ४४६७९ ।

भक्तिवर्द्धिनीव्याख्या ४४४२४ ।

भक्तिवैशिष्ट्यनिरूपणम् ४४५३९ ।

भक्तिसागरः ४४४३६ ।

भक्तिसिद्धान्तरहस्यम् ( सविवृतिकम् ) ४४६७१ ।

भक्तिसिद्धान्तविवृतिः ४४९४२, ४४६२३ ।

भक्तिहंसः ४४९४०, ४४९४१, ४४९९७ ।

भक्तिहंसविवृतिः ४४९३८, ४४९३९ ।

भक्तिहेतुः ४४४९९ ।

भक्तिहेतुनिर्णयः ४४९९७ ।

भस्मगायत्री ४४६७४ ।

भागवतम् ४४७०६।
भागवतसन्दर्भः ४४६८०।
भारतसावित्री ४४७२४।
भारद्वाजसंहिता (सटीका) ४४६५६।
भावप्रकाशिका ४४६४८।
भावदीपिका ४४६७७।
भावप्रदर्शिनी ४४५८०।
भावैरङ्कुरितमितिपद्यव्याख्यानम् ४४५२१।
भुजङ्गप्रयाताष्टकम् ४४५५७।
भूगोलपुराणम् ४४६७४।
भूचरपुराणम् ४४६७४।
मधुराष्टकम् ४४६६४, ४४७२४।
मध्वमन्त्रार्थमञ्जरी ४४५८७।
मध्वमुखभङ्गव्याख्यानम् ४४६७३।
ममोत्तमेतिपद्यटिप्पणी ४४५१८।
ममोत्तमेतिपद्यव्याख्यानम् ४४५१७, ४४५१९,
महादेवमत्स्येन्द्रसंवादः ४४६७४।
महायोगवाक्यम् ४४६७४।
महावैराग्यवाक्यम् ४४६७४।
महाशान्तवाक्यम् ४४६७४।
माधुर्यकादम्बिनी ४४४१७, ४४४७८, ४४५०७, ४४६३२।
मालीपाववाक्यम् ४४६७४।
मुक्ताफलम् ४४४५८।
मुक्ताफलम् (सटीकम्) ४४४६८, ४४५०४, ४४५०५, ४४७१४।
मुक्ताफलसङ्ग्रहः (सटीकः) ४४४८७।
मुक्तितारतम्यनिर्णयः ४४५५७।
मुक्तिमञ्जरी (सटीका) ४४७१८।
मुक्तिसरलवाक्यम् ४४६७४।
मूलधुन्धुकारः ४४६७४।
मोक्षलक्ष्मीविलासः ४४४६४।
यतीन्द्रमतदीपिका ४४७४६।
यमुनाचतुःश्लोकी ४४६०४।
यमुनाष्टपदी ४४५५७
यामुनीयचतुःश्लोकी ४४७०४।
योगिपथनामलक्षणावलिः ४४६७३।
रतिप्रादुर्भावस्तोत्रम् ४४५०७।
रससर्वस्वम् ४४५५७।
रसिकास्वादिनी ४४६५८।
रहस्यत्रयसारार्थः ४४६६३।
रहोरहस्यम् ४४६७४।
राधाकृष्णलीलापरिकरादिवर्णनम् ४४६६१।
रामकैवल्यकल्पलता ४४५६९।
रामसेवामुक्तसारः ४४५१३।
रामात्मैक्यप्रकाशिका ४४५५१।
रामानुजपरम्परावन्दनम् ४४५५४।
रामानुजीयपरम्पराविमर्शः ४४६७०।
रामानुजीयमतखण्डनम् ४४६४५।
रामाभरणम् ४४४२८।
रासपञ्चाध्यायी ४४६६४।
रोमावली ४४६७४।

लक्ष्मणानन्तशरीरम् ४४६७४ ।

लघुभागवतामृतम् ४४४८८ ।

वरवरमुनिस्तोत्रम् ४४७३३ ।

वल्लभग्रन्थावली ४४६६४, ४४६८३, ४४७०९, ४४७२४ ।

वल्लभसम्प्रदायग्रन्थविशेषः ४४५३४ ।

वल्लभसम्प्रदायग्रन्थसङ्ग्रहः ४४४५७, ४४७१२ ।

वल्लभाष्टकम् ४४६६४, ४४७१२, ४४७२४ ।

वार्तामाला ४४५७२ ।

विज्ञप्तिः ४४५५७क, ४४५५७ख, ४४५५७ग ।

विट्ठलनाथपत्रम् ४४५५७ ।

विट्ठलेशाष्टोत्तरशतनामावली ४४६६४ ।

विवृतिप्रकाशः ४४६९६

विवेकत्रयम् ४४६४१, ४४६४२ ।

विवेकत्रयरत्नम् ४४५९८ ।

विवेकधैर्य्याश्रयः ४४४६७, ४४५३३, ४४६२०, ४४६३४, ४४६८३, ४४७१२ ।

विवेकधैर्य्याश्रयः (सविवृतिकः) ४४४५२, ४४४५३, ४४४५४, ४४५८२ ।

विवेकधैर्याश्रयपरीक्षणम् ४४५३३ ।

विवेकधैर्याश्रयविवृतिः ४४६२०, ४४६६७ ।

विवेकधैर्याश्रयवृत्तिः ४४५३३ ।

विवेकवृत्तान्तम् ४४६७४ ।

विष्णुतत्त्वनिर्णयः ४४६०१ ।

विष्णुतत्त्वनिर्णयटीकाविवरणम् ४४५९३ ।

विष्णुतत्त्वप्रकाशः ४४६०२ ।

विष्णुभक्तिचन्द्रोदयः ४४४७७, ४४५१५ ।

विष्णुभक्तिसुधोद्धारः ( सटीकः ) ४४४८६ ।

विष्णुशतनामावलिः ४४७२४ ।

वैराटपुराणम् ४४६७४ ।

वैष्णवरहस्यम् ४४७१७ ।

वैष्णवसंहिता ४४४७३ ।

वैष्णवसारसङ्ग्रहः ४४२०२ ।

वैष्णवसिद्धान्तः ४४४६९ ।

वैष्णवसिद्धान्तवैजयन्ती ४४४७० ।

वैष्णवामृतसारिणी ४४६३८ ।

वैष्णवामृतसारोद्धारः ४४६३७ ।

व्याससूत्रार्थगाम्युपोद्घातः ४४७१९ ।

शङ्खचक्रादिधारणमाहात्म्यम् ४४५६६ ।

शरभपत्रम् ४४७३४ ।

शिक्षापत्रम् ( सटीकम् ) ४४६५१ ।

शिवतत्त्वविवेकः ४४५७७, ४४५७८, ४४५८३, ४४५८४ ।

शिवमुक्तिप्रबोधिनी ४४४२१ ।

शिवोत्कर्षत्वनिर्णयः ४४४३२ ।

शुकहंसवाक्यम् ४४६७४ ।

शृङ्गाररसमण्डनम् ४४५५७ ।

शैवमतव्याख्यानम् ४४५७१ ।

शैवसुधाकरः ४४७३५ ।

श्रीनिवासाचार्यनिम्बादित्याचार्यसंवादः ४४७४० ।

श्रीशकल्पतरुक्रीडाभक्तिरसायनम् ४४४५६ ।

श्रुतिरहस्यम् ४४२९५ ।

श्रुत्यर्थानन्दसन्दोहः ४४५४८ ।

षट्पदी ( सविवृतिका ) ४४६१९ ।

षडक्षरी ४४६७४।

षडङ्गदेवता ४४६७४।

षड्यतिस्तोत्रम् ४४६७४।

सत्ययुगमनसागायत्री ४४६७४।

सनेहलीला ४४७२४।

संन्यासनिर्णयः ४४५९७, ४४६६४, ४४७०९, ४४७१२, ४४७३१।

संन्यासनिर्णयविवरणम् ४४५९९।

सप्तपदीविवृतिः ४४६००।

सप्तश्लोकी ४४६६४।

सप्तश्लोकी ( सविवृतिः ) ४४६१९।

सप्तश्लोकीविवृतिः ४४६२१।

सप्तश्लोकीव्याख्या ४४६१६।

सप्तश्लोकीगीता ४४७२४।

सफलप्रवृत्तिनिर्णयः ४४४२९।

सफलश्रमनिर्णयः ४४४२९।

समर्पणगद्यार्थः ४४७२७, ४४७४२।

सम्प्रदायग्रन्थविशेषः ( सटीकः ) ४४५९८।

सम्प्रदायप्रदीपः ४४७२९, ४४७४७।

सर्वज्ञानम् ४४६७४।

सर्वलिङ्गसंन्यासः ४४७४१।

सर्वसिद्धान्तसङ्ग्रहः ४४५२४।

सर्वसिद्धान्तसङ्ग्रहः ( सटीकः ) ४४५२९।

सर्वोत्तमनामावलिः ४४६६४।

सर्वोत्तमस्तोत्रम् ४४४९७, ४४६६४, ४४७०९

सहस्रनाम ४४६६४।

साधनदीपिका ४४५६७।

सारसङ्ग्रहः ४४७२०।

सिद्धमुक्ताफलम् ४४६७४।

सिद्धान्तभास्करः ४४६७४।

सिद्धान्तमुक्तावली ४४५३०, ४४५५७, ४४६४७, ४४६६४, ४४६८३, ४४७०९, ४४७१२।

सिद्धान्तमुक्तावली ( सटीका ) ४४५४९, ४४५९७, ४४६२३।

सिद्धान्तमुक्तावलीटिप्पणी ४४५९६।

सिद्धान्तमुक्तावलीयोजना ४४७२२।

सिद्धान्तरहस्यम् ४४५९७, ४४६६४, ४४६८३, ४४६८८, ४४७१२, ४४७२४।

सिद्धान्तरहस्यम् ( सटिप्पणम् ) ४४४४९।

सिद्धान्तरहस्यम ( सविवृतिकम् ) ४४५९६।

सिद्धान्तरहस्यटीका ४४६८९।

सिद्धान्तरहस्यविवृतिः ४४६१०, ४४६८७।

सिद्धान्तरत्नभाष्यपीठकम् ( सव्याख्यम् ) ४४४७४।

सिद्धान्तवाक्यम् ४४६७४।

सिद्धान्तसङ्ग्रहः ४४७३०।

सुदर्शनमीमांसा ४४६०३।

सुलोचना ४४४९९।

सुसिद्धान्तोत्तमः ( सटीकः ) ४४४१९।

सेवाकौमुदी ४४४३३, ४४७२२।

सेवाप्रकरणम् ( सटीकम् ) ४४७०९।

सेवाफलम् ४४४९७, ४४६६४, ४४७०९, ४४७१२।

सेवाफलम् ( सटीकम् ) ४४६१३, ४४६९१, ४४६९६।

सेवाफलम् ( सविवरणम् ) ४४६९२।

सेवाफलम् ( सविवृतिकम् ) ४४६१७ ।
सेवाफलविवृतिः ४४६५७, ४४६९३, ४४६९७ ।
सेवाफलविवृतिटिप्पणम् ४४६९४ ।
सेवाफलविवृतिप्रकाशः ४४६९५ ।
सेवाफलसूक्ष्मटीका ४४६९६ ।
सेवाविचारशतकम् ( सटीकम् ) ४४६५० ।
सेव्यस्वरूपतारतम्यनिर्णयः ४४६५३ ।
स्फुरत्कृष्णप्रेमामृतम् ४४५५७ ।
स्वाचार्यकारिकाशयविवरणम् ४४७०३ ।
स्वात्मसंविदुपदेशः ४४७५३ ।
हरतालीवाक्यम् ४४६७४ ।
हरिनाममालिका ४४४३९ ।
हरिपदचिह्नवर्णनम् ४४४८१ ।
हरिभक्तलक्षणम् ४४४४० ।
हरिभक्तिकल्पलतिका ४४४६३ ।
हरिभक्तिरसायनम् ४४४९९ ।
हरिभक्तिविलासः ४४४१८ ।
हरिभक्तिसमागमः ४४४८० ।
हरिभक्तिसुधोदयः ४४४०८, ४४६३४ ।
हरिव्यासाचार्याष्टकम् ४४६०४ ।

# द्वादशभागोल्लिखितानामायुर्वेदग्रन्थसङ्ग्रहात्मकग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका ।


अजीर्णमञ्जरी ४४८१३, ४४८८३, ४५०९०, ४५१९७, ४५३७६ ।

अजीर्णमञ्जरी ( सटिप्पणा ) ४५२०७ ।

अजीर्णरसमञ्जरी ४५१२२ ।

अजीर्णामृतमञ्जरी ( सटीका ) ४५३८४ ।

अजीर्णौषधिः ४५२८४ ।

अञ्जनम् ४५३४१, ४५३४२, ४५३९१ ।

अञ्जननिदानम् ४५०२१, ४५०२२, ४५०६४, ४५१०६, ४५१२३, ४५१२४, ४५१९४, ४५३८७, ४५४०६ ।

अञ्जननिदानम् ( सटीकम् ) ४५०९१, ४५३९४ ।

अतिसारवर्णनम् ४४७८१ ।

अतिसारादिरोगविचारः ४४७८२ ।

अभिन्यासकालज्ञानम् ४५१११ ।

अमृतमञ्जरी ४४८८४, ४५३४७ ।

अर्कचिकित्सा ४४९२९-४४९३१ ।

अर्कप्रकाशः ४४९२९-४४९३१, ४५०५२ ।

अर्थप्रकाशिका ४५३०८ ।

अवलेहसङ्ग्रहः ४५०९१ ।

अव्यक्तसङ्ग्रहणम् ४४९२५ ।

अश्वचिकित्सा ४४८०२, ४४९१९, ४४९६६ ।

अश्ववैद्यकम् ४४९१९ ।

अश्वशास्त्रम् ४५१६३ ।

अश्विनीकुमारसंहिता ४५१२६ ।

अष्टाङ्गहृदयम् ४४८१४, ४४८४६, ४४८४७, ४४९५१, ४५१२७-४५१३०, ४५१९६ ।

अष्टाङ्गहृदयम् ( सटीकम् ) ४४८४८, ४५१९३ ।

आतङ्कदर्पणः ४४९४९, ४५०२३, ४५०२५-४५०२६, ४५१८१, ४५१८५, ४५१९०, ४५१९२, ४५२४२, ४५३५० ।

आनन्दमाला ( सटीका ) ४४८८२ ।

आयुर्वेदग्रन्थविशेषः ४४७५५, ४५०७९ ।

आयुर्वेदग्रन्थविशेषानुक्रमणिका ४४७६० ।

आयुर्वेददीपिका ४४८७२ ।

आयुर्वेदपरिभाषा ४४९०७, ४४९०८ ।

आयुर्वेदप्रकरणसूची ४४७७५ ।

आयुर्वेदप्रकाशः ४४७७१, ४५३९९ ।

आयुर्वेदमहोदधिः ४५१९४ ।

आयुर्वेदलोचनम् ४५०१९ ।

आयुर्वेदविषयको ग्रन्थः ४५३९५ ।

आयुर्वेदश्लोकसङ्ग्रहः ४४८०४ ।

आयुर्वेदसङ्ग्रहः ४४७५९, ४४७७६, ४५०७८, ४५२८५ ।

उज्ज्वलावृत्तिः ४५१९२ ।

उपदंशचिकित्सा ४५१९५ ।

उपदंशचिकित्साटीका ४५१९६ ।

उर्वरितपत्राणि ४५४०५ ।

ओषधिकल्पः ४४९२८ ।

ओषधिनामानि ४४७८८ ।

औषधजारणमारणविधिः ४४७९७।

औषधपाकाधिकारः ४६०९८।

औषधप्रतिनिधिकल्पना ४४९७४।

औषधयोगसङ्ग्रहः ४४७९२।

औषधसङ्ग्रहः ४४७७७, ४४८१२, ४९३१७, ४९३८६, ४९३९२।

कफचिकित्सा ४९३०९।

कर्णनासाचक्षुःशिरोरोगचिकित्सा ४९३१३।

कर्मविपाकः ४९३६८।

कल्पसारसङ्ग्रहः ४९३९०।

कल्पावली ४४९९८।

काकचण्डीश्वरकल्पः ४४७६८।

कालज्ञानम् ४४७८३, ४४७८६, ४४७८७, ४९०७१, ४९१०७, ४९११२, ४९१९०, ४९१९७-४९१९९।

काश्यपसंहिता ४९३९९।

कूटमुद्गरः ४९२३४।

कूटमुद्गरः ( सटीकः ) ४९२००, ४९२०१।

क्काथकल्पना ४४९१८।

क्षेमकुतूहलम् ४४९७२, ४९२०२।

क्षेमकुतूहलम् ( सानुवादम् ) ४९४०३।

गदनिर्णयः ( सटीकः ) ४९३९६।

गदाञ्जनम् ४९१९४।

गन्धककल्पः ४४९२६।

गन्धकरसायनविधिः ४४८३०।

गुणरत्नमाला ४९२०३।

गूढवाक्यबोधः ( सटीकः ) ४४७६३।

चक्रदत्तः ४४९७०।

चक्रदत्तः ( सटिप्पणः ) ४४९६९।

चक्रशेषः ४४९०९।

चन्द्रकला ४४८२१, ४४९४३, ४४४९९, ४९२४४, ४९३०२, ४९३४९।

चमत्कारचिन्तामणिः ( सटीकः ) ४९३२०।

चरकसंहिता ४४८४१, ४४८४२, ४४८७०, ४४९८०, ४९०७२, ४९२०४।

चरकसंहिताटीका ४४८७२, ४४९२२, ४९११९, ४९३८९।

चारुचर्चा ४९०८७।

चिकित्साकलिका ४४८९२, ४४८९१।

चिकित्साग्रन्थविशेषः ४४८००, ४४८०१, ४४८०६, ४४८०७।

चिकित्साग्रन्थविशेषः ( सटीकः ) ४९३६९।

चिकित्साञ्जनम् ४९११३, ४९३७३।

चिकित्सातत्त्वसङ्ग्रहः ४४८६२, ४४८६३।

चिकित्सातत्त्वदर्पणसूचीपत्रम् ४९००३।

चिकित्सामहार्णवः ४४८६३।

चिकित्सामालतीमाला ४९११०।

चिकित्सामृतसङ्ग्रहः ४४९०६।

चिकित्सासङ्ग्रहः ४९४०२।

चिकित्सासारः ४४८८९, ४९०७३, ४९१०८, ४९१०९।

चिकित्सासारः ( सटिप्पणः ) ४४८१७।

चिकित्सासारकौमुदी ४४८८८।

चिकित्सासारसङ्ग्रहः ४४८६२, ४९२०८, ४९३८०।

चिकित्सासुन्दरम् ४९२०९।

ज्यौतिषप्रकरणसूची ४४७७६ ।

ज्वरचिकित्सा ४९२०६, ४९३१६ ।

ज्वरतिमिरभास्करः ४४८९९ ।

ज्वरपद्धतिः ४९१९३ ।

ज्वरविवेचनम् ४९२०६ ।

टोडरानन्दः ४४९४० ।

तक्रकल्पः ४४९२७ ।

तैलोपवेशनविधिः ४४८३१ ।

त्रिफलाकल्पः ४४९९३ ।

त्रिशती ४४८७६, ४४८७७, ४४९६०,

त्रिशती ( सटीका ) ४९२९७ ।

दीपिका ४४९३७-४४९३८, ४४९८९, ४९००७-४९०८, ४९११९ ।

द्रव्यगुणदीपिका ४९३२७ ।

द्रव्यगुणविमर्शः ४९०३६ ।

द्रव्यगुणशतश्लोकी ४४८६४, ४९०३०-४९०३२, ४९०६८ ।

द्रव्यगुणसङ्ग्रहः ४४९६४ ।

धन्वन्तरिनिघण्टुः ४४७७२, ४४९७५, ४५०३३, ४९०३४, ४९३७३ ।

धातुभस्मप्रक्रिया ४९३६६ ।

धातुमञ्जरी ४९०४१ ।

धातुरत्नमाला ४९२९६ ।

धातुशुद्धिप्रकारः ४९३४६ ।

नलपाकदर्पणः ४४९७३ ।

नवरत्नमाला ( सटीका ) ४९३३८ ।

नाडीजिह्वादिपरीक्षा ४९३२६ ।

नाडीपरीक्षा ४४७९७, ४४८१२, ४४९४३, ४४९८१, ४४९८४, ४९०४६, ४९०९६, ४९२३१, ४९२९९, ४९३३०, ४९३६१ ।

नाडीप्रकाशः ४५०१९, ४९०२०, ४९२९४ ।

नाडीविज्ञानम् ४९०१८ ।

नाडीशतम् ४९०९६ ।

नाड्यादिपरीक्षा ४९३०४ ।

नाममालाशब्दसङ्केतकलिका ४९०४९, ४५२८८ ।

नामावली ४९२९३ ।

निघण्टुः ४९०३९, ४९२८८-४९२९२, ४९२९८, ४९३०३, ४९३४९, ४९३५४ ।

निघण्टुचूडामणिः ४९३३३ ।

निघण्टुराजः ४४७७३ ।

निघण्टुसारः ४९३३४ ।

निम्बकल्पः ४९२८० ।

निर्गुण्डीकल्पः ४९२८१ ।

निर्णयनिघण्टुः ४९३४४ ।

पथ्यापथ्यद्रव्यगुणवर्णनम् ४४७७० ।

पथ्यापथ्यविधिः ४९३३२ ।

पथ्यापथ्यविनिश्चयः ४४८८०, ४४९१०, ४४९११, ४९३३२ ।

पथ्यापथ्यविवेकः ४४८३९

पथ्यापथ्यादिनिर्णयः ४४७९४ ।

पाकावलिः ४९०४७ ।

पाकावली ४४८१०, ४४९३२-४४९३९, ४९२२९, ४९२९६, ४९३०९, ४९३९२,

पालकाप्यम् ४४९२१, ४९३०६ ।

पिप्पलीपाकविधिः ४५४००।

प्रकीर्णकपत्राणि ४५३१०।

प्रयागसङ्ग्रहः ४४९६७।

बहुमूत्रादिचिकित्सा ४४९२४।

बालचिकित्सा ४४८०९, ४४९३९, ४४९५२, ४५०९९, ४५०८६।

बालतन्त्रम् ४४७६९, ४४७९३, ४४८०९, ४४९३९, ४४९५२, ४५३०७।

बृहद्दशमूलतैलम् ४५३१२।

भल्लातककल्पादियोगसङ्ग्रहः ४५०९२

भल्लातकपाकः ४४९७९।

भावप्रकाशः ४४८२२, ४४८४९-४४८५१, ४४८७१, ४५०६०, ४५१५१, ४५१५९, ४५१६०, ४५१६२, ४५२३७, ४५३०९, ४५३५७।

भावप्रकाशनिघण्टुः ४५१६१।

भावस्वभाववादः ४५०५३।

भीमविनोदः ४५१७४। ४५३९३।

भैषज्यरत्नावली ४५२८७।

भोजनकुतूहलम् ४४९७१।

भोजप्रबन्धः ( सटीकः ) ४५१८०।

मदनपालनिघण्टुः ४५३१९।

मदनविनोदनिघण्टुः ४४८१४, ४४८३२ - ४४८३५, ४४८६५ - ४४८६७, ४४९५०, ४५१३६, ४५१७७ - ४५१७९।

मधुकोशः ४५०२८, ४५१४९।

मनोरमा ४५२५४।

मलमूत्रपरीक्षा ४५०५६।

मसूरिकाशीतलाधिकारः ४४७६६।

माधवनिदानम् ४४८४३-४४८४५, ४४९५५, ४४९६१, ४४९८५, ४४९८७, ४५०२७, ४५०६२, ४५०९०, ४५१५०, ४५१७५, ४५१७६, ४५१८२-४५१८४, ४५१८६-४५१८९, ४५२४०, ४५३२१, ४५३८८।

माधवनिदानम् ( सटिप्पणम् ) ४४८२९।

माधवनिदानम् ( सटीकम् ) ४४७८०, ४४९६५, ४५०२३ — ४५०२६, ४५०२८, ४५१४९, ४५१८१, ४५१८५, ४५१९०, ४५१९२, ४५२४२, ४५३०८, ४५३९०।

माधवनिदानटिप्पणी ४५३८३।

माधवनिदानटीका ४५०८८, ४५१९१, ४५३५६।

मूत्रपरीक्षा ४४९६२, ४५११४, ४५१५५, ४५३५८।

मृत्युविचारः ४४७७९।

मोदकनिर्माणप्रकारः ४५३१४।

यन्त्रचूडामणिः ४५०६५।

योगचन्द्रिका ४४८२३, ४४९१३-४४९१५, ४५०४९, ४५०८०।

योगचिन्तामणिः ४४७८४, ४५२३१-४५२३३।

योगचिन्तामणिः ( सटीकः ) ४५११५।

योगतरङ्गिणी ४४९०१, ४४९०२, ४५०५५, ४५१३५।

योगमाला ४४७६१।

योगमालालघुवृत्तिः ४५१३४।

योगरत्नमाला ( सविवृतिः ) ४४७९१।

योगरत्नसङ्ग्रहः ४५३७८।

योगरत्नावली ( सटीका ) ४४९४७।

योगशतम् ४५१३३।

योगशतम् ( सटीकम् ) ४९०४४ ।
योगशतकम् ४४९२३, ४५१४८, ४५२२७-४५२३० ।
योगशतकम् ( सटीकम् ) ४९०२९ ।
योगशतप्रबन्धः ४९३२९ ।
योगशतबन्धः ( सटीकः ) ४९०४८, ४९१७३ ।
योगसङ्ग्रहः ४४७८९ ।
योगसारः ४४८०३ ।
योगसारसमुच्चयः ४४८०३ ।
योगोक्तिलीलावती ४४९१२ ।
योगोक्तिविवेकचन्द्रः ४९०७४ ।
रत्नदीपः ४९०९४ ।
रत्नमाला ४४९९२ ।
रत्नशोधनमारणविधिः ४९४०१ ।
रसकल्पवल्ली ४९०६९ ।
रसकौतुकम् ४४९९८ ।
रसचन्द्रिका ४४९९६ ।
रसचिकित्साग्रन्थः ४५२१८ ।
रसचिन्तामणिः ४४७९९ ।
रसनिर्माणप्रकारः ४९३१९ ।
रसप्रदीपः ४९२३८ ।
रसप्रदीपः ( सटीकः ) ४४९९९, ४९२२४, ४९२२६ ।
रसप्रयोगः ४९०८९ ।
रसमञ्जरी ४४९९९-४५००२, ४९०३७, ४९०३८, ४९०६६, ४९०९९, ४९२२०-४९२२३, ४९२८३, ४९३०१, ४९३४६ ।
रसरत्नम् ४४९९७ ।
रसरत्नसमुच्चयः ४४९८६, ४९०३९, ४९०४०, ४९१७२ ।
रसरत्नाकरः ४९०८४, ४९०९६-४९०९८ ।
रसराजः ४४९९४ ।
रसराजलक्ष्मीः ४४८१८ ।
रसराजशङ्करः ४४७९८, ४९११६ ।
रसविनोदः ४४९९७ ।
रससङ्ग्रहः ४९२१८ ।
रससिन्दूरादिनिर्माणविधिः ४९२१९ ।
रसहृदयम् ४९०९७ ।
रसायनप्रक्रियासङ्ग्रहः ४९३९१ ।
रसेन्द्रचिन्तामणिः ४९११७, ४५१७१, ४९२१७ ।
रसेन्द्रचूडामणिः ४९०६७ ।
रसेन्द्रसारसङ्ग्रहः ४९११८, ४९२१६ ।
राजवल्लभः ४४९७६-४४९७८, ४९३११ ।
रामबाणः ४९०८३ ।
रामविनोदः ४४८८९ ।
रुग्विनिश्चयः ४४९८७, ४९०६२, ४९३२१ ।
रोगपरीक्षणम् ४४९९६ ।
रोगपरीक्षा ४९२९९, ४९३०० ।
रोगलक्षणम् ४४९२४ ।
रोगविनिश्चयः ४९०२७ ।
रोगारोगवादः ४९२१४, ४९२१९ ।
रौप्यविधानम् ४९२४३ ।
लक्ष्मणोत्सवः ४४७६९, ४४८७३, ४९२६३ ।
लघुसङ्ग्रहः ४९३३९ ।

लघुसङ्ग्रहः ( सटिप्पणः ) ४९०४३ ।

लघुसङ्ग्रहः ( सटीकः ) ४९३२८ ।

वमनविधिः ४९३६३ ।

वस्तुगुणदोषविनिश्चयः ४९०९३ ।

वाग्भटः ४४७६४, ४४९९१ ।

वाजीकरणादियोगसङ्ग्रहः ४९३६७ ।

वातादिप्रकोपविचारः ४९३६२ ।

वीरसिंहावलोकः ४४९०५, ४९०९९, ४९१०० ।

वैद्यकनिघण्टुः ४९३३१ ।

वैद्यकनिघण्टुविशेषः ४९१९२, ४९१९८ ।

वैद्यकल्पतरुः ४९१६९ ।

वैद्यकल्पद्रुमः ४९१६८, ४९३३६ ।

वैद्यकरसायनम् ४४९९३ ।

वैद्यकरसावली ( सटीका ) ४९३७० ।

वैद्यकसङ्ग्रहः ४४९९०, ४९३७८ ।

वैद्यकसारसङ्ग्रहः ४९२३३ ।

वैद्यकसारोद्धारः ४९०८९, ४९२३१-४९२३३ ।

वैद्यकसारोद्धारः ( सटीकः ) ४९१०१, ४९१०२ ।

वैद्यकुतूहलम् ४४९१७, ४९२६४ ।

वैद्यकौस्तुभः ४४९९१ ।

वैद्यचन्द्रोदयः ४४९००, ४९१६७ ।

वैद्यजीवनम् ४४७९०, ४४७९९, ४४८९२-४४८९६, ४४९३६, ४४९४८, ४४९९४, ४४९६८, ४४९८३, ४९०६१, ४९०७०, ४९२३९, ४९२६९ - ४९२६७, ४९२६९, ४९३२२, ४९३३७, ४९३६९, ४९४०४ ।

वैद्यजीवनम् ( सटिप्पणम् ) ४९२६८ ।

वैद्यजीवनम् (सटीकम् ) ४४९३७, ४४९३८, ४९१२१, ४९१४९, ४९१४६, ४९२४१, ४९२७०, ४९२७१, ४९३९७ ।

वैद्यजीवनव्याख्या ४९१७० ।

वैद्यदर्पणः ४९१६६ ।

वैद्यदर्पणः ( सटीकः ) ४४९८८ ।

वैद्यदर्पणम् ( सटीकम् ) ४९२१३, ४९२७२ ।

वैद्यभास्करोदयः ४४८८१, ४९२१२, ४९३७९ ।

वैद्यमन उत्सवः ४९१६९, ४९३२९ ।

वैद्यमन उत्सवः ( सटीकः ) ४४८१६ ।

वैद्यरत्नम् ४४८८७, ४९२७३, ४९२७५ ।

वैद्यरत्नावली ४९२७४ ।

वैद्यरहस्यम् ४४९१६, ४९१०३, ४९२७६, ४९२७७, ४९३७१ ।

वैद्यवल्लभः ४४८७८, ४९२११, ४९२७८, ४९२७९, ४९३८१ ।

वैद्यवल्लभः ( सटीकः ) ४९०७५ ।

वैद्यवल्लभः ( सानुक्रमः ) ४४८७९ ।

वैद्यवल्लभा ४९२९७ ।

वैद्यविनोदः ४४८७४, ४४८७५, ४९३९३ ।

वैद्यसर्वस्वम् ४४९९९, ४९१६४ ।

वैद्यसिद्धान्तकौमुदी ४९००४ ।

वैद्यानुभवः ४४७९६ ।

वैद्यामृतम् ४४८९७, ४४८९८, ४४९६३, ४९०८१, ४९२१०, ४९३४०, ४९३७४ ।

वैद्यामृतम् ( सटीकम् ) ४९१४४ ।

वैद्यावतंसः ४९३७६ ।

शतमूलनामानि ४९२४३ ।

शतश्लोकी ४४९४२, ४४९८२, ४५०७६, ४५१३२, ४५१४२, ४५१४३, ४५२३६, ४५२४४-४५२४९, ४५३२५ ।

शतश्लोकी ( सटिप्पणा ) ४४८२७, ४५०८२ ।

शतश्लोकी ( सटीका ) ४४८२१, ४४९४३-४४९४५, ४५२५०-४५२५४, ४५३०२, ४५३४३ ।

शतश्लोकोटीका ४५३२७ ।

शतावरीघृतप्रयोगफलम् ४५२८६ ।

शार्ङ्गधरटीका ४५३९८ ।

शार्ङ्गधरदीपिका ४५०६३ ।

शार्ङ्गधरसंहिता ४४७७४, ४४७७८, ४४७८९, ४४७९६, ४४७९८, ४४८०५, ४४८०८, ४४८१५, ४४८५३-४४८६१, ४४८६५, ४४८९०, ४४९४६, ४५००९ - ४५०१७, ४५१२०, ४५१३९ - ४५१४१, ४५१४७, ४५२०९, ४५२५५-४५२५८, ४५३१८, ४५३२३, ४५३२४, ४५३४८, ४५३६४, ४५३८२, ४५३८५ ।

शार्ङ्गधरसंहिता ( सटिप्पणा ) ४४८२८ ।

शार्ङ्गधरसंहिता ( सटीका ) ४४८६८, ४४९८१, ४५००५ - ४५००८, ४५०६३, ४५०९३

शार्ङ्गधरसंहिताविषयसूची ४५३७१ ।

शालिहोत्रम् ४४७६२, ४४८१९, ४५१३१ ।

शिवचरणाम्बुजम् ४५१०४ ।

शिशुरक्षारत्नम् ४४९०३, ४४९०४ ।

शीतलाष्टकम् ४४७६६ ।

षड्ऋतुवर्णनम् ४४९०० ।

सङ्ग्रहणीरोगचिकित्सा ४५२८२ ।

सन्निपातकलिका ४५१२५, ४५२५९, ४५२६० ।

सन्निपातचन्द्रिका ४४८११ ।

सन्निपातपादचन्द्रिका ४५२६१ ।

सन्निपातमञ्जरी ४५३७७ ।

सर्वपरीक्षणम् ४५३२६ ।

सर्वसङ्ग्रहः ४४८२०, ४५०४२, ४५३३९ ।

साररत्नावली ४५१३८ ।

सारसङ्ग्रहः ४४९२३, ४५०४४, ४५०७७ ।

सारसमुच्चयः ४५१६३ ।

सिद्धमन्त्रप्रकाशः ४४९४१ ।

सिद्धयोगसङ्ग्रहः ४४७९४, ४४९२० ।

सिद्धार्थकतैलम् ४५३१२ ।

सुधासागरादिरसविचारः ४५३९१ ।

सुबोधिनी ४५३८४ ।

सुश्रुतटीका ४४८६९ ।

सुश्रुतसंहिता ४४७३७, ४४८२५, ४४८२६, ४५०५४, ४५१३७ ।

स्नायुरोगचिकित्सा ४५३६० ।

स्वास्थ्यरक्षणविधिः ४४८३९ ।

हयशास्त्रम् ४५२६२ ।

हरिवन्दनसङ्ग्रहः ४४८८६ ।

हस्त्यायुर्वेदः ४४९२१, ४५३०६ ।

हृदयदीपकनिघण्टुः ४४८३६-४४८४०, ४५१०५ ।

हृदयप्रबोधः ४४८२७ ।

# द्वादशभागोल्लिखितानां कामशास्त्रग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका ।


अनङ्गरङ्गः ४९४०७, ४९४११, ४९४१३, ४९४१९-४९४१७, ४९४२२, ४९४२३, ४९४२९, ४९४३२, ४९४३३, ४९४३५, ४९४४०, ४९४४१, ४९४४४, ४९४९५ - ४९४९८ ।

कन्दर्पचूडामणिः ४९४४६, ४९४४७ ।

कामशास्त्रग्रन्थविशेषः ४९४६९ ।

कामसूत्रम् ४९४२९, ४९४६१ ।

कामसूत्रम् ( सभाष्यम् ) ४९४६२ ।

कामसूत्रनिरूपणम् ४९४६३ ।

कुट्टनीमतम् ४९४१२ ।

कुट्टनीमतटिप्पणम् ४९४२७ ।

कोकशास्त्रसारः ४९४४३ ।

दीपिका (टीका) ४९४४९ ।

निरञ्जनस्तुतिः ४९४९३ ।

पञ्चसायकः ४९४०८, ४९४१०, ४९४१८, ४९४२८, ४९४३१, ४९४३६, ४९४३९, ४९४४९, ४९४९१ - ४९४९४, ४९४६४ ।

फाल्गुनमाहात्म्यम् ४९४३८ ।

बाह्यसंभोगविधानम् ४९४६३ ।

मन्मथसंहिता ४९४२१ ।

रजस्वलाप्रकरणम् ४९४३७ ।

रतिमञ्जरी ४९४३४, ४९४३७ ।

रतिरहस्यम् ४९४११, ४९४२४, ४९४२६, ४९४९९ ।

रतिरहस्यम् (सटीकम्) ४९४४९, ४९४६० ।

स्मरदीपिका ४९४१४, ४९४१९, ४९४२०, ४९४३०, ४९४४२, ४९४४८, ४९४९० ।

होलाष्टकोपनिषत् ४९४०९ ।

# द्वादशभागोल्लिखितानां शिल्पशास्त्रग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका ।


अङ्कस्थापनम् ४९९०० ।

उपवनविनोदः ४९४९९ ।

कूपार्थभूमिपरीक्षा ४९४७७ ।

कृष्णखेलः ४९९०१ ।

गंजीफाखेलनप्रकारः ४९४७० ।

गैरिकसूत्रम् (सवृत्तिकम्) ४९४७१ ।

गैरिकसूत्रवृत्तिः ४९४७२ ।

चतुरङ्गतरङ्गिणी ४९४९४ ।

चतुरङ्गिणी ४९४९६ ।

निधिप्रदीपः ४९५८८ ।

पत्रकौमुदी ४९४९९ ।

पत्र-प्रमाणपत्र-लेखनादिप्रकाशः ४९४९९ ।

पत्रलेखनप्रकारः ४९४६६ ।

प्रशस्तिप्रकाशिका ४९४६७, ४९४६८ ।

प्रासादमण्डनम् ४९४८३, ४९४९० ।

बुद्धिबलचालनप्रकारः ४९४८९ ।

मणिपरीक्षा ४९४८६ ।

मणिशास्त्रम् ४९४८२ ।

मानसारः ४९४७८ ।

मानसोल्लासः ४९४८७ ।

मूर्तिनिर्माणविधिः ४९४७३, ४९४७४ ।

रत्नदीपिका ४९४९२ ।

रत्नपरीक्षा ४९४८०, ४९४८२, ४९४८९, ४९४९२ ।

रत्नपरीक्षा (सटीका) ४९४७९ ।

रत्नपरीक्षा (सव्याख्या) ४९४८१ ।

राजवल्लभमण्डनम् ४९४९७ ।

रूपमण्डनवास्तुशास्त्रम् ४९४७६ ।

वास्तुप्रकाशशास्त्रम् ४९४७९ ।

वास्तुमण्डनम् ४९४६९ ।

वास्तुराजवल्लभः (सव्याख्यः) ४९४९८ ।

वास्तुशास्त्रम् ४९४९१ ।

विलासमणिमञ्जरी (सटीका) ४९४८४ ।

विश्वकर्माप्रकाशः ४९४७९ ।

शतरञ्जक्रीडा ( गृहेषु घोटकगत्या अङ्कस्थापनम् ) ४९९००।

शतरञ्जविलासः ४९४९३ ।

# द्वादशभागोल्लिखितानां सङ्गीतशास्त्रग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका ।


कालीशतनामस्तोत्रम् ४९९०६ ।

गीनकुतूहलम् ४९९०२ ।

गायनशास्त्रम् ४९९०४ ।

चौताला का मोहरा ४९९१६ ।

तालविचारः ४९९२० ।

नर्तननिर्णयः ४९९१९ ।

भक्तविरुदावली ४९९०२ ।

रागनाममालामूर्तिः ४९९०२ ।

रागमाला ४९९१४ ।

रागरत्नमाला ४९९०२ ।

रागरत्नाकरः ४९९०२ ।

रागरागिणीस्वरूपसूची ४९९०५ ।

रासपञ्चाध्यायिपदानि ४९९०२ ।

षड्रागवर्णनम् ४९९०६ ।

सङ्गीतरघुनन्दनम् ( सटीकम् ) ४९९११ ।

सङ्गीतदर्पणः ४९९१३, ४९९१५, ४९९१७, ४९९१८ ।

सङ्गीतरत्नाकरः ४९९०७-४९९१० ।

सङ्गीतरत्नावली ४९९०३ ।

सङ्गीतविषयको ग्रन्थः ४९९१२ ।

# द्वादशभागोल्लिखितानां नीतिशास्त्रग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका ।


उपाध्यायनिरपेक्षा ४९९२१ ।

कामन्दकीयनीतिसारः ४९९९३, ४९९९९ ।

चाणक्यनीतिः ४९९४८, ४९९६३, ४९९७३, ४९९८०, ४९९८३, ४९९९३, ४९९९४ ।

चाणक्यशास्त्रम् ४९९९७ ।

चाणक्यसारसङ्ग्रहः ४९९२९, ४९९३९, ४९९४४, ४९९९५, ४९९९६, ४९९७१, ४९९७४-४९९७६, ४९९८९ ।

चाणक्यसारसङ्ग्रहः (सानुवादः) ४९९७७, ४९९७८ ।

नीतिमयूखः ४९९२४ ।

नीतिरत्नम् ४९९२७ ।

नीतिशास्त्रसमुच्चयः ४९९६३ ।

नीतिश्लोकाः ४९९३३, ४९९८४ ।

नीतिश्लोकसङ्ग्रहः ४९९६६, ४९९८१ ।

नीतिसारः ४९९२७, ४९९३५, ४९९८९ ।

नीतिसारटीका ४९९२१ ।

पञ्चोपाख्यानम् ४९९७० ।

बालशिक्षा ४९९९१ ।

बालशिक्षोपदेशः ४९९४७ ।

राजनीतिप्रकरणम् ४९९३२ ।

राजनीतिप्रकरणसूची ४९९३१ ।

राजनीतिशास्त्रम् ४९९७० ।

राजनीतिसमुच्चयः ४९९९२, ४९९९४, ४९९९८, ४९९६९ ।

लघुचाणक्यम् ४९९३७, ४९९४१-४९९४३, ४९९४९, ४९९९७, ४९९६४, ४९९७२, ४९९८२, ४९९८७, ४९९८८, ४९९९१, ४९९९६ ।

लघुचाणक्यम् (सटीकम्) ४९९४९, ४९९९० ।

लघुचाणक्यम् (सानुवादम्) ४९९३४ ।

लघुचाणक्यनीतिः ४९९६०, ४९९६१ ।

विदुरनीतिः (सटीका) ४९९७१ ।

वृद्धचाणक्यम् ४९९२३, ४९९२५, ४९९२६, ४९९२८, ४९९३७, ४९९३८, ४९९४०, ४९९४६, ४९९९४, ४९९६७-४९९६९, ४९९८६, ४९९९०, ४९९९२, ४९९९९ ।

शुक्रनीतिः ४९९२२, ४९९३० ।

शुक्रनीतिसारः ४९९६२ ।

सोमनीतिः ४९९३६ ।

# द्वादशभागोल्लिखितानां प्रकीर्णग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका ।


| | |
|---|---|
| **धनुर्वेदः** | **प्रशस्तिः** |
| वीरचिन्तामणिः ४५९९८-४५६०१ । | आशीर्वादप्रशस्तिः ४५६०४ । |
| **पञ्जी** | राजादिप्रशस्तिः ४५६०३ । |
| पञ्जीप्रबन्धः ४५६०२ । | |

# द्वादशभागोल्लिखितानां चित्रग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका ।


अग्निष्टोमयागविहारः ४५७६० ।

अग्निष्टोमविहारचित्रम् ४५६४७, ४५७०२, ४५७२७ ।

अच्युतचित्रम् ४५६१४ ।

अधोक्षजचित्रम् ४५६२१ ।

अनिरुद्धचित्रम् ४५६२५ ।

अष्टकोणयन्त्रम् ४५६८४ ।

अष्टदलकमलचित्रम् ४५६८५ ।

अष्टलिङ्गतोभद्रम् ४५६८८ ।

उपेन्द्रचित्रम् ४५६११ ।

एकलिङ्गतोभद्रम् ४५६६४, ४५६६५ ।

कर्मकाण्डोपयोगिचित्राणि ४५७५८ ।

कर्ममूलवृक्षचित्रम् ४५७३२ ।

कागजपर जालीका काम ४५७४३ ।

कार्तवीर्यार्जुनयन्त्रम् ४५७४२ ।

कुण्डयन्त्राणि ४५७६१ ।

कूपवास्तुपदचित्रम् ४५६६३ ।

कृष्णगोष्ठी ४५६५३ ।

कृष्णचित्रम् ४५६१५, ४५७५६ ।

कृष्णबाललीलाचित्रम् ४५७३५ ।

केशवचित्रम् ४५७६३ ।

क्रीडाचक्रचित्रम् ४५७७६ ।

गणेशचित्रम् ४०६५७, ४५७१९ ।

गरुडचित्रम् ४५७४८ ।

गायत्रीचित्रम् ४५६९३ ।

गुरुस्थानचक्रम् ४५७५७ ।

गोविन्दचित्रम् ४५६०६ ।

चक्रविशेषः ४५७३९ ।

चित्रकाव्यचित्रम् ४५६९९ ।

जगन्नाथचित्रम् ४५६२८ - ४५६३१, ४५६४५, ४५६७०, ४५७४४, ४५७४५, ४५७५२ ।

जगन्नाथदेवचित्रम् ४५७२५ ।

जनार्दनचित्रम् ४५६१३ ।

जलवास्तुवाप्यादिपदचित्रम् ४५६६७ ।

तान्त्रिकचित्रम् ४५७३४ ।

त्रिविक्रमचित्रम् ४५६१८ ।

दामोदरचित्रम् ४५६०८ ।

दुर्गाचित्रम् ४५६७१, ४५७१८ ।

दुर्गाष्टादशभुजोपेतचित्रम् ४५७२६ ।

देवीचक्रचित्रम् ४५६५२ ।

देवीचित्रम् ४५६४४ ।

देवीयन्त्रचित्रम् ४५७१४ ।

द्वादशारचक्रम् ४५६७१ ।

द्वारकाधीशचित्रम् ४५६३२ - ४५६३६ ।

द्वारिकाचित्रम् ४५६५९ ।

धनुर्धरचित्रम् ४५७४९ ।

नरचक्रचित्रम् ४५७२४ ।

नवग्रहचित्रम् ४५६६१, ४५७००।
नारायणचित्रम् ४५६१९।
नृसिंहचित्रम् ४५६३२।
पदचित्रम् ४५६४०, ४५६५८।
पद्मनाभचित्रम् ४५६२७।
पुरुषोत्तमचित्रम् ४५६०९।
प्रद्युम्नचित्रम् ४५६१२।
प्रासादवास्तुपदचित्रम् ४५६७६।
ब्रह्मचित्रम् ४५७१७, ४५७४१।
भूगोलचित्रम् ४५३८१, ४५७२३, ४५७३०, ४५७३७, ४५७३८।
भैरवचित्रम् ४५७५०।
भौगोलिकमानचित्रम् ४५७५९।
मधुसूदनचित्रम् ४५६१६।
महायन्त्रचित्रम् ४५७०५।
माङ्गलिकचित्रम् ४५७६५।
माधवचित्रम् ४५६१७।
योगचक्रम् ४५७२०।
रणछोरचित्रम् ४५७१६।
रामयन्त्रम् ४५७५४।
रुद्रयन्त्रम् ४५६८६।
लक्ष्मीचित्रम् (हस्तियुतम्) ४५६३७-४५६३९, ४५६४३।
लिङ्गतोभद्रम् ४५६९१, ४५७६२।
लिङ्गतोभद्रचित्रम् ४५६७८, ४५७०४, ४५७०७, ४५७१२, ४५७३१।
विविधयन्त्राणि ४५६८२।
विष्णुचित्रम् ४५६०५।
वृक्षवास्तुपदचित्रम् ४५६७५।
वृत्तचित्रम् ४५७२२।
वामनचित्रम् ४५६२०।
वारुणमण्डलम् ४५६७४, ४५६८३।
वासुदेवचित्रम् ४५६०७।
वास्तुचक्रम् ४५६९२।
वास्तुचक्रचित्रम् ४५७०६।
ब्रह्मादिमण्डलचित्रम् ४५६६९।
वास्तुचित्रम् ४५७११।
वास्तुमण्डलचित्रम् ४५६८०, ४५६९४, ४५६९८, ४५७०८-४५७०९, ४५७१३, ४५७४६।
व्यङ्कटेशचित्रम् ४५६५०।
शिवपरिवारचित्रम् ४५७४७।
शिशुमारचक्रम् ४५७२८।
शैवसम्प्रदायचित्रम् ४५७५१।
श्रीचक्रचित्राणि ४५७१५।
श्रीधरचित्रम् ४५६२६।
श्रीनाथचित्रम् ४५७५५।
षट्कोणद्वारचित्रम् ४५६५४।
षट्चक्रचित्रम् ४५७३३।
षोडशारचक्रम् ४५६७३।
सङ्कर्षणचित्रम् ४५६२४।
समयचक्रचित्रम् ४५७२१।
समुद्रादिचित्राणि ४५७२९।
सर्वतोभद्रम् ४५७०१, ४५७६४।

सर्वतोभद्रचक्रम् ४९६८९।

सर्वतोभद्रचित्रम् ४९६४६, ४९६९६, ४९६७२, ४९७१०।

सर्वतोभद्रमण्डलचित्रम् ४९६६६।

सर्वतोभद्रादिचित्राणि ४९६९९, ४९६७७, ४९६७९।

स्त्रीचित्रम् ४९६४२।

हनुमच्चित्रम् ४९६६२, ४९६८७, ४९७४०।

हरिचित्रम् ४९६२३।

हस्तचित्रम् ४९६४१, ४९६४८ - ४९६४९, ४९६६०-४९६६१, ४९६९०, ४९७०३।

हिंडोलरागिनीचित्रम् ४९७९३।

हृषीकेशचित्रम् ४९६१०।

# द्वादशभागोल्लिखितानां देशीभाषाग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका ।


अक्षरमालिकाविचारः ४६९१३ ।

अखण्डसहजावस्था ४६९०९, ४६९१२, ४६६११ ।

अखण्डसहजावस्थावर्णनम् ४६३६९ ।

अखण्डाश्रमः ४६३७०, ४६६११ ।

अच्युताष्टकम् ४६६६७ ।

अजपापूजनविधिः ४६६३७ ।

अजीर्णमञ्जरी ४६२०२ ।

अञ्जनविधिः ४९८८७ ।

अञ्जुलीपुराणम् ४९७८१ ।

अज्ञानबोधिनी ४६९८८, ४६९९० ।

अद्वयशतश्लोकी ४६९९६ ।

अद्वैतबोधः ४६९०८, ४६६४० ।

अध्यात्मप्रकाशः ४९९१६ ।

अध्यात्मरामायणम् ४६९१९, ४६७९७, ४६८१९ ।

अध्यात्मविचारः ४६७१९ ।

अनङ्गलीला ४९७६८ ।

अनुभवपञ्चकस्तोत्रम् ४६९१९ ।

अनुभवसारः ४६९०९, ४६६१०, ४६६१२, ४६६१३ ।

अनुभवसिद्धान्तः ४६६७७ ।

अनुभवामृतम् ४६३६७ ।

अनुभवामृतम् ( सटीकम् ) ४६३३३ ।

अनेकार्थध्वनिमञ्जरी ४६१६१ ।

अनेकार्थभाषा ४६२९९ ।

अनेकार्थमञ्जरी ४९७७१, ४९९२० ।

अन्तःकरणप्रबोधः ४६८२८ ।

अन्तःकरणसामग्री ४९९१६ ।

अन्योक्तिमाला ४९९२१ ।

अपरोक्षानुभूतिटीका ४६६२० ।

अपरोक्षानुभूतिदीपिका ४६३६८ ।

अभङ्गः ४६२९४, ४६४८९, ४६९१३, ४६९१६, ४६९२१, ४६६३६, ४६६८९, ४६६९१, ४६७०३, ४६७०४, ४६७०६, ४६७१४, ४६७१६, ४६७१८, ४६७१९, ४६७२२-४६७२४, ४६७३९, ४६७६४, ४६७७८ ।

अभङ्गपदम् ४६३०८ ।

अभङ्गपदसङ्ग्रहः ४६३०६ ।

अभङ्गपदावली ४६९१७ ।

अभङ्गसङ्ग्रहः ४६३१३, ४६३७४, ४६४४७, ४६७१२ ।

अभ्रकमारणादिविधिः ४६१३८ ।

अमरावतीवर्णनम् ४६६२४ ।

अमृतरसयोगः ४६९०६ ।

अमृतसागरः ४६९०१, ४६९०४, ४६९०९, ४६९०७ ।

अम्बाजी की आरती ४९८२४ ।

अम्बाजी नो गरबो ४६८०१ ।

अम्बिकास्तोत्रम् ४६८०२ ।

अर्घकाण्डम् ४६८३० ।

अर्बुदाचलकल्पः ४६७९२ ।

अलङ्कारचन्द्रोदयः ४९८६९ ।

अवकहडाचक्रम् ४६२८९ ।
अवतरणिका ४६६०६ ।
अष्टमङ्गलीव्याख्यानम् ४६७८९ ।
अष्टाक्षरमन्त्रटीका ४६२१७ ।
अष्टोत्तरशतनाम ४६८२८ ।
अहं सोऽहं शोधितमार्गः ४६३१९ ।
अहर्गणानयनम् ४६१२८ ।
आकर्षणविधिः ४९८८९ ।
आक्कूवाईपदम् ४६६९६ ।
आगमोक्तनवग्रहमन्त्राः ४६८९९ ।
आत्मतत्त्वनिरूपणम् ४६६३९ ।
आत्मबोधः ४९८११ ।
आत्मविचारः ४६२६७ ।
आत्मानात्मविचारः ४६४०९ ।
आयुर्वेदग्रन्थः ४९८३२, ४६३९९ ।
आयुर्वेदग्रन्थः ( सटीकः ) ४९८११ ।
आयुर्वेदग्रन्थविशेषः ४६४४२ ।
आरात्रिकगीतानि ४६४११ ।
आर्त्तिक्यपदसङ्ग्रहः ४६७३७ ।
आर्या ४६२९९, ४६४३९ ।
आर्यामुक्तामणिः ४६७४० ।
आर्यावृत्तविवरणम् ४६६८१ ।
इन्दुविनोदावहवाक्यावली ४६९६२ ।
इन्द्रजालम् ४९८९९, ४६२४३ ।
इन्द्रजालविद्या ४९९९९, ४६१०३ ।
इन्द्रजालसञ्जीवनी ४९९९९ ।
इस्कदरियावः ४६२१८, ४६२१९ ।
ईश्वरभजनम् ४६९९७ ।
उच्छिष्टगणपतिप्रयोगः ४६४१० ।
उत्सवमालिका ४६१०४ ।
उत्सवविधिः ४६२२० ।
उत्सवसङ्ग्रहः ४६०९९ ।
उद्धवकृष्णमेलनम् ४९९७३ ।
उद्धवगोपीवचनम् ४६८०० ।
उद्धवशतकम् ४६२२१ ।
उद्धृतश्लोकाः ४६६६७ ।
उपदेशरत्नाकरः ४६६२२ ।
उपनिषन्महावाक्यार्थः ४६९३३ ।
उपसाहित्यग्रन्थः ४६४६३ ।
उमाविलासः ४६७३०, ४६७४१ ।
उर्वशीनाममाला ४६२२२ ।
उलूखलबन्धनम् ४६९३९ ।
उषाचरित्रम् ४६०४६ ।
ऋषभदेवदेवमन्त्रप्रयोगः ४९८८३ ।
एकनाथचरित्रम् ४६५४६ ।
एकलोलीभावः ४६४६२ ।
एकश्रुत्युपदेशः ४६७१० ।
एकादशीकथा ४९८२१ ।
एकादश्याख्यानम् ४६३२१ ।
ऐलंगीतोपाख्यानम् ४६६३० ।
ओंकारस्वरूपविचारः ४६८९० ।
ओखाहरणम् ४६८८३ ।

ओषधियोगचमत्कारः ४६८२२ ।
ओषधियोगसंङ्ग्रहः ४६८२४ ।
औदीच्यवर्णनम् ४६७९४ ।
औषधप्रयोगः ४५९४२ ।
औषधयोगसंग्रहः ४६७२९ ।
औषधतन्त्रमन्त्रसङ्ग्रहः ४६७९३ ।
औषधविवरणम् ४५८०१ ।
औषधसङ्ग्रहः ४५७७२, ४६०२३, ४६०४४, ४६१०३, ४६१२४, ४६१७०, ४६१७१, ४६१७२, ४६१८६, ४६२७२, ४६२७३, ४६२८३, ४६८१०, ४६८१७, ४६८२०, ४६८३५ ।
कथाकल्पतरुः ४६४१७, ४६४५०, ४६४५१ ।
कपिलबोधः ४६७३८ ।
कपिललीला ४५९९९ ।
करणाभरणम् ४५९७१ ।
करुणामृतम् ४६४२२ ।
करुणाशतकम् ( अभंगः ) ४६५४९ ।
करुणाष्टकम् ४६६१२, ४६७७१ ।
कर्मगीता ४६४२८ ।
कर्मविपाकः ४५८१९, ४६८२१ ।
कलिप्रभाववर्णनम् ४५८२२ ।
कलिसन्तरणोपनिषत् ४६५९९ ।
कवचकुण्डलहरणआर्या ४६७६९ ।
कवितासङ्ग्रहः ४६२६३ ।
कवितासागरः ४६२२३ ।
कवित्तभाषा ४६१८८, ४६१८९ ।
कवित्तरामायणम् ४५७९६, ४५८८६, ४६१०६ ।
कवित्तविवेकाष्टकम् ४६२५९ ।
कवित्तसङ्ग्रहः ४५९२८ ।
कविप्रिया ४६११४, ४६२५६ ।
कविविनोदः ४६२२४ ।
कश्फअलमुर्गैयवातः ४६१०७ ।
कहानी ४६९१० ।
कांकण ४६८०० ।
काकडारती ४६३७५ ।
काणपदम् ४६९११ ।
कात्यायनीव्रतम् ४६५३९ ।
कामविलासः ४६४५८ ।
कार्तिकमाहात्म्यम् ४५८१६ ।
कालपरीक्षा ४६१९० ।
कालीवन्दना ४६८८६ ।
काव्यकलाधरः ४५९८६ ।
काशीखण्डः ४६४०१, ४६५४२ ।
काशीखण्डकथा ४६८६३ ।
काशीचरितम् ४६०७१ ।
काशीवर्णना ४६८५८ ।
काशीस्तोत्रम् ४६५७३ ।
किसनबावनी ४६०२६ ।
कुछाहावंशावली ४६२३३ ।
कुण्डलिया ४५८०६, ४५९७९ ।
कुण्डार्णवसिद्धजालम् ४६४७७ ।
कुशलवाख्यानम् ४६४९२ ।

कृष्णकर्णामृतम् ४६६६७।

कृष्णगीतम् ४६८२८।

कृष्णगेन्दक्रीडागीतम् ४६८२६।

कृष्णचरितम् ४६७७३।

कृष्णचरितवर्णनम् ४६७२१।

कृष्णचरित्रम् ४६०९२, ४६०९३।

कृष्णजन्म ४६६३९।

कृष्णजन्मलीला ४६६७८।

कृष्णजन्माख्यानम् ४६६२६।

कृष्णप्रेमामृतविवृतिः ४६२७१।

कृष्णबाललीलावर्णनम् ४६७०१।

कृष्णभक्तिपदम् ४६७७७, ४६७९४,

कृष्णलीलामृतम् ४६४५९।

कृष्णवधाईगीतम् ४६०३९।

कृष्णस्तुतिः ४६२३५, ४६४३९।

कृष्णावतारोत्सवपूजापद्धतिः ४९८८८।

कृष्णावली ४६१६९।

कृष्णाश्रयस्तोत्रम् ४६८२८।

केकावली ४६९७७।

केरलीग्रन्थः ४६१९६।

केवलीशास्त्रम् ४६१३०।

केहरकवित्तम् ४५७८९।

कैवल्यज्ञानदेहादिनिरूपणम् ४६७२९।

कोकभेदः ४६२४३।

कोकमञ्जरी ४९७७२।

कोकसारः ४६०१७, ४६१९०।

कोकिलाव्रतोद्यापनम् ४६३९४।

कौतुकरत्नावली ४५९६०, ४६०१२, ४६०८६, ४६१०२, ४६३३९।

कौतुकसङ्ग्रहः ४६१२९।

गङ्गालहरी टीका ४६४७२, ४६४७३।

गङ्गाष्टकम् ४६६६७।

गङ्गास्तुतिः ४९८३१, ४९८३९, ४६६०२, ४६६०९।

गङ्गास्तुतिटीका ४६४३१।

गजेन्द्रमोक्षः ४९८२७, ४६६७६, ४६८२९।

गणितसाठा ४९९८९।

गणेशस्तुतिः ४६७०२।

गणेशस्तोत्रम् ४९८१८।

गद्यार्थभाषाव्याख्या ४६२९९।

गबलनसङ्ग्रहः ४६७६७।

गर्भगीता ४९९४४, ४६६६७।

ग्रहगोचरचक्रम् ४६७७०।

गायत्रीविवरणम् ४६४१८।

गिरिजामहेशचरितम् ४६०७१।

गीतगोविन्दम् ४६९६३, ४६८४९।

गीतरामायणम् ४६४८२।

गीतसङ्ग्रहः ४९७७३। ४६००६, ४६१२२, ४६१२३, ४६१२४, ४६७२८, ४६७३६, ४६८१९, ४६८२८, ४६८३३, ४६८४९।

गीतानुवादः ४६४७८।

गीताप्रकरणम् ४६९२९।

गीतामाहात्म्यम् ४६४७९ ।
गीतार्णवसुधा ४६३४८, ४६४७१ ।
गीताल्ली ४६०२८, ४६०३० ।
गीता श्रीधरीटीकाव्याख्या ४६१६९ ।
गीतासारः ४६३९० ।
गीतिसङ्ग्रहः ४५८०३, ४५९४४, ४६१८२ ।
गुरुगीता ४६३२९ ।
गुरुचरितम् ४६४९५ ।
गुरुचरित्रम् ४६५२७, ४६५४८, ४६६०७, ४६६०८, ४६६४२ ।
गुरुचरित्रामृतम् ४६६१९ ।
गुरुप्रशंसा ४५७८० ।
गुरुबोधः ४६६४० ।
गुरुमहिमा ४६८४१ ।
गुरुशिष्यगोष्ठी ४५९४० ।
गुरुस्तुतिः ४६७१९, ४६७५६ ।
गेयपदसङ्ग्रहः ४६०४९, ४६०९८ ।
गोकुलपदम् ४६८१७ ।
गोकुलाष्टकम् ४६८२८ ।
गोचारणविहारः ४५९१८ ।
गोपीगीतम् ४६३३९, ४६३५१ ।
गोपीचन्द्राख्यानम् ४६५४३ ।
गोपीबोधः ४६६६७ ।
गोरक्षराजस्तोत्रम् ४५८०१ ।
गोरखबोधः ४६१०८ ।
गोवर्द्धनलीला ४६०५८ ।
गोविन्दजीको कको ४६२३७ ।
गोविन्दनन्दनाष्टकम् ४६८२८ ।
गोविन्दपदावली ४६८७५ ।
गोस्वामिनामगुणवर्णनम् ४६२१४ ।
गौरीविलासः ४६४५६ ।
घण्टाकर्णादिमन्त्रः ४५८८२ ।
घोड़ाचोली ४६०४४ ।
घोड़ाचोलीविधानम् ४५९८४ ।
घोडियाची परीक्षा ४६४७६ ।
चक्रव्यूहकथा ४५९४१ ।
चण्डीरपाञ्चाली ४६८६० ।
चतुःश्लोकीभागवतम् ४६४२९ ।
चतुःश्लोकीभागवटीका ४६३४३, ४६४०७ ।
चन्द्रालोकः ४५८६५ ।
चरममञ्जरी ४६३४६, ४६५०९ ।
चाटुपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम् ४६८६४ ।
चातुर्मास्यवर्णनम् ४६५२२ ।
चिकित्साग्रन्थः ४५९०४ ।
चिकित्सासङ्ग्रहः ४६४६० ।
चिकित्सासारः ४६२३८ ।
चिकित्सासारसङ्ग्रहः ४६२२५, ४६२२६, ४६४५४ ।
चित्सुधा ४६३४४, ४६५०५, ४६५१० ।
चिरञ्जीवपदम् ४६४२०, ४६५६४ ।
चूड़ालाख्यानम् ४६६०० ।
चैतन्यचरितामृतम् ४६८६७ - ४६८६९, ४६८७२, ४६८७३, ४६८७७, ४६८७८ ।

चैतन्यलीला ४६८८१ ।
चौरासीपदम् ४९९४३
छन्दोग्रन्थः ४६३९२ ।
छायापुरुषलक्षणम् ४६०५९ ।
जगन्मोहनम ४५८६६ ।
जगन्नाथस्तुतिः ४६२५९ ।
जडभरतलीला ४९९९९ ।
जन्माष्टमीकीर्तनम् ४५८९९ ।
जमालकेदोहे ४६२३९ ।
जुनाटपुरुषकथा ४६९३६ ।
जैमिनिभारतम् ४६६७९ ।
जैमिनिमहाभारतम् ४६०४७ ।
ज्ञानचूरणवचनिका ४५८४७, ४६१७८ ।
ज्ञानदीपकम् ४५९१९ ।
ज्ञानमञ्जरी ४५८४५, ४५१७७ ।
ज्ञानवतीसी ४६३२८ ।
ज्ञानशिखा ४६५८२ ।
ज्ञानसमुद्रः ४५९६३, ४६२४०, ४६२४१ ।
ज्ञानस्वरोदयः ४६००० , ४६००३, ४६११०, ४६२४२ ।
ज्ञानाब्धितरङ्गः ४६६४९ ।
ज्यौतिषग्रन्थः ४६८४२ ।
ज्यौतिषभेदः ४६२४३ ।
ज्यौतिषरत्नम् ४६१११ ।
ज्यौतिषसारः ४६१७५ ।
ज्यौतिषरत्नाकरः ४६०१९ ।
ज्वरयुद्धोपाख्यानम् ४५७८२ ।
तत्त्वदीपप्रकरणम् ४६४२१ ।
तत्त्वमसिमहावाक्यपक्षीकरणनिरूपणम् ४६३४९ ।
तत्त्वमाला ४६३४५ ।
तत्त्वमुक्तावली ४६१४१ ।
तत्त्वरङ्गवर्णनम् ४५९१५ ।
तत्त्वविभागः ४५९१७ ।
तत्त्वामृतम् ४६५८७ ।
तन्त्रग्रन्थविशेषः ४.४४१ ।
तन्त्रपुरश्चरणविधिः ४५८८९ ।
तन्त्रमन्त्रविचारः ४६८२० ।
तन्त्रमन्त्रादिसङ्ग्रहः ४६१३० ।
तन्त्रादिसङ्ग्रहः ४६१२४ ।
तर्पणविधिः ४६२४२ ।
ताम्बेश्वरः ४६१०३ ।
ताजिकनीलकण्ठी ४६६१८ ।
तान्त्रिकग्रन्थः ४५९५४ ।
तान्त्रिकचक्रम् ४६६९३ ।
तापतेजरोपायः ४६८३८ ।
ताम्रादिधातुक्रियावर्णनम् ४६१३७ ।
तारकचिन्तामणिः ४६२४० ।
तिथिनिर्णयरत्नमाला ४६४७० ।
तीरथमालः ४५८०६ ।
तुकारामचरितम् ४६७०६ ।
तुकारामप्रशंसार्या ४६३५२ ।
तुलसीबारहमासी ४५८८६ ।
तुलाप्रकारः ४५८८५ ।

तैलङ्गगुर्जरकोशः ४६०१०।
त्रिपुटी ४६५९९।
त्रिवेण्यष्टकम् ४६६०१।
त्र्यम्बकीयवैद्यकसङ्ग्रहः ४६६०४।
दण्डलीला ४६८६४।
दत्तात्रेयसिद्धिसोपानः ४६२४५।
दत्तात्रेयस्तुतिः ४६५५०।
दयालुदासी ४५९५०।
दशमुद्राविचारः ४५८६७।
दशावतारवर्णनम् ४६१२६, ४६७०१।
दशावतारस्तुतिः ४६७५२।
दानम् ( राज्ञः कर्णस्य ) ४६८४१।
दानलीला ४५९३९, ४५९८२, ४६१२९, ४६२६६।
दामोदरदासवार्ता ४५९६४।
दासबोधः ४६४०३, ४६५२८, ४६५७४, ४६५९८, ४६६२३, ४६६४३।
दिग्वायुविवरणम् ४६६७३।
दिव्यनमनस्तोत्रम् ४६४१९।
दीपकविचारः ४६०५५।
देवीमाहात्म्यम् ४६४६५।
देवीविलासः ४६२४६।
देव्यष्टकम् ४६४९८।
दैनिकमहोत्सवनिरूपणम् ४६०९९।
दोहावली ४५८२१, ४६०६१, ४६०७९।
दोहासङ्ग्रहः ४६२००।
द्रव्यगुणदोषपरिहारः ४६११८।
द्रव्यशोधनविधिः ४६१८३, ४६१९३, ४६२७२, ४६२७३।
द्रोणपर्वकथा ४६६९९।
द्वादशमहावाक्यसिद्धान्तः ४५९१६।
द्वादशराशिस्थगुरुफलम् ४६९०३।
द्वादशराशिफलम् ४६०१४।
द्वादशलक्षणी ४६४९८।
द्वितीयभगवत्पीठिका ४६२१७।
द्वैतविवेकपदयोजना ४६३९३।
ध्यानमञ्जरी ४५८०६।
ध्यानमाला ४६५०२।
ध्रुवोपाख्यानम् ४६६६७।
नक्षत्रशकुनावली ४६७४६, ४६८३१।
नरचरितम् ४६०७१।
नवग्रहस्तोत्रम् ४५८३२, ४५९४४।
नवरत्नम् ४६८२८।
नवरत्नटीका ४५९९८।
नवरत्नस्तोत्रवृत्तिः ४६००५।
नाचिकेतोपाख्यानम् ४६८४२।
नाडीविचारः ४५७९७।
नामचिन्तामणिमाला ४६२५९।
नाममञ्जरी ४५८९३, ४६२५९।
नाममन्त्रव्याख्या ४५८२६।
नाममाला ४६१२९, ४६१४८, ४६१४९।
नाममाला मानमञ्जरी ४६१५४।
नामयुगाष्टकम् ४६८६४।

नामरत्नमालाकोशः ४९९७७।
नारायणप्रार्थना ४६६४९।
नारायणी शकुनवन्ती ४६६६२।
नासीरस्याहीकंकालीग्रंथः ४९७७८।
निगमसारः ४६९७८, ४६७१०।
नित्यचरित्रपदम् ४६१३४।
निदानग्रन्थविशेषः ४६९९७।
निर्वाणाष्टकम् ४९८२४।
नृसिंहचरित्रम् ४६२९९।
नेत्रपञ्चाशिका ४९८८४।
पञ्चक्रोशादियात्राविधिः ४६९९९।
पञ्चदशीविद्या ४६२६४।
पञ्चपदी ४६६४१।
पञ्चप्राणार्तिक्यम् ४६६८९।
पञ्चशब्दः ४६२९९।
पञ्चसमासी ४६३९०।
पञ्चाङ्गायनादिनिरूपणम् ४९९२४।
पञ्चीकरणम् ४६३३२, ४६३३७, ४६३६९, ४६३८४, ४६३८६, ४६९१२, ४६६१७।
पञ्चीकरणम् ( सविवरणम् ) ४६४२७।
पञ्चीकरणप्रकरणम् ४६९८९।
पञ्चीकरणमहावाक्यविवरणम् ४६९६६।
पटवारिपुस्तकम् ४९९७६।
पण्ढरपुरप्रशंसा ४६७७४।
पत्री ४९९४३।
पदत्रयव्यवस्था ४६९९९।
पदसंग्रहः ४६७९९, ४९८००, ४६१३२, ४६१३३, ४६२७७, ४६२८१, ४६२९३, ४६३१०, ४६६९७, ४६७०६, ४६७०९, ४६७१३, ४६७४२, ४६७४६, ४६७६३, ४६७७४, ४६७८०, ४६८४३।
पदावली ४९७६७।
पदावलीरामायणम् ४९७७७।
पद्यसंग्रहः ४९७७२, ४६८०८, ४६४०२, ४६४०८, ४६६६६, ४६७५१, ४६७९८।
पद्यावली ४९९११।
परन्तुरामायणम् ४६४६९, ४६९३०।
परमामृतम् ४६३९८, ४६३९९, ४६३८२, ४६४४८, ४६४९३, ४६६१९, ४६६४४, ४६६६४।
परमार्थनिर्णयः ४६९०४।
पल्लीपतनकारिका ४६९३४।
पहेलीपुराणम् ४६२८९।
पाकावली ४६००८।
पाण्डवगीता ४९९४४, ४६४२४, ४६६६७।
पाण्डवचरित्रम् ४६८३६।
पाण्डुरङ्गभजनम् ४६२९२।
पाण्डुरङ्गमाहात्म्यम् ४६३८८, ४६४९४, ४६९०३।
पाण्डुरङ्गस्तोत्रम् ४६९६८।
पातलछुडावणी ४९९३९।
पादोदकस्तोत्रम् ४६४१२।
पालीकारिका ४६७०७।
पाशाकेवली ४९८६१।
पिण्डानयनम् ४६३१८।
पुनर्हचिन्तामणिः ४६२४०।

पुरुषछायाविचारः ४६०५९ ।
पुरुषोत्तमसिद्धान्तः ४६८२८ ।
पुष्टिमर्यादापालनम् ४५९०१ ।
पूर्वारम्भनिरूपणम् ४६५३९ ।
प्रबोधसुधाकरः ४६३३४, ४६६२७ ।
प्रभातगानम् ४६२६८ ।
प्रभुकृत्यश्लोकाः ४६२७१ ।
प्रवराध्यायः ४६८११ ।
प्रश्नविचारः ४६८२० ।
प्रश्नविद्या ४५८६२ ।
प्रश्नविमर्शः ४५७९३ ।
प्रश्नावली ४५९५४ ।
प्रश्नावलीचक्रम् ४६४८० ।
प्रस्थानत्रयसारः ४३३३१ ।
प्रह्लादोपाख्यानम् ४६८३९ ।
प्राणकृष्णौषधावली ४६८८४ ।
प्रातःप्रार्थनापद्यसंग्रहः ४६६८२ ।
प्रार्थनाशतकम् ४६५६७ ।
प्रियासुधा ४६५९२ ।
प्रियासुधारसः ४६६६९ ।
प्रेतोच्चाटनविधिः ४५९५९ ।
प्रेमतरङ्गिणी ४६८५२ ।
प्रेमभक्तिचन्द्रिका ४६८७१ ।
प्रेमामृतम् ४६८२८ ।
प्रेमसागरः ४५८७० ।
फलस्तुतिः ४५९४३ ।
फूलकथा ४५८३२ ।
फूलचरित्रम् ४६२८४ ।
फूलचरित्रवर्णनम् ४६०११ ।
फूलमञ्जरी ४६०११ ।
बजरङ्गछबीसी ४५७८५ ।
बजरङ्गबाणः ४५८४३ ।
बन्धसंग्रहः ४६१४४ ।
बयालीसलीला ४५८६९ ।
बर्मीवर्णमाला ४६००४ ।
बहुचरदेव्यार्तिक्यम् ४६८१४ ।
बारहखड़ी ४५८९२ ।
बारहमासा ४६२५९ ।
बारहमासी ४६००६ ।
बालक्रीडा ४६५३९ ।
बालचिकित्सा ४६००२ ।
बालबोधः ४५७९६ ।
बालबोधिनी ४६५९९ ।
बाललीला ४६२५९ ।
बिल्हणपंच्यासी ४६४४४ ।
बृहस्पतिमतम् ४६८१७, ४६९०० ।
बोधवैभवम् ४६६९८ ।
बोधवैभवम् ( सटीकम् ) ४६३७६ ।
बोधानन्दः ४६५१२ ।
बोधामृतम् ४६३९८ ।
ब्रह्मद्वापञ्चाशिका ४५९०० ।
ब्रह्मबावनी ४५९९७ ।

ब्रह्मभजनम् ४६३०७।

ब्रह्मविचारः ४६४३०।

ब्रह्मविलासः ४५७८०।

ब्रह्मस्तुतिः ४६९४०।

ब्रह्मस्तुतिटीका ४६३६२।

ब्रह्मानन्दः ४६९७९।

ब्रह्मोत्तरखण्डः ४६५४१।

भगवद्गीता ४५८४९, ४६४३२, ४६४३३, ४६८१७।

भगवद्गीता (सटीका) ४६४३६, ४६४३७, ४६४३८।

भगवद्गीताटीका ४५८१७, ४६३२६, ४६३७८, ४६८२३, ४६८८४।

भगवद्गीतानुवादः ४५९२९।

भगवद्भजनम् ४५७९२, ४६७५०।

भगवद्भजनोपदेशः ४६७७२।

भगवत्प्रार्थना ४६६८६।

भगीरथेर् गङ्गानयनम्। ४६८५३।

भजनम् ४६३०३, ४६३०९, ४६३१४-४६३१६, ४६७७९, ४६७८२।

भजनछन्दावली ४६०७७।

भजनसंग्रहः ४५८१०, ४५९१५, ४६०९५, ४६०९६, ४६२९६, ४६३००, ४६३२४, ४६३८९, ४६४०६, ४५९१७, ४६५१८, ४६५६३, ४६६४१, ४६६६५, ४६६६७, ४६६६९, ४६६७२, ४६६८३, ४६६८८, ४६६९०, ४६७१७, ४६७२५, ४६७२६, ४६७३३, ४६७३४, ४६७४५, ४६७४७, ४६७५३-४६७५५, ४६७५९-४६७६२, ४६७६६, ४६७७५, ४६७८१, ४६८४१।

भजनावली ४६२८२।

भडलीयोगः ४६१५६।

भक्तकथा ४६०७९।

भक्तमालः (सटीकः) ४५८७१, ४५८७२, ४६०७४।

भक्तिपदम् ४५३११।

भक्तिपद्यसंग्रहः ४६६८४।

भक्तियोगः ४६५१७।

भक्तिविजयग्रन्थः ४६६५७।

भक्तिविलासकथा ४५९२७।

भयानकचिन्तामणिः ४६२४०।

भरतबारहमासी ४६२८०।

भवनसारसंग्रहः ४६११६।

भवानीस्तुतिः ४५७८३।

भागवतम् ४५८९८, ४५९५३, ४६०२९, ४६०६०, ४६०७६, ४६१३६, ४६१७९, ४६६६७।

भागवतदशमस्कन्धरासपञ्चाध्यायी ४६२५९।

भागवतम् (सटीकम्) ४६३८३।

भागवतटीका ४६३६१, ४६६३५।

भागवतामृतम् ४६८७९।

भाडलीपुराणम् ४६७८४।

भावना ४६२७४।

भावफलम् ४६३१७।

भावार्थरामायणम् (सटीकम्) ४६४८६।

भाषाभूषणम् ४५८६५, ४५९०५, ४५९५८, ४६१६६।

भाषाभूषणम् (सटीकम्) ४६०५०।

भीमरूपहनुमत्स्तोत्रम् ४६५७०।

भूगोलपुराणम् ४६१५७, ४६२५८।

भूगोलवर्णनम् ४६०१० ।
भूतापसारणादिमन्त्राः ४६८८९ ।
भैरवस्तुतिः ४६९०८ ।
भोयतखडाचाकल्पः ४६९०१ ।
भ्रमरगीतम् ४६२७९ ।
मङ्गलचण्डिकाकथा ४६८५५ ।
मङ्गलचण्डीकथा ४६८९८ ।
मङ्गलाष्टकम् ४६४६७, ४६९३२ ।
मछन्दरगोरखनाथाख्यानम् ४६९४३ ।
मधुकरपरीक्षाकल्पः ४५९७९ ।
मधुराष्टकम् ४६८२८ ।
मननप्रकरणम् ४६६४८ ,
मननप्रकारः ४६६३८ ।
मननमाला ४६५७१ ।
मनश्चरित्रम् ४६६१४, ४६६१६, ४६६७० ।
मनसामङ्गलम् ४६८९२, ४६८९७ ।
मनांचेश्लोकाः ४६३०१, ४६३३०, ४६३८६, ४६४८३, ४६९१५, ४६७३२, ४६७५७ ।
मनांचेसंकल्पः ४६९१७ ।
मनिहारिनलीला ४६०७० ।
मनोबोधशतकम् ४६३७१ ।
मन्त्रकोशः ४६०१८ ।
मान्त्रतन्त्रविधिः ४६८१८ ।
मन्त्रप्रयोगः ४५९४० ।
मन्त्रमहोदधिटिप्पणी ४५८६३ ।
मन्त्रयन्त्रसङ्ग्रहः ४६०५७, ४६८०९ ।
मन्त्रयन्त्रौषधिप्रकारः ४५८२३ ,
मन्त्ररामायणम् ४६४६८, ४६५२९, ४६५७५ ।
मन्त्रसङ्ग्रहः ४६२७८, ४६८८० ।
मन्त्रोपदेशविधिः ४५८४२ ।
मयूरकेकावली ४६५४५ ।
मरणचिन्हविचारः ४६५५८ ।
मल्लिकार्जुनकल्पः ४६१५८ ।
महादेवार्तिक्यम् ४६५२३ ।
महाभारतम् ४५८१८, ४६४८१, ४६५६०, ४६५६१, ४६६६३, ४६८५४, ४६८६५, ४६८९३-४६८९५ ।
महाभारतकथा ४६०८७ ।
महारुद्रस्तोत्रम् ४६८१३ ।
महावाक्यप्रकाशः ४५७६६ ।
महावाक्यार्थप्राकृतटीका ४६३३६ ।
महावाक्यविचारः ४६५९९ ।
महावाक्यविवेकः ४६८१२ ।
महावाक्यविवेकव्याख्या ४६३५७ ।
माधवनिदानसारांशः ४६०८६ ।
माधवस्तवराजः ४६५१४ ।
माधवानलकामकन्दलाकथा ४६२५९ ।
मानमञ्जरी ४६०३१ ।
मानसपूजा ४६३५६ ।
मामेरुः ४६८३१ ।
मारणमोहनादियन्त्रम् ४५७९८ ।
मारुत्यष्टकम् ४६७४३ ।
मार्कण्डेयमुनीश्वरार्या ४६३०५ ।

मार्गसिद्धान्तः ४६०६८ ।
मार्तण्डार्तिक्यम् ४६९२४ ।
मालाउधारकरखा ४६२९२ ।
मालोद्धारचरितम् ४६८०८ ।
मालोद्धारलीला ४६८०६, ४६८०७ ।
मासचक्रम् ४९७९० ।
मुकुन्दजीकीबारहमासी ४९८०६ ।
मुक्ताफलस्तोत्रम् ४६८२८ ।
मुक्तिवर्णनम् ४९९४० ।
मुद्रालक्षणम् ४६६०५ ।
मुसलीपाकादियोगसङ्ग्रहः ४९८७६ ।
मृगोपाख्यानम् ४९९६३ ।
मृत्तिकाभक्षणम् ४६९३९ ।
मेघमाला ४६६७३ ।
मोगलपुराणम् ४९८२० ।
यज्ञपत्न्याख्यानम् ४६९३९ ।
यन्त्रमन्त्रविधिः ४६८३८ ।
यन्त्रमन्त्रसङ्ग्रहः ४५८४१, ४६८०९ ।
यन्त्रसङ्ग्रहः ४६२८३ ।
यन्त्राणि ४६२४२ ।
यमुनाष्टकम् ४९९९८, ४६८२८ ।
यमुनाष्टकम् ( सटीकम् ) ४६००९ ।
यमुनास्तुतिः ४६०५८ ।
योगभेदाः ४९९६६ ।
योगवासिष्ठः ४९८६८, ४९९०८, ४६६५८ ।
योगवासिष्ठटीका ४६६९६, ४६६९८ ।
योगवासिष्ठसारः ४६२०१ ।
योगविवेकः ४६८२७ ।
योगशतकटीका ( समूला ) ४६९३१ ।
योगसुधानिधिः ४९९९६ ।
योगाभ्यासविधिः ४९९६६ ।
रक्षःपत्नी ४६८०० ।
रघुवंशटीका ४६३२७ ।
रतिमञ्जरी ४९८९० ।
रत्नयोगः ४६२४४ ।
रमलम् ४६०६७ ।
रमलगुलजारः ४९८६० ।
रमलग्रन्थः ४९९७९ ।
रमलप्रकाशः ४९९६५ ।
रमलरत्नम् ४६०२६ ।
रमलविचारः ४६१९९ ।
रमलसगुनपद्धतिः ४६१६० ।
रसकल्लोलः ४९८७९ ।
रसकौमुदी ४६०८१ ।
रसचन्द्रिका ४९९१४ ।
रसमञ्जरी ४६२९९ ।
रसरत्नकाव्य ४९९०६ ।
रसरत्नाकरः ४९८६४, ४६१८४ ।
रसराजः ४९९१३, ४९९४९, ४६०८४, ४६२९१, ४६२९४ ।
रससागरः ४६१७६ ।
रसिकप्रिया ४९९७८, ४६०३२, ४६०९१, ४६२१६, ४६२९०, ४६२६४ ।

रसिकप्रिया ( सटीका ) ४६०९४ ।

रसिकमोहनः ४६९९२ ।

रागमाला ४६९८०, ४६१४३, ४६२४९, ४६२९९ ।

रागसङ्ग्रहः ४६८४८ ।

राजगोपीचन्दगाथा ४६८७७ ।

राजयोगः ४६३४७, ४६४६६, ४६९००, ४६९०९, ४६९११ ।

राजयोगविवरणम् ४६९९२ ।

राजावलीयुगचारिकी ४६२४८ ।

राधाकृष्णभजनम् ४६३१२ :

राधाकृष्णविलासः ४६६७८ ।

राधाभुजङ्गः ४६९३९ ।

रामकलेवारहस्यम् ४६०६९ ।

रामकीर्तनम् ४६७४९ ।

रामकृष्णचरित्रम् ४६६९२ ।

रामकृष्णवर्णनम् ४६७८७ ।

रामगङ्गार्तिक्यम् ४६७२७ ।

रामगीताटीका ४६८१९ ।

रामगुणवर्णनम् ४६८३८ ।

रामचन्द्रचन्द्रिका ४६९९१ ।

रामचन्द्रचन्द्रिका ( सटीका ) ४६०८२ ।

रामचन्द्रस्तुतिः ४६२६९ ।

रामचन्द्राष्टकम् ४६६६७ ।

रामचरितम् ४६००७ ।

रामचरितमानसम् ४६७९९, ४६८०९, ४६९३३-४६९३७, ४६९९९ - ४६९९७, ४६९७४, ४७९९०, ४६००१, ४६०१९, ४६०१६, ४६०२७, ४६११९, ४६१४६, ४६१४७, ४६१८१, ४६१८९, ४६१९६-४६१९७, ४६२४७ ।

रामचरितमानसम् ( सटीकम् ) ४६११३, ४६१६८ ।

रामचरितमानसटीका ४६०८० ।

रामजन्मगाथा ४६८४१, ४६८४२ ।

रामतारकमन्त्रार्या ( सटीका ) ४६३४१ ।

रामदूतकृष्णदूतसम्वादः ४६७०८ ।

रामध्यानम् ४६८४४ ।

रामध्यानमञ्जरी ४६७७९ ।

रामनारायण्यष्टोत्तरशती ४६९१९ ।

रामरक्षा ४६८३०, ४६८४० ।

रामरणरत्नाकरः ४६१०१ ।

रामरहस्यम् ४६०६३ ।

रामरहस्यत्रयम् ४६८२८ ।

रामललानहछूः ( सटीकः ) ४६१९४ ।

रामविजयः ४६९२६ ।

रामविनोदः ४६२७० ।

रामविलापः ४६२८९ ।

रामस्तवः ४६९४४, ४६३२३, ४६६०९ ।

रामाज्ञा ४६८०७ ।

रामाद्यवतारकथा ४६०७९ ।

रामायणम् ४६८८०, ४६८९६, ४६९६२, ४६०८३, ४६२०६ ।

रामायणकथानकम् ४६९३८ ।

रामाश्वमेधः ४६०८९ ।

रामोपासना ४१९७४ ।
राशिरत्नमाला ४६०६६ ।
रासक्रीडा ४६९३९ ।
रासक्रीडावर्णनम् ४६०९८ ।
रासपञ्चाध्यायी ४९८९७ ।
रासलीलावर्णनम् ४६८४१ ।
रासोत्सवः ४६९३९ ।
रुक्मिणीमङ्गलम् ४६२९९ ।
रुक्मिणीस्वयंवरः ४६०६२, ४६३६०, ४६३७९, ४६३९७, ४६४१६, ४६४४९, ४६४९९, ४६९०६, ४६९०७, ४६९५२, ४६९५९, ४६९७६, ४६९८४, ४६९८९, ४६६७४, ४६६७९ ।
रुक्मिणीस्वयंवरः ( सटीकः ) ४६४०० ।
रुक्मिणीस्वयंवरटीका ४६३९१, ४६३९६ ।
रुक्मिणीहरणम् ४६७९६ ।
रुक्मिणीहरणकथा ४६७८८ ।
रुद्रजपादिविधिः ४६४१२ ।
रुद्रवन्तीप्रयोगः ४६१२७ ।
रूपदीपपिङ्गलभाषा ४६०२२ ।
रूपमञ्जरी ४६२९९ ।
रोगनिदानम् ४६४४३ ।
लक्ष्मीचरित्रम् ४६८९० ।
लगनदोहावली ४९९६१ ।
लग्नानयनादिविधिः ४६१३१ ।
लघुकालज्ञानम् ४६०१४ ।
लघुगीता ४६४२६ ।
लघुपञ्चाध्यायी ४६२९९ ।
लघुवाक्यवृत्तिः ४६९९९ ।
लघुश्रुतम् ४६१९९ ।
लयोत्पत्तिचिन्तनप्रकारः ४६३६२ ।
लीलातत्त्वसंग्रहः ४६८८१ ।
लीलावती ४६१६७ ।
लीलावतीभाषा ४९८०४ ।
वंशावलीवर्णनम् ४६०१० ।
वनयात्रा ४६०२९ ।
वनवर्णनम् ४६८६१ ।
वनसुधा ४६९३९ ।
वन्दीमोचनम् ४९९८१ ।
वन्ध्याप्रकरणम् ४६४७४ ।
वरुणाबत्तीसी ४६१९८ ।
वल्लभपञ्चाक्षरस्तोत्रम् ४९८२६ ।
वल्लभाख्यानम् ४९९१०, ४६७८७ ।
वल्लभाख्यानम् ( सटीकम् ) ४६८१६, ४६७८३ ।
वल्लभाचार्यशिष्यकथा ४६१२१ ।
वल्लभाष्टकम् ४६८२८ ।
वल्होजी ४६८०० ।
वशीकरणमन्त्रप्रयोगः ४६१८६ ।
वशीकरणविधिः ४६१०३ ।
वश्यादियक्षिणीप्रयोगः ४६४७५ ।
वसन्तऋतुलीला ४९९०२ ।
वस्त्राहरणम् ४६४४६ ।
वाक्यसुधा ४६९९९ ।

वाक्यसुधासमश्लोकी ४६६९२ ।

वाग्भटः ४६२१३ ।

वातडी ४६८०० ।

वामनचरित्रम् ४६८४४ ।

वाराणसीपण्ढरपुरतुलना ४६७६८ ।

वार्तासङ्ग्रहः ४५९४७, ४६०५९ ।

वाल्मीकिरामायणम् ४६७६० ।

वाल्मीकिरामायणव्याख्या ४६५९६ ।

वाल्मीकिआभासरामायणम् ४६२१२ ।

विक्रमचरित्रम् ४६५५३, ४६६२५, ४६६३३, ४६६६८ ।

विचारमाला ४५७७४, ४५८५४, ४६०३६, ४६०३७ ।

विचारसागरः ४६१६२ ।

विज्ञानगीता ४६२८६ ।

विट्ठलस्तुतिः ४६४२६ ।

विनयपत्रिका ४५८१४, ४६०३५, ४६१४० ।

विनायकशान्तिसामग्रीसूची ४६४९६ ।

विरहमञ्जरी ४६२५९ ।

विरहयोगवेली ४६०११ ।

विरागसन्दीपनी ४६०७८ ।

विवाहगीतम् ४६१९२ ।

विविधमन्त्रसङ्ग्रहः ४६८२६ ।

विविधौषधप्रयोगः ४६६८० ।

विवेकधैर्य्याश्रयस्तोत्रम् ४६८२८ ।

विवेकसारः ४५८९०, ४६४५२ ।

विवेकसिन्धुः ४६३९५, ४६४५३, ४६४८७, ४६५५१, ४६५९५, ४६६५४, ४६६५९ ।

विश्वनाथाष्टकम् ४५८३३ ।

विष्णुपदम् ४६८४० ।

विष्णुभजनम् ४६२९० ।

विष्णुस्वरूपध्यानम् ४६४०९ ।

विहारीसतसई ४५९०७, ४५९१२, ४५९३१, ४५९४९, ४५९६९, ४५९७०, ४६१९१ ।

विहारीसतसई ( सटीका ) ४६०५४, ४६०७३, ४६२१५, ४६२७५, ४६२७६ ।

वृत्तिदीपिका ४५९८९ ।

वेणुगीतम् ४६८१७ ।

वेणुसुधा ४६५३९ ।

वेतालिलिङ्गनामावली ४६६९४ ।

वेदान्तग्रन्थः ४६८३२ ।

वेदान्तप्रकरणम् ४६३८७ ।

वेदान्तमहावाक्यविचारः ४६२६२ ।

वेदान्तविचारः ४६४९९ ।

वेदान्तविषयकग्रन्थः ४६६४६ ।

वेदान्तशास्त्रप्रक्रिया ४६६०३ ।

वेदान्तश्लोकाः ४६६६७ ।

वेदान्तसंग्रहः ४६५९९, ४६६०० ।

वेदान्तसाररहस्यावतरणिका ४६६७१ ।

वेदान्तसारसंग्रहः ४६५७९ ।

वेदान्तसिद्धान्तः ४६५९९ ।

वेदान्तसिद्धान्तनिरूपणम् ४६६०६ ।

वेदान्तसिद्धान्तावतरणिका ४६६५० ।

वैदमञ्जरी ४९७८६ ।

वैद्यकग्रन्थः ४९७७०, ४६१०४ ।

वैद्यकग्रन्थविशेषः ४६६१८ ।

वैद्यकचिन्तामणिः ४९७७६ ।

वैद्यकल्पद्रुमसारसंग्रहः ४६००९ ।

वैद्यकसंग्रहः ४९९३०, ४९९८३, ४६०४२, ४६०४३, ४६२७२, ४६२७३, ४६८६२ ।

वैद्यप्रकाशः ४६२११ ।

वैद्यमनोत्सवः ४९७६९, ४९८७९, ४९९९१, ४६०१३, ४६१६३, ४६२१० ।

वैद्यरत्नम् ४६०४९, ४६१९३, ४६२०९ ।

वैद्यविनोदः ४६०४१ ।

वैद्यविलासः ४९८९९ ।

वैद्यसंग्रहसारः ४६४४९ ।

वैराग्यतरङ्गः ४६९९९ ।

वैराग्यदर्पणः ४९९१७ ।

वैष्णवपदावली ४६८७० ।

वैष्णववार्ता ४९९१० ।

व्यङ्कटेशगिरिमाहात्म्यम् ४६३७३ ।

व्यङ्कटेशस्तोत्रम् ४६३२२, ४६३२९, ४६३३८, ४६३४०, ४६४१४, ४६४१९, ४६४२३, ४६४८९, ४६९६९, ४६९७२,

व्यवहारगणितम् ४६१२९ ।

व्रजयात्रा ४६०९०, ४६१०९ ।

व्रजविलासः ४६०६४ ।

व्रजसप्तपरिक्रमा ४९९१८ ।

शकुनविचारः ४९८९७ ।

शकुनावली ४६४९१, ४६८२९, ४६८९९ ।

शतनामसङ्कल्पः ४६८११ ।

शतप्रश्नोत्तरी ४९७८४ ।

शतप्रश्नोत्तरीभाषा ४६१४२ ।

शतश्लोकी ४६६२८ ।

शनैश्चरकथा ४६८४७ ।

शशिसेना ४६९८० ।

शाक्तवन्दना ४६८८९ ।

शालिहोत्रभाषा ४९७८६ ।

शात्रिहोत्रविनोदः ४६२२८ ।

शाबरतन्त्रम् ४९९६७, ४९९६८, ४६०३३ ।

शाबरमन्त्राः ४९८०९, ४९८१३, ४६८८३ ।

शाबरमन्त्रप्रयोगविधिः ४६२०८ ।

शिक्षा (सटीका) ४६७९९ ।

शिखनखवर्णनम् ४६०९२ ।

शिलोदककल्पः ४६१९८ ।

शिवकरनहच्छूः ४९७७९ ।

शिवतारकबोधामृतम् ४६३३९ ।

शिवनाटकम् ४६७९१ ।

शिवपचीसी ४९८१८ ।

शिवपञ्चरत्नम् ४९८२४ ।

शिवभजनम् ४६२९१ ।

शिवलीलामृतम् ४६३९९, ४६४९७, ४६९८१, ४६९८६, ४६६४७, ४६६९९ ।

शिवसभापदम् ४९७९१ ।

शिवस्तोत्रम् ४६८४४।
शिवाशकुनविचारः ४६१७४।
शिवाष्टकम् ४९९४४।
शुकाष्टकम् ४६६६७।
शुकाष्टकटीका ४६६६७।
शुद्धब्रह्मनिरूपणम् ४६९९९।
शुद्धविवेकः ४६११७।
शुभाशुभफलनिर्देशकचक्रम् ४६६९३।
शुभाशुभशकुनविचारः ४९८९६।
शृङ्गारवर्णनम् ४९८९४।
शेरसंग्रहः ४६२०७।
शौरिसुरतरङ्गिणी ४६४४०, ४६४६४।
श्रीमन्तोपाख्यानम् ४६८९७।
श्रीरङ्गभजनम् ४६२८७।
श्रीवरवाक्यामृतरसरत्नकोशग्रन्थः ४६७९८।
श्रीशैलशिखरवर्णनम् ४६४१२।
श्लोकदशकम् ४६३७७।
श्लोकसङ्ग्रहः ४६७३१।
षट्पञ्चाशिकाटीका ४६११२।
षट्प्रकरणी ४९९२९।
षट्प्रश्ननिर्णयः ४६२०४।
षट्प्रश्नी ४९८४६।
षट्समाधयः ४६६११।
षट्समाधिनिरूपणम् ४६३६४।
षष्टिसम्वत्सरफलम् ४६४३४।
षोडशयोगसङ्ग्रहः ४९९६६।
षोडशसोमवारकथा ४६३७२, ४६४९८।
संवत्सरसाठी ४६९०२।
संस्कृतश्लोकसङ्ग्रहः ४६६००।
सङ्कष्टनाशनस्तोत्रम् ४६४१३।
सङ्कटमोचनाष्टकम् ४६१७३।
सङ्कटाष्टकम् ४९८३७, ४९८६६।
सङ्कटास्तोत्रम् ४६२६९।
सङ्क्रान्तिफलविचारः ४६९०१।
सङ्गीतसारः ४९८७३, ४९९८७, ४९९८८।
सङ्क्षेपायुर्वेदयोगः ४६२४३।
सगुनमाला ४६२०६।
सगुनविचारः ४६०३८।
सतरञ्जखेलनविधिः ४९८०२।
सतसई ( सटीका ) ४६२६१।
सतसय्या ( सटीका ) ४९९७२।
सत्तगीता ४९८०६।
सत्यनारायणकथा ४६८४६, ४६८४८, ४६८४९, ४६८९१, ४६८९६, ४६८६६, ४६८८३, ४६८९६।
सत्यनारायणपञ्चालिका ४६८८७, ४६८८८।
सत्यनारायणव्रतकथा ४६८७६।
सद्गुरुप्रार्थना ४६७२०।
सन्तमालिकामानसपूजा ४६६९३।
सन्तविलासः ४६०७९।
सन्मणिमाला आर्या ४६९४४।
सपिण्डीसामग्री ४६१८७।

सप्तगुह्यानि ४६४८४।
सप्तशतिका ( सटीका ) ४६१३९।
सप्तश्लोकीभागवतम् ४६३६०।
सभाविलासः ४६०९१।
समयप्रबन्धः ४६९११।
समयसारः ४५८५९।
समरविजयः ४६०४०।
समर्पणगद्यटीका ४६८९१।
समर्पणगद्यार्थः ४६२१७।
समाधिविलासः ४६५२०।
सरसरसग्रन्थः ४५९०९।
सरसलीला ४६०५८।
सरस्वतीद्वादशनाम ४५९४४।
सरस्वतीनामादयः ४६९४४।
सर्पादिविषदोषप्रतीकारविधिः ४६७९०।
सर्ववेदान्तसिद्धान्तः ४६५९९।
सर्वसङ्ग्रहः ४६२०३।
सर्वोत्तमस्तोत्रम् ४६८२८।
सवाई चे श्लोकाः ४६६२९।
साखी ४६१०६।
साठिसंवत्सराः ४६२५७।
साठिसंवत्सरी ४६२२७।
सातवाराः ४५९४०।
साधुगीतम् ४६८४०।
सामराजपद्म् ४६३५३।
सामुद्रिकम् ४६४९०।
सारगीता ४६०२४।
सारसङ्ग्रहः ४६०४८, ४६१५२, ४६२६०।
सारावली ४५९७९।
सिद्धान्तप्रकरणम् ४६३९४।
सिद्धान्तसारव्याख्यानम् ४६५९१।
सिद्धाम्नायः ४६८०४।
सिंहासनद्वात्रिंशत्का ४६१००।
सिंहासनबतीसी ४६०२१, ४६८३७।
सीताबोधः ४६३२०।
सीतारामरङ्गमाला ४५९७४।
सीतालघुविवाहः ४६२५९।
सीताविवाहः ४६२५९।
सीतास्वयंवरः ४५९३१, ४६०२०।
सीधस्वरोदयः ४६२३९।
सुआबहत्तरीकथा ४५९०३।
सुखदेवलीला ४६८०६।
सुगमनिदानम् ४६२३०
सुदामाचरित्रम् ४५९४६, ४६०८८, ४६२५९, ४६३०२, ४६७३९, ४६८४१।
सुन्दरशृङ्गारः ४५८५८, ४६०८४, ४६११५, ४६१५१।
सुन्दरशृङ्गारग्रन्थः ४५९३२।
सुन्दरश्यामविलासः ४६०५३।
सुन्दरसिङ्गारः ४६०६९।
सुभाषितम् ४६७६५।
सुभाषितानि ४५९१२।
सूतिकाविचारः ४६८३५।

सूरपदावली ४६२३६ ।
सूर्यनाम ४६८१७ ।
सेवकवाणी ४५९४३ ।
सोलहतिथिनिर्णयः ४५९४० ।
सौभाग्यतरङ्गिणी ४६७९६ ।
स्थूलदेहादिविवरणम् ४६८८४ ।
स्पष्टदेहपञ्चीकरणप्रकारः ४.४२६ ।
स्फुटकविता ४६५०१ ।
स्यमन्तकोपाख्यानम् ४५७८२, ४६८६९ ।
स्वप्नाध्यायः ४६१७४ ।
स्वरूपनिर्णयः ४५९९८ ।
स्वरूपबोधः ४६४३५ ।
स्वरोदयः ४५९२२, ४५९४८, ४६६६१ ।
स्वरोदयटीका ४६०७२ ।
स्वरोदयसारः ४६१८० ।
स्वस्वरूपबोधः ४६३६६ ।
स्वात्मनिरूपणं ( सटीकम् ) ४६३४२ ।
स्वात्मसुखम् ४६४६१, ४६६२१ ।
स्वात्मानुभवः ४६५३७, ४६५९४ ।
स्नेहलीला ४६१३५ ।
हकीमीऔषधसङ्ग्रहः ४५८७८ ।
हनुमत्कवचम् ४६७०५ ।
हनुमच्चरित्रम् ४६८९१ ।
हनुमद्भजनम् ४६२२८ ।
हनुमन्मंत्रप्रयोगविधिः ४६७८९ ।
हनुमानचालीसा ४५८३४,४५८५३,४५८९१,४५९८१ ।
हनुमानबाहुकम् ४५८३९, ४५८८१, ४५९२३,४५९२६, ४५९६२, ४६१४५, ४६२३१ ।
हनुमानसाठीकम् ४५९८१ ।
हरतालिकाकथा ४६८०० ।
हरिकीर्तनम् ४६३०४, ४६७४८ ।
हरिचरित्रम् ४६०३४, ४६१२० ।
हरिदासाष्टकम् ४५८२६ ।
हरिपाठः ४६५१७, ४६५५१, ४६५६५, ४६६८७ ।
हरिबाबापदानि ४६५५४ ।
हरिबोलचिन्तामणिः ४६२४० ।
हरिरायकृतं समर्पणाष्टकम् ४५८२६ ।
हरिवंशकथा ४६४८८ ।
हरिविजयः ४६४०४, ४६४५७, ४६४८८, ४६५४७, ४६६३१, ४६६३२, ४६६३४ ।
हरिविजयविषयानुक्रमणिका ४६७४४ ।
हरेराममन्त्रमाहात्म्यम् ४६६७६ ।
हस्तामलकम् ४६४५३, ४६५५९ ।
हस्तामलकम् ( सटीकम् ) ४६३८०, ४६३८१ ।
हस्तामलकटीका ४६६६० ।
हस्तामलकशङ्कराचार्यसंवादः ४६२४० ।
हस्तामलकसंवादस्तोत्रम् ४६५९९ ।
हास्यनाटकम् ४५९९४ ।
हिंडोरकीर्तनम् ४६०९७ ।
हिततरङ्गिणी ४५८७४ ।
हितोपदेशः ( सटीकः ) ४६२५३ ।
हिन्दूमतस्थापनम् ४५८५३ ।
होलीगीतम् ४६२३२ ।

# शुद्धिपत्रम्

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|---|---|---|---|
| १, ४-६ । | १-४, ६ । | ४४९३४ | ४ |
| १-४, १० । | १, ४-१० । | ४४९३९ | ४ |
| १-८९ । | १८९ । | ४४९९८ | » |
| सत्यवर्गयतीन्द्रः | सत्यवर्मयतीन्द्रः | ४४६०३ | ३ |
| १-२२ । | १-१२ । | ४४६२९ | ४ |
| १-४, ८-६१ । | १-४, ८-३३, ३३-६१ | ४४६३७ | ,, |
| राधाकृष्णलीलःपरिकारादिवर्णनम् | राधाकृष्णलीलापरिकरादिवर्णनम् | ४४६६१ | २ |
| १-११ । | १-३१ । | ४५०९६ | ४ |
| ४५१४९ | ४५१३९ | ४५१३९ | १ |
| १-६० । | १-७३ । | ४५१८२ | ४ |
| १-७३ । | १-६० । | ४५१८३ | ,, |
| १-२३ । | ११-२३ | ४५२३७ | ,, |
| ११-१२ । | ११-२१ | ४५२८९ | ,, |
| अग्निष्टोमविहोरचित्रम् | अग्निष्टोमविहारचित्रम् | ४५६४७ | |
| विहरीसतसई | विहारीसतसई | ४५९३१ | २ |
| वैद्यसङ्ग्रहः | वैद्यकसङ्ग्रहः | ४६०४२ | २ |
| षगुणालङ्कारादीनां वर्णनम् | दोषगुणालङ्कारादीनां वर्णनम् | ४६११४ | १२ |
| षुसालकविः | खुसालकविः | ४६११६ | ३ |
| ४५११९ | ४६११९ | ४६११९ | ६ |
| बालारण्यकिष्किन्धासुन्दरकाण्डानि | — | ४६१२१ | १२ |
| ,, | — | ४६१२२ | » |
| » | — | ४६१२३ | ,, |
| ,, | — | ४६१२५ | » |
| ,, | — | ४६१२६ | ,, |
| » | — | ४६१२७ | |
| नाममालामञ्जरी | नाममालामानमञ्जरी | ४६१५४ | |
| मल्लिकार्जुकल्पश्च | मल्लिकार्जुनकल्पश्च | ४६१५८ | १२ |
| ज्ञानवचनचूणिका | ज्ञानचूर्णवचनिका | ४६१७८ | २ |
| मालाउधारकरषा | मालाउधारकडषा | ४६२५२ | २ |
| २, ८, १३, १९ । | २, ८-१३, १९ । | ४६२८५ | ४ |
| १-१६, १-१८, १-२०, १-१४, १-१५, १-२३, १-१६, १-१६, १-१५, १-१९, १-२४, १-२० । | १-१६, १-१८, १-२०, १-१४, १-१५, १-२३, १-२३, १-१६, १-१६, १-१५, १-१९, १-२४, १-२०, १-२५ । | ४६३५५ | ,, |
| सन्यासिनामन्तेऋषिन्यासश्च | ऋषिन्यासश्च | ४६३६२ | १२ |
| गीतानुवादः | गीता | ४६४७८ | २ |
| अन्ते सप्तगुह्यानि च | सप्तगुह्यानि च | ४६४८४ | १२ |
| — | श० १८०५ | ४६४७८ | १० |
| १-१५ । | १-५ । | ४६८९० | ४ |
| १२-१४, १६-१७, २०-२१ । | १२-१४, १६-१७, २०-३१ । | ४६८९१ | ,, |

SREE [illegible] EDUCATION SOCIETY
RESEARCH CENTRE

SREE S.K. DA EDUCATIONAL SOCIETY
RESEARCH CENTRE

SREE SARADA EDUCATION SOCIETY
RESEARCH CENTRE